

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
OCLC 0000000000

الملك الظاهر

سلطان العادل ركن الدين محمود

بند قدر  
د  
س  
پیر

○

مؤلفہ

طالب ہاشمی

○

قومی کتب خانہ ۶۵ ریلوے روڈ، لاہور  
(پاکستان)

جملہ حقوق محفوظ ہیں ناشر محفوظ ہے

# مکتوبات رکن الدین بیدری

مصنف

طالب

ناشران

محمد نصیر مہاویں

برائے قومی کتب خانہ لاہور

طابع

نسیم مہاویں

مطبع

تعمیر پرنٹنگ پریس

۱۹۔ فیروز پور روڈ۔ لاہور

ایڈیشن

اصل

تعداد

۲۹۷۹۹۲۲

دو ہزار (۲۰۰۰) کاپی

قیمت

۹۰۱ ط

۱۰ روپے

۱۹۳۳۳

## فہرست مضامین

| صفحہ | عنوان                     |
|------|---------------------------|
| ۱۷   | انقلاب                    |
| ۱۹   | مرد مسلمان (اقبال)        |
| ۲۱   | ویباچ                     |
| ۳۳   | ممالیک مصر کے پیشرو       |
| ۳۵   | خلافت عباسیہ — عہد بہ عہد |
| ۳۶   | سلجوقی                    |
| ۳۶   | حروب صلیبیہ کا آغاز       |
| ۳۷   | مسلمانوں کی بے بسی        |
| ۳۷   | عماد الدین زنگی           |
| ۳۸   | نور الدین زنگی            |
| ۳۹   | صلاح الدین ایوبی          |
| ۴۱   | فتح بیت المقدس            |
| ۴۱   | تیسری صلیبی جنگ           |
| ۴۳   | صلاح الدین کے جانشین      |
| ۴۳   | خانہ جنگی                 |

|    |    |    |    |                                       |
|----|----|----|----|---------------------------------------|
| ۲۳ | .. | .. | .. | چوتھی صلیبی جنگ                       |
| ۲۴ | .. | .. | .. | الملك العادل                          |
| ۲۴ | .. | .. | .. | پانچویں صلیبی جنگ                     |
| ۲۵ | .. | .. | .. | چھٹی صلیبی جنگ                        |
| ۲۵ | -  | .. | .. | الملك الكامل                          |
| ۲۶ | .. | .. | .. | ملك عادل ثانی                         |
| ۲۶ | .. | .. | .. | الملك الصالح نجم الدين ایوب           |
| ۲۷ | -  | .. | .. | مملوکوں کے عروج کا آغاز               |
| ۲۸ | .. | .. | .. | ساتویں صلیبی جنگ                      |
| ۲۹ | -  | -  | -  | معرکہ منصورہ                          |
| ۳۰ | .. | .. | .. | منصورہ کا مرد میدان                   |
| ۳۰ | -  | .. | .. | توران شاہ کی آمد                      |
| ۳۱ | .. | .. | .. | صلیبیوں کی عبرتناک شکست               |
| ۳۲ | -  | .. | .. | توران شاہ کا قتل                      |
| ۳۳ | .. | .. | .. | ملکہ شجرۃ الدر                        |
| ۳۵ | -  | .. | .. | اسی دن کی بادشاہت                     |
| ۳۷ | .. | .. | .. | گھلتے ہیں غلاموں پر اسرار شہنشاہی     |
| ۳۹ | .. | .. | .. | مملوکوں کی فرمانروائی دولت جمایک بحری |
| ۴۰ | -  | .. | .. | الملك المعز دجاشگیر                   |
| ۴۱ | .. | .. | .. | الملك المنصور نور الدين               |
| ۴۲ | -  | .. | .. | فتنہ تاتار پہلا دور                   |

- ۶۳ .. .. دولت خوارزم شاہی .. ..
- ۶۴ .. .. خدائی قہر .. ..
- ۶۵ .. .. قلعة تاتار کا دور اور .. ..
- ۶۶ .. .. سقوط بغداد .. ..
- ۶۷ .. .. شیخ سعدی کا مرثیہ بغداد .. ..
- ۶۸ .. .. مقامات آہ و فغاں اور بھی ہیں .. ..
- ۶۹ .. .. تاریخ کاسب سے بڑا حادثہ .. ..
- ۷۰ .. .. مصر بیدار ہوتا ہے .. ..
- ۷۱ .. .. ملک مظفر سیف الدین .. ..
- ۷۲ .. .. تاتاری مصر کی طرف بڑھتے ہیں .. ..
- ۷۳ .. .. ہر فرعون نے راموسی .. ..
- ۷۴ .. .. ہلاکو کا خط ہلوک فرمانروا کے نام .. ..
- ۷۵ .. .. تاتاری سفیروں کا قتل .. ..
- ۷۶ .. .. جہاد کی تیاری .. ..
- ۷۷ .. .. ہلاکو کی مراجعت وطن .. ..
- ۷۸ .. .. معرکہ عین جالوت .. ..
- ۷۹ .. .. شام سے تاتاروں کا مکمل انخلاء .. ..
- ۸۰ .. .. بیسین تخت حکومت پر .. ..
- ۸۱ .. .. غیر معمولی ہرولد عسکری .. ..
- ۸۲ .. .. ملک مظفر کا قتل .. ..
- ۸۳ .. .. بیسین کی تخت نشینی .. ..

لقب

- ۹۵ .. .. ابتدائی زندگی
- ۹۶ .. .. ترقی کے زینے پر
- ۹۸ .. .. حکومت کا ابتدائی دور
- ۹۹ .. .. خلافت عباسیہ کا احیاء
- ۱۰۱ .. .. احیاء خلافت کا پس منظر
- ۱۰۳ .. .. ایک عباسی شہزادہ
- ۱۰۴ .. .. ابوالقاسم احمد کا ورود مصر
- ۱۰۴ .. .. احیائے خلافت
- ۱۰۶ .. .. احیائے خلافت کے بعد پہلا جمعہ
- ۱۰۷ .. .. سلطان کو شرعی نیابت کی تفویض
- ۱۰۸ .. .. المستنصر باللہ کی گمشدگی
- ۱۰۸ .. .. ابوالعباس احمد
- ۱۰۹ .. .. مصر کا دوسرا عباسی خلیفہ
- ۱۱۱ .. .. خارجہ حکمت عملی
- ۱۱۳ .. .. تین عالمی طاقتیں
- ۱۱۵ .. .. بین الاقوامی سیاست کا نقشہ
- ۱۱۹ .. .. اردو کے زریں سے دستاویز تعلقا
- ۱۲۰ .. .. برکہ خانی کی بروقت امداد
- ۱۲۶ .. .. ہلاکو کی شاطرانہ چال اور اس کا توڑ
- ۱۲۷ .. .. سلطان بیبرس اور عیسائی دنیا

|     |    |                                   |
|-----|----|-----------------------------------|
| ۱۳۳ | .. | صلیبیوں سے معرکہ آرائیاں          |
| ۱۳۵ | .. | قلب اسلام میں صلیبیوں کی تباہی    |
| ۱۳۶ | .. | الکرک کی تسخیر                    |
| ۱۳۷ | .. | فتح قیساریہ                       |
| ۱۳۹ | .. | ارسوف پر قبضہ                     |
| ۱۳۹ | .. | صفد کی تسخیر                      |
| ۱۴۰ | .. | یافہ پر قبضہ                      |
| ۱۴۱ | .. | قلعہ الشقیف کی تسخیر              |
| ۱۴۳ | .. | انطاکیہ کی فتح الفتوح             |
| ۱۴۶ | .. | ارمنوں کی سرکوبی                  |
| ۱۴۷ | .. | لونی نہم کی صلیبیوں کی تباہی      |
| ۱۴۹ | .. | قبرص پر چڑھائی                    |
| ۱۵۰ | .. | شہزادہ ایڈورڈ کی صلیبیوں کی تباہی |
| ۱۵۱ | .. | حصن الاکراہ کی فتح                |
| ۱۵۲ | .. | القرین کی تسخیر                   |
| ۱۵۲ | .. | صلیبیوں سے معاہدہ امن             |
| ۱۵۴ | .. | باطنیوں کا استیصال                |
| ۱۵۹ | .. | آخری تین سال                      |
| ۱۶۱ | .. | فتح نوبہ                          |
| ۱۶۲ | .. | معرکہ ابلستین                     |
| ۱۶۵ | .. | سفر آخرت                          |

پچھوڑے ہوئے کام کی تکمیل

- ۱۶۷ .. ..
- ۱۶۹ .. .. الملک السعید برکہ خاں
- ۱۷۰ .. .. الملک الجاؤل بدر الدین سلا مش
- ۱۷۰ .. .. الملک المنصور سیف الدین قلاؤون
- ۱۷۱ .. .. شرف الدین سنجر کی بغاوت
- ۱۷۲ .. .. تاتاریوں کا حملہ
- ۱۷۳ .. .. ایلیخانی سفارت
- ۱۷۵ .. .. بیمارستان ایکیر المنصوری کا قیام
- ۱۷۶ .. .. صلیبیوں کے خلاف جہاد
- ۱۷۷ .. .. فتح طرابلس الشام
- ۱۷۸ .. .. وفات
- ۱۷۸ .. .. الملک الاشرف صلاح الدین خلیل
- ۱۷۹ .. .. فتح عکہ
- ۱۷۹ .. .. ارض مقدس سے صلیبیوں کا انجلاؤ
- ۱۸۱ .. .. سلطان پیرس کے ذاتی اوصاف
- ۱۸۳ .. .. شکل و شباہت
- ۱۸۳ .. .. شوق جہاد
- ۱۸۴ .. .. شجاعت
- ۱۸۶ .. .. سخت کوشی
- ۱۸۷ .. .. دینداری
- ۱۸۸ .. .. جوہ و سخا



|     |    |    |                          |
|-----|----|----|--------------------------|
| ۱۸۹ | .. | .. | اہل علم و فضل کی قدروانی |
| ۱۹۱ | .. | .. | مختلف زبانوں پر عبور     |
| ۱۹۲ | .. | .. | معدلت گسٹری              |
| ۱۹۳ | .. | .. | بیدار معنری              |
| ۱۹۸ | .. | .. | عسکری قابلیت             |
| ۲۰۲ | .. | .. | فہم و تدبیر              |
| ۲۰۲ | .. | .. | شگفتہ مزاراجی            |
| ۲۰۶ | .. | .. | نظم مملکت                |
| ۲۰۹ | .. | .. | نظام حکومت               |
| ۲۰۹ | .. | .. | سربراہ مملکت             |
| ۲۱۰ | .. | .. | حکومت کی ہیڈت ترکیبی     |
| ۲۱۱ | .. | .. | نائب السلطان             |
| ۲۱۲ | .. | .. | وزیرالصحتہ               |
| ۲۱۲ | .. | .. | استادوار                 |
| ۲۱۲ | .. | .. | ووادار                   |
| ۲۱۲ | .. | .. | امیرجاندار               |
| ۲۱۳ | .. | .. | امیرمجلس                 |
| ۲۱۳ | .. | .. | امیرالسلام               |
| ۲۱۳ | .. | .. | راس نوبتہ الامراء        |
| ۲۱۳ | .. | .. | صاحب دیوان النشاء        |
| ۲۱۴ | .. | .. | مجلس العسکر              |

|     |    |    |    |                           |
|-----|----|----|----|---------------------------|
| ۲۱۵ | .. | .. | .. | امیر البحر                |
| ۲۱۵ | .. | .. | .. | امیر التعمیر              |
| ۲۱۵ | .. | .. | .. | حکومت کے اہم شعبے         |
| ۲۱۶ | .. | .. | .. | ملک کی انتظامی تقسیم      |
| ۲۱۸ | .. | .. | .. | صیغہ عدالت                |
| ۲۱۹ | .. | .. | .. | محکمہ قضا                 |
| ۲۲۰ | .. | .. | .. | عدالت عظمیٰ               |
| ۲۲۲ | .. | .. | .. | صیغہ احتساب               |
| ۲۲۵ | .. | .. | .. | مالیات                    |
| ۲۲۶ | .. | .. | .. | وسائل آمدنی               |
| ۲۲۶ | .. | .. | .. | ترقی زراعت                |
| ۲۲۷ | .. | .. | .. | ناجاہزہ محصولات کی موقوفی |
| ۲۲۷ | .. | .. | .. | حکومت کی آمدنی میں اضافہ  |
| ۲۲۷ | .. | .. | .. | ڈاک کا انتظام             |
| ۲۲۸ | .. | .. | .. | محکمہ ڈاک کا مرکز         |
| ۲۲۸ | .. | .. | .. | ڈاک کی چوکیاں یا ڈاک خانے |
| ۲۲۹ | .. | .. | .. | محکمہ ڈاک کا افسر اعلیٰ   |
| ۲۲۹ | .. | .. | .. | ڈاک کی تختیاں             |
| ۲۳۰ | .. | .. | .. | ہوائی ڈاک                 |
| ۲۳۳ | .. | .. | .. | فوج                       |
| ۲۳۳ | .. | .. | .. | بڑی فوج                   |

|     |   |   |   |                                   |
|-----|---|---|---|-----------------------------------|
| ۲۳۵ | - | - | - | جنودِ حلقہ                        |
| ۲۳۶ | - | - | - | فوج کا لباس                       |
| ۲۳۷ | - | - | - | اسلحہ                             |
| ۲۳۸ | - | - | - | جاگیریں                           |
| ۲۳۹ | - | - | - | بحری فوج                          |
| ۲۴۰ | - | - | - | محکمہ پولیس                       |
| ۲۴۱ | - | - | - | صنعت و حرفت اور تجارت             |
| ۲۴۱ | - | - | - | صلاح الدین سے پیرس تک             |
| ۲۴۲ | - | - | - | مشرق و مغرب کی تجارت کا مرکز      |
| ۲۴۳ | - | - | - | اہم برآمدات                       |
| ۲۴۳ | - | - | - | اہم درآمدات                       |
| ۲۴۴ | - | - | - | اہم ایشیائے تجارت اور ان کے مراکز |
| ۲۴۶ | - | - | - | صیغہ رقاہ عام (پبلک ورکس)         |
| ۲۴۷ | - | - | - | سڑکیں                             |
| ۲۴۷ | - | - | - | اوقات                             |
| ۲۴۸ | - | - | - | مدارس و مکاتب                     |
| ۲۵۱ | - | - | - | شفابخانے                          |
| ۲۵۳ | - | - | - | نہریں                             |
| ۲۵۳ | - | - | - | تعمیرات                           |
| ۲۵۴ | - | - | - | اپنی                              |
| ۲۵۴ | - | - | - | ۲۔ جہاز سازی کے کارخانے           |
| ۲۵۴ | - | - | - | ۳۔ بندرگاہوں کی اصلاح             |

|     |                                   |
|-----|-----------------------------------|
| ۲۵۴ | ۴۔ سرزمین اور عثمان خانے          |
| ۲۵۵ | ۵۔ محجر روضہ منوبی                |
| ۲۵۵ | ۶۔ مساجد                          |
| ۲۵۶ | ۷۔ قلعے اور شہر نیاپلیں           |
| ۲۵۷ | سلطان پیرس کے عہد کے چند اہل کمال |
| ۲۶۰ | علامہ ابن خلکان                   |
| ۲۶۲ | سید احمد البدوی                   |
| ۲۶۴ | ابن واصل                          |
| ۲۷۰ | شیخ الاسلام امام عزالدین دمشقی    |
| ۲۷۴ | ابن عبدالظاہر                     |
| ۲۷۷ | علامہ ابن منظور                   |
| ۲۷۹ | سبط ابن الجوزی                    |
| ۲۸۰ | قاضی جمال الدین بن مالک طائی      |
| ۲۸۱ | قاضی بدر الدین ابن جماعت          |
| ۲۸۱ | ابن شداد حلبی                     |
| ۲۸۲ | قاضی عبدالرحمن بن قدامہ           |
| ۲۸۳ | ابوشامہ مقدسی                     |
| ۲۸۴ | ابن ابی اصیبعہ                    |
| ۲۸۷ | ابن النقیس                        |
| ۲۸۸ | قاری جمال الدین                   |
| ۲۸۸ | شیخ القراء کمال الدین مصری        |

۲۸۹ .. .. . شیخ محمد بن مکی صدقانی  
 ۲۹۰ .. .. . ابوالفضل مهندس مشقی و طبیب  
 ۲۹۰ .. .. . امام نووی

---

## اہم حواشی

۶۱ سیف الدین محمود قطوزی

۶۶ چنگیز خان

۸۱ اتا تار یوں کا مذہب

۱۱۶ خیام زرین

۱۲۰ ووقوز خاتون

۱۲۸ ابن العبری

۱۳۹ باسٹیلز

۱۴۰ ٹیلرز

۱۴۱ پانا

۱۴۱ شقیف عرون

۱۴۲ انطاکیہ

۱۴۶ ارمینیہ

۱۵۳-۱۵۲ المرقب

۱۶۰ ملک السعید کی جانشینی

۱۶۲ قطب الدین شیرازی

۱۸۰ فتح ارواد

۱۸۴ جولین سیر

- ٢٥٠ .. .. مدرسه نظاميه  
 ٢٦٠ .. قاضى ابن شادو مصنف محاسن الكيوسفيه  
 ٢٦٢ .. .. ابوالفداء  
 ٢٦٨ .. .. لوجاره ونوسيرا  
 ٢٨٥ .. .. ابن بيطار  
 ٢٨٥ .. .. ابوبكر صقلى  
 ٢٨٥ .. .. ابن الانوار  
 ٢٨٦ - - عز الدين ايدمر الحلى
-





# انتساب

اُنٹے شاہین نوجوانوں کے نام

جو

کفر و الحاد اور فسق و فجور کی طاغوتی قوتوں

کو

شکست دے کر

پاکستان میں اسلام اور صرف اسلام

کو

غالب کرنے کا عزم رکھتے ہیں

(طالب الہاشمی)



# مردِ مسلمان

منٹ نہیں سکتا کبھی مردِ مسلمان کہ ہے

اُس کی اذاتوں سے فاش بہرِ کلیم و حلیل

اُس کی زمین بے حد و اس کا افق بے تغیر

اُس کے سمندر کی موج و جہم و دینیوب و نیل

اس کے زمانے عجیب اُس کے فسانے عریب

عہدِ کہن کو دیا اس نے پیامِ رحیل

ساقی اربابِ فوق، فارس میدانِ شوق

بادہ ہے اس کا رقیق، تیغ ہے اس کی ایل

مردِ سپاہی ہے وہ، اس کی زرہ لا الہ

سایہ شمشیر میں اس کی پنہ لا الہ

(اقبالؔ)



بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

## دیباچہ

مُحَمَّدًا وَنَسْتَعِينُهُ وَنُصَلِّي عَلَى رَسُولِهِ الْكَرِيمِ ۝

ساتویں صدی ہجری (تیرھویں صدی عیسوی) کے عین وسط میں — جب بغداد کی عباسی خلافت کا انحطاط انتہا کو پہنچ چکا تھا، قاہرہ کی فاطمی خلافت دم توڑ چکی تھی، سلجوقی، زنگی اور ایوبی حکمران اپنی طاقت کو باہمی چیلنجوں میں ختم کر چکے تھے، یوسف صدیق اور فرعون کی سرزمین مصر میں چشم فلک نے ایک عجیب نظارہ دیکھا، دشت قبحاق — قزوق اور کوہ قاف کے سفید قام باشندے جو چنگیز خاں کی دستنک "تاتار گروی" میں غلام بنا کر اہل مصر کے ہاتھ فروخت کیے گئے تھے، مصر کے تاج تخت کے مالک بن گئے۔ اور پھر پونے تین سو سال تک بحر و بر پر اس شان سے

حکمرانی کی کہ مشہور مستشرق "پروفیسر فلپ کے حتمی" کے بیان کے مطابق: "مشرق و مغرب کا کوئی حکمران ان کی برابری کا دم نہیں بھر سکتا تھا اور غالباً اس عرصہ میں، کوئی مسلمان حکمران ان پر سبقت نہ لے جا سکا۔ انہوں نے تاتاریوں کا سیل روک دیا تھا۔ شام (فلسطین) کا چپہ چپہ صلیبیوں سے خالی کر لیا تھا۔ شام و لبنان کے عجیب و غریب عقائد کے حامل، مخالف فرقوں کو کچل ڈالا تھا اور اہل سنت کی برتری

قائم کر دی تھی۔ ان کی مملکت بہت وسیع اور محفوظ تھی جس میں مصر، شام، لبنان، فلسطین اور حجاز شامل تھے۔ وہ اپنی مرضی کے مطابق جو طریقہ چاہتے اختیار کرتے اور بدلے ہوئے حالات میں جس مسلک پر چاہتے گامزن ہوتے۔ (تاریخ لبنان از حتمی)

فی الواقع ہمایک مصر کا وزیر حکومت تاریخ اسلام کا ایک شاندار باب ہے ان غریب الوطن سفید فام غلاموں کو مصر کے تاج و تخت تک جن حالات میں سالی حاصل ہوئی وہ قُلِّكَ الْيَوْمَ نَدَاؤُهَا بَيْنَ النَّاسِ ط کی صحیح تفسیر پیش کرتے ہیں۔ الملک الظاہر سلطان رکن الدین بیبرس انہی غریب الدیار غلاموں کی جماعت کا ایک فرد تھا۔ وہ دمشق کی منڈی میں ایک حقیر رقم پر فروخت ہوا اور پھر ایک دن اپنی غیر معمولی صلاحیتوں اور زحمت کی یاوری کی بدولت مصر کے تاج و تخت اور خزان کا مالک بن گیا اس کی زندگی کے حالات پڑھ کر معاصدنا حضرت یوسف علیہ السلام کی زندگی کے نشیب و فراز کا نقشہ آنکھوں کے سامنے کھینچ جاتا ہے۔

سلطان بیبرس کہنے کو تو اپنے سلسلہ (ہمایک بحری) کا چوتھا حکمران تھا لیکن حقیقت میں وہ پہلا مملوک فرماں روا تھا جس نے مملوک سلطنت کی بنیادیں استوار کیں اور اس کو ایک ایسی عالمی طاقت بنا دیا جس کا نام سن کر دشمنان اسلام کے جسموں پر لرزہ طاری ہو جاتا تھا۔ سلطان کا سب سے بڑا کارنامہ یہ ہے کہ اس نے ایک نڈر مجاہد، ایک عظیم مدبر اور ایک دور بین سیاست دان کی طرح مسائل و معاملات کا حلستندہ جائزہ لیا اور اپنی قوم کو شکستہ دلی اور لپیٹ ہمتی کی آغوا گہرائیوں سے نکال کر اسے دشمن کے مقابلہ پر ایک سیسہ پلائی ہوئی دیوار بنا دیا اور دشمنان اسلام کو ایک غیر فانی عزم کے ساتھ لٹکار کر اپنی قوم کی قوت بحال کو مہمیز لگائی۔ وہ ایک ایسے نازک اور تراشوب دور میں جبریلہ عالم پر نمودار ہوا جب مسلمان تقریباً پورے صدیوں سے صلیبی طالع آزمائوں

کی ستمرازیوں کا ہدف بنے ہوئے تھے اور وہی سہی کسے فتنہ تاتار نے پوری کر دی تھی۔  
وحشی تاتاریوں کی بربریت اور غارت گری نے ان کی قوتِ عمل کو مفلوج کر کے رکھ دیا تھا  
اور ان پر ایسی دہشت طاری ہو چکی تھی کہ مؤرخ کا قلم اسے احاطہ تحریر میں لاتے ہوئے  
کاتب اٹھتا ہے۔

علامہ ابن اثیر نے اس عبرت ناک صورتِ حال کا تجزیہ کرتے ہوئے لکھا ہے کہ  
”اللہ نے سب کے دلوں میں ایسی دہشت ڈالی ایسے ایسے

واقعات ظہور پذیر ہوئے جو کسی کے دہم و گمان میں بھی نہ آ سکتے تھے۔

ایک شخص کی روایت ہے کہ ایک تاتاری ایک گاؤں میں داخل ہوا  
اور ایک ایک کر کے لوگوں کو قتل کرنے لگا کسی کو اتنی جرات نہ ہوئی

کہ اس اکیلے آدمی کے مقابل اپنا بچاؤ کر سکتا۔ میں نے یہ روایت بھی  
سنی ہے کہ ایک تاتاری اپنے ایک قیدی کو قتل کرنا چاہتا تھا اتفاقاً  
سے اس وقت اس کے پاس کوئی ہتھیار نہ تھا۔ اس نے قیدی کو زین

پر لیٹ جانے کا حکم دیا اور اپنی تلوار ڈھونڈنے چلا گیا۔ کافی دیر بعد  
وہ تلوار لے کر آیا اور بد نصیب قیدی کو قتل کر دیا جس کو اتنا حوصلہ نہ

پڑا کہ اٹھ کر بھاگ سکے۔ ایک اور شخص نے مجھ سے یہ واقعہ بیان کیا  
کہ میں سترہ آدمیوں کے ساتھ سڑک پر چلا جا رہا تھا کہ ہم نے ایک

تاتاری سوار کو آنے دیکھا اس نے ہمیں حکم دیا کہ ہم ایک دوسرے  
کی مشکیں کس دیں۔ میرے ساتھ بلا تامل اس کے حکم کی تعمیل پر آیا وہ

ہو گئے۔ میں نے اُن سے کہا کہ یہ آدمی اکیلا ہے اسے قتل کر کے اپنی  
جانیں بچالو۔ انہوں نے جواب دیا کہ ہمیں ڈر لگتا ہے۔ میں نے کہا تو

پھر یہ ہم سب کو مار ڈالے گا اس کو حکم کر دو شاید اللہ ہمیں بچائے لیکن

کے میرے ساتھ ہی اس قدر دہشت زدہ تھے کہ ان کو اس اکیلے تاناری پر  
ہاتھ اٹھانے کی ہمت نہ ہوئی۔ اللہ نے مجھے جرات عطا کی اور میں  
نے اپنے خنجر سے اس تاناری کو ہلاک کر ڈالا اور اس طرح ہم حسب  
کی جانیں بچ گئیں۔

تاناریوں کی خون آشامی کی یہ کیفیت تھی کہ بعض مقامات پر انہوں نے کتوں  
اور بلیوں تک کو زندہ نہ چھوڑا۔ ان کی وحشیانہ بیچارے مسلمان ملکوں کو اس طرح  
دہشت زدہ کر دیا جیسے درختوں پر پالا کرتا ہے۔ تاناری اپنی فتوحات کے نشہ  
میں اس قدر بدست ہو گئے تھے کہ کھلم کھلا "مسلمانوں کے خدا" کا مذاق اڑاتے تھے  
نہ ان کا کوئی ضابطہ اخلاق تھا اور نہ وہ رحم سے آشنا تھے۔ ابن اثیر کا بیان ہے کہ  
"نیشاپور کے ایک شخص نے اپنا چشم دید واقعہ بیان کیا کہ وہ ایک  
مکان میں چھپ کر دوستان سے مسلمانوں کے قتل عام کا دل دوز منظر  
دیکھ رہا تھا۔ جب تاناری کسی مسلمان کو شہید کرتے تو نعرہ بکیر کا مذاق اڑا  
کہ "اللہ الہی" چلاتے۔ جب قتل عام کر چکے تو عورتوں کو پکڑ کر لے گئے  
میں نے انہیں سوار ہوتے، اپنی زبان میں گیت گاتے اور "اللہ الہی"  
چلاتے سنا۔"

ہلا کو نے جب عروس البلا و بغداد کو تانحت و تاراج کیا اور اس کے بعد عراق اور  
شام کے دوسرے شہروں کو بڑی طرح پامال کیا تو وہاں سے مظلوم مسلمانوں کے تباہ  
حال تانے پناہ لینے کے لیے مصر میں داخل ہونے لگے۔ انہوں نے تاناریوں کی بربریت  
اور ان کی بے پناہ قوت کی داستانیں اہل مصر کو سنائیں تو ان میں بھی دہشت پھیل گئی اور  
وہ سمجھنے لگے کہ تاناری با فرق الفطرت قوت کے مالک ہیں اور ان کو کوئی شکست نہیں  
دے سکتا۔ انہی حالات میں رکن الدین بیبرس آگے بڑھا اور نقصانے مصر سے دہشت



اور خوف کی تاریکیوں کو دور کرنا شروع کیا اس نے لوگوں کو بتایا کہ:  
 "اگر تم اللہ تعالیٰ پر کامل بھروسہ رکھیں اور پوسے عزم و یقین کے ساتھ  
 تاتاری کافروں سے نبرد آزما ہوں تو کوئی وجہ نہیں کہ ان کو شکست نہ دی  
 جاسکے۔"

اس سے پہلے بیس صلیبیوں کے خلاف کئی معرکوں میں غیر معمولی عسکری صلاحیتوں  
 کا مظاہرہ کر چکا تھا اور اپنی بے مثل شجاعت اور جذبہ بہادری کی بدولت مصر میں بڑی  
 عزت و احترام کی نظر سے دیکھا جاتا تھا۔ اہل مصر نے اس کی آواز میں بڑا وزن محسوس کیا  
 اور پھر جب اس نے مملوک سر فرشتوں اور دوسرے مجاہدین کو بڑی تیزی سے منظم کرنا شروع  
 کیا اور ان کو مغلوں کا طریق جنگ اور ان کے مخصوص فنون حرب سکھائے تو اہل مصر  
 کو محسوس ہوا کہ یاس و دہشت کے گھپ اندھیرے سے امید کی شعاعیں بھوٹ  
 رہی ہیں۔ تیسرے مملوک فرماں روا ملک مظفر کے دربار میں ہلاکو کے سفیروں نے گستاخی  
 اور بدتمیزی کا مظاہرہ کیا تو بیس کے ایما پر ان کے سر قلم کرا دیئے گئے اور قاہرہ کے  
 بازاروں میں ان کی لاشوں کی تشہیر کی گئی اس طرح بیس نے تاتاریوں کی قوت و  
 شوکت کا کھلے بندوں تمسخر اڑایا اور ان کو ایک نہ بھولنے والا سبق دینے کی ذمہ داری  
 قبول کی چند دن بعد جب اس نے معرکہ عین جالوت میں ناقابل تسخیر تاتاریوں کو ذلت  
 شکست دی تو مصر کی فضا سے دہشت اور بے یقینی کی تاریکیاں بکس کر فوراً ہو گئیں۔ اور  
 تمام عالم اسلام میں بیس کے نام کا ڈنکا بجنے لگا۔ فی الحقیقت بیس کی اس کامیابی  
 نے تاریخ کا رخ پلٹ کر رکھ دیا۔ وہ صرف تاتاریوں ہی کا کامیاب حریف ثابت نہ  
 ہوا بلکہ اس نے صلیبیوں کو بھی پے درپے ایسی کمر توڑ شکستیں دیں کہ ان کے قدم ارض  
 شام و فلسطین سے اکھڑ گئے۔ پھر وہ مارا ستین باطنیوں کی طرف متوجہ ہوا جنہوں  
 نے انتہائی نازک وقت میں اسلام کے بدترین دشمن، فرانسیسی بادشاہ لوئی نہم سے

محبت کی پینگیں بڑھانے کی کوشش کی تھی اور اس کو انواع و اقسام کے تحائف بھیج کر اپنی اٹوٹ رفاقت کا یقین دلایا تھا۔ پیرس نے ایک مجاہد از یلغار کر کے ان کی شامی پناہ گاہوں کو جبر بنیاد سے اکھاڑ پھینکا اور ان کی سیاسی اور عسکری قوت کو ہمیشہ کے لیے ختم کر کے رکھ دیا۔

علامہ جلال الدین سیوطی نے پیرس کے عسکری کارناموں پر تبصرہ کرتے ہوئے لکھا ہے کہ:

”دوسری بڑی بڑی حکومتوں کے مقابلہ میں ملک ظاہر کی حکومت ایسی تھی جیسے ایک سمندر کے سامنے کوئی نہریا چھوٹا سا دریا لیکن خدا کو یہی منظور تھا کہ دین حق میں جو رخنے پڑ گئے تھے اور مسلمانوں پر جو آفتیں یکے بعد دیگرے نازل ہو رہی تھیں ان سب کا دفعیہ اس چھوٹی طرسی حکومت کے ذریعہ ہو۔“ (حسن المحاضرہ فی اخبار مصر والقاہرہ للسیوطی ج ۱)

مصر کے دوسرے عباسی خلیفہ الحاکم بامر اللہ نے سلطان پیرس کی خدمات کا اعتراف ان الفاظ میں کیا۔

”جب دشمن ہمارے گھروں میں گھس آئے تھے اور انہوں نے قیامت کے فتنے برپا کر رکھے تھے ایسے نازک وقت میں سلطان کن الدین پیرس اپنی چھوٹی سی سلطنت کے باوجود امت مسلمہ کی امداد و اعانت کے لیے اٹھا اور اس نے کفر کے لشکروں کو منتشر کر کے رکھ دیا۔“

سلطان پیرس کی یہ درخشاں عسکری کامیابیاں ہی تھیں جنہوں نے متعصب مغربی مورخین سے بھی کسی نہ کسی صورت میں اس کی عظمت کا اعتراف کرایا۔ دور حاضر میں اہل مغرب تاریخ نویسی اور شخصیت نگاری کے فن میں معراج کمال پر پہنچے ہوئے ہیں لیکن یہ دیکھ کر تعجب بھی ہوتا ہے اور دیکھ بھی کہ ان میں سے اکثر جب

تاریخ اسلام کے موضوع پر قلم اٹھاتے ہیں تو بڑی بے دردی اور نا انصافی سے حقائق  
 دسج کرتے ہیں اور اسلام کی جلیل القدر شخصیتوں پر کچھ پڑا اچھا لکھنے کا کوئی موقع ہاتھ سے  
 میں جانے دیتے۔ اپنے معمول کے مطابق انہوں نے سلطان بیبرس کی شخصیت اور  
 رواد کے بارے میں بھی مقدور بھروسہ چکانی کی ہے لیکن اس کے باوجود وہ یہ اعتراض  
 لڑنے پر مجبور ہوئے ہیں کہ بیبرس اپنی عسکری صلاحیتوں اور جنگی کارناموں کے لحاظ  
 سے "صلاح الدین ثانی" یا "نیا صلاح الدین" تھا اور ایک سپاہی کی حیثیت سے  
 اس کا مرتبہ مشہور رومی جرنیل جو لیس سیر سے کسی صورت میں کم نہیں تھا۔  
 یوں تو سلطان بیبرس کے عسکری کارنامے ہی اس کو نامور ان اسلام کی  
 میں ممتاز مقام لانے کے لیے کافی ہیں لیکن اس کی سیرت کا بغور مطالعہ کیا جائے تو  
 معلوم ہوگا کہ سیاسی و اقتصادی معاشرتی اور فہم کے میدانوں میں بھی اس کے  
 کارنامے کچھ کم اہمیت نہیں رکھتے۔ اس نے ملک کے اندر انتشار پسندانہ رجحانات  
 کا خاتمہ کر کے قوم کے مختلف عناصر کو باہم مربوط کر دیا اور اپنی خارجہ حکمت عملی کے وضع  
 کرنے میں ایسے عجیب العقول فہم و تدبیر سے کام لیا کہ اقوام عالم میں مملوک حکومت  
 کا مرتبہ اور وقار بہت بلند ہو گیا۔ دوست اس کی دوستی پر فخر کرتے تھے اور دشمن  
 اس کے نام سے تھرتھرتے تھے۔ پھر اس نے مصر میں خلافت عباسیہ کا احیاء کرنے  
 مسلمانوں کی امنگوں کو نہایت شان دار انداز میں پورا کیا اور نیلے اسلام جوان کو خلافت  
 کے بغیر بے نور نظر آ رہی تھی پھر انوار خلافت سے جگمگانے لگی۔ اس کے ساتھ ہی اس  
 نے ملک میں کتاب و سنت کے مطابق ایک مثالی نظام حکومت اور معاشرہ قائم کرنے  
 کی بھرپور جدوجہد کی اور اس میں بڑی حد تک کامیابی حاصل کی۔ اس کے عہد میں اعلیٰ  
 اقتصادی نظام اور روز افزائی تجارت نے مملوک سلطنت کے باشندوں کو دنیا کے  
 خوشحال ترین لوگوں میں شامل کر دیا اور اس کے دنیاوی کاموں نے فیض عام کے ایسے

چشمے جاری کر دیے جن سے اہل مصر و شام صدیوں تک تنفیض ہوتے رہے بغرض  
سلطان بیبرس کی زندگی کے جس پہلو پر بھی نظر ڈالی جائے وہ تاریخ اسلام کی ایک  
مہتمم بالشان شخصیت نظر آئے گا۔ یہ درست ہے کہ ایک انسان ہونے کی حیثیت  
سے اس کی ذات عیوب و نقائص سے خالی نہ تھی لیکن اس میں کوئی شبہ نہیں کہ  
اس کے محاسن اس کی کمزوریوں اور خامیوں پر غالب تھے اور کوئی وجہ نہیں کہ اس  
کو ملت اسلامیہ کے اعظم رجال و ابطال میں نہ شمار کیا جائے۔ زمانہ حال کے ایک  
فاضل مؤرخ مولانا سعید احمد اکبر آبادی نے اپنی گرں مایہ تصنیف "مسلمانوں کا تریخ  
زوال" میں بالکل صحیح لکھا ہے کہ

"ملک ظاہر بیبرس کے (عسکری) کارناموں کے علاوہ اس  
کے ذاتی اخلاق و عادات سے متعلق مؤرخین نے جو واقعات نقل  
کیے ہیں ان سے یہ چلتا ہے کہ ملک ظاہر کہنے کو غلام تھا مگر درحقیقت  
اس پر عباسی خاندان کے کسی بڑے بڑے شریف النسب خلفا  
قربان کیے جاسکتے تھے۔"

بیبرس نے اپنے کردار و عمل کے جو ہمہ گیر اور ویرا اثرات صفحہ تاریخ پر چھوڑے  
ان کا اندازہ اس بات سے کیا جاسکتا ہے کہ اس کے تہو و شجاعت، جو المزدکی  
فرما دہی اور خدمتِ خلق کی داستانیں صدیوں تک عرب ممالک کے باشندوں کو گرائی  
رہیں۔ یہ داستانیں آج کے ترقی یافتہ سائنسی دور میں بھی عربی تاریخ و ثقافت اور اس  
کا سرمایہ ہیں۔ فرق صرف اتنا ہے کہ پہلے یہ اور اسی قسم کی دوسری داستانیں عربوں کے  
جذبہ جہاد کے لیے ہمہیز کا کام دیتی تھیں اور آج یہ عرب ممالک کے قہور خانوں اور  
مجالس لطیف و تفریح میں نشاطِ طبع کا سامان مہیا کرتی ہیں۔ گو ان داستانوں میں سے  
اکثر پرومان اور اسرار کے دبیز پڑے چرچاھے گئے ہیں جو تاہم یہ حقیقت اپنی جگہ

پر برتر رہتی ہے کہ رکن الدین بیرس ایک سراپا عمل مسلمان تھا جس کے سینے  
 میں ایمان اور یقین کی شمع فروزاں تھی۔ اس کا ذل عوام الناس کے دلوں کے ساتھ  
 دھڑکتا تھا اور وہ ہمیشہ ان کے دکھ درد دور کرنے کے لیے بتیاب رہتا تھا۔  
 مشرقی اور مغربی مورخین میں سے اکثر نے بیرس کی قد آور شخصیت کو نظروں  
 سے اوجھل نہیں ہونے دیا۔ اور شاید یہ اوجھل ہو بھی نہیں سکتی تھی۔ اسی کا  
 نتیجہ ہے کہ دنیا کی متعدد زبانوں بالخصوص عربی میں بیرس کی سیرت پر کافی مواد موجود  
 ہے۔ بد قسمتی سے اس معاملہ میں اگر کوئی زبان بے مایہ ہے تو وہ "اردو" ہے اور یہ  
 دیکھ کر سخت حیرت ہوتی ہے کہ تاریخ اسلام کے اس تجلیتے فرزند پر اس سے پہلے  
 اردو زبان میں آج تک ایک کتاب بھی نہیں لکھی گئی۔ اگر اس کو مولانا الطاف حسین حالی  
 علامہ شبلی، مولانا محمد حسین آزاد، مولانا عبدالرزاق کانپوری اور مولانا سید سلیمان  
 ندوی جیسے کسی انشا پرداز اور مؤرخ کا قلم میسر آجاتا تو جہاں اردو زبان میں ایک عظیم  
 شہ پائے کا اضافہ ہو جاتا وہاں ہماری تاریخ کے اس "صلاح الدین ثانی" کی بقلمونی  
 شخصیت کے خدو خال نہایت احسن طریقے سے نمایاں ہو جاتے اور آج اردو دان  
 طبقہ کی اکثریت اس کے بارے میں بالکل اندھیرے میں نہ ہوتی۔ علم و ادب کے  
 ان شہسواروں کی تقلید بھلا آج کسی سے کیا ہوگی تاہم کچھ نہ کرنے سے کچھ تو کرنا بہتر  
 ہے۔ اسی لیے راقم الحروف نے اپنی علمی بے بضاعتی اور مذکورہ بندرگوں کی خاک پا  
 کو اپنے لیے تو تیار سے سہتم سمجھنے کے باوجود یہ جرات کی ہے کہ اردو دان طبقہ کو  
 الملک الظاہر رکن الدین بیرس سے روشناس کرائے جس کے زہین کار ناموں  
 پر ملت اسلام یہ سجا طور پر فخر کر سکتی ہے۔ مولف کھلے بندوں اعتراف کرتا ہے  
 کہ وہ یہ دعویٰ کرنے کا ہرگز اہل نہیں ہے کہ اس کی یہ حقیر تالیف سیرت نگار ہی کے  
 اصولوں اور تقاضوں کو کما حقہ پورا کرتی ہے تاہم اس ضمن میں یہ عرض کرنا بیجا نہ

ہوگا کہ اس کتاب کو معرضِ تحریر میں لانے کے محرک، اصحابِ فہم و دانش کے خیالات  
 ہوئے ہیں جو انہوں نے قوموں کی نفسیات کا تجزیہ کرتے ہوئے ظاہر کیے ہیں۔ ان خیالات  
 کا خلاصہ یہ ہے کہ اسلاف و اکابر کے حالات کسی قوم کو خوابِ غفلت سے جگانے کے  
 لیے تازیانہ کا کام دیتے ہیں اس لیے ہمارا فرض ہے کہ جن لوگوں نے اپنی جدوجہد اور  
 اخلاص میں عمل کی درخشندہ مثالیں چھوڑی ہیں، شخصیت پرستی اور شخصیت نگاری کے فرق  
 کو ملحوظ رکھتے ہوئے ان کی شخصیت اور کردار کو منظرِ عام پر لائیں تاکہ سچی عمل کے جاوہ  
 پر جو نشان انہوں نے چھوڑے ہیں وہ امتدادِ زمانہ کی گرد سے دھندلے نہ ہو جائیں۔  
 غالباً انہی خیالات کے زیر اثر "مسدس مدو جزر اسلام" کے نامور خالق مولانا  
 الطاف حسین حالی نے "حیاتِ سعدی" کے دیباچہ میں یہ الفاظ لکھے۔

"بیوگرافی ان بزرگوں کی ایک لازوال یادگار ہے جنہوں نے اپنی

نمایاں کوششوں سے دنیا میں کمالات اور نیکیاں پھیلانی ہیں اور جو  
 انسان کی آئندہ نسلوں کے لیے اپنی مساعی جمیلہ کے عمدہ کارنامے

چھوڑ گئے ہیں۔ خصوصاً جو قومیں علمی ترقیات کے بعد کستی اور تنزل کے

درجہ کو پہنچ جاتی ہیں، ان کے لیے بیوگرافی ایک تازیانہ ہے جو ان کو خوابِ

غفلت سے بیدار کرتا ہے۔ جب وہ اپنے اکابر و اسلاف کی زندگی کے

حالات اور ان کے کمالات دریافت کرتے ہیں تو ان کی غیرت کی رگ

سُکت میں آتی ہے اور اپنی کھوئی ہوئی عزت اور برتری کے دوبارہ حاصل

کرنے کا خیال ان کے دلوں میں پیدا ہوتا ہے۔ ہمارے نزدیک

مسلمانوں کے اکابر و اسلاف میں بھی ایسے بہت سے افراد نکلیں گے

جن کے بڑے بڑے کام اور ان کے کمالات قوم کے لیے سرمایہٴ افتخار

ہیں اور موجودہ نسلوں کا فرض ہے کہ ان کا نام زندہ کرنے اور آئندہ نسلوں

کا دل بڑھانے کے لیے ان کے فضائل اور کمالات دیا میں شائع کریں۔  
 لیکن اس کے ساتھ ہی مولانا عبدالرزاق کانپوری کے مندرجہ ذیل الفاظ بھی  
 یاد رکھنے کے قابل ہیں جو انہوں نے اپنی شہرہ آفاق تصنیف "البراکہ" کے دیباچہ میں لکھے۔  
 "عموماً تصنیف اور تالیف کی راہیں نہایت سخت اور خطرناک  
 ہیں۔ خصوصاً تاریخ نویسی اور سیرت نگاری یہ وہ سنگ کلاخ گھاٹیاں ہیں  
 کہ جن میں قلم کا مسافر بھی (باوجودیکہ پتھر کی چھاتی اور لوہے کا کلیجہ رکھتا  
 ہے) اہر ہر قدم پر ٹھوکرین کھاتا ہے۔"

یہ صورت راقم الحروف سے بڑا یا بھلا جو کچھ بھی بن پڑا ہے اس کتاب کی  
 صورت میں پیش کر دیا ہے اسے اس بات کا بخوبی احساس ہے کہ اس کتاب کو سلطان  
 رکن الدین بیرس کا جامع تذکرہ کہنا محض تعلی ہے تاہم اسے یہ امید ضرور ہے کہ یہ کتاب  
 ایک ایسی بنیاد کا کام لے گی جس پر آئندہ ایک رفیع الشان عمارت تعمیر کی جاسکے گی۔  
 اگر قارئین کرام، مؤلف یا ناشرین کو اس کتاب کے استقام سے آگاہ کر سکیں تو یہ ان کا  
 احسان اور کرم ہوگا۔ **حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ نِعْمَ الْمَوْلَى وَنِعْمَ النَّصِيرُ**  
**رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ**

احتراماً  
 طالب الهاشمی

لاہور

۵ ذی قعدہ ۱۳۸۸ھ

۲۲ جنوری ۱۹۶۹ء





مہا ایک مصر کے پیش رو



## خلافت عباسیہ — عہدِ عہد

۱۳۲ ہجری میں جب بنو عباس کے ہواخواہوں نے ابوسلم خراسانی کی قیادت میں بنو امیہ کے قصرِ خلافت کو زمین بوس کر دیا تو عباسیوں نے اس کے کھنڈروں پر امویوں کے خون کا چھڑکاؤ کر کے اپنی خلافت کی بنیاد رکھی۔ اگرچہ اس خلافت کے آغاز کے چھ سال بعد ہی ایک اموی شہزادے عبدالرحمن بن معاویہ (بن ہشام) نے اندلس (ہسپانیہ) میں ایک خود مختار حکومت قائم کر لی۔ تاہم سمندر پار کی اس اموی حکومت سے عباسی خلافت پر کوئی خاص اثر نہ پڑا اور وہ برابر ترقی کی منزلیں طے کرتی گئی یہاں تک کہ مامون الرشید (ابن ماردن الرشید) کے عہد میں اس کا آفتاب کمالِ نصف النہار پر چمکنے لگا اور اس کے جاہِ جلال نے تمام دنیا کی نگاہوں کو خیرہ کر دیا۔ لیکن ہر کمانے رازدالے مامون الرشید کے بعد اس عظیم سلطنت کا شیرازہ باندھنا شروع ہو گیا۔ زوال و انحطاط کا یہ سلسلہ دو سو برس تک جاری رہا۔ اس زمانے میں عباسی خلفاء محض نام کے خلفاء رہ گئے۔ اسے اقتدار ترک فرجیوں کے ہاتھ میں تقسیم کر کے کمزوری کا فائدہ اٹھا کر مختلف صوبوں کے حاکم خود مختار حکمران بن بیٹھے۔ ان کی شوہری اور قوت کا یہ حال تھا کہ خلفاء ان سے خوف کھاتے تھے اور ان کی مرضی کے بغیر ایک تنکا بھی نہیں توڑ سکتے تھے۔ نسبتاً یہاں جا رسید کہ پانچویں صدی

ہجری کے رابع اول میں عباسی خلافت ملنے کے قریب پہنچ گئی  
سلجوقی

عین اسی زمانے میں صفحہ عالم پر سلجوقیوں کا ظہور ہوا۔ یہ لوگ نہایت جفاکش اور  
راسخ العقیدہ مسلمان تھے اور شجاعت میں قرن اول کے عربوں سے مماثلت رکھتے تھے  
وہ دیکھتے ہی دیکھتے سرحد چین سے بحر ابیض کے سوا اہل تک اور عدن سے لے کر خوارزم  
اور انجانا تک چھا گئے۔ انہوں نے تمام چھوٹی بڑی خود مختار حکومتوں کو مٹا کر اسلامی سلطنت  
کو پھر متحد کر دیا اور اس کے ساتھ ہی خلیفہ عباسی کو رسمی طور پر اپنا پیشوا اور سربراہ تسلیم کر  
لیا۔ اس طرح سلجوقیوں کی عالمگیر قوت کے سہارے خلافت عباسیہ کا ٹٹھاتا ہوا چراغ پھر  
روشن ہو گیا۔

سلاجقہ عظام (طغرل بیگ)۔ الپ ارسلان اور ملک شاہ کا دور حکومت مسلمانوں  
کی اقبال مندی کے بہترین زمانوں میں شمار ہوتا ہے۔ اس زمانے میں مسلمان وسعت سلطنت  
شان و شوکت، رعیت و بددہ، طاقت و ثروت، تہذیب و معاشرت، اخلاق و روحانیت  
علم و ہنر، تحقیق و اجتہاد، غرض ہر لحاظ سے دنیا کی تمام قوموں پر سبقت لے گئے لیکن  
قسمتی سے یہ عہد زریں بہت مختصر ثابت ہوا۔ ۱۰۹۲ء میں ملک شاہ کی وفات  
کے معا بعد عظیم سلجوقی سلطنت میں زوال و انحطاط کے آثار نمودار ہو گئے۔ اس کی وجہ  
ملک شاہ کے جانشینوں کی خانہ جنگی تھی جس نے ملت اسلامیہ کو پھر انتشار اور  
پراگندگی میں مبتلا کر دیا۔

## حروب صلیبیہ کا آغاز

اس صورت حال کا فائدہ اٹھا کر یورپ کے صلیبی طالع آزمادوں نے بلا واسطہ  
پر یلیگار کردی اور ۱۰۹۶ء میں قونیا کی سلجوقی ریاست کو پامال کرنے کے بعد

انطاکیہ کا محاصرہ کر لیا۔ انطاکیہ کے بہادر مسلمانوں نے کئی ماہ تک ڈٹ کر مقابلہ کیا۔ لیکن جب ان کو کسی طرف سے کوئی مدد نہ پہنچی تو وہ ہتھیار ڈالنے پر مجبور ہو گئے۔ انطاکیہ پر اپنا قبضہ مستحکم کر کے صلیبیوں کا طوفانِ بدمیزگی بلا و شام و فلسطین میں پھیل گیا۔ یہاں تک کہ ۱۰۹۳ء میں یروشلم (بیت المقدس) پر بھی قبضہ کر لیا۔ اس طرح ایک لمان مؤرخ کے قول کے مطابق مسلمانوں نے عیسائیوں کے ہاتھ سے پہلی مرتبہ ایسی فاش شکست کھائی۔ کہ خالد بن ولیدؓ سے لے کر الپ ارسلان تک تمام غازیانِ اسلام کی سرکردہ لشکریوں پر پانی پھر گیا۔ یہ خانہ جنگی کا سب سے زیادہ ہولناک نتیجہ تھا۔

### مسلمانوں کی بے بسی

ایڈیسیہ (الریہ) انطاکیہ اور یروشلم کے بعد صلیبیوں نے آہستہ آہستہ عکہ، صور، طرابلس الشام اور دوسرے بہت سے شہر اور علاقے بھی مسلمانوں سے چھین لیے اور وہاں قتل و غارت اور لوٹ مار کا بازار گرم کر دیا۔ عباسی اور فاطمی خلافتوں کی کمزوری کا یہ عالم تھا کہ وہ "ٹک ٹک ویدم دم نہ کشیدیم" کا مصداق بنی ہوئی تھیں اور مسلمانوں کی بے بسی کا تماشا دیکھ رہی تھیں۔ دراصل ان میں اتنی سکت ہی نہ تھی کہ صلیبی جنونیوں کے طوفان کو روک سکیں۔ غرض فلسطین، شام اور لبنان کے مسلمانوں پر بڑا نازک وقت آ پڑا تھا۔ وہ کئی سال تک صلیبیوں کے وحشیانہ مظالم کی چٹائی میں پستے رہے۔

عبدالین زنگی

آخر غیرتِ حق کو جدت ہوئی اور اللہ تعالیٰ نے ایک چھوٹے سے مسلمان حکمران

کوسٹیلبیوں کے مقابلے پر کھڑا کر دیا جس نے صلیبی حملوں کے سیلاب کو روکنے کے لیے سر و سطر کی بازی لگادی۔ یہ مجاہد حلب اور موصل کا حکمران عماد الدین زنگی تھا اس نے صلیبیوں کو پے درپے شکستیں دے کر ان سے بہت سے شہر اور علاقے خالی کر لیے۔ عماد الدین کا ارادہ تھا کہ صلیبیوں کو تمام شام و فلسطین سے بہت دور و بگوش نکال دے لیکن بد قسمتی سے اس کا یہ ارادہ پورا نہ ہو سکا۔ کیونکہ ۱۱۴۶ء میں ایک بد بخت غلام نے اس کا چرخ حیات گل کر دیا۔ اس کی شہادت سے مسلمانوں کو جس قدر صدمہ ہوا، صلیبیوں کو اسی قدر خوشی ہوئی۔ چنانچہ قراشیسی مورخ موسیو میچاؤ لکھتا ہے کہ:

”عماد الدین زنگی کی موت کی خبر نے عیسائیوں کو اپنی شکستوں پر تسلی اور تسکین دی اور انہوں نے اس قدر مسرت کا اظہار کیا کہ گویا مسلمانوں کی تمام طاقت کو انہوں نے وقعتہ ”گرتے دیکھا ہے“

## نور الدین زنگی

عماد الدین شہید کے چھوٹے ہوئے کام کو اس کے نامور فرزند نور الدین زنگی نے جاری رکھا اور بہت جلد صلیبیوں کو یہ احساس کرادیا کہ عماد الدین کی شہادت پر ان کی خوشی بے جا تھی۔ اس کی پے درپے ضرروں سے صلیبیوں میں کھلبلی مچ گئی اور وہ اپنے کئی شہر اور قلعے نور الدین کے حوالے کرنے پر مجبور ہو گئے۔ صلیبیوں کو سب سے بڑا دھکا اس وقت لگا جب نور الدین نے ان کے ایک بڑے مستقر اور ارض مشرق میں پہلی صلیبی ریاست ”الریا“ (ایڈلسیہ) پر قبضہ کر لیا۔ ”الریا“ مسلمانوں کا قبضہ ہونے کی خبر یورپ کے عیسائیوں پر سچل بن کر گئی اور ان میں سخت بیجان کیا ہو گیا۔ چھوٹے سے حصہ میں انہوں نے ایک بڑا لشکر تیار کر لیا جس میں فرانس

اور جو منی کے باو شاہ بھی شامل تھے۔ یہ لشکر طوفان کی طرح ارض شام کی طرف بڑھا اور دمشق کو جا گھیرا۔ سلطان نور الدین اور اس کے بھائی سیف الدین غازی کو یہ خبر ملنے کی دیر تھی کہ وہ حلب اور موصل سے اپنی فوجیں لے کر دمشق کے مسلمانوں کی مدد کے لیے آ پہنچے۔ ان کو دیکھ کر حملہ آوروں پر ایسی ہیبت طاری ہوئی کہ وہ محاصرہ اٹھا کر فلسطین کی طرف بھاگ گئے۔ اس طرح دوسری صلیبی جنگ عیسائیوں کی شرمناک پسپائی پر منتج ہوئی۔ اس کے بعد سلطان نور الدین، مصر کی طرف متوجہ ہوا جو اس زمانے میں صلیبیوں کی سازشوں اور حملوں کا ہدف بنا ہوا تھا۔ سلطان نے اپنے سپہ سالار شیرکوہ کو فوج دے کر مصر بھیجا جس نے عیسائیوں کو شکست دے کر وہاں سے نکال دیا اور قاطمی خلیفہ العاضد کا وزیر بن کر مصر کی حکومت اپنے ہاتھ میں لے لی۔ جب کچھ عرصے کے بعد شیرکوہ نے وفات پائی تو قاطمی خلیفہ نے اس کے بھتیجے صلاح الدین یوسف بن نجم الدین ایوب کو اپنا وزیر مقرر کیا۔  $\frac{544}{1141}$  ھ میں صلاح الدین نے نور الدین کے حکم سے قاطمی خلافت کا خاتمہ کر دیا اور مصر میں بھی عباسی خلیفہ کا خطاب جاری کر دیا۔

سلطان نور الدین کی سب سے بڑی تمنا یہ تھی کہ بیت المقدس کو صلیبیوں کے پنجے سے چھڑائے لیکن اس کی زندگی نے وفات کی اور وہ  $\frac{569}{1173}$  ھ میں یہ تبتادل ہی میں لیے ہوئے فوت ہو گیا۔

سلطان نور الدین بڑا شجاع، منظم، خداترس اور عدلی پرور حکمران تھا۔ اس نے اپنے عہد حکومت میں خلافت راشدہ کی یاد تازہ کر دی اور اسلام دشمن طاقتوں کو کوہے کے چنے چبوا دیے۔

صلاح الدین ایوبی

نور الدین کی وفات کے بعد اس کا بیٹا الملک الصالح اسمعیل گیارہ برس کی عمر

میں تخت نشین ہوا لیکن اس کے ترک امر نے حصول اقتدار کے لیے اس میں رونا جھگڑنا شروع کر دیا۔ صلاح الدین نے ان کو مصر سے بار بار پیغام بھیجے کہ اپنے باہمی تنازعات کو ختم کر دیں لیکن ان پر کچھ اثر نہ ہوا۔ فی الحقیقت صلاح الدین کا عروج ان کے دل میں کانٹے کی طرح چبھ رہا تھا۔ انہوں نے اپنے بھڑکے تو کیا ختم کرنے تھے ملک صالح کو بھی اس کا دشمن بنا دیا۔ صلاح الدین مجبور ہو کر مصر سے شام آیا اور چند ماہ کے اندر اندر ملک صالح اور اس کے عاقبت ناندیش حواریوں کو مغلوب کر لیا اس طرح مصر کے علاوہ تمام شام اور حجاز کی حکومت بھی اس کے قبضے میں آگئی تاہم اس نے اپنے مرحوم آقا کے فرزند سے نہایت اچھا سلوک کیا اور حلب اور اس کے اس پاس کا علاقہ اسی کے پاس رہنے دیا اس کے ساتھ ہی اس نے عباسی خلیفہ کو اپنی اطاعت کا یقین دلایا جس نے نہایت خوشی کے ساتھ اس کو خلعت اور حکومت کی سند بھیج دی۔ اس کے بعد وہ مصر واپس چلا گیا۔

ملک صالح نے ۵۷۷ھ میں وفات پائی تو ترک سرداروں کے باہمی تنازعات نے پھر سر ابھارا۔ صلیبیوں نے اس موقع کو غنیمت جانا اور مسلمانوں کے قافلوں کو لوٹنا شروع کر دیا۔ سلطان صلاح الدین کو یہ خبریں پہنچیں تو اس کی شمشیر خارا شکاف پیام سے باہر آگئی۔ وہ فوراً مصر سے شام پہنچا اور پہلے ترک امرار کی خانہ جنگیوں کو ختم کیا اور پھر صلیبیوں کے خلاف زبردست جہاد کا آغاز کر دیا۔ سلطان نے سب سے پہلے طبریہ کی جھیل کے قریب عطلین کے مقام پر صلیبیوں کے ایک زبردست لشکر کو شکست فاش دی۔ اس لڑائی میں دس ہزار صلیبی جن میں بڑے بڑے نامور شہسوار شامل تھے مسلمانوں کے ہاتھ سے مار گئے اور یروشلم کے بادشاہ گوتی۔ اس کے بھائی جافری۔ کرک کے حاکم ریجینا لڈ (ہنٹفری یا برنس ازناط) اور کئی دوسرے عیسائی سردار قیدی بنائے گئے۔ اس عظیم



فتح کے بعد سلطان نے عیسائیوں کے دوسرے مقتبوضات کا رخ کیا اور ثقفوی  
 ہی مدت میں ان کے بیسیوں قلعے بغیر کسی خاص مزاحمت کے فتح کر لیے۔ ان  
 میں سے چند اہم قلعوں اور شہروں کے نام یہ ہیں :  
 نابلس - حیفا - قیصاریہ - صفوریہ - عکہ - اسکندرونہ - ہونین - ناصہ  
 یاقا - اریکا - ارسوف - صرف - صیدا - بیروت - داروم - عسقلان  
 ثقفیف - ہرمز - تل احمر - جبیل - اطرون - رلیہ - جبل النخلیل - جبل یابا  
 قلعہ ابی الحسن - تل صافیہ۔

## فتح بیت المقدس

اب سلطان نے اگے بڑھ کر ۱۵ رجب ۵۸۳ھ کو یروشلم  
 (بیت المقدس) کا محاصرہ کر لیا۔ ایک لاکھ کی آبادی کے اس شہر میں ساٹھ ہزار  
 مسلح سپاہی تھے۔ انہوں نے زبردست مزاحمت کی لیکن سلطان کی مجاہدانہ  
 یلغار کے سامنے پانچ دن سے زیادہ نہ ٹھہر سکے اور ۲۰ رجب ۵۸۳ھ کو ہتھیار  
 ڈال دیے۔ نوے سال پہلے جب صلیبیوں نے اس شہر کو فتح کیا تھا تو انہوں نے  
 وہاں کے مسلمانوں پر ایسے ہولناک مظالم توڑے تھے کہ ان کا حال پر پڑھ کر رونگٹے  
 کھڑے ہو جاتے ہیں لیکن عالی حوصاہ سلطان نے شہر کے سب باشندوں کو ایمان  
 دے دی۔ یہی نہیں بلکہ ان کو یہ اجازت بھی دے دی کہ جس قدر مال و اسباب خود  
 اکٹھا کر لے جاسکتے ہوں لے جائیں۔

## تیسری صلیبی جنگ

یروشلم کی فتح کی خبر سن کر یورپ کے بڑے بڑے عیسائی بادشاہ متحد

ہو کر فلسطین پر چڑھ دوڑے۔ ان میں انگلستان کا بادشاہ رچرڈ اور چھوٹی ہجو اپنی بہادری کی وجہ سے رچرڈ شیریڈل کہلاتا تھا۔ فرانس کا بادشاہ فلپ اور جرمنی کا بادشاہ فریڈرک باربروسہ بھی شامل تھے۔ یہ صلیبی لیڈر تیسری صلیبی جنگ کے نام سے مشہور ہے۔ اس جنگ میں صلیبی زیادہ سے زیادہ جو کچھ کر سکے وہ یہ تھا کہ انہوں نے دو سال کے محاصرے کے بعد ۱۱۹۱ء میں عکہ کو فتح کر لیا۔ اس کی وجہ سلطان صلاح الدین کی عدالت اور قلعے میں رہنے کی شدید قلت تھی۔ عکہ کی فتح کے بعد وہ یروشلم کی طرف بڑھے لیکن عسقلان کے قریب سلطان نے ان کو وہ تاریخی شکست دی جس نے ان کی مکر توڑ کر رکھ دی اور رچرڈ شکستہ دلی کے عالم میں سلطان سے صلح کرنے پر مجبور ہو گیا۔ اس صلح کی ذمہ داری سے شام و فلسطین پر صلاح الدین کی حکومت تسلیم کر لی گئی البتہ عکہ سے عسقلان تک ایک تنگ ساحلی علاقہ عیسائیوں کے قبضے میں رہا۔ اس جنگ سے صلیبیوں کا اصل مقصد یروشلم پر قبضہ کرنا تھا لیکن وہ اس میں بری طرح ناکام رہے۔ اس واقعہ کے ایک سال بعد سلطان صلاح الدین نے ۲۷ صفر ۵۸۹ھ (۲۷ مارچ ۱۱۹۳ء) کو رحمت خداوندی کے دامن میں آرام پایا۔

سلطان نور الدین کی طرح سلطان صلاح الدین ایوبیؒ کا شمار بھی تاریخ اسلام کے مثالی حکمرانوں میں ہوتا ہے اور عسقلان اور عکہ کی فتح کے محاسن اور عظمت کو ادراک بر ملا اعتراف کرتے ہیں۔ وہ جہاں ایک بے مثل شہسوار، ایک خبری تیغ زن اور ایک نڈر اور قابل جرنیل تھا وہاں ایک ایسا دیندار، علم دوست، عادل، مخیر اور رحم دل حکمران بھی تھا جس نے اپنی زندگی جہاد فی سبیل اللہ اور مخلوق خدا کی خدمت کے لیے وقف کر رکھی تھی۔ فی الحقیقت وہ اپنے دور کی اسلامی قوت و شوکت کا نشان اور خلافت عباسی کا سب سے بڑا ستارہ تھا۔ اس کی رحلت سے

تمام عالم اسلام بے نور ہو گیا۔ اس کی سیرت پر مختلف زبانوں میں آج تک اس قدر کتابیں لکھی جا چکی ہیں کہ شاید ہی کسی اور مسلمان حکمران پر لکھی گئی ہوں۔

## صلاح الدین کے جانشین

خانہ جنگی

سلطان صلاح الدین کی وفات کے بعد مصر و شام میں بعینہ وہی حالات پیدا ہو گئے جو سلطان ملک شہداء سلجوقی کی وفات کے بعد سلجوقی سلطنت میں پیدا ہوئے تھے۔ سلطان نے اپنی زندگی ہی میں سلطنت کو اپنے تین بڑے بیٹوں میں تقسیم کر دیا تھا۔ ابوالفتح عماد الدین عثمان دلاور (العزیز) کو مصر۔ ابوالحسن نور الدین علی (ملک الافضل) کو دمشق اور ابومنصور غیاث الدین غازی (الملک الظاہر) کو عراق عجم کی حکومت ملی اور دوسرے بیٹوں کو بڑے بھائیوں کے ماتحت چھوٹے چھوٹے علاقوں کی امارت عنایت ہوئی۔ سلطان کا خیال تھا کہ اس طرح سب بھائی ایک دوسرے کے دست و بازو بنے رہیں گے لیکن اس کی آنکھیں بند ہوتے ہی تینوں بیٹوں میں جنگ لڑنے شروع ہو گئے۔

چوتھی صلیبی جنگ

اس موقع کا فائدہ اٹھا کر ۱۱۹۵ء میں یورپ کے عیسائی پوپ نے فلسطین پر چہرہ دوڑ سے اور چوتھی صلیبی جنگ کا آغاز کر دیا۔ یہاں تو آریس میں لڑتے رہے لیکن ان کے چچا الملک البادل ابن نجم الدین ایوب والی کرک نے آگے

بڑھ کر صلیبیوں کو روکا۔ عرصہ تک دونوں فوجوں میں معرکے ہوتے رہے لیکن ملک عادل نے صلیبیوں کو بیروت سے آگے نہ بڑھنے دیا۔ بالآخر انہوں نے مجبور ہو کر مسلمانوں سے صلح کر لی۔

## الملک العادل

اسی اثنا میں ملک عزیز نے وفات پائی۔ محرم ۵۹۵ھ

اور امرائے سلطنت نے اس کے آٹھ سالہ فرزند کو ملک منصور

کا لقب دے کر تخت مصر پر بٹھا دیا۔ ایک نابالغ بچہ بھلا حکومت کا انتظام کیا کرتا۔

سلطنت میں پھر ابتری پھیلنے لگی۔ یہ دیکھ کر ملک عادل نے شوال ۵۹۶ھ

میں علماء کے فتویٰ کے مطابق اس کو تخت سے اتار کر عمان حکومت اپنے ہاتھ میں

لی۔ ملک عادل نے سب سے پہلے ایوبی سلطنت کو جو کئی حصوں بخروں میں تقسیم ہو

چکی تھی متحد کیا اور ۵۹۸ھ تک سارے مصر، شام، میسوپوٹیمیا اور عرب میں

پھر ایک طاقتور حکومت قائم کر دی۔ اس طرح سلطان صلاح الدین کے دور حکومت

کی یاد تازہ ہو گئی۔

## پانچویں صلیبی جنگ

۱۲۱۳ء میں پاپائے روم اینو سینٹ ثالث کی دعوت پر اہل یورپ

نے پانچویں صلیبی جنگ کا ارادہ کیا اور ایک زبردست فوج فلسطین پر حملہ کرنے کے

لیے روانہ کی لیکن خوش قسمتی سے اس فوج کا رخ قسطنطنیہ کی طرف مڑ گیا۔ اس نے

اپنی ہی ہم مذہب بازنطینی مملکت میں داخل ہو کر اس کو خوب دیران کیا اور پھر وہاں

سے ہی واپس چلی گئی۔

## چھٹی صلیبی جنگ

۶۱۳ء میں صلیبیوں نے چھٹی صلیبی جنگ چھیڑ دی اور ان کی  
 ۱۶-۱۲۱۵ء  
 ڈھائی لاکھ فوج نے بڑے سارو سامان کے ساتھ شام پر حملہ کر دیا۔ کئی شامی شہروں  
 کو تاخت و تاراج کرتے ہوئے یہ فوج مصر میں جا داخل ہوئی اور دریائے نیل کے ٹیلے  
 میں دمیاط کا محاصرہ کر لیا۔ ملک عادل اس زمانے میں شمالی شام میں تھا۔ وہ صلیبیوں  
 کے مقابلے کے لیے مصر کو روانہ ہوا لیکن راستے میں ہی اس کو پیغام اجل آپہنچا اور  
 ۶۱۵ء ۲۱ اگست ۱۲۱۸ء کو وہ عالم فانی سے عالم بقا کو سدھار گیا۔

## الملک الکامل

ملک عادل کے بعد اس کا بیٹا الملک الکامل ابو المعالی ناصر الدین محمد مصر کا  
 فرماں روا ہوا۔ اس وقت چھٹی صلیبی جنگ جاری تھی۔ صلیبیوں نے طویل محاصرے  
 کے بعد دمیاط کو مستح کر لیا۔ اور وہاں کی مسلمان آبادی کو تہ تیغ کر ڈالا۔ اس کے بعد انہوں  
 نے قاہرہ کی طرف پیش قدمی کی۔ ملک کامل اپنے بھائی ملک معظم (شرف الدین عیسیٰ)  
 کے ساتھ ان کے مقابلے کے لیے بڑھا اور دریائے نیل کے بند توڑ ڈالے۔ صلیبی  
 چاروں طرف سے گہرے پانی میں گھر گئے اور ان کے لیے اپنی جانیں بچانا مشکل  
 ہو گیا۔ مجبور ہو کر انہوں نے صلح کی درخواست کی اور دمیاط کا شہر خالی کر کے واپس  
 چلے گئے۔ ان کے واپس جاتے ہی دونوں بھائیوں میں ناچاقی پیدا ہو گئی۔ اس موقع  
 پر ملک کامل نے نہایت عقابت ناندیشی سے کام لیا اور فریڈرک ثانی فرماں رائے  
 جرمنی و صقلیہ سے نامہ و پیام شروع کر دیا۔ اس کا مقصد فریڈرک کو شام آنے کے لیے  
 آمادہ کرنا تھا۔ اندھا کیا چاہے دو آنکھیں۔ فریڈرک ۳۲-۱۲۳۱-۶۲۹ء میں شام

میں داخل ہو گیا۔ اور ملک کامل سے دس سالی چھ مہینے اور دس دن کے لیے اس شرط پر دوستانہ معاہدہ کر لیا کہ بیت المقدس، بیت لحم اور ناصرہ کے علاوہ یا فا اور عاکہ کے درمیان جتنے شہر تھے سب اس کے حوالے کر دیے جائیں۔ اس ناپاک معاہدہ نے صلیبیوں کی دیرینہ آرزو پوری کر دی۔ اور جس سرزمین مقدس کی خاطر ہزاروں مسلمانوں نے اپنی جانیں قربان کی تھیں، فریڈرک ثانی خون کے ایک قطرہ تک کی قربانی دیے بغیر اس میں داخل ہو گیا۔ اس سانحہ عظیم سے عالم اسلام میں قیامت برپا ہو گئی۔ رنج و غم کے اظہار میں مائتی خلوس نکلے۔ مسجدوں میں اذانیں موقوف کر دی گئیں۔ باجماعت نمازوں کو ملتوی کر دیا گیا۔ علمائے درس و تدریس کو ترک کر دیا۔ اور دارالافتا کے دروازے بند کر دیے گئے۔ لیکن یہ سب احتجاجات بعد از وقت تھے۔ مسلمان اٹھ سال تک صلیبی تسلط کے نیچے کراہتے رہے تا آنکہ ملک معظم کے فرزند اور ملک کامل کے بھتیجے ابو نصر داؤد والی حران نے ۱۱۷۳ء میں بیت المقدس کو چھ پر عیسائیوں سے چھین لیا۔ اس سے دو سال پہلے ملک کامل فوت ہو چکا تھا۔

## ملک عادل ثانی

ملک کامل کی وفات کے بعد امراء نے اس کے نو عمر بیٹے سیف الدین ابو بکر کو الملک عادل ثانی کا لقب دے کر مصر کے تخت پر بٹھایا مگر دو سال کے بعد اس کے بھائی نجم الدین ایوب نے مصری امراء سے مل کر اس کو معزول کر دیا۔

ملک عادل ثانی کی معزولی کے بعد اہل مصر الملک الصالح نجم الدین ایوب نے ذی الحجہ ۵۷۱ھ میں الملک الصالح نجم الدین ایوب کی بیعت کر لی۔ ملک صالح ایک بیادار مغز حکمران ثابت ہوا اور اس نے اپنی تمام تر مساعی ایوبی سلطنت کے بکھرے ہوئے شیرازے کو یک جا کرنے کے لیے

وقت کر دیں۔ کئی سال کی طویل جدوجہد کے بعد وہ اپنی کوششوں میں خاصی حد تک کامیاب ہو گیا۔ اور مصر کے علاوہ شام، حجاز اور کئی دوسرے علاقوں پر بھی اس کا موثر اقتدار قائم ہو گیا۔

## مملوکوں کے عروج کا آغاز

ملک صالح کے برسرِ اقتدار آنے سے چند سال پہلے تاتاریوں کے ہولناک نئے کا آغاز ہو چکا تھا۔ (اس کی تفصیل آگے آئے گی) تاتاریوں کے حملوں کے دوران میں وشت قیچاق، قزوین اور کوفہ قاف دسر کیشیا وغیرہ کے علاقوں میں سے بہت سے لوگ بھاگ کر اسلامی ملکوں میں آگئے تھے اور صاحبِ ثروت لوگوں نے ان کو کثرت سے خرید کر مصر میں فروخت کر دیا تھا۔ یہ لوگ کہتے کہ تو مملوک (غلام) تھے لیکن صلیبی لڑائیوں میں اپنی تلوار کے جوہر دکھا کر وہ ایوبی سلطنت میں بڑے بڑے عہدوں پر جا پہنچے تھے۔ تاہم انہوں نے ایک منظم قوت کی حیثیت اختیار نہیں کی تھی جب تک کہ ملک صالح تخت نشین ہوا تو عمائد سلطنت میں بہت سے مملوک امراء بھی شامل تھے۔ اس کو ان لوگوں کے اوصاف و خصائل بہت پسند آئے اور اس نے سرکیشی مملوکوں کو بڑی کثرت سے خریدنا شروع کر دیا یہاں تک کہ ان کی تعداد بارہ ہزار سے بھی تجاوز کر گئی۔ ملک صالح نے ان کی تعلیم و تربیت پر خاص توجہ دی جس کا اثر یہ ہوا کہ ان میں سے اکثر نہ صرف فتون جنگ میں غیر معمولی قابلیت کے مالک بن گئے بلکہ علوم اسلامی (قرآن، حدیث اور فقہ) میں بھی درجہ کمال تک پہنچ گئے۔ سلطان نے ان مملوکوں کی ایک باقاعدہ فوج بنائی جو نہایت منظم اور فنِ حرب و ضرب میں طاق تھی۔ اس نے اپنے ذاتی محافظ دستہ (باڈی گارڈ) کو بھی اسی فوج سے منتخب کیا۔ اس کے علاوہ اس نے مملوکوں کو اپنی سلطنت اور دربار میں بھی بڑے بڑے عہدوں پر مقرر کیا۔ اس طرح

ملوک، سلطنت ایوبیہ میں ایک فعال اور مؤثر قوت بن گئے۔ تاہم سلطان نے ان کو بے قابو نہ ہونے دیا اور ان کی ایک بڑی تعداد کو جزیرہ روضہ میں آباد کر دیا جہاں ان کی رہائش کے لیے بیکریں بنوائیں۔ بعض ملوک امرار نے وہاں اپنے طور پر بھی مکتا اور قلعے تعمیر کر لیے۔ چونکہ اس مقام پر دریائے نیل کی دو شاخیں ملتی ہیں اور اس کو بجز کہا جاتا ہے اس لیے یہ لوگ "ممالیک بحری" کہا گئے۔ کچھ ملوکوں نے سلطان صلاح الدین کے تعمیر کردہ قلعہ قاہرہ کے برعکس میں سکونت اختیار کر لی تھی، اس لیے وہ "ممالیک بحری" کے نام سے مشہور ہوئے۔

## ساتویں صلیبی جنگ

۶۴۷ھ میں یورپی صلیبیوں کی باہمی کڑھی میں پھرا بال آیا اور ۱۲۴۹ء انہوں نے لوئی (کوئیس) نهم شاہ فرانس کی قیادت میں ساتویں صلیبی جنگ چھیڑ دی۔ اس دفعہ ان کا خاص ہدف مصر تھا۔ عیسائی مؤرخین کا بیان ہے کہ تمام صلیبی جنگوں میں یہی جنگ حقیقی معنوں میں مقدس صلیبی جہاد (Holy War) کہلائے جانے کی مستحق تھی۔ کیونکہ لوئی نهم نے مشرق پر محض دینی جذبہ اور مذہبی جوش کے ماتحت جرمانی کی تھی اور اس کا مقصد وحید مقدس علاقوں کو مسلمانوں کے پنجے سے چھڑا کر مسیحیت کے جھنڈے کو بلند کرنا تھا۔ اس کے پیشتر صلیبی جنگ کچھ ارض مشرق پر صرف دینی جذبہ کی بناء پر حملہ آور نہیں ہوئے تھے بلکہ اس لیے بھی کہ اموال اور قیدیوں سے اپنے آپ کو مالا مال کر لیں اور وہاں کے سرسبز اور شاداب خطوں میں اپنی مملکت قائم کریں۔ ان مؤرخین نے لوئی نهم کی سیرت اور کردار کی بڑی تعریف کی ہے اور لکھا ہے کہ وہ ایک نہایت پرہیزگار، بے لوث، درویش صفت، عبادت گزار اور نیک طبیعت بادشاہ تھا جس کا دل دین مسیحی کی محبت کے جذبہ سے معمور تھا



میدان جنگ میں وہ شجاعت کا پیکر بن جاتا تھا اور مصیبت کے وقت صبر و استقامت کو ہاتھ سے نہ جانے دیتا تھا۔ چنانچہ عیسائی اس کو آج تک سینٹ لوئی (بزرگ یا مقدس لوئی) کے نام سے یاد کرتے ہیں۔

مصر پر حملہ آور ہونے سے لوئی کا مقصد یہ تھا کہ اس ملک پر قبضہ کرنے کے بعد بیت المقدس اور فلسطین و شام کے دوسرے مقدس مقامات پر قبضہ کرنے میں کوئی طاقت اس کی مزاحم نہ ہو سکے گی کیونکہ اس زمانے میں مصر ہی اسلامی اقتدار کا سب سے بڑا مرکز تھا۔

شاہ لوئی ایک جرار لشکر کے ساتھ مصر کی طرف بڑھا اور دمیاط کے نام شہر کا محاصرہ کر لیا۔ اس زمانے میں ملک صالح سمحت بیمار تھا۔ اس لیے وہ مؤثر طور پر صلیبیوں کی مزاحمت نہ کر سکا اور انہوں نے ۲۲ صفر ۶۴۷ھ کو دمیاط پر قبضہ کر لیا۔ اس واقعہ کے چند ماہ بعد ۴ اپریل ۱۵ شعبان ۶۴۷ھ کو ملک صالح نے منصورہ کے مقام پر پیکر اجل کو لوبیک کہا۔

### معرکہ منصورہ

اپنی وفات سے پہلے ملک صالح صلیبیوں سے ایک فیصلہ کن جنگ روکنے کی تیاری کر رہا تھا۔ اسی مقصد کے لیے وہ ہماوکوں کی ایک زبردست فوج کے ساتھ منصورہ آیا تھا۔ سلطان کی علالت کے پیش نظر اس کی ملکہ شجرۃ الدر بھی اس کے ساتھ منصورہ میں مقیم تھی۔ وہ ایک نہایت زریک بلند حوصلہ اور شجاع خاتون تھی۔ اس نے اپنے شوہر کی موت کو بربنائے مصالحت مخفی رکھا اور اس کے نوجوان بیٹے توران شاہ کو، جوان دنوں حصن کیفا میں مقیم تھا منصورہ بلا بھیجا۔ لیکن اس

سے توران شاہ ملک صالح کی ایک اور بیوی کے لطف سے بچا اور ملکہ شجرۃ الدر کا سوتیلا بیٹا تھا۔

سے پہلے کہ توران شاہ منصورہ پہنچتا صلیبی فوجیں و میاٹ سے نکل کر منصورہ پہنچ گئیں اور  
مسلمانوں سے لڑائی پھیر دی۔

## منصورہ کا مرد میدان

ملوک فوج پہلے ہی صلیبیوں سے دو دو ہاتھ کرنے کے لیے بیتاب ہو رہی تھی  
اس نے ملکہ شجرۃ الدر کی قیادت میں صلیبی لشکر کا تیروں تلواروں اور نیزوں سے لیس  
پر جوش استقبال کیا جو اس کے وہم و گمان میں بھی نہیں آسکتا تھا۔ اس موقع پر ملوک  
فوج کے ایک نوجوان افسر نے شجاعت اور جانبازی کا حیرت انگیز مظاہرہ کیا ایک  
عربی گھوڑے پر سوار وہ بجلی کی سی سرعت کے ساتھ نیزہ ہلاتا صلیبی لشکر میں گھس  
گیا اور ہر طرف لاشوں کے انبار لگائے صلیبی جنگ جو گروہ درگروہ اس کو گھیرے  
میں لینے کی کوشش کرتے تھے لیکن وہ ہر بار ان کی صفوں کو درہم برہم کرتا ہوا دوسری  
طرف نکل جاتا تھا اور وہاں بھی اپنے جانبازانہ حملوں سے تھکے برپا کر دیتا تھا۔ یہ شہسوار  
ملک صالح کا غلام بیبرس بن قرار تھا۔ منصورہ کی جنگ میں اس نے اپنی عسکری صلاحیتوں  
اور تہذیب و شجاعت کا ایسا بھرپور مظاہرہ کیا کہ سب مسلمانوں کی نگاہوں کا مرکز بن گیا  
کئی دن تک صلیبیوں اور مسلمانوں میں خوفناک جھڑپیں ہوتی رہیں یہاں تک کہ صلیبی  
فوجیں سخت پریشان حالی میں مبتلا ہو گئیں تاہم شاہ لونی کی موجودگی سے ان کی ہمت  
بندھی رہی۔

## توران شاہ کی آمد

اسی اثنا میں توران شاہ بھی اپنی فوج کے ساتھ منصورہ پہنچ گیا اور مسلمانوں  
کی قوت دو چندان ہو گئی۔ توران شاہ کے پہنچنے پر ملک صالح کی موت کا اعلان کر دیا گیا

اور مملوک امرا نے اس کو ملک معزظم کا خطاب سے کر تہمت پر بیٹھایا۔ توران شاہ نے اس موقع پر بڑی عاقبت ناندیشی سے کام لیا اس نے بہت سے مصری حاکموں اور امیروں کو جو "مہایک بحری" سے تعلق رکھتے تھے معزول کر دیا اور ان کی جگہ "بحری مملوکوں" کو مقرر کیا جو اس کے ساتھ "حصن کیفا" سے آئے تھے۔ اس پر مہایک بحری ناراض ہو گئے تاہم انہوں نے اس وقت جبکہ صلیبی فوجیں ان کے سامنے پرے ہانڈھے کھڑی تھیں کوئی ہنگامہ کھرا کر نامناسب نہ سمجھا۔

### صلیبیوں کی عبرت ناک شکست

ادھر جب شاہ لوئی نے دیکھا کہ مسلمانوں کے مقابلے میں کامیابی محال ہے تو اس نے اپنے لشکر کو میاط کی شمالی جانب ہٹ جانے کا حکم دیا۔ چنانچہ صلیبی لشکر نے ۲۲ محرم ۶۴۸ھ (۵ اپریل ۱۲۵۰ء) کو شام کے وقت منظم طریقے سے پس پھرنے کا فیصلہ کیا۔ لیکن مسلمان ان کی نقل و حرکت پر کڑی نظر رکھتے تھے اور انہوں نے تہیہ کر رکھا تھا کہ صلیبیوں کو یہاں سے بچ کر نہیں نکلنے دیں گے۔ چنانچہ صلیبیوں نے جو بھی کوچ کی تیاری کی مسلمانوں نے ان کو چاروں طرف سے گھیر لیا۔ صلیبیوں کے لیے اب "جائے رفتن نہ پائے ماندن" والا معاملہ تھا۔ وہ اپنے آپ کو بچانے کے لیے جان توڑ کر لڑے لیکن مسلمانوں کے پرجوش حملوں کے سامنے ان کی کچھ پیش رفت چلی۔ مملوکوں کے ایک برق رفتار دستے نے جس کی قیادت امیر بیبرس بنا قرار کر رہا تھا، آنا فانا صلیبی لشکر کا قلب توڑ کر رکھ دیا اور شاہ لوئی اور اس کے کئی سرداروں کو عین میدان جنگ میں گرفتار کر لیا۔ اس طرح ساتویں صلیبی جنگ عیسائیوں کی ذلت انگیز شکست پر ختم ہو گئی۔

عرب مورخین کے بیان کے مطابق اس جنگ میں صلیبی مشنوں کی زخمیوں اور

قیدیوں کی تعداد سچاپس ہزار کے لگ بھگ تھی اور ان کے مال و اسباب کے نقصان کا تو کوئی حساب ہی نہ تھا۔

مسلمانوں نے شاہ لونی اور اس کے سرداروں سے فراخ دلانہ سلوک کیا۔ وہ چاہتے تو ان کو نہایت آسانی سے قتل کر سکتے تھے لیکن انہوں نے قابو میں آئے ہوئے دشمن کو محض نظر بن کرنے پر اکتفا کیا۔ ایک روایت کے مطابق ان "معزز" قیدیوں کو منصورہ میں امیر فخر الدین بن لقمان کے گھر میں رکھا گیا اور ان کی خدمت پر ایک ہمہ وقتی خادم صبح المعظمی کو مقرر کر دیا گیا۔

## توران شاہ کا قتل

منصورہ کی جنگ ختم ہوتے ہی توران شاہ کے خلاف بحری مملوکوں کی ناراضی کا لاوا بھوٹ پڑا اور انہوں نے سلطان کے ذاتی محافظوں کو اپنے ساتھ ملا کر اس کو قتل کرنے کا منصوبہ بنا لیا۔ ایک فرانسیسی مورخ دی جان ویل نے جو شاہ لونی کے ساتھ مصر گیا تھا اور پھر اس کے ساتھ مسلمانوں کے ہاتھ اسیر ہو گیا تھا، توران شاہ کو اپنی آنکھوں کے سامنے قتل ہوتے دیکھا تھا۔ اس نے شاہ لونی کے سوانح حیات میں اس واقعہ کو بڑی تفصیل سے بیان کیا ہے۔ اس کے بیان کا خلاصہ یہ ہے:-

"ایک دن بادشاہ کھانے سے فارغ ہوا ہی تھا کہ اس کے محافظ

دستے کے ایک سپاہی نے تلوار سے وارہ کر کے اس کو شدید زخمی کر

دیا۔ بادشاہ اپنے تین ساتھیوں کے ہمراہ بھاگ کر میاٹ میں جا

داخل ہوا اور وہاں ایک برج میں پناہ لی۔ غیظ و غضب میں بھر

ہوئے پانچ سو مملوکوں نے اس برج کو گھیر لیا اور لفظ کی پچکار یا

سینک کر اس کو آگ لگا دی۔ بادشاہ ایک کندکے ذریعے برج سے

اترا اور دریا کی طرف بھاگا۔ ایک مملوک نے اس کا پیچھا کیا اور اپنا نیزہ اس کی پسلیوں میں گھونپ دیا۔ بادشاہ کے جسم سے خون کے فوارے چھوٹنے لگے۔ اسی حالت میں اس نے دریا میں چھلانگ لگا دی۔ لیکن مملوک سپاہی اس کو پانی سے باہر کھینچ لائے اور اس جگہ کے قریب جہاں شاہ لوئی مجوس تھا اس کو قتل کر دیا۔

بادشاہ کے قتل میں جن لوگوں نے براہ راست حصہ لیا ان میں امیر فارس الدین اقطاعی کا نام خاص طور پر قابل ذکر ہے وہ بحری مملوکوں میں بڑا اثر اور رسوخ رکھتا تھا اور منصورہ کے مرد میدان امیر بیبرس بندقدار سے اس کے گہرے دوستانہ تعلقات تھے۔

## ملکہ شجرۃ الدر

توران شاہ کے قتل کے بعد ۱۰ صفر ۶۴۸ھ کو بحری مملوکوں نے ملکہ شجرۃ الدر کو المستعصر الصالحۃ الملكۃ المسلمین عصمت الدینا والدین ام الملك المنصور خلیل کا خطاب دے کر مصر کے تخت حکومت پر بٹھا دیا۔

ملکہ شجرۃ الدر کے سامنے سب سے پہلے یہ مسئلہ پیش ہوا کہ شاہ لوئی اور اس کے ساتھیوں کے ساتھ کیا سلوک کیا جائے۔ مملوک امراء کے مشورہ سے اس نے شاہ لوئی کو پیغام بھیجا کہ اگر پسلیوں سے زمین متہ سے فوراً نکل جانے کا عہد کریں اور اس کے ساتھ تاوان جنگ اور قیدیوں کے طور پر ایک منظم رقم حکومت مصر کو ادا کریں تو

ملکہ شجرۃ الدر پہلے ایک نیا تختی بعد میں ملک صالح نے اس کو اپنی ملکہ بنا لیا تھا۔ اس کا ایک راجا خلیل چھ سال کی عمر کا ہوا تھا اس کی نسبت سے اس کی کنیت "ام خلیل" تھی۔

بادشاہ سمیٹت تمام جنگی قیدیوں کو رہا کر دیا جائے گا۔ شاہ لوئی نے یہ شرطیں پیش کر لیں۔ چنانچہ ڈیڑھ ماہ کی قید کے بعد شاہ فرانس کو صفر ۱۲۴۸ھ (مئی ۲۵ء) میں رہا کر دیا گیا اور وہ اپنے شکست خوردہ سپاہیوں اور امیروں کے ساتھ ارض مصر پر حسرت کی نظر ڈالتا ہوا سمندر کے راستے عاکہ کی طرف روانہ ہو گیا۔ اس موقع پر جمال الدین بن مطروح نائب دمشق نے چند یادگار طنزیہ اشعار کہے جن کو مسلمان مزے لے لے کر پڑھتے تھے۔ جمال الدین نے ان اشعار میں مسلمانوں کے جذبات کی ترجمانی یوں کی تھی۔

”جب تو شاہ فرانس کے پاس جائے تو یہ سچی بات اس کے گوش گزار کرے کہ یسوع مسیح کے جس قدر پرستار قتل ہوئے ان کے لیے تو خدا سے اجر پائے گا۔ تو مصر کے فتح کرنے کے ارادے سے مصر آیا اور یہ گمان کیا کہ مصری کچے چنے ہیں۔ لیکن نتیجہ کیا نکلا کہ مصریوں نے تیرے پاؤں میں بیڑیاں ڈال دیں جن سے یہ کشادہ فضا تیری آنکھوں میں تیرہ و تنگ ہو گئی تو نے اپنے تمام ساتھیوں کو اپنی بد تدبیر سے تباہی کے گھاٹ اتار دیا جن میں سے پچاس ہزار یا تو مارے گئے یا قید یا زخمی ہو گئے تو اپنے ساتھیوں سے کہہ دے کہ انتقام

لے اس ذلت انگیز پسپائی کے بعد لوئی کو پورے چار سال تک اپنے اہل وطن کو منہ دکھانے کی ہمت نہ پڑی اور اس نے یہ عرصہ شام کے صلیبی مقبوضات صیدا، قیساریہ، یافا اور عکہ میں گزارا جن دنوں وہ عکہ میں مقیم تھا شام کے نام نہاد باطنی (حشیشی) مسلمانوں نے اس کے پاس ایک دوستانہ سفارت بھیجی جس نے عیسائی بادشاہ کو کسی تحائف پیش کیے اور اس کو یقین دلایا کہ باطنی اور مسیحی ایک جان و دو قالب ہیں۔ لوئی نے بھی اس سفارت کے ہاتھ باطنیوں کے پیشوا کے لیے کسی تحائف بھیجے۔ شاہ لوئی اگست ۱۲۴۸ء میں فرانس سے نکلا تھا اور جولائی ۱۲۵۴ء میں فرانس واپس گیا اپنی اس چورہ حالہ میں وہ مسلمانوں کے مقابلے میں ذلت اور نامرادی کے سوا کچھ حاصل نہ کر سکا۔

یعنی یا کسی بڑے ارادت سے وہ دوبارہ اوجھ کا رخ کریں تو ابن لقمان  
کا گھرا بھی موجود ہے اور خوبصورت بیڑیاں بھی محفوظ ہیں۔

## اسی دن کی بادشاہت

ملکہ شجرۃ الدر اسی دن تک مصر پر بلا شرکت غیر سے حکمران رہی اس دوران  
میں اس نے غیر معمولی صلاحیتوں کا مظاہرہ کیا اور کا دوبارہ حکومت کو نہایت عمدگی سے  
چلایا لیکن عباسی خلیفہ بغداد المستعصم باللہ نے عورت کی حکومت کو پسند نہ کیا اور  
مملوک سرداروں کو پیغام بھیجا کہ کسی مرد کو اپنا حاکم بنائیں۔ چنانچہ ہمایک بحرینی نے  
جمادی الاول ۴۲۸ھ (اکتوبر ۱۰۲۵ء) میں ملکہ شجرۃ الدر کو معزول کر دیا اور رئیس  
(سپہ سالار) معز الدین ایبک کو ایوبی خاندان کے ایک نو عمر شہزادے الملک الاشرف  
موسیٰ کا شریک کار بنا کر تخت حکومت پر بٹھا دیا۔ شجرۃ الدر نے باختلاف روایت  
اسی سال یعنی ۴۲۸ھ میں یا ۶۵۲ھ میں معز الدین ایبک سے  
نکاح کر لیا۔

۱۔ بعض مورخین نے اس کا نام عز الدین ایبک لکھا ہے۔





کھلتے ہیں غلاموں پر اسرار شہنشاہی



## مملوکوں کی شرماں روائی

(دولت ممالیک بحری)

معز الدین ایک اور الملک الاشرف موسیٰ کی مشترکہ حکومت چار سال تک چلتی رہی۔ اس دوران میں الناصر صلاح الدین یوسف ثانی والسی حلب و دمشق نے مصر پر وہ وفد لشکر کشی کی۔ پہلی مرتبہ اس نے بیس ہزار فوج روانہ کی بعض مؤرخین کے بیان کے مطابق اس میں بہت سے صلیبی بھی شامل تھے۔ الناصر اور صلیبیوں کی اس متحدہ فوج کو مصر لوہے نے غزہ کے قریب شکست فاش دی۔ کہا جاتا ہے کہ منصورہ کے مرد میدان امیر بیرس نے اس لڑائی میں بھی بے مثال شجاعت دکھائی اور اہل مصر کی نظروں میں بڑا اونچا مقام حاصل کر لیا۔ دوسری مرتبہ الناصر خود دمشق سے ایک ہزار لشکر لے کر مصر پر حملہ آور ہوا لیکن ایک اور اس کے سپہ سالار فارس الدین اقطاعی نے اس کو بھی شکست دے کر پسپا کر دیا۔ اس موقع پر خلیفہ بغداد نے مداخلت کی۔ اور الناصر اور ایک کے مابین صلح کرادی جس کی رو سے مصر کی حکومت دریائے اردن تک تسلیم کر لی گئی۔ اول فریقین نے عہد کیا کہ آئندہ صلیبیوں کے مقابلے میں متحیر رہیں گے۔

۶۵۲ھ میں الملک الاشرف موسیٰ پوشیہ طور پر مین چلا گیا اور یاروآ <sup>میت</sup> دیکھ

۱۲۵۳

لہ یہ سلطان صلاح الدین ایوبی فاتح بیت المقدس کا پڑپوتا تھا۔

خود اینک نے اس کو یمن بھیج دیا، جہاں اس کے کئی رشتہ دار موجود تھے۔

الملك الاشرف موسى الیو بی خاندان کا آخری حکمران تھا جس کے نام کا خطبہ میں پڑھا گیا اس کے بعد وہاں خالص مملوک حکومت قائم ہو گئی۔ اور پہلے بحری اور پھر بحری مملوکوں نے مجموعی طور پر پونے تین سو سال تک اس شان سے حکمرانی کی کہ مشرق و مغرب کا کوئی حکمران ان کی ہمسری کا دعویٰ نہیں کر سکتا تھا۔

## الملك المعز (جاشنگیر)

معز الدین ایبک کا تعلق بحری مملوکوں سے تھا۔ مستحکومت پر بلٹھنے کے بعد اس نے الملك المعز جاشنگیر کا لقب اختیار کر لیا تھا اور اپنی داد و دہش سے مملوک فوج کو مکمل طور پر اپنے قابو میں کر لیا تھا۔ تاہم اس کو زیادہ عرصہ حکومت کرنا نصیب نہ ہوا کیونکہ ملکہ شجرۃ الدر نے اس کو  $\frac{455}{1256}$  میں قتل کر دیا۔ اس کا سبب یہ ہوا کہ ملک معز نے بدر الدین امیر موصل کی بیٹی شہزادی لولو سے نکاح کر لیا۔ اس پر شجرۃ الدر سخت ناراض ہوئی اور ایک دن جب معز بہام میں غسل کر رہا تھا، ملک نے اپنی لوندلیوں کے ذریعہ اس کا رشتہ حیات منقطع کر دیا۔ جو نہی یہ خبر ملکہ لولو اور مملوک امراء کو معلوم ہوئی وہ سخت غضب ناک ہوئے اور شجرۃ الدر کو قلعہ قاپرہ کے قید خانے میں ڈال دیا۔ ملکہ لولو کے اشلے سے اس کی چند لوندلیاں قید خانے میں گئیں اور کاٹی کے جوتوں سے مارا کر شجرۃ الدر کا بھیجا نکال دیا اور اس کی لاش قلعہ کے نیچے خندق میں پھینک دی۔ مملوک امراء نے اس کے قتل پر جو شہ خودی کا اظہار کیا تاہم انہوں نے مقتول ملکہ کی لاش کو بے گور و کفن نہ پڑا رہنے دیا اور اسی کی تعمیر کردہ ایک مسجد کے احاطے میں دفن کر دیا۔

## الملك المنصور نور الدين

ملك معز جاشنگیر نے ایک پندرہ سالہ لڑکا چھوڑا تھا جس کا نام نور الدین علی ایک تھا۔ ملوک امراء نے اس کو الملك المنصور کا لقب دے کر تخت حکومت پر بٹھا دیا اور سیف الدین محمود قطوزی (قطوز یا قطن) کو اس کا اتابک اور نگرانِ سلطنت مقرر کیا۔

ملك منصور کے عہد میں وحشی تاتاریوں کی یورش جس نے تقریباً چالیس سال سے عالم اسلام میں تہلکہ مچا رکھا تھا اپنے نقطہ سوج پر پہنچ گئی اور مرکزِ خلافت بغداد کو پامال کرنے کے بعد اس کی طوفانی لہریں شام اور مصر سے لگنے لگیں۔ یہاں ضروری معلوم ہوتا ہے کہ ہم فتنہ تاتار پر ایک طائرانہ نظر ڈال لیں تاکہ اس کی قیامت خیز یوں کا کسی قدر اندازہ کیا جاسکے۔

---

۱۰ سیف الدین محمود قطوزی کا تعلق نخبیوں کے خوارزم شاہی خاندان سے تھا۔ وہ جلال الدین خوارزم شاہ کا بھانجا تھا اور تاتاریوں کے ہاتھوں خوارزم شاہی سلطنت کی بربادی کے بعد مصر آ گیا تھا۔ جہاں اس کو معز جاشنگیر نے اپنا معتدبہ خاص بنا لیا تھا۔

## فتنہ تاتار (پہلا دور)

تاتاری یا مغل (منگول) منگولیا کے وسیع صحرائی میدانوں کے رہنے والے ارواح پرست وحشی قبائل تھے۔ صحرا کی خانہ بدوشانہ زندگی نے ان کو بے حد جنگجو بنادیا تھا۔ علامہ جلال الدین سیوطی نے مورخ عبداللطیف کے حوالے سے تاتاریوں کے خصائل و عادات کے بارے میں لکھا ہے کہ:

ان لوگوں کی عورتیں بھی مردوں کے شانہ بشانہ لڑتی تھیں اور شمشیر زنی اور تیر اندازی میں کسی طرح اپنے مردوں سے کم نہ ہوتی تھیں۔ وہ جس چیز کا گوشت مل جاتا رغبت سے کھا جاتے تھے اور کسی چیز سے پرہیز نہیں کرتے تھے ان کے قتل و غارت کی کوئی انتہا نہ تھی۔ وہ عورتوں اور بچوں کو بھی بے دریغ قتل کر دیتے تھے۔ زوہ موت سے ڈرتے تھے اور زہ دوسروں پر رحم کرتے تھے۔ وہ مشکوں پر یا گھوڑے کی ایال یا دم پکڑ کر تیرتے ہوئے دریاؤں کو عبور کر جاتے تھے۔

تاتاریوں کی باقاعدہ تاریخ کا آغاز چھٹی صدی ہجری (بارہویں صدی عیسوی)

کے اخیر میں اس وقت ہوا جب ان کے تمام قبائل کو چنگیز خاں نے ایک جھنڈے تلے جمع کیا اور پھر ان کو ساتھ لے کر تاتار اور چین کے وسیع علاقے فتح کر لیے۔

ممالک اسلامی پر تاتاریوں کی لہڑہ خیز یورش کا آغاز ۶۱۵ھ میں ہوا۔ اسی یورش

کو مسلمان مورخین نے "فتنہ تاتار" سے موسوم کیا ہے۔ اس کی اصل وجہ تو چنگیز خاں کی ہوس ملک گیری اور مٹے زمین کے کل انسانوں کا شہنشاہ بننے کی خواہش تھی لیکن بظاہر

علاء الدین محمد خوارزم شاہ اور چنگیز خاں کی باہمی نزاع اس یورش کی محرک ہوئی۔

## دولت خوارزم شاہی

خوارزم شاہی سلطنت کا بانی سلجوقیوں کا ایک سردار اتسز (۵۲۱ء تا ۵۵۱ء / ۱۱۲۴ء تا ۱۱۵۶ء)

تھا۔ روس کا وہ علاقہ جو آج کل خجیو کے نام سے مشہور ہے اس زمانے میں خوارزم کہلاتا

تھا اور اس کے حکمران کا لقب خوارزم شاہ تھا۔ اتسز سلجوقیوں کی طرف سے اس علاقے

کا گورنر تھا لیکن بعد میں خود مختار ہو گیا۔ اتسز کے بعد الارسلان (۵۶۸ء تا ۵۹۸ء / ۱۱۵۶ء تا ۱۱۸۶ء)

سلطان شاہ محمود (۵۶۸ء تا ۵۹۸ء / ۱۱۴۲ء تا ۱۱۷۲ء) تکش (۵۶۸ء تا ۵۹۴ء / ۱۱۴۲ء تا ۱۱۶۸ء) کے بعد دیگر سے

خوارزم کے تحت حکومت پر بیٹھے۔ تکش بڑا حوصلہ مند حکمران تھا۔ اس نے خوارزم

کے علاوہ خراسان سے اور اصفہان بھی اپنی حکومت میں شامل کر لیے۔ (۵۹۴ء تا ۱۱۹۹ء)

میں اس نے وفات پائی تو اپنے بیٹھے ایک وسیع سلطنت چھوڑی جس پر اس

کا بیٹا علاؤ الدین محمد حکمران ہوا۔ علاؤ الدین محمد بڑے دبدبہ کا بادشاہ تھا۔ چنانچہ

اس نے اپنی سلطنت کو مزید وسعت دی اور بہت سے علاقے فتح کر کے

دولت خوارزم شاہی کی سرحدیں ایک طرف ہندوستان اور دوسری طرف چنگیز خانی

مملکت سے ملاویں۔ خجیو (ارگنج)۔ سمرقند۔ بلخ۔ بخارا۔ نیشاپور۔ قرظین۔ مرو۔ زنجان

ہرات۔ رے۔ اصفہان۔ ہمدان۔ خجند وغیرہ کے مشہور شہر جو مسلمانوں کی تہذیب و

ثقافت میں بڑی اہمیت تھی ان کے تباہی کی خبریں سن کر خوارزم شاہ نے فوج کشی کرنے کی ترغیب عباسی

خلیفہ ناصر الدین اللہ (۵۰۵ء تا ۶۲۲ء) نے دی تھی۔ کیونکہ خوارزم شاہ اور اس کے

دوبیہاں عرصہ سے آن بن چلی آرہی تھی اور خلیفہ کو خطرہ تھا کہ کہیں وہ بغداد پر آ کر قبضہ

نہ کرے۔ اگر یہ روایت درست ہے تو اس کا مطلب یہ ہے کہ عباسی خلیفہ نے اپنی خلافت

کی تباہی کا بیج خود بویا۔ اگر اس کو یہ معلوم ہوتا کہ تاناری طوفان ایک دن خود عباسی خلافت کو بہا

لے جائے گا تو شاید یہ احمقانہ حرکت اس سے سرزد نہ ہوتی۔

و تمدن اور علم و شناسائی کے مرکز سمجھے جاتے تھے۔ خوارزم شاہی سلطنت میں واقع تھے۔ کہا جاتا ہے کہ شروع شروع میں خوارزم شاہی اور چنگیز خانی حکومتوں میں بہت اچھے تعلقات تھے اور دونوں طرف کے لوگ ایک دوسرے کے مابین آتے جاتے تھے لیکن بدقسمتی سے چند سال بعد ایک حادثہ دونوں سلطنتوں میں نزاع کا باعث بن گیا۔ ہوابیوں کے ایک دفعہ خوارزم شاہ کے ایک سرحدی گورنر نے چند مغز تاجروں کو جاسوس سمجھ کر قتل کر دیا اور ان کا سامان تجارت ضبط کر لیا۔ چنگیز نے خوارزم شاہ کے پاس ایچی بھیج کر اس واقعہ پر سخت احتجاج کیا اور اس کے ساتھ ہی مطالبہ کیا کہ مجرم گورنر کو اس کے حوالے کر دیا جائے۔ خوارزم شاہ بڑا خود سر حکمران تھا۔ اس نے غصے میں آکر چنگیز خاں کے ایچی کو قتل کر دیا۔ چنگیز خاں کو یہ خبر ملنے کی دیر تھی کہ وہ باختلاف روایت چھ لاکھ یا دس لاکھ تاناریوں کا ہڈی دل لے کر خوارزم شاہی سلطنت پر ٹوٹ پڑا۔

## خدائی قہر

تاناریوں کی یلغار کو مسلمان مورخین نے خدائی قہر کا نام دیا ہے۔ فی الحقیقت اس کو خدائی قہر کے سوا کسی دوسری چیز سے تشبیہ دینا ممکن بھی نہیں ہے۔ نہ خوار تاناری گروہ درگروہ سیلاب کی طرح خوارزم شاہی سلطنت میں گھسن گئے اور انہوں نے بخارا، سمرقند، بلخ، بلخ، پور، ہرات، دے، قزوین اور دوسرے بے شمار شہروں اور قصبوں کو جلا کر راکھ کا ڈھیر بنا دیا اور وہاں کے باشندوں کو نہایت بے دردی سے تہ تیغ کر دیا۔ اس قتل عام میں مرد، عورت بچے، بوڑھے بیمار، معذور کسی کی تخصیص نہ تھی۔ جو لوگ کسی طرح قتل ہونے سے بچ گئے، ان کو غلام بنا لیا گیا۔ ہر تانار نے اپنے اپنے "پریچنگ آف اسلام" اور دعوت اسلام میں



تاتاریوں کی غارت گری کا نقشہ ان الفاظ میں کھینچا ہے :-

”جب تاتاریوں کے لشکر کسی ملک کو برباد کر کے رخصت

ہوتے تو شاہوں کے قصر و ایوان اور عالی شان شہروں کی جگہ جو

خوش نما باغوں اور سرسبز مزرعہ زمینوں میں کھڑے تھے، مٹی اور

پتھر کے ٹوٹے نظر آتے۔ جس وقت ہرات کے شہر سے

مغلوں کے لشکر نے کوچ کیا تو چالیس آدمی بدحواس اپنے چھدنے کی

جگہ سے نکلے اور مٹی مٹی آنکھوں سے اس برباد ویرانے کو دیکھنے

لگے جو کچھ دن پہلے ان کا خوبصورت شہر تھا اور یہی چالیس آدمی

تھے جو ایک لاکھ کی آبادی سے بچے تھے۔ بنجارا میں جو علمائے

اسلام کی بدولت دنیا میں مشہور تھا ان مغلوں نے مسجدوں میں

اپنے گھوڑے باندھے اور قرآن پھاڑ پھاڑ کر ان کی بے ادبی

کی۔ جن مسلمانوں کو ان ظالموں نے قصائی بن کر ذبح نہیں کیا ان

کو غلام بنا کر لے گئے اور شہروں کو جلا کر راکھ کا ڈھیر بنا دیا۔ یہی

حال سمرقند، بلخ اور وسط ایشیا کے اور شہروں کا ہوا جن سے اسلامی

تہذیب و تمدن کی شان تھی اور جو عالموں کا مسکن اور علم کا مخزن تھے۔“

علامہ الدین محمد خوارزم شاہ نے اس سیلاب کے سامنے اپنے آپ

کو بے بس پایا تو بھاگ کھڑا ہوا لیکن جدھر جاتا تاتاری اس کا پیچھا کرتے آخر بھاگتا

پھپھتا بحیرہ خزر کے ایک جزیرے میں پہنچا اور  $\frac{614}{122}$  میں وہاں بڑی

لے سرسید امیر علی کا بیان ہے کہ ہرات کی آبادی دس لاکھ تھی۔ بلخ میں بھی اسی قدر لوگ آباد

تھے اور سمرقند و بنجارا کی آبادی تو اس سے بھی زیادہ تھی۔

بے سرو سامانی کے عالم میں وفات پائی۔ اس کا بیٹا جلال الدین محمد بڑے دل گروے کا آدمی تھا۔ باپ کے مرتے ہی اس نے اپنے آپ کو تاتاری سفاکوں کے زرعے میں پایا۔ تاہم اس نے نہایت جوان مروی سے ان کا مقابلہ کیا اور دو معرکوں میں انہیں شکست بھی دی لیکن چنگیز خاں طوفانِ بلا کی طرح اس کے پیچھے لگا رہا یہاں تک کہ وہ اپنے وطن کو چھوڑنے پر مجبور ہو گیا۔ تاتاریوں کی یورش صرف خوارزم شاہی سلطنت تک محدود نہ رہی بلکہ اس سے متصل کئی اور اسلامی علاقے اور یورپ کے کئی ملک بھی اس کا ہدف بنے۔

۶۲۴ھ میں چنگیز خاں نے وفات پائی تو اس کی سلطنت اقصائے

چین سے عراق بحر خزر اور حدودِ روس تک اور بحر شمال سے سرحد ہند تک پھیل چکی تھی۔

چنگیز خاں کی موت کے بعد جلال الدین محمد نے اپنے آبائی ملک پر پھر قبضہ کرنے کے لیے ہاتھ پاؤں مارے لیکن مغلوں کے طوفانِ بدتمیزی کے سامنے اس کی کچھ

اے چنگیز خاں اپنی غارت گری کے باعث مسلمانوں کے نزدیک خواہ کتنا ہی برا ہو لیکن اس حقیقت سے انکار کرنا ممکن نہیں کہ وہ اپنی قوم کا ہیرو اور ایک بہت بڑا فاتح تھا۔ وہ عسکری تنظیم، تجارت، صنعت و حرفت اور انتظامِ ملکی کی اہمیت کو خوب سمجھتا تھا۔ وہ تجارت کیلئے سہولتیں پیدا کرتا اور تجارتی قافلوں کے راستوں کی حفاظت کرتا۔ رطروں اور پلوں کی مرمت کرتا اور رسل و رسائل میں کوئی رکاوٹ نہ پڑنے دیتا۔ اس نے مغتوح قوموں میں سے بہت سے اہل کار و کلرک مقرر کیے اور اپنی قوم کے لیے ایک دستور العمل یا آئین بھی مرتب کیا جس کا نام یساق رکھا۔ اس پر صدیوں تک عمل کرتے رہے۔ کہا جاتا ہے کہ یساق کا ایک نسخہ بغداد کے مدرسہ مستنصریہ میں محفوظ تھا۔ علامہ مقریزی نے اس کو دیکھ کر اپنی کتاب الخلط والاثار میں اس کا خلاصہ لکھا ہے۔

پیش نہ چلی اور اس کو کرہستان کی پہاڑیوں میں پناہ یعنی پڑنی جہاں ۶۲۸ھ میں ایک کرو  
نے اس کو قتل کر ڈالا۔

## فتنہ تاتار کا دور اور

چنگیز خاں کی وفات کے بعد بھی تاتاریوں کی فتوحات کا سلسلہ زور شور سے جاری  
رہا اور تیس سال کے عرصے میں انہوں نے روس اور وسطیورپ کے کئی ممالک کو روند ڈالا۔  
۶۵۲ھ میں چنگیز خاں کے پوتے ہلاکو خاں نے ایک جہتدار لشکر کے ساتھ اسلامی  
ممالک پر اس ہولناک یلغار کا آغاز کیا جو عباسی خلافت کو خس و خاشاک کی طرح بہا لے گئی  
ہلاکو خاں نے سب سے پہلے شمشین یعنی باطنیوں کے علاقے کا رخ کیا اور ان کے مرکز  
قلعہ الموت اور دوسرے سوقلعوں کو تباہ و برباد کر دیا۔ اس کے بعد وہ خراسان کے راستے  
عباسی دارالخلافت بغداد کی طرف بڑھا۔

## سقوطِ بعتِ راد

عروس البلاد بعت راد پر تاتاری حملے کے اسباب و عوامل کیا تھے؟ یہاں ان کی  
تفصیل کی گنجائش نہیں مختصر آبیوں سمجھ لیجئے کہ مسلمانوں کے تشدد و افتراق اور  
بے حمیتی نے تاتاری وحشیوں کو قلبِ اسلام پر حملہ کرنے کی دعوت دی۔ عباسی خلافت  
جو تین سو سال سے برابر زوال پذیر تھی، انحطاط کے اس دور میں اپنی بقا کے لیے ہمیشہ کسی  
نہ کسی سہارے کی محتاج رہتی تھی۔ طاقتور غزنوی۔ سلجوقی۔ زنگی اور ایوبی حکمرانوں کے زوال کے  
بعد وہ بالکل بے سہارا ہو گئی تھی۔ عباسی خلفاء اگر اس وقت بھی ہوش سے کام لیتے اور  
اس دور کی دوسری طاقتور مسلم حکومتوں سے دوستانہ مراسم استوار کر لیتے تو شاید بغداد  
کی عباسی خلافت کو وہ روز بد و کھینا نصیب نہ ہوتا جس نے اس کو صفحہ ہستی سے

حرف غلط کی طرح مٹا دیا۔ لیکن ان خلفاء کی نفلت اور عاقبت نااندیشی کی یہ کیفیت تھی کہ ان کی سرحدوں سے کچھ دور اسلامی ممالک کے مسلمانوں کے سروں پر سے خون کا سیلاب گزر رہا تھا اور وہ آنکھیں بنا کیے اپنے بے کار مشاغل میں مصروف تھے۔ ان کی خوشی اسی میں تھی کہ چار چار سو غلام زیریں پٹکے باندھے ان کے سامنے دست بستہ حاضر ہیں اور لوگ ان کے تخت کو عرش معلیٰ سمجھتے رہیں۔ قدرت نے ان کو بہتیری طبعیل دی تھی لیکن انہوں نے اس سے کوئی فائدہ نہ اٹھایا یہاں تک کہ محرم ۲۵۶ھ (جنوری ۱۲۵۸ء) میں ہلاکو قہر الہی بن کر بغداد پر آنازل ہوا۔ حالات کی ستم ظریفی دیکھئے کہ قلب اسلام پر حملہ کرنے والے غارت گرتا تازیوں کے لشکر میں سعدی شیرازی کا مددگار ابو بکر بن سعد زنگی اتابک شیراز اور بدر الدین کوکو والی موصل بھی اپنی "مسلمان" فوجوں سمیت شامل تھے۔ خلیفہ المستعصم باللہ محصور ہو کر تازیوں کا مقابلہ کرتا رہا لیکن چالیس دن کے بعد اس کی قوت مدافعت جواب دے گئی اور اس نے اپنے آپ کو تازیوں کے حوالے کر دیا۔ اس کے بعد بغداد پر چھ مہینے اس کی داستان ناگفتنی ہے۔ ساتویں صدی ہجری کا نامور مؤرخ محمد بن علی بن طباطبایا معروف بہ ابن طقطقی اپنی کتاب "الفخری فی الآداب السلطانیہ والدول الاسلامیہ" میں لکھتا ہے کہ بغداد میں ہلاکو کی فوجوں کے داخل ہوتے ہی اس شدت کے ساتھ قتل و غارت جاری ہوا کہ بالا جمالی بھی اسے سنتا گراں گزرتا ہے۔ چہ جائیکہ تفصیل وار

وکان ما کان مما لست اذکرہ

فطن ظنا ولا تسئل عن الخبر

۱۔ بعض مؤرخین نے لکھا ہے کہ ابو بکر بن سعد خود اس لشکر میں شریک نہیں تھا بلکہ اس نے اپنے بیٹے کو فوج دے کر ہلاکو کی مدد کے لیے بھیجا تھا۔

دو کچھ ہوا سو ہوا میں اس کا ذکر نہیں کروں گا بس قیاس سے سمجھ لو اور

اصل خبریت پوچھو۔

حقیقت یہ ہے کہ بغداد کی عبرت ناک تباہی و بربادی کو احاطہ تحریر میں لانا اگر ناممکن نہیں تو سخت محال ضرور ہے۔ مختصر الفاظ میں یہی کہا جا سکتا ہے کہ دارالسلام بغداد جس کا دروازہ صدیوں سے بوسہ گاہِ خلافت رہا تھا وہاں چھ ہفتوں تک زبانِ شمشیر کے سوا کسی اور کو دم مارنے کی مجال نہیں تھی۔ بیس لاکھ آبادی کے اس عظیم الشان شہر میں آٹھ لاکھ (اور ایک دوسری روایت کے مطابق سترہ لاکھ) آدمی نہایت بیدردی سے قتل کر دیئے گئے۔ ان میں عورتیں بچے، بوڑھے، علماء، فضلاء، اہل ہنر، اساتذہ، طلباء، مریض اور معذور، قسم کے لوگ شامل تھے۔ ناز پروردہ اور عصمت مآب خواتین جن پر کبھی کسی غیر مرد کی نظر تک نہیں پڑی تھی، اپنے گھروں سے کشاں کشاں باہر لائی گئیں اور سڑکوں اور چوراہوں پر ان کی بے حرمتی کی گئی اس کے بعد ان مظلوموں کو موت کے گھاٹ اتار دیا گیا یا کنیریں بنا لیا گیا۔ خلیفہ مستعصم سے جان بخشی کا وعدہ کیا گیا تھا لیکن چوتھے ہی دن اسے ایک قالین میں لپیٹ کر لائیں اور گھونٹے مار مار کر ہلاک کر دیا گیا کیونکہ چنگیز خاں کے "یساق" میں یہ لکھا تھا کہ کسی بادشاہ کے خون سے تلو اورنگین نہیں ہونی چاہیے۔ عباسی شہزادے اور شہزادیوں خلیفہ کے درباری مصاحب، علماء، فضلاء اور دوسرے اہل کمال بھی جو اس کے ساتھ ہلاک ہوئے تھے، پناہ میں گئے تھے، تلو اورنگے گھاٹ اتر گئے بغداد کے لائندہ فلک بوس قصر و ایوان، رفیع الشان مساجد و مدارس بے نظیر کتب خانے اور شفا خانے قدیم مقبرے اور مزارات سب یا تو جلا کر رکھ کر دیئے گئے یا ان کو بری طرح برباد کر دیا گیا۔ جاہل تاتاریوں نے علم و ہنر کے وہ تباہ خزانے جو عباسی خلفاء اور اکابر علماء نے اپنے کتب خانوں میں بڑی محنت سے جمع کئے تھے، جلا کر دیا برباد کر دیئے۔ غرض بغداد اس بری طرح تباہ ہوا کہ آج تک اس

کی گزشتہ نشان و شوکت بجا نہیں ہو سکی۔

بغداد کا مٹنا اور خلیفہ کا قتل ہونا کوئی معمولی سانحہ نہیں تھا اس سے سارے عالم اسلام میں کھرام مچ گیا کیونکہ عباسی خلیفہ کی کمروری کے باوجود اسے روحانی طور پر ساری اسلامی دنیا کا فرماں روا سمجھا جاتا تھا اور بڑے بڑے باجبروت مسلم حکمران اور فاتح اس کے سامنے گرو نہیں جھکاتے تھے اور اس سے خلعت اور عہد حاصل کرنا اپنے لیے باعث سعادت سمجھتے تھے۔ اس زمانے کے شاعروں نے اس سانحہ پر ایسے ایسے دل دوز مرثیے لکھے ہیں کہ انہیں پڑھ کر کلیجہ شق ہوتا ہے۔ شیخ سعدی شیرازی نے بھی اس جانکاہ حادثہ سے متاثر ہو کر ایک دردناک مرثیہ لکھا جسے پڑھ کر معلوم ہوتا ہے کہ شیخ نے کاغذ پر خون کے آنسو ٹپکائے ہیں لیکن یہ دیکھ کر حیرت ہوتی ہے کہ شیخ نے اسی مرثیہ کے آخر میں ابو بکر بن سعد زنگی کی تعریف تو صیغ بھی کی ہے حالانکہ اس نے ہلاکوں خاں کا پورا پورا سناٹا دیا تھا بہر صورت یہ مرثیہ اپنی تاثیر اور زور بیان کے لحاظ سے فارسی زبان کے نادر شہ پاروں میں شمار ہوتا ہے مناسب معلوم ہوتا ہے کہ ہم اس کے چند اشعار یہاں درج کریں۔

سعدی کے مرثیہ بغداد (فارسی) کے چند اشعار

آسماں را حق بود کہ خون بسبار و بر زمین  
برزوال ملک مستعصم امیر المؤمنین  
(آسمان کو سزاوار ہے کہ امیر المؤمنین مستعصم کی تباہی پر زمین پر  
خون برسائے)۔

اے محمدؐ اگر قیامت می برآزی سرز خاک  
سر بر آوردین قیامت در میان خلق بین

اے محمد صلی اللہ علیہ وسلم اگر آپ قیامت ہی کو مرقد اقدس  
سے باہر نکلیں گے تو ابھی نکل کر قیامت دنیا میں دیکھ لیجئے۔

ناز نیشاںِ حرم را خونِ حلقِ ناز نہیں  
ز آستانِ بگزشت و مارا خونِ دل از آستان  
دھل کے ناز پروروں کے حلق کا خون ڈلوڑھی سے بہ گیا اور ہمارے  
دل کا خون آستین سے ٹپک نکلا۔

زیہارا ز دورِ گیتی و انفتابِ وزگار  
در خیالِ کس نگشتے کا پنچناں گورِ حنیں  
ازمانہ کی گردش اور دنیا کے انقلاب سے پناہ مانگتی چاہیے یہ بات  
کسی کے خیال میں بھی نہ آتی تھی کہ یوں سے یوں ہو جائے گا۔  
ویدہ بردار ایکہ ویدی شوکتِ بیتِ الحرام  
قیصرانِ روم سر بر خاک و حناقاں بزمیں  
و اے وہ کہ جس نے اس بیتِ الحرام کی شان و شوکت دیکھی ہے  
جہاں روم کے قیصر اور چین کے خاقان خاک پر سر رکھتے اور زمین  
پر بیٹھتے تھے، ذرا آنکھ اٹھا کر دیکھو:

خونِ فرزندِ انعمِ مصطفیٰ<sup>۳۱</sup> شد ریختہ  
عم بر آں خاک کے کہ سلطاناں نہاوندے رہیں  
(محمد مصطفیٰ<sup>۳۱</sup> کے چچا کے فرزندوں کا خون اس خاک پر بہ گیا  
جہاں سلاطین ماتھا رکھتے تھے)۔

دجلہ خونِ تابست زیں پس گر نہد سرِ رشید  
خاکِ نخلستانِ بطحار اکند باخوں عجبیں

دو جگہ کا پانی نکتہ خون ہو گیا ہے اگر اب جاری ہے گا تو تختانِ لطفا  
کی خاک کو خون سے رنگین کر دے گا۔

باش تا فردا کہ بیٹی روزِ داورِ مستحسب  
کز لحدِ باروئے خوں آلودہ بر نمیزد و قیل  
دکل تک صبر کرو قیامت کے دن دیکھ لینا کہ قبر سے اہلِ قبر لہو بھرا  
منہ لے کر اٹھیں گے۔

اس فارسی مرثیہ کے علاوہ شیخ سعدی نے نوے (۹۰) اشعار سے بھی زائد  
کا ایک مرثیہ عربی زبان میں لکھا ہے جو دلوں کو نہیں بلکہ پتھروں کو بھی کھلا دیتا ہے  
اس مرثیہ کے چند اشعار ملاحظہ فرمائیے :

نَسِیمٌ صَبَاً بَعْدَ اِدْبَعْدِ خَرَابِهَا  
تَمَسَّتْ لَوْ كَانَتْ تَمْرٌ عَلٰی وَتِیْرٍ

(کاش ایسا ہوتا کہ بغداد کی تباہی کے بعد اس کی ہوا کا جھونکا میری  
قبر پر گزرتا یعنی یہ حادثہ میں اپنی زندگی میں نہ دیکھتا)۔

وَلَا تَسْأَلُنَّ عَمَّا جَرَىٰ يَوْمَ الْحَصْرِ

وَذَلِكَ مِمَّا لَيْسَ بِدِخْلٍ فِي الْحَصْرِ

(نہ پوچھو جو جو حال بنی عباس کی قید کے دن گزرا یہ وہ حال ہے جو قیدیوں  
میں نہیں آسکتا۔)

اَدْبِرَتْ كَوْسُ الْمَوْتِ حَتَّىٰ كَانَتْ

رَوْسُ الْاَسَارِیِ تَحْرِكُ مِنَ السُّكْرِ

(شرابِ مرگ کے جامِ گردش میں لائے گئے یہاں تک کہ قیدی مقتولوں



کے سر (تڑپتے ہوئے) ایسے معلوم ہوتے تھے گویا نشتے میں جھوم  
رہے ہیں۔

بکت جدر المستنصریۃ ندبۃ  
علی العلماء الراسخین ذوالحجر  
اعلمائے راسخین پر جو اصحاب عقل و دانش تھے مدرسہ مستنصریہ  
کی دیواریں زار زار رو رہی ہیں

نوائی دھری لیتی مت قبلہا  
ولم أرعدوان السقیہ علی الخیر  
یہ زمانے کے سخت حادثے ہیں کاش! میں ان سے پہلے مر جاتا اور  
جاہلوں کا ظلم و دانش مندوں پر نہ دیکھتا۔

فان بنو العباس مفتخر الوری  
ذو الخلق المرضی والعز الزہری  
کہاں ہیں بنی عباس جن سے عالم کو فخر تھا جن کے اخلاق برگزیدہ  
اور پیشانیوں نورانی تھیں۔

غدا سمرابین الانام حدیثہم  
وذا سمریدین علی المسامح کالتسمیر  
ان کا ذکر اب دنیا میں ایک افسانہ ہو گیا اور یہ وہ افسانہ ہے جو  
کانوں کو بچھپیوں کی ٹوک کی طرح خون آلودہ کرتا ہے۔  
و مستصرخ یا للمروۃ فالصرو  
ومن یصرخ العصفور یبدی <sup>صفی</sup>  
(بہت سے فریاد کرتے تھے کہ وہاں ہے مروت کی کوئی مدد کرو مگر باز

کے پنجے میں چڑیا کی تیریا کو کون پہنچاتا ہے۔

يساقون سوق المعز في كبد الفلا

عزاز قوم لا يعودون بالزجر

جو لوگ زجر اور دھمکی سننے کے عادی نہ تھے ان کی مستورات صحرا

میں بکریوں کی طرح ہنکائی جاتی تھیں۔

بجلين سبا ياسا فرات وجوهها

كواعب لاتبرزن من حلل الحذاء

جو لڑکیاں پردہ میں چادروں سے چہرے باہر نہ نکالتی تھیں ان کو

کھلے منہ اسیر کر کے لے گئے۔

## مقامات آہ و فغاں اور بھی ہیں

یغداد کو تاریخ کرنے کے تقریباً دو سو سال بعد صفر ۷۵۰ھ اور جنوری ۱۲۶۰ء میں

ہلاکو کی فوجیں عراق کے دوسرے شہروں کی طرف بڑھیں۔ تباہی و بربادی۔ خونریزی

اور جہالت ان کی جگہ میں تھی۔ چند دن کے اندر اندر انہوں نے المراد علیہما نصیبین

اور حران کے بارونق شہروں کی اینٹ سے اینٹ بجا دی اور وہاں کے باشندوں کو

نہایت بیرونی سے قتل کر دیا۔ حران نے اس شرط پر اطاعت قبول کی تھی کہ شہر محفوظ

رکھا جائے گا۔ لیکن وحشی تاتاریوں نے شہر پر قبضہ کرتے ہی قتل عام شروع کر دیا۔

ماؤں کی چھاتیوں سے چمٹے ہوئے شیر خوار بچوں کو بھی نہ چھوڑا۔ یہاں سے تباہی و بربادی

کا یہ جھکڑ شام میں داخل ہوا اور حلب۔ حماة۔ بعلبک اور صیدا کو بری طرح پامال کر

ڈالا۔ حلب کے پچاس ہزار باشندے موت کے گھاٹ اتر گئے اور اس کی عظیم الشان

جامع مسجد کو آگ لگا دی گئی۔ اسی طرح حماة۔ بعلبک اور صیدا اکنڈروں کے ڈھیر

ن گئے۔ تاتاریوں کا ایک لشکر کاواکاٹا ہوا دمشق میں جا گھسا۔ اس کے ساتھ انطاکیہ کے صلیبی نائٹ اور ان کا سردار ریمینڈ چہارم۔ گر جستانی اور ارمنی عیسائی بھی تھے۔ دمشق کا قبضہ ہو کر ان لوگوں نے شہر کو خوب ٹوٹا اس کے بعد تاتاریوں کے سیل بلانے لیسٹین کا رخ کیا۔

## تاریخ کا سب سے بڑا حادثہ

اوپر کی سطور میں اسلامی ملکوں پر تاتاریوں کی یلغار کا محض ایک سرسری خاکہ پیش کیا گیا ہے اگر اس کی تفصیل لکھی جائے تو اس کے لیے کئی دفتر درکار ہوں گے۔ میر تقی میر نے بیان ہے کہ:

”اسلامی تاریخ میں کوئی واقعہ ایسی سفاکی اور غارت گری کا نہیں ہے جس کا مقابلہ تاتاری یورش سے کیا جائے۔“

لیکن نامور مسلم مؤرخ علامہ ابن اثیر نے اس کو صرف اسلامی تاریخ ہی نہیں بلکہ ساری دنیا کی تاریخ کا سب سے بڑا حادثہ قرار دیا ہے وہ فتنہ تاتار کا حال قلم بند کرتے ہوئے لکھتے ہیں کہ:

”میں کئی برس تک اس حادثہ عظیم کے تلخ ذکر کو بیان کرنے سے بچتا رہا کیونکہ کون ایسا شخص ہو گا جو اسلام کی تباہی اور مسلمانوں کی بربادی کی داستان لکھے اور اس کے لیے اس کا بیان کرنا آسان ہو۔ کاش میری ماں مجھ کو نہ جنتی اور میں اس سے پہلے ہی مر جاتا اور دنیا مجھ کو بالکل بھول جاتی مگر اس حال میں کہ میں اس حادثہ کا ذکر کرنے میں تامل کرتا تھا مجھ کو چند دوستوں نے اس کو قلم بند کرنے پر مجبور کیا۔ اب میں کہتا ہوں کہ میرا کام ایسے بڑے حادثہ اور ایسی سخت مصیبت

کے بیان کرنے کا ہے جس کی نظیر لیل و نہار نہیں لاسکتے اور یہ مصیبت

عموماً تمام لوگوں پر اور بالخصوص مسلمانوں پر نازل ہوئی اگر کوئی کہے

کہ حبیب سے خدا نے آدم کو پیدا کیا اس وقت سے آج تک دنیا

ایسی مصیبت میں مبتلا نہیں ہوئی تو وہ بالکل سچا ہے کیونکہ تاریخ میں

کوئی حادثہ اور کوئی واقعہ موجود نہیں ہے جو اس کے لگ بھگ ہو۔

سب سے بڑا حادثہ جو تاریخ میں ملتا ہے وہ نجات نصر کا ظلم و ستم

ہے جس نے بنی اسرائیل کو قتل کیا اور بیت المقدس کو برباد کیا مگر

بیت المقدس کی ان شہروں کے مقابلے میں کیا حقیقت ہے جن کو

ان ملعون تائاریوں نے برباد کیا اور جن میں سے ہر شہر بیت المقدس

سے کئی گنا تھا اور بنی اسرائیل کی ان لوگوں کے مقابلے میں کیا حقیقت

ہے جن کو انہوں نے قتل کیا کیونکہ تائاریوں نے جن شہروں میں قتل عام

کیا ان سے تنہا ایک شہر کے باشندے شمار میں بنی اسرائیل سے زیادہ

ہیں ان وحشیوں نے کسی پر رحم نہیں کھایا۔ انہوں نے مردوں اور عورتوں

اور بچوں کو بڑی سفاکی سے قتل کیا عورتوں کے پیٹ چاک کیے اور

شیر خوار بچوں کو ان کی ماؤں سے پھین کر ٹکڑے ٹکڑے کر دیا۔ اِنَّا

لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ۝ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ۝

مصر بیدار ہوتا ہے

یہ سچے بیان کیا جا چکا ہے کہ جس زمانے میں عراق اور شام میں یہ لڑنے خیز واقعات

ہو رہے تھے مصر میں مملوکوں کی حکومت کا آفتاب طلوع ہو رہا تھا۔ سقوط بغداد کے

وقت مصر پر پندرہ سالہ ملک المنصور حکمران تھا۔ اہل مصر تاتاریوں کی غارت گری کی خبر پر مدت سے سن رہے تھے لیکن دوسرے ملکوں کے مصیبت زدہ مسلمانوں کی مدد کرنے کے لیے ان میں کوئی حرکت پیدا نہیں ہوئی تھی شاید اس لیے کہ وہ تاتاری طوفان کو مصر سے دور اور اپنے آپ کو محفوظ سمجھتے تھے یا اس لیے کہ وہ اپنے اندر تاتاریوں سے ٹکر لینے کی سکت ہی نہ پاتے تھے۔ لیکن آخر ان کا یہ جمود ٹوٹ گیا۔ بغداد کی تباہی اور خلیفہ کے قتل کی خبر ان پر بجلی بن کر گری اور جب تاتاریوں کے مقتوحہ علاقوں سے مسلمانوں کے لٹے پٹے قافلے پناہ لینے کے لیے مصر میں داخل ہونے شروع ہوئے تو اہل مصر میں سخت ہیجان برپا ہو گیا۔ جب وہ تارکین وطن کی زبانی تاتاریوں کے ظلم و ستم کے واقعات سنتے تھے تو ان کا خون کھول اٹھتا تھا۔ اب وہ شدت سے محسوس کرنے لگے تھے کہ خطرہ ان کے قریب آپہنچا ہے اور اگر وہ اس کے مقابلے کے لیے تیار نہ ہوئے تو ان کا وہی حشر ہوگا جو اہل بغداد کا ہو چکا ہے۔

## ملک منظر سیف الدین

دہشت اور ہیجان کی اسی فضا میں ملک منصور کے اٹابک سیف الدین قطوزی (قطر) نے علماء اور عباد سلطنت کو جمع کیا اور ان سے کہا کہ یہ بڑا نازک وقت ہے تاتاریوں نے مرکز خلافت کو برباد کر ڈالا ہے اور خلیفہ کو شہید کر دیا ہے کوئی تعجب نہیں کہ اب وہ مصر کا رخ کریں۔ بادشاہ ابھی بچہ ہے اور دن بھر غلاموں کے ساتھ کبوتر اڑانے کے سوا کچھ نہیں جانتا اس وقت ہمیں کسی ایسے حکمران کی ضرورت ہے جو صاحب سیف بھی ہو اور صاحب تدبیر بھی۔ تمام علماء اور امراء نے اس کی رائے سے اتفاق کیا اور کہا کہ ہم آپ سے بڑھ کر کوئی اور مسند حکومت کے لائق نہیں سمجھتے۔ چنانچہ ملک منصور کو معزول کرنے کے بعد سب نے قطوزی (قطر) کے ہاتھ

پر بیعت کر لی اور وہ شوال ۶۵۷ھ میں مصر کا حکمران بن گیا۔ تخت نشینی کے بعد  
اس نے الملک المنظر کا لقب اختیار کیا۔

## تاتاری مصر کی طرف بڑھتے ہیں

ملک منظر کے خدشات درست ثابت ہوئے۔ اس کی تخت نشینی کے بعد  
بہی عرصہ بعد تاتاری شام کو پامال کرتے ہوئے فلسطین میں نمودار ہوئے لیکن ارض فلسطین  
ان کی منزل مقصود نہیں تھی۔ اب تو وہ مصر پر قبضہ کرنے کے خواب دیکھ رہے تھے  
فلسطین اور مصر کے درمیان ریگستان کا ایک چھوٹا سا ٹکڑا ہی تو حائل تھا۔ ان کو کچھ  
یقین تھا کہ اس ذرا سے ٹکڑے کو پار کرتے کے بعد فراعنہ کی سرزمین ان کے قدموں  
کے نیچے ہوگی، دریا سے نیل میں ان کی کشتیاں چلیں گی اور بحیرہ روم کے نیلے پانی  
کے کنارے ان کے عشرت کے بنیں گے۔

ہر فرعون نے راموس سے

معرکہ عین جالوت

۱۵ رمضان المبارک ۶۵۸ ہجری

(۲۵ اگست ۱۲۶۰ عیسوی)





## ہلاکو کا خط مملوک فرماں روا کے نام

آخر وہ وقت آ ہی پہنچا جس کا اہل مصر کو مدت سے دھڑکا لگا ہوا تھا۔ <sup>۴۵۸ھ</sup> وسط  
کی ایک گرم صبح کو چند تاتاری سفارتی لباسے اور ہتھیارے قاہرہ میں داخل ہوئے اس زمانے  
میں قاہرہ کے گلی کوچے پناہ گزینوں سے بھرے ہوئے تھے جو اپنی مظلومی اور تازیوں  
کی قوت اور بربریت کی کہانیاں دہرائے تھے۔ تاتاری سفیروں کے اچانک ورود نے  
قاہرہ میں خوف اور غیظ و غضب کی ملی جلی فضا پیدا کر دی۔ یہ سفیر مملوک فرماں روا کے  
کے نام اپنے اہل خانی کا خط لائے تھے اس خط میں ہلاکو نے ملک مظفر کو لکھا تھا:

”یہ اس کا فرمان ہے جو ساری دنیا کا آقا ہے۔ اپنی شہر پناہ میں منہدم

کر دو اور اطاعت قبول کر لو، اگر ایسا کرو گے تو تمہیں امن چین سے زندہ

رہتے دیا جائے گا اور اگر تم نے یہ بات نہ مانی تو پھر تم کو جو کچھ پیش آئیگا

وہ بلند و بالا جاودانی آسمان کے سوا کوئی نہیں جانتا ہے۔

## تاتاری سفیروں کا قتل

مملوک سپاہیوں کے ایک دستے نے تاتاری سفیروں کو اپنے گھیرے میں لے

لیا اور برہنہ تلواروں کے سائے میں ان کو شاہی دربار میں لے گئے یہ سفیر اگر اکڑا کر چل

لے تاتاری ارواح پرست تھے ان کا عقیدہ تھا کہ کائنات کی ہر شے ایک روح رکھتی ہے

اور نیک و بد روحوں کو انسانوں کی زندگی پر بڑی حد تک تصرف حاصل ہے۔ جاودانی اور

بلند و بالا آسمان کی روح سب سے بڑی اور طاقتور ہے۔

لہے تھے اور ان کا رویہ بڑا گستاخانہ تھا۔ انہوں نے آداب شاہی کا لحاظ کیے بغیر اپنے آقا کا منظر ملک مظفر کے سامنے پھینک دیا اور شعلے برساتی ہوئی آنکھوں کے ساتھ اس کے رویے کا انتظار کرنے لگے۔

مملوک فرماں روانے منظر پر ٹھہرا کر سنا تو اس کی پشت پانی پر پل پڑ گئے تاہم اس نے نہایت تحمل سے کام لیا اور تاتاری سفیروں سے کہا کہ ہم نے ہلا کو خاں کا کچھ نہیں بگاڑا۔ اس لیے بہتر یہی ہے کہ وہ مصر کو اپنے حال پر چھوڑ دے اور ہمارے امن و امان میں خلل ڈالے۔ تاتاری سفیر ملک مظفر کا جواب سن کر لال بھبو کا ہو گئے اور انہوں نے چلا

کر کہا

”کیا تم یہ چاہتے ہو کہ تمہارا وہی حشر ہو جو بغداد کے مغرور خلیفہ کا ہو چکا ہے۔ اچھی طرح سے سمجھ لو کہ ہمارے آقا کی قوت لامحدود ہے اور دنیا کی کوئی طاقت اس سے ٹکر نہیں لے سکتی۔ وہ خوب جانتا ہے کہ تم جیسے خود سر حکمرانوں اور ان کی رعیت سے کیا سلوک کرنا چاہیے۔“

ملک مظفر نے ان کو بہتیرا سمجھایا کہ اپنی روش سے بازار اجائیں لیکن ان کا لب لہجہ درشت سے درشت تر ہوتا گیا۔ فی الواقع ان کا رویہ سفارتی آداب کے قطعاً مخالف تھا۔ ملک مظفر نے ان کی بدتمیزیوں کو کافی دیر تک برداشت کیا لیکن ہر چیز کی ایک حد ہوتی ہے آخر اس کی قوت صبر و ضبط جواب دے گئی۔ دربار میں امیر بیس بنو قدری اور دوسرے عمائد سلطنت بھی موجود تھے ان میں سے کچھ لوگوں کی رائے تھی کہ تاتاریوں کی غیر مشروط اطاعت قبول کر لینی چاہیے لیکن امیر بیس اور دوسرے بہت سے غیرت مند اکابر دربار کا خیال تھا کہ تاتاریوں کے عہد و پیمان کا کوئی اعتبار نہیں ہے۔ مصر مسلمانوں کی آخری امید گاہ ہے اور اسکی حفاظت کے لیے سر رکھن باندھ کر لڑنا چاہیے۔ ملک مظفر شروع ہی سے مؤخر الذکر

بلتے کا ہم خیال تھا۔ تاتاری سفیروں کے رشتے نے اس کو اپنے عزم و یقین میں اور تختہ کر دیا اور اس نے غضب ناک ہو کر حکم دیا کہ ان گنتوں کی زبانیں گدی سے کھینچ لو اور ان کے سر تسلیم کر دو یہی ہلا کو خاں کو ہمارا جواب ہے۔ بادشاہ کا اشارہ پاتے ہی مملوک سپاہی شوریدہ سر سفیروں پر جھپٹ پڑے اور آنا نانا ان کو خاک و خون میں لٹوا دیا۔ چند ساعت بعد اہل قاہرہ نے دیکھا کہ تاتاری سفیروں کی لاشیں شہر کی اہم گزرگاہوں میں لٹکی ہوئی ہیں۔

## جہاد کی تیاری

ملک مظفر نے تاتاری سفیروں کو قتل کر کے گویا ہلا کو خاں کے خلاف اعلانِ جہاد کر دیا تھا۔ اب اہل مصر کے لیے ایک ہی راستہ تھا کہ لڑ کر فتح حاصل کریں یا اپنی جانیں قربان کر دیں۔ ان کے لیے یہ بات بڑی امید افزا تھی کہ تاتاریوں سے نبرد آزما ہونے کا بڑا منصوبہ کے مرد میدان امیر بیبرس بند قاری نے اٹھایا ہے وہ ایک با نکاسیاء اور نڈر جرنیل تھا تاتاریوں کی قوت اور طاقت کے افسانے سن کر وہ قہقہے لگایا کرتا تھا اور کہا کرتا تھا کہ وقت آنے دو ہم ان مغرور و حشیشیوں کو بتا دیں گے کہ صرف وہی لڑتا نہیں جانتے دنیا میں کچھ ایسے لوگ بھی ہیں جو ان کا پنجرہ مروڑے سکتے ہیں تاتاری سفیروں کی لاشیں اسی کے حکم سے قاہرہ کے اہم مقامات پر لٹکانی گئی تھیں اس سے اس کا مقصد یہ تھا کہ تاتاری سفیروں کی آمد سے قاہرہ کے بعض لوگوں پر جو دہشت طاری ہوئی تھی وہ دور ہو جائے۔ ملک مظفر نے اس کو فوج کا سپہ سالار مقرر کر دیا اور وعدہ کیا کہ اگر وہ تاتاریوں کو شکست دینے میں کامیاب ہو گیا تو حلب کی ولایت اس کو دے دی جائے گی۔ بیبرس نے جہاد کی تیاری کرنے میں دن رات ایک کر لیے اس نے قاہرہ کے ہر تندرست اور بالغ مرد کے لیے فوجی خدمت لازمی قرار دے دی

اور حکم دیا کہ جو شخص کسی معقول عذر کے بغیر فوج میں بھرتی ہونے سے گریز کرے اس کو  
 کوڑے لگائے جائیں۔ اہل قاہرہ کے علاوہ پیرس نے اپنی فوج میں پناہ گزین  
 ترکمانوں، عرب بدوؤں اور مصر بلند کے عورہ قبائلیوں کی ایک کثیر تعداد کو بھی بھرتی کر  
 لیا تھا یہ لوگ بڑے نڈر اور اعلیٰ درجے کے جنگجو تھے اور ان کی شجاعت پر ہر حالت  
 میں بھروسہ کیا جاسکتا تھا۔ تھوڑے ہی دنوں میں پیرس کے جھنڈے کے نیچے ایک  
 جہاز لشکر اکٹھا ہو گیا۔ اس لشکر کا سب سے اہم اور فعال عنصر وہ تھا جس کی تشکیل مملوک  
 دستوں سے کی گئی تھی۔ ان مملوکوں کو کئی سال تک اعلیٰ درجہ کی عسکرہ تریبت دی گئی  
 تھی اور اب وہ فن حرب و ضرب میں کمال درجے کی مہارت رکھتے تھے۔ یہ لوگ  
 دشت قبچاق کے رہنے والے تھے اور تاتاری ان کے لینے کوئی اجنبی نہیں تھے۔ اصل  
 یہی وہ لوگ تھے جو تاتاریوں کی آنکھوں میں آنکھیں ڈال کر بات کر سکتے تھے اور ان کے  
 پیچھے میں پیچھے ڈال کر لڑ سکتے تھے۔

## ہلاکو کی مراجعت وطن

جن دنوں قاہرہ میں یہ واقعات پیش آئے تھے۔ اہل خاں ہلاکو کو اطلاع ملی  
 کہ اس کا بھائی منگو خاں جو تاتاریوں کا خان اعظم (قاآن یا خاقان) تھا مگر گیا ہے اور اس کا  
 جانشین نامزد کرنے کے لیے مغل سرداروں کا جو اجتماع ہو رہا ہے اس میں ہلاکو کی  
 شرکت ضروری ہے۔

ہلاکو کے سپہ سالار اور اس کی بیوی دو قوز خاتون نے اصرار کیا کہ ہماری یلغار جاری  
 رہنی چاہیے کیونکہ خان اعظم نے جو اب مرجکا ہے، حکم دیا تھا کہ مصر کا خاتمہ کر دیا جائے۔  
 لیکن ہلاکو نے ان کی بات نہ مانی وہ مغل سرداروں کے اجتماع عظیم (قرولتائی) میں شرکت  
 کو دوسری سب باتوں پر مقدم سمجھتا تھا اس نے اپنے بھائیوں کو پیغام بھیجا کہ وہ وطن واپس

اور ہے اس کے ساتھ ہی اس نے اپنی فوجوں کو حکم دیا کہ قفقاز کے کنارے کنارے  
شمال کا رخ کر لو تم گھاس سوکھنے سے پہلے پہلے اپنے وطن پہنچنا چاہتے ہیں لیکن پھر  
یہ ایک اس کو کوئی خیال آیا اور اس نے اپنے نائب اور سپہ سالار کتبغا (قطبوغا) کو اپنے  
پاس بلایا اور اس سے کہا کہ ہمارے جانے کے بعد اس علاقے کی حفاظت تمہارے ذمہ  
ہے جب تک ہم قزوستانی سے فارغ ہو کر واپس نہ آئیں تم یہیں رہو گے ہم تمہارے ماتحت  
ایک زبردست لشکر چھوڑے جاتے ہیں ہمارے ارمنی اور گرجستانی حلیف بھی تمہاری  
اعانت کے لیے یہاں موجود رہیں گے۔ کتبغا نے اہل خاں کے حکم کے سامنے سر  
جھکا دیا اور سینے پر ہاتھ رکھ کر کہا کہ جو فرض اسے سونپا گیا ہے وہ دل و جان سے اس  
کو پورا کرے گا۔ اس کے بعد ہلا کو اپنے عظیم الشان خیمہ و خرگاہ کے ساتھ صحرائے گوبی  
کی طرف روانہ ہو گیا۔ اب شام اور عراق مکمل طور پر کتبغا کی گرفت میں تھے وہ ہلا کو کا  
نہایت قابل اعتماد جنرل تھا اور شام کو پامال کرنے میں اس نے خاص حصہ لیا تھا۔ وہ ایک  
شقی القلب انسان تھا اور اس کی ربوبیت کے افسانے سارے عالم اسلام میں مشہور  
تھے۔ ہلا کو کے جانے سے بعد اس نے فلسطین میں عین جالوت (Ain Jalut)  
کے مقام پر چھادنی ڈال دی۔ مشہور شہر ناصرہ (Nazareth) کے قریب  
یہ مقام اس کے لشکر کے قیام کے لیے نہایت موزوں تھا یہاں سے وہ ایک طرف  
شام اور عراق پر اپنا تسلط موثر طور پر قائم رکھ سکتا تھا اور دوسری طرف جب چاہے مصر  
کی طرف بڑھ سکتا تھا۔

### معرکہ عین جالوت

ہلا کو کی مراجعت کی اطلاع بہت جلد قاہرہ پہنچ گئی۔ اہل مصر کی تمام جنگی تیاریاں

لے (Kitboga) فلپ کے حتی کا بیان ہے کہ کتبغا دین مسیحی کا پیرو تھا۔ اس نے

شام کو بہت بری طرح پامال کیا اور لوٹا تھا۔ (تاریخ شام از حتی)

ابھی تک دفاعی نوعیت کی تھیں لیکن اب بیبرس نے یکا یک ایک ایسا فیصلہ کیا جو کسی کے  
 دہم و گمان میں بھی نہیں آسکتا تھا۔ اس نے اعلان کیا کہ ہماری فوج آگے بڑھ کر کتبغا کے  
 لشکر سے نبرد آزما ہوگی۔ اس وقت رمضان المبارک کا آغاز ہو چکا تھا۔ بیبرس کے  
 اعلان نے اس کے سپاہیوں کو اس مقدس مہینے میں جہاد کی افضل ترین عبادت سے  
 سعادت اندوز ہونے کا موقع فراہم کر دیا۔ چنانچہ انہوں نے بڑی خوش دلی سے اس کا  
 فیصلہ قبول کر لیا اب وہ اپنے لشکر کے ساتھ بڑی تیزی سے فلسطین میں داخل ہوا  
 فوج کے متعدد دستے صلیبیوں کے قلعوں کے چاروں طرف پھیلا دیئے تاکہ وہاں سے  
 کتبغا کو کوئی مدد نہ پہنچ سکے۔ اگر صلیبیوں کے کسی سر پھرے گروہ نے مسلمانوں سے مزاحم  
 ہونا چاہا تو اس کو مصری فوج کے ہراول دستوں نے مار پٹایا غرض اسلامی لشکر کسی خاص  
 مزاحمت کے بغیر بہت جلد تاتاری لشکر گاہ کے قریب پہنچ گیا اور اس سے کچھ فاصلے  
 پر پڑاؤ ڈال دیا۔

بروز جمعہ ۱۵ رمضان المبارک ۶۵۸ھ (۲۵ اگست ۱۲۶۰ء) کو دونوں لشکر  
 عین جالوت کے مقام پر ایک دوسرے سے متصادم ہوئے۔ اس گھمسان کارن  
 پڑا کہ ارض و سما کانپ اٹھے۔ بیبرس نے اس معرکے میں حیرت انگیز عسکری صلاحیت  
 کا مظاہرہ کیا۔ اس نے ممالک جنگجوؤں پر مشتمل اپنی فوج کے بہترین دستوں کو گھات

لہ اس لڑائی میں فریقین کے لشکروں کی تعداد کے بارے میں مختلف روایات ہیں۔ ایک روایت  
 کے مطابق مسلمانوں کی تعداد ایک لاکھ سے اوپر تھی اور کتبغا کے پاس دس ہزار تاتاری جنگجو  
 تھے ان کے علاوہ گرجستانی اور ارمنی عیسائیوں کی ایک کثیر تعداد بھی اپنی کے ساتھ تھی۔  
 ایک دوسری روایت کے مطابق دونوں فریق عسکری نقطہ نگاہ سے ایک دوسرے  
 کے ہم پلہ تھے۔

میں بٹھا دیا اور پہلے اپنی ہلکی سوار فوج کو بڑے وسیع رقبے میں پھیلادیا کہ آگے بڑھایا۔  
 تاتاریوں نے پوری قوت سے مصری سواروں پر حملہ کیا اور ان کو پیچھے دھکیلتے ہوئے  
 اندھا دھند آگے بڑھنے لگے۔ بیبرس نے اپنے سواروں کو تاکید کی تھی کہ وہ جم کر مقابلہ  
 نہ کریں بلکہ تاتاری حملے کا آغاز ہوتے ہی آہستہ آہستہ پیچھے ہٹنا شروع کر دیں چنانچہ انہوں  
 نے اسی کے مطابق عمل کیا یہاں تک کہ تاتاری ان مملوک دستوں کی زد میں آگئے جو  
 گھات میں بلیٹھ کر تاتاریوں سے دو دو ہاتھ کرنے کے لیے بیابا ہوئے تھے۔  
 یکایک وہ تکبیر کے نعے بلند کرتے ہوئے اپنی کمین گاہوں سے نکل کر تاتاریوں  
 پر ٹوٹ پڑے اور اس سے پہلے کہ وہ اپنے آپ کو سنبھال سکتے مملوک دلاوروں نے  
 ان کے ہزاروں سپاہیوں کو کاٹ کر رکھ دیا۔ کتبغا کے لیے یہ حملہ بالکل غیر متوقع تھا  
 اس نے اپنی صفوں کو دوبارہ مرتب کرنے کی بہتری کوشش کی لیکن اس کی سب  
 تدبیریں دھری کی دھری رہ گئیں۔ مسلمانوں کے تیز و تند حملوں نے تاتاری لشکر کے پرچے  
 اڑا دیئے۔ گرجستانی اور ارمنی پیدل دستوں کا تو اور بھی برا حال ہوا مملوک شہسواروں  
 نے ان کو بالکل ہی روند ڈالا۔ غرض چند گھنٹے کے اندر اندر تاتاریوں کو ایسی کمر توڑ  
 شکست ہوئی کہ کھلے چالیس سالوں میں اس کی نظیر نہیں ملتی تھی۔ کتبغا میں میدانِ جنگ  
 میں اپنے کئی ساتھیوں سمیت مسلمانوں کے ہاتھوں گرفتار ہو گیا۔ یہ درندہ صفت انسان  
 شام کے مسلمانوں پر بے پناہ مظالم توڑ چکا تھا اور کسی رعایت کا مستحق نہیں تھا چنانچہ  
 جب وہ بیبرس کے سامنے پیش کیا گیا تو اس نے بلا تامل اس کو قتل کرنے کا حکم دیا۔  
 قتل ہونے سے پہلے اس نے ڈینگ ماری کہ

”مسلمانوں نے میدانِ جیت لیا ہے تو کیا ہوا کیا مغلوں

کی گھوڑیوں نے بچے جلتا چھوڑ دیا ہے یا ان کی حورتیں بانجھ ہو گئی

ہیں؟ میرے مرنے کے بعد مثل شہسوار اس شکست کا بدلہ ضرور

لیں گے اور تمہیں اور تمہارے ملک کو اپنے گھوڑوں کی ٹاپوں سے کچل ڈالیں گے۔

بیسر نے کتبغا کی ڈینگ کا جواب نخدہ استہزاء کے ساتھ دیا اور اس کا سر تسلیم کر کرنا لاش کے لیے قاہرہ بھیج دیا۔ اس کے ساتھیوں کو بھی پابجو لاش قاہرہ بھیجا گیا، جہاں ان کو گلیوں میں پھرا کر حوالہ تیغ کر دیا گیا اس طرح وہی تاتاری جن کے متعلق مشہور تھا کہ ان کو کوئی شکست نہیں دے سکتا ان کا عبرت ناک انجام اہل قاہرہ نے اپنی آنکھوں سے دیکھ لیا۔

معرکہ عین جالوت کا شمار تاریخ کی فیصلہ کن لڑائیوں میں ہوتا ہے اگر خدا نخواستہ اس لڑائی میں مسلمانوں کو شکست ہو جاتی تو دنیا میں ان کے لیے کوئی جائے پناہ نہ رہتی اور ان کی تہذیب و تمدن اور تاریخ و ثقافت بالکل برباد ہو جاتی چنانچہ تمام عالم اسلامی میں اس فتح پر بے پناہ مسرت کا اظہار کیا گیا اور شکرانے کی نمازیں پڑھی گئیں۔ اگر بیسرن اور کچھ بھی نہ کرتا تو صرف اسی ایک معرکہ میں اس کی کامیابی اس کو شہرت عام اور بقائے دوام کے دربار میں امتیازی مقام دلانے کے لیے کافی تھی۔

۱۷ بعض مورخین نے لکھا ہے کہ کتبغا نے یہ ڈینگ مارنے کے بعد میدان جنگ میں خودکشی کر لی۔ کچھ دوسرے مورخین کا بیان ہے کہ کتبغا لڑتا ہوا مارا گیا اور مسلمانوں کو اس کی لاش تاتاری مقتولوں میں ملی۔ بہر صورت اس کا سر یا مردہ جسم قاہرہ بھیجا گیا جہاں اس کی خوب تشہیر ہوئی۔

۱۸ بعض مورخین نے لکھا ہے کہ ان متعلقیوں کو موت کے گھاٹ اتارنے سے پہلے ان کے ہاتھ پاؤں توڑے گئے کیونکہ انہوں نے مسلمانوں پر لڑنے خیر مزہ عالم ڈھائے تھے ان قیدیوں میں کتبغا کا بیٹا بھی شامل تھا۔

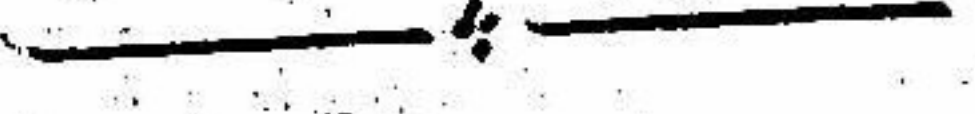


ہلا کو خاں ابھی اپنے وطن کے راستے ہی میں تھا کہ اس کو اپنے لشکر کی ذلت منگیز شکست اور کتبغا کے قتل کی اطلاع ملی۔ اس وحشت ناک خبر کو اس نے حیرت اور غصے کے نلے جلے جذبات کے ساتھ سنا اور جب اس کو کتبغا کے آخری الفاظ سے آگاہ کیا گیا تو اسے بڑی غیرت آئی لیکن اب اس شکست کا بدلہ لینے کے لیے سینکڑوں میل دور جانا بڑا کٹھن کام تھا۔ بڑی سوچ بچار کے بعد اس نے فیصلہ کیا کہ اس وقت وطن کی طرف سفر جاری رکھا جائے اور قردقانی سے فالج ہو کر مصر کو صفحہ ہستی سے ناپاؤ کر دیا جائے۔ لیکن اسے کیا خبر تھی کہ معرکہ عین جالوت فتنہ تاتار کے رد عمل کا آغاز تھا اور اب مغل کتبغا کی ڈینگ کو کبھی پورا نہیں کر سکیں گے۔

## شام سے تاتاریوں کا مکمل انخلاء

بیرس نے معرکہ عین جالوت میں تاتاریوں کو شکست دے کر ان کی ریڑھ کی ہڈی توڑ دی تھی لیکن اس کا کام ہنوز تشدد تکمیل تھا کیونکہ حلب، حماہ، دمشق اور شام کے کئی دوسرے شہروں میں تاتاری ابھی تک دندنائے تھے۔ بیرس نے ایک طوفانی یلغار میں ان تاتاریوں کو جالیا اور تار بڑ توڑ شکستیں دے کر ان کو براہ قرار اختیار کرنے پر مجبور کر دیا۔ اپنی اس طوفانی مہم میں بیرس نے ان تمام غداروں کو بھی بیدریغ قتل کر دیا جنہوں نے تاتاریوں کے ساتھ تعاون کیا تھا اس طرح چند دن کے اندر اندر سرزمین شام تمام تاتاری غارت گروں اور ان کی حمایت کا دم بھرنے والے نام نہاد مسلمانوں سے یک سر پاک ہو گئی۔ اب بیرس کا کام پورا ہو چکا تھا لیکن اسے خدشہ تھا کہ جو بھی وہ مصر کو پلٹا تاتاری پھر شام میں آگھسیں گے۔ اس خطرے کا تدارک کرنے کے لیے بڑے وسیع اور دور رس اقدامات کی ضرورت تھی لیکن ان کے لیے وقت نہیں تھا کیونکہ سیاسی حالات کے پیش نظر وہ جلد از جلد قاہرہ واپس جانا چاہتا

تھا چنانچہ اس نے اس قسم کے اقدامات کو کسی آئندہ وقت پر اٹھا رکھا البتہ فوج  
 کے چند مضبوط دستے شام میں مناسب مقامات پر تعینات کر دیئے اور خود باقی فوج  
 کے ساتھ فتح و نصرت کا پرچم اڑاتا واپس قاہرہ پہنچ گیا۔



# پیرس تخت حکومت پر

(۱۷ ذی قعد ۱۲۶۰ ۴۵۸ ہجری)  
عیسوی



## بیرمحمولی ہرولعزیزی

بیرس نے منصورہ وغزہ اور کئی دوسری لڑائیوں میں بے مثال شجاعت و عسکری صلاحیتوں کا مظاہرہ کر کے مصر کی سیاست میں نمایاں مقام حاصل کر لیا تھا لیکن بعد کہ عین جالوت میں عظیم الشان فتح حاصل کر کے وہ شام عالم اسلام اور بالخصوص اہل مصر کی آنکھوں کا تارا بن گیا۔ چنانچہ جب وہ منظر منصورہ فاہرہ واپس آیا تو اہل مصر نے والہانہ جوش و غروش سے اس کا استقبال کیا اور اس کی درازی عمر کی دعائیں مانگیں۔ فی الحقیقت عین جالوت کی فتح نے مصر اور شام میں بیرس کی ہرولعزیزی کو اورچ کمال پر پہنچا دیا اور وہ مسلمانان مصر و شام کا محبوب ترین قائد بن گیا۔

## ملک منظر کا قتل

ملک منظر نے بیرس اقتدار آ کر کچھ ایسے اقدامات کئے تھے جو مملوک امرا کو ناگوار کرتے تھے لیکن تاتاریوں کے خطرہ کے پیش نظر وہ خاموش رہے اس خطر کے دور ہوتے ہی اس کے خلاف جو آگ اندر ہی اندر سلگ رہی تھی وہ بھڑک اٹھی چنانچہ مملوک امرا نے ایک کمرے کے ۱۶ ارزی قعدہ ۶۵۸ھ کو ملک منظر کو قتل کر ڈالا کہا جاتا ہے کہ بیرس اور ایک دوسرے سرکردہ مملوک امیر فارس الدین اقطانی نے اس کے قتل میں نمایاں حصہ لیا۔ بیرس اور ملک منظر کے درمیان اختلاف کا سبب بعض مورخین نے یہ بیان کیا ہے کہ ملک منظر نے بیرس سے وعدہ کیا تھا کہ اگر اس نے تاتاریوں کو شام سے نکال دیا تو حلب کی ولایت اس کو دے دی

جائے گی لیکن جب بیس نے یہ کام پورا کر لیا تو ملک مظفر اپنے وعدے سے پھر گیا۔ کچھ دوسرے مورخین نے لکھا ہے کہ ملک مظفر بیس کی غیر معمولی روایا عوامی مقبولیت سے خائف ہو گیا اور اس کو اپنے راستے سے ہٹانے کی توجیہ سوچنے لگا۔ چنانچہ اس نے ایک یا دو مرتبہ بیس پر قاتلانہ حملہ کرایا یا خوش قسمتی سے اس کو کوئی گزند نہ پہنچا لیکن اب اس نے بھی تہیہ کر لیا کہ ملک مظفر کو زندہ نہ چھوڑے۔ مملوک فوج پہلے ہی اس کا دم بھرتی تھی۔ اس نے سرکردہ مملوک امراء کو بھی اپنے ملا لیا اور موقع پا کر ملک مظفر کو موت کے گھاٹ اتار دیا۔

اس سلسلے کی ایک اور روایت یہ ہے کہ شام سے تاتاریوں کے انخلا کے بعد ملک مظفر نے حلب کی ولایت والی موصل بدرالدین لولو کے بیٹے علاء الدین کو شہ دی۔ چونکہ بغداد پر حملہ کے وقت بدرالدین لولو نے ہلاکو خان کا ساتھ دیا تھا اس لیے اس کے بیٹے کو حلب کا والی مقرر کیے جانے پر مملوک امراء اور لوگوں میں ملک مظفر کے خلاف ناراضی پھیل گئی اور یہی ناراضی اس کے قتل پر منتج ہوئی۔

## بیس کی تخت نشینی

ملک مظفر کے قتل کے بعد مملوک امراء نے اتفاق رائے سے رکن الدین بیس کو اپنا سربراہ منتخب کر لیا اور ۶۵۸ھ کو اس کو مستحکومت پر بٹھا دیا۔ اس کی تخت نشینی کے اعلان پر اہل مصر نے بڑے اطمینان اور مسرت

اہ بعض مورخین کا بیان ہے کہ ملک مظفر بھی بیس کے ساتھ شام گیا ہوا تھا وہاں سے واپسی پر بیس نے اسے رستہ میں ہی قتل کر دیا۔

کا اظہار کیا کیونکہ وہ بیرس کے جذبہ بہادری و شجاعت اور اعلیٰ کردار سے سنجوبی آگاہ تھے اور سمجھتے تھے کہ نیا سلطان تاناریوں اور صلیبیوں سے نپٹنے اور عوام کی امنگیوں کو پورا کرنے کی پوری صلاحیت رکھتا ہے۔ فی الحقیقت بیرس پہلا ملوک فرماں روا تھا جس کو نہ صرف ملوک امراء اور فوج کی مکمل حمایت حاصل تھی بلکہ عام لوگ بھی اس کے پر جوش مؤید تھے۔ سربراہ آرائے حکومت ہونے کے بعد بیرس نے بھی بڑی فراخ دلی سے کام لیا اور ان ملوک امراء کے خلاف کوئی انتقامی کارروائی نہیں کی جو ملک منظر کے خاص آدمیوں میں شمار ہوتے تھے۔ انتقام و تعزیر کا پتہ چلانے کے بجائے اس نے ان امراء کو نہ صرف اپنے مناصب پر بحال رکھا بلکہ اور بھی جو کچھ ہو سکتا تھا ان کی دل جوئی کے لیے کیا۔ اس طرح سب ملوک امراء بلا تخصیص دل و جان سے اس کے ہوا خواہ بن گئے۔

## لقب

علامہ جلال الدین سیوطی کا بیان ہے کہ  
 "رکن الدین بیرس بنا قداری تے تخت حکومت پر بیٹھ  
 کر اپنا لقب "الملك القاہر" مقرر کیا اور زین الملک والدین ابن الزیر  
 کو اپنا وزیر بنایا۔ وزیر نے ایک دن "القاہر" سے کہا کہ جس شخص  
 نے اپنا لقب قاہر مقرر کیا اس نے کبھی فلاح نہیں پائی چنانچہ

۱۔ محمد بک الخفیری نے "محاضرات الامم الاسلامیہ" میں لکھا ہے  
 کہ بیرس نے تخت نشین ہو کر بہاؤ الدین کو اپنا وزیر مقرر کیا۔ معلوم نہیں کہ ابن الزیر  
 اور بہاؤ الدین ایک ہی شخصیت ہے یا دو مختلف شخصیتیں؟

القاسم بن المعتضد نے یہ لقب اختیار کیا۔ وہ چند روز میں معز کو لے گیا اور اس کی آنکھیں نکلوا ڈالی گئیں۔ پھر والی موصول نے اپنا لقب قاہر رکھا اس کو زہر دے دیا گیا اس پر سلطان نے اپنا لقب قاہر سے بدل کر "ظاہر" رکھ لیا۔ (تاریخ الخلفاء للسیوطی)

اس روایت سے ظاہر ہوتا ہے کہ سلطان بیرس نے پہلے اپنا لقب "الملك الظاہر" رکھا لیکن جلد ہی اس کو بدل کر "الملك الظاہر" کر دیا۔ چنانچہ تاریخ میں وہ "الملك الظاہر" کے لقب ہی سے مشہور ہوا۔

## ابتدائی زندگی

ملک الظاہر بیرس کی ابتدائی زندگی کے بارے میں مورخین کے بیانات میں خاصا اختلاف پایا جاتا ہے۔ تاہم مختلف روایات کی روشنی میں اس کی ابتدائی زندگی کا جو خاکہ سامنے آتا ہے وہ حسب ذیل ہے :-

۱۔ بیرس ۶۱۹ھ میں دشت قپچاق (وسط ایشیا) میں پیدا ہوا۔

۲۔ اس کی ولادت سے کئی سال پہلے بلخ بخارا اور سمرقند وغیرہ کے مسلمان تاجروں کی تبلیغی مساعی کی بدولت دشت قپچاق میں اسلام پھیل چکا تھا۔ بیرس ایک ایک مسلمان گھرانے میں پیدا ہوا اور اس کا نام محمود رکھا گیا۔

۳۔ اس کے باپ کا نام یا لقب "حقیق" تھا جو عوارزم شاہی سلطنت میں ایک معزز عہدے پر فائز تھا۔ بدقسمتی سے حکمران وقت اس سے کسی بات پر ناراض ہو گیا اور اس کو پابند سلاسل کر دیا۔ اس طرح یہ خوشحال خاندان

۱۔ "القاسم" بغداد کے انیسویں عباسی خلیفہ ابو منصور محمد بن معتضد کا لقب تھا۔



گردش زمانہ کا شکار ہو گیا۔

۴۔ دشت پنجاب اور اس سے ملحقہ علاقوں کو تاتاریوں نے پامال کیا تو وہاں کے بے شمار بچوں اور جوانوں کو کاپڑ کر اپنے ہمراہ لے گئے اور ان کو برفہ فروشی کی مختلف منڈیوں میں فروخت کیا۔ کم سن محمود بھی اسی داروگیر میں غلام بنا کر دمشق کی منڈی میں بقیہت بیس دینار سرج فروخت کیا گیا۔

۵۔ محمود کو جس شخص نے خریدا وہ ایک مصری امیر تھا جس کا نام علی ابن الوزقر تھا۔

۶۔ علی ابن الوزقر ایک دو سکہ مصری امیر کا مقروض تھا اس نے اس قرض کے عوض محمود کو اپنے قرض خواہ کوٹے دیا۔

۷۔ اس دو سکہ مصری امیر کی بیوی نے محمود کو اپنے بھتیجے حسن لڑکے کی خدمت پر

مامور کر دیا۔ ایک دن محمود سے کوئی لغزش ہو گئی۔ اس پر اس کی مالکہ نے اسے

برسی طرح پٹیا اس موقع پر امیر کی بہن فاطمہ نامی بھی موجود تھی اس کو محمود پر پڑا

رحم آیا اور اس نے اپنی بھانج سے کہا کہ اگر تم اس غلام کے کام سے خوش

نہیں ہو تو اس کو میرے سپرد کر دو۔ وہ رضامند ہو گئی اور فاطمہ محمود کو اپنے

ساتھ دمشق لے گئی جہاں اس کا گھر تھا۔ فاطمہ کا ایک فرزند امیر بن نامی فوت

ہو گیا تھا۔ حسن اتفاق سے محمود کی شکل و صورت متوفی لڑکے سے بہت ملتی جلتی

تھی چنانچہ فاطمہ اس کو بیس کہہ کر پکارتی اور اس سے ماوراء شفقیت کے

ساتھ پیش آتی۔ فاطمہ کا ایک بھائی، الملک الصالح نجم الدین ایوب کے رباب

میں ایک معزز عہدیدار تھا ایک دفعہ وہ اپنی بہن سے ملنے دمشق آیا تو وہاں

اس نے بیس کو دیکھا اور اس کے حالات سنے۔ اس لڑکے کے اہلوار سے

اس قدر پسند آئے کہ اس نے اس کو فاطمہ سے مانگ لیا اور اپنے ساتھ واپس

لے خدا کی قدرت کہ محمود نے تاریخ میں بیس ہی کے نام سے شہرت پائی۔

لے گیا۔ وہاں اُس نے بیرس کو ملک صالح کی نذر کر دیا۔

## ترقی کے لیے پر

جیسا کہ نیچے بیان کیا جا چکا ہے ملک صالح نے سرکیشی مملوکوں کو بڑی کثرت سے خرید کر لیا تھا اور ان کی تعلیم و تربیت کے لیے خاص انتظامات کئے تھے۔ بیرس نے بھی ملک صالح کی سرپرستی میں کتابی علوم اور عربی فنون میں اعلیٰ درجہ کی مہارت حاصل کی اور اس کے بعد حسب دستور مملوک فوج میں بھرتی ہو گیا۔ اپنی غیر معمولی جسمانی قوت و ہمت اور جاہلت کی بدولت وہ بہت جلد فوج کے ایک دستے کا افسر بن گیا۔ تاہم اس نے ابھی تک کوئی خاص شہرت حاصل نہ کی تھی۔ اتفاق سے اسی زمانے میں سناؤیوں صلیبی جنگ چھڑ گئی۔ اسی جنگ کے دوران میں منصورہ کا فیصلہ کن معرکہ پیش آیا جس میں نوجوان بیرس نے حیرت انگیز عسکری صلاحیت اور شجاعت کا مظاہرہ کیا اور وقعتہ شہرت اور ناموری کی انتہائی بلندیوں تک پہنچ گیا۔ اس کے بعد اُس نے کئی اور لڑائیوں میں کارہائے نمایاں سر انجام دیئے اور چند سال کے اندر اندر نہ صرف فوج بلکہ ملکی سیاست میں بھی اس کو ایک مقدر شخصیت تسلیم کیا جانے لگا۔ معرکہ عین جالوت میں عظیم الشان فتوح حاصل کرنے کے بعد تو عوامی مقبولیت کے لحاظ سے مصر اور شام کی کوئی شخصیت ایسی نہ تھی جو اس کی برابر کا دم بھر سکے۔ یہ اس کی عوامی مقبولیت اور ذاتی صلاحیتیں ہی تھیں جنہوں نے اس غریب الوطن غلام کو مصر کے تاج و تخت کا مالک بنا دیا۔

لے فلپ کے حتیٰ نے تاریخ لبنان میں لکھا ہے کہ بیرس آٹھ سو درہم کے عوض دمشق کی منڈی میں فروخت ہوا لیکن خریدار نے یہ کہہ کر سودا فسخ کر دیا کہ لڑکے کی کرنجی آنکھوں میں سقم ہے۔ الملک الصالح نے حماقے کے ایک شخص سے اسے خرید لیا۔

## حکومت کا ابتدائی دور

سلطان بیسپس نے برسرِ اقتدار آتے ہی ان مفاسد کا قلع قمع کرنے کی طرف توجہ کی جو اس کے پیشرووں بالخصوص ملک مظفر کے عہدِ حکومت میں پیدا ہو چکے تھے چنانچہ اس نے کسی تانچہ کے بغیر ہر قسم کے ناجائز ٹیکسوں اور محصولات کو یک قلم موقوف کر دیا اور تمام شراب خانوں، قحبہ خانوں اور قمار بازی کے اڈوں کو سختی کے ساتھ بند کر دیا تاہم وہ ملک کی تعمیر و ترقی اور معاشرتی اصلاح کے لیے ابھی بہت کچھ کرنا چاہتا تھا اور یہ اقدامات اس سلسلہ میں محض اولیات کی حیثیت رکھتے تھے لیکن اس وقت اس کے سامنے سب سے اہم مسئلہ شام کو تاناریوں کے خطرے سے محفوظ کرنا تھا کیونکہ خدشہ تھا کہ وہ عین جالوت کی شکست کا بارہ لینے کے لیے کسی وقت بھی دوبارہ شام پر حملہ آور ہو سکتے ہیں۔ اس کے ساتھ ہی وہ یہ بھی محسوس کرتا تھا کہ شام کی بقاء کا انحصار مصر سے مکمل الحاق پر ہے اور جب تک وہ تمام حکمران اور رؤسا جو شام میں متعدد چھوٹی چھوٹی املاک اور ریاستوں پر قابض تھے مصر کی بالادستی تسلیم نہیں کر لیتے شام ہمیشہ تاناریوں اور صلیبیوں کے حملوں کی زد میں رہے گا۔ چنانچہ ان مسائل سے عہدہ برآ ہونے کے لیے وہ اپنی تخت نشینی کے کچھ عرصہ بعد ایک طاقت ور فوج کے ساتھ شام میں داخل ہوا اور دمشق میں ایک دربار منعقد کر کے شام کے عمائد و اکابر کو اپنی بیعت کی دعوت دی خوش قسمتی سے شام کے لوگ بہت زریک ثابت ہوئے انہوں نے بلا تامل اس کی اطاعت قبول کر لی اور شام پرتقاہرہ کی مملوک حکومت کی سیادت تسلیم کر لی۔ سلطان نے بھی اہل شام کو ہر معاملہ میں اہل مصر کے مساوی حقوق عطا کیے اور اعلان کیا کہ شام سلطنتِ اسلامیہ مصر کا دوسرا بازو ہے اور دمشق اس متحدہ سلطنت کا دوسرا مرکزِ حکومت۔ تالیفِ قلب

کے طور پر اس نے شام کے بعض شہروں اور ریاستوں میں قدیم خاندانوں کی سیادت پر قرار رکھی لیکن ان پر یہ شرط عائد کر دی کہ وہ مرکزی حکومت کے احکام اور آئین کے پابند ہوں گے۔ اس طرح شام بھی مملوک سلطنت کا ایک باقاعدہ حصہ بن گیا۔ یہاں اس بات کی وضاحت ضروری ہے کہ اس دور کے شام میں وہ تمام علاقے بھی شامل تھے جو آج کل لبنان، اردن اور فلسطین (اسرائیل) کا حصہ ہیں۔ یہ انک بات ہے کہ بہت سے ساحلی شہروں اور علاقوں پر صلیبیوں کا قبضہ تھا۔ شام کے اندرونی انتظام سے فارغ ہو کر سلطان نے اس کی سرحدوں کے مؤثر دفاع کیلئے کئی اہم اقدامات کیے ان میں سے ایک دفاعی تدبیر یہ تھی کہ اس نے حلب سے حدود عراق تک تمام جنگلوں اور گھاس کے خطوں میں آگ لگا دی تاکہ حملہ آور لشکر آسانی سے پیش قدمی نہ کر سکے۔ غرض قاہرہ واپس جانے سے پہلے اُس نے اس بات کا اطمینان کر لیا کہ ایلخانی منغل اگر دوبارہ شام کا رخ کریں تو ان کو دندان شکن جواب دیا جاسکے گا۔

لہ بعض مورخین کے بیانات سے ظاہر ہوتا ہے کہ سلطان نے یہ تدبیر اس وقت اختیار کی جب وہ خلافت عباسیہ کا احیاء کرنے کے بعد شام کے دورے پر آیا۔ بہر صورت اس قسم کے تمام دفاعی اقدامات سلطان کی حکومت کے ابتدائی دور سے ہی تعلق رکھتے ہیں اس زمانے میں اس کا ایک قدم قاہرہ میں ہوتا تھا اور دوسرا دمشق میں۔ اُس نے ایلخانی مغلوں کے خلاف جہاد کا اعلان کر رکھا تھا اور اس کے سبیل و نہاد انہی کو روکنے کی تدبیروں میں گزارتے تھے۔

# خلافت عباسیہ کا احیاء

۴۵۹  
۶۱۲۶۱



## احیائے خلافت کا پس منظر

۶۵۶ء میں سقوط بغداد کے ساتھ عباسی خلافت کا بھی خاتمہ ہو گیا تھا۔ یہ  
 ۱۲۵۸ء خلافت بومی بھلی جیسی بھی تھی بہر صورت مسلمانان عالم کے نزدیک عمومی طور پر مرکزیت  
 کا درجہ رکھتی تھی اور اس کے ختم ہو جانے سے وہ اپنی دینی اور سیاسی زندگی کے اندر گہرا  
 خلا محسوس کر رہے تھے۔ سلطان بیبرس بھی اس معاملہ میں عامۃ المسلمین کے جذبات  
 سے بخوبی آگاہ تھا چنانچہ بر اقدار آنے کے بعد اس نے مصمم ارادہ کر لیا کہ خلافت خلیفہ  
 کا از سر نو احیاء کیا جائے اور سردست اس کا مرکز قاہرہ میں قائم کیا جائے۔

بعض مورخین نے لکھا ہے کہ اہل مصر مملوکوں کے استحقاق حکومت کو شک و شبہ  
 کی نظر سے دیکھتے تھے اور یہی چیز احیاء خلافت کی محرک ہوئی لیکن جب ہم دیکھتے ہیں  
 کہ مملوک عسکری اور سیاسی لحاظ سے اس قدر طاقتور تھے کہ خلافت کے بغیر بھی حکومت  
 کا کاروبار نہایت آسانی سے چلا سکتے تھے تو ہمیں یہ خیال صحیح معلوم نہیں ہوتا۔  
 دراصل خلافت کے احیاء سے ان کا مقصد یہ تھا کہ مملوک حکومت کو دنیائے اسلام  
 میں مرکزی حیثیت حاصل ہو جائے کیونکہ مسلمانوں کو خلافت سے ایک قسم کی دینی

۱۔ خلافت عباسیہ کے آغاز سے سقوط بغداد تک کے درمیانی عرصے میں اندلس شمالی افریقہ  
 اور مصر میں بلویل عرصے تک متوازی خلافتیں بھی قائم رہیں لیکن ان کا اثر و اقتدار کچھ مخصوص  
 علاقوں تک محدود رہا اور مرکزیت کا درجہ انہیں کبھی حاصل نہ ہو سکا۔

اور روحانی وابستگی تھی اور اس کے بغیر ان کی ملی امنگیں پوری نہیں ہو سکتی تھیں۔ اس معاملے میں سلطان بیبرس کے دینی جذبہ اور ذاتی رجحانات کو بھی کافی دخل تھا۔ خلافت کے احیاء کا فیصلہ تو وہ حکومت سنبھالنے کے پہلے دن ہی کر چکا تھا ویراب یہ تھی کہ عباسی خاندان کا کوئی ایسا فرد مل جائے جس کو مستند خلافت پر بٹھایا جاسکے۔

## ایک عباسی شہزادہ

سقوط بغداد کے وقت ایک عباسی شہزادہ ابو القاسم احمد قید میں تھا اس ہنگامے میں جب بغداد کے قید خانوں سے قیدی نکل کر بھاگے تو ان کے ساتھ وہ بھی نکل کر بھاگ گیا اور ساڑھے تین سال تک گوشہ گمنامی میں پڑا رہا۔ اتفاق سے الملک الظاہر بیبرس کو اس کی جائے قیام کا علم ہو گیا چنانچہ اس نے بنو مہارش کے دو آدمیوں کا وفد اس کے پاس بھیجا اور اس کو مصر آنے کی دعوت دی۔ ابو القاسم احمد نے یہ دعوت قبول کر لی اور اپنے چند ساتھیوں کے ہمراہ عازم مصر ہو گیا۔

## ابو القاسم احمد کا ورود مصر

ابو القاسم احمد جب مصر میں داخل ہوا تو اس نے عباسی خلفاء کا خاص

لہ ابو القاسم احمد بغداد کے پیٹیسوں عباسی خلیفہ الظاہر بامر اللہ کا فرزند چھتیسویں خلیفہ المستنصر باللہ کا بھائی اور سینتیسویں (مقتول) خلیفہ المستعصم باللہ کا چچا تھا۔  
کے بعض مورخین نے لکھا ہے کہ بنو مہارش کا وفد ابو القاسم احمد نے سلطان بیبرس کے پاس بھیجا اور اس کو اپنی جائے قیام اور حسب و نسب سے مطلع کیا۔

ایک روایت کے مطابق ابو القاسم احمد ان دنوں دمشق میں مقیم تھا۔



لباس زیب تن کر رکھا تھا سلطان بیرس نے قضاة و علماء اور اعیان سلطنت کے ساتھ آگے بڑھ کر اس کا پر جوش استقبال کیا اور اس کو نہایت عزت و احترام سے ایک شان دار جلوس کے ہمراہ قاہرہ لایا۔ سلطان نے اس دن تمام شہر کی گلیوں سے پیانہ پر آئینہ بندی کرائی تھی اور قاہرہ میں اس دن ایک عظیم الشان جشن کی کیفیت تھی رات کو اس خوشی میں تمام شہر میں چراغاں کیا گیا۔ علامہ ابن خلدون کا بیان ہے کہ دو دمان عباسی کے اس چشم اور چراغ کے ورود قاہرہ کے موقع پر اظہار مسرت کے لیے جو تقریبات منعقد کی گئیں اور شہر کی آرائش و چراغاں کا جو اہتمام کیا گیا ان پر ایک کروڑ دینار سرج خرچ ہوئے۔ ابو القاسم احمد کو قلعہ جبل میں ٹھہرایا گیا۔ سلطان بیرس نے پہلے دن سے ہی اس کی تعظیم و تکریم میں ایسا طرز عمل اختیار کیا کہ گویا وہ اس ابو القاسم احمد کو اپنا سردار سمجھتا ہے۔ چنانچہ اس نے ابو القاسم سے پہلے

ابو القاسم احمد کے استقبال پر اتنی کثیر رقم کے صرف کو جب اس پس منظر میں دیکھا جائے کہ اس زمانے میں اہل مصر کو تاتاریوں اور صلیبیوں کے خلاف اپنے دفاع کے لیے ایک ایک پائی کی ضرورت تھی تو بڑی حیرت ہوتی ہے لیکن اس سے یہ نتیجہ بھی اخذ کیا جا سکتا ہے کہ مصر اس وقت مالی لحاظ سے نہایت خوشحال تھا اور مسلمانان مصر کے نزدیک ہونے والے حلیفہ کا ورود مصر اتنا اہم اور مسرت بخش تھا کہ اس تقریب پر خواہ اس قدر روپیہ صرف ہو جاتا جائز تھا۔ غالباً یہ وجہ تھی کہ اس کثیر خرچ پر ملک کی آبادی کے کسی گوشے میں اعتراض و احتجاج کی ہلکی سی لہر بھی پیدا نہ ہوئی۔ فی الحقیقت اس وقت مسلمان خلافت کے بغیر دنیا کے اسلام کو بے نور سمجھ رہے تھے اور ایجاد خلافت کا مطلب ان کے نزدیک یہ تھا کہ یہ ظلمت کہہ پھر روشن ہو رہا ہے اور اس مبارک موقع پر جس قدر بھی مسرت کا اظہار کیا جائے کم ہے۔

قلعہ میں داخل ہونے یا اس کے برابر بیٹھنے اور گفتگو میں ہمسر نہ یا بنے تکلفانہ رویہ اختیار کرنے سے اجتناب کیا۔ اس طرز عمل کا سبب مسلمانوں کا دینی جذبہ تھا یا اس کی سیاسی حکمت عملی، بہر صورت اس نے عباسی شہزادے کے ادب و احترام میں حد سے زیادہ اہتمام کیا۔

## اجیانے خلافت

۱۳ رجب المرجب ۶۵۹ھ بروز دوشنبہ سلطان بیرس نے ایک عالی شان دربار منعقد کیا جس میں ابوالقاسم احمد کے علاوہ تمام قضاة علماء امرایہ حکومت اور ملک کے دو کسے بہت سے ممتاز افراد شریک ہوئے ابوالقاسم احمد اگرچہ کوئی چھوٹی النسب شخص نہ تھا تاہم ضابطہ کی کارروائی کے طور پر قاضی القضاة تاج الدین بن بہت الاعز نے بہت سے ثقہ اور معزز لوگوں سے شہادت لی کہ ابوالقاسم احمد فی الواقع خاندان عباس بن عبدالمطلب سے تعلق رکھتے ہیں اور خلیفہ الظاہر بامر اللہ بن الخلیفہ الناصر لدین اللہ کے فرزند ہیں جب دربار میں موجود قاضیوں اور فقیہوں نے ان شہادتوں کو شرعی لحاظ سے معتبر قرار دیا تو قاضی القضاة نے ان کے قبول کرنے کا اعلان کیا اور ابوالقاسم احمد کو خلافت کا جائز حقدار قرار دیا۔ اس کے بعد انہوں نے ابوالقاسم احمد کے ہاتھ پر بیعت خلافت کی پھر شیخ الاسلام علامہ عزالدین بن عبدالسلام اور دوسرے تمام شرکاء اجتماع نے بیعت کی اور خلیفہ کو "المستنصر باللہ" کا لقب دیا (یا بروایت دیگر یہ لقب خلیفہ نے خود اپنے بھائی کے لقب پر اختیار کیا)۔ آخر میں سلطان بیرس نے خلیفہ کے ہاتھ پر قرآن و حدیث۔ امر بالمعروف و نہی عن المنکر جہاد فی سبیل اللہ اور مالیات کے شرعی نظام کے قیام پر بیعت کی۔ اس کے بعد سلطان نے ملک کے مختلف طبقوں سے

خلیفہ کے لیے بیعت کی لے اور سکنہ اور خطبہ میں اس کا نام راجح کرنے کا فرمان جاری کیا اس طرح مصر میں دوبارہ خلافت عباسیہ قائم ہو گئی۔  
 علامہ جلال الدین سیوطی کا بیان ہے کہ قیام خلافت کے بعد ملک نظامہ میں نے خلیفہ کے لیے از باب مناصب مثل اتابک - استاد دار - آبدار (شریدار) - حجاب - کاتب - خزانچی وغیرہ مقرر کر دیے اور خزانہ کا ایک حصہ اس کے تصرف میں دے دیا۔ شوگھوڑے، تینیس، خراج اور قطار اونٹ وغیرہ خلیفہ کے احتیاج کے لیے مقرر کر دیے اور اعزازی طور پر تمام سلطنت پر اس کا قبضہ کر دیا۔

### احیاءِ خلافت کے بعد پہلا جمعہ

قیامِ خلافت کے بعد پہلا جمعہ، ۱۷ رجب المرجب ۶۵۹ھ کو آیا۔ اس دن خلیفہ سوار ہو کر ایک شاندار جلوس کی صورت میں جامع مسجد آیا اور نماز سے پہلے منبر

۱۔ بیعتِ خلافت کی ترتیب کے بارے میں مؤرخین میں اختلاف ہے۔ اس سلسلہ کی دوسری مشہور روایات یہ ہیں:

۱۔ ابوالقاسم احمد کی صحتِ نسب کی تصدیق ہونے کے بعد سب سے پہلے شیخ الاسلام عزالدین بن عبدالسلام نے اس کی بیعت کی پھر سلطان بیبرس اور اس کے بعد قاضی القضاة تاج الدین نے بیعت کی اور پھر عام بیعت ہوئی۔

۲۔ سب سے پہلے ملک ظاہر بیبرس نے بیعت کی اس کے بعد علی الترتیب قاضی القضاة تاج الدین شیخ الاسلام عزالدین اور دوسرے علماء و فقہاء و اکابر سلطنت نے بیعت کی۔ واقعہ کی صورت کچھ بھی ہو اس بات پر سب کا اتفاق ہے کہ تمام لوگوں نے بلا اختلاف ابوالقاسم احمد کو خلیفہ برحق تسلیم کر لیا اور اس کی بیعت کر لی۔

پر چڑھ کر ایک فصیح و بلیغ خطبہ دیا جس میں حمد و ثناء اور درود کے بعد پہلے بنو عباس کا ذکر  
 و مجد بیان کیا پھر خلافت عباسیہ کے دوبارہ قیام پر سلطان رکن الدین بیرس کی  
 بیحد تعریف و توصیف کی اور سلطان اور مسلمانوں کے لیے دعا مانگی۔ اس کے بعد اس نے  
 منبر سے اتر کر جمعہ کی نماز پڑھائی جب لوگ نماز سے فارغ ہو گئے تو خلیفہ نے قدیم رسم  
 کے مطابق سلطان کو خلعت عطا کیا۔

### سلطان کو شرعی نیابت کی تفویض

۴ شعبان المعظم ۶۵۹ھ بروز دوشنبہ خلیفہ کی طرف سے سلطان بیرس کو  
 شرعی نیابت کی تفویض کے لیے قاہرہ میں ایک عظیم الشان و بارعام منفقہ ہوا شہر  
 سے باہر ایک وسیع میدان میں ایک طویل و عریض شامیہ نصب کیا گیا جس کے  
 نیچے خلیفہ المستنصر باللہ ملک الظاہر بیرس، قاضی القضاة تارا کین دولت پشیران  
 رؤسائے ملک و ملت اور کثیر تعداد میں عوام مجتمع ہوئے۔ امیر فخر الدین بن لقمان نے  
 منبر پر کھڑے ہو کر خلیفہ کی طرف سے الملک الظاہر سلطان رکن الدین بیرس کے  
 لیے شرعی نیابت کی سند پڑھی اس میں حمد و ثناء کے بعد خلیفہ کے استحقاق خلافت سلطانی  
 کی خدمات کا اعتراف اور اس کی اعلیٰ صلاحیتوں کا ذکر کیا گیا تھا اور آخر میں نظام حکومت  
 عدالت گستری اور رعایا کی فلاح و بہبود کے بارے میں ہدایات و ریح تھیں۔ اسی اجتماع  
 میں خلیفہ نے اپنے ہاتھ سے سلطان کو سیاہ خلعت اور سیاہ عمامہ پہنایا پھر تمام مملکت  
 کا نظم و نسق سلطان کے حوالے کر کے اسے "امیر المؤمنین" کا لقب دیا۔

### المستنصر باللہ کی گمشدگی

قیام خلافت کے چند ماہ بعد خلیفہ المستنصر باللہ اور سلطان بیرس کے وکیل میں

خیال پیدا ہوا کہ بغداد اور عراق کے دوسرے علاقوں کو تازیوں سے واپس لیا جائے اور خلیفہ خود اس مہم کی قیادت کرے چنانچہ اس مقصد کے لیے ایک فوج گرائی تیار کی گئی کہا جاتا ہے کہ سلطان نے اس فوج کے ساز و سامان پر دس لاکھ دینار صرف کیے ایک مقررہ تاریخ کو خلیفہ اس فوج کو ساتھ لے کر عراق کی طرف روانہ ہوا۔ سلطان بھی دمشق تک خلیفہ کے ساتھ گیا اور پھر اس کی اجازت سے واپس ناہرہ آ گیا۔ نصرت ہوتے وقت اس نے ہزاروں دینار خلیفہ اور اس کے ساتھیوں کو بطور زادراہ دے دیے دمشق سے خلیفہ نے اپنے لشکر کے ساتھ بغداد کا عزم کیا۔ بدقسمتی سے تازیوں کو اس کی پیش قدمی کی اطلاع مل گئی چنانچہ وہ جو بھی ہمیت کے مقام سے آگے بڑھا تازیوں کا ایک زبردست لشکر اس پر ٹوٹ پڑا۔ خلیفہ اور اس کی فوج نے مردانہ وار مقابلہ کیا لیکن تازیوں کی کثیر جمعیت کے سامنے ان کی کچھ پیش نہ چلی۔ سینکڑوں مسلمان شہید ہو گئے اور جو باقی بچے وہ منتشر ہو گئے۔ اس ہنگامے کے بعد خلیفہ کا کچھ پتہ نہ چلا نہ اس کو کسی نے بھاگتے دیکھا اور نہ اس کی لاش ہی مقتولوں میں ملی۔ تاہم اکثر مورخین کا خیال ہے کہ وہ شہید ہو گیا۔ یہ واقعہ ۳ محرم الحرام ۶۶۰ھ کا ہے اس حساب سے خلیفہ المستنصر باللہ کی خلافت تقریباً چھ ماہ رہی۔ اس حادثہ کی خبر مصر پہنچی تو سلطان اور اہل مصر کو سخت صدمہ پہنچا۔ سلطان نے حکم دیا کہ خلیفہ کی سرگرمی سے تلاش کی جائے کئی ماہ تک یہ تلاش جاری رہی جب المستنصر باللہ کے ملنے سے مایوسی ہو گئی تو سلطان نے ایک دوسرے عباسی شہزاد ابو العباس احمد کو شام سے قاہرہ بلا بھیجا۔

ابو العباس احمد

ابو العباس احمد کا سلسلہ نسب بغداد کے انتیسویں عباسی خلیفہ المستنصر باللہ سے ملتا تھا۔ امام سیوطی نے تاریخ الخلفاء میں اس کا سلسلہ نسب اس طرح درج کیا

ہے۔ ابو العباس احمد بن ابو علی الحسن القسبی بن علی بن ابو بکر بن المستنصر بالله بن المستنصر بالله... بعد اور تاتاریوں کی یلغار کے وقت وہ کہیں چھپ گیا تھا اور پھر موقع پا کر عربوں کی ایک جماعت کے ساتھ حسین بن فلاح امیر بنی خفاجہ کے پاس چلا گیا تھا۔ کچھ عرصہ کے بعد وہاں سے شام چلا گیا اور وہیں مستقل اقامت اختیار کر لی۔ علامہ جلال الدین سیوطی کا بیان ہے کہ

”ملک ظاہر بیہر میں نے اجیاء خلافت کے سلسلے میں ابو القاسم احمد اور ابو العباس احمد دونوں کو مصر بلا بھیجا تھا لیکن ابو القاسم احمد پہلے پہنچ گیا اور المستنصر بالله کے لقب سے خلیفہ بن گیا۔ ابو العباس احمد نے راستے میں یہ خبر سنی تو حلب چلا گیا وہاں والی حلب اور روس کے لوگوں نے اس کی بیعت کر لی اور الحاکم بامر اللہ کا لقب دے کر اپنا خلیفہ بنا لیا۔“

ابو العباس احمد ایک مجاہد شخص تھا اور تاتاریوں کے خلاف کئی لڑائیوں میں حصہ لے چکا تھا اسی غرض سے وہ حائب سے غانہ گیا۔ اتفاق سے اسی زمانے میں خلیفہ المستنصر بالله بھی تاتاریوں سے جہاد کرنے کے لیے قاہرہ سے غانہ آیا۔ خاندان عباسی کے دونوں قرزندوں کی ملاقات ہوئی تو ابو العباس احمد اپنی خلافت سے دستبردار ہو گیا اور المستنصر بالله کے ہاتھ پر بیعت کر لی۔ خلیفہ المستنصر بالله کی گمشدگی کے وقت ابو العباس احمد دمشق کے سربراہ اور وہ امیر علی بن مہتا کے پاس مقیم تھا۔ ایک سال بعد اس کو سلطان بیہر میں کی طرف سے قاہرہ آنے کی دعوت موصول ہوئی تو وہ بلا تاخیر اپنے بیٹوں اور رفیقوں کے ساتھ قاہرہ پہنچ گیا۔

کہ بعض روایتوں میں ہے کہ ابو العباس احمد بھی ابو القاسم احمد کی طرح قید خانے میں تھا جب قیدی چھوٹ کر بھاگے تو وہ بھی ان کے ساتھ نکل بھڑا ہوا۔

## مصر کا دوسرا عباسی خلیفہ

سلطان بیبرس نے ابو العباس احمد کا بھی نہایت سچ و صحیح اور دھوم دھام سے استقبال کیا اور اس کو کمال اعزاز و احترام کے ساتھ قلعہ سلطانی کے بڑے برج میں اتارا۔ حسب قاعدہ ابو العباس احمد کے خاندانِ خلافت سے ہونے پر شہادتیں لی گئیں جب سب لوگوں کے نزدیک اس کے نسب کی تصدیق ہو گئی تو سلطان نے جمعرات ۸ محرم ۶۶۱ھ کو قلعہ سے علیحدہ و دربارِ عام منعقد کیا۔ ابو العباس احمد قلعہ کے ایوان سے اٹھ کر دربار میں گیا۔ سلطان نے اٹھ کر زمین بوسی کی اور اس کی خلافت کا اقرار کر کے بیعت کی۔ خلیفہ نے اس کو خلعت عنایت کیا۔ اس کے بعد تمام شہر کاٹے و دربار نے حسب مراتب خلیفہ کی بیعت کی اور اس کو "الحاکم بامر اللہ" کا لقب دیا۔ یہ وہی لقب تھا جو اس نے کچھ عرصہ پہلے حلب کی مسندِ خلافت پر بیٹھ کر اختیار کیا تھا۔ دوسرے روز جمعہ تھا اس میں حاکم نے ایک طویل خطبہ پڑھا جس کو اس طرح شروع کیا۔

"خدا کی حمد جس نے آلِ عباس کے لیے ایک مددگار رکھ دیا۔"

اس کے بعد اس نے جہاد فی سبیل اللہ اور خلافت کی اہمیت اور فضیلت بیان کی پھر خلافت کی جو بے حرمتی ہوئی تھی اس کا ذکر کیا اور لوگوں کو عبرت دلانی۔ آخر میں اس نے ملک ظاہر بیبرس کے متعلق کہا کہ

"جب دشمن ہمارے گھروں میں گھس آئے تھے اور انہوں

نے قیامت کے قتلے برپا کر رکھے تھے ایسے نازک وقت میں سلطان

رکن الدین بیبرس اپنی چھوٹی سی سلطنت کے باوجود امت مسلمہ کی امداد

و اعانت کے لیے اٹھا اور اس نے کفر کے لشکروں کو منتشر کر کے رکھ دیا۔"

اس خطبہ کے بعد تمام مملکت میں الحاکم بامر اللہ کی خلافت کا اعلان کر دیا گیا۔  
سلطان بیبرس نے اپنے قصر کبیر میں ایک محل خلیفہ کی سکونت کے لیے مخصوص  
کر دیا اور اس کی تمام ذاتی ضروریات اور لوازم خلافت کا انتظام کر دیا۔

سلطان نے اپنی زندگی میں ہمیشہ احترام خلافت ملحوظ رکھا لیکن سیاسی قوت  
آخر دم تک اپنے ہاتھ میں رکھی۔ ایک دفعہ اس کو معلوم ہوا کہ لوگ خلیفہ کے پاس آزاں  
جا کر بیٹھتے ہیں اور پھر قصر خلافت سے باہر نکل کر لایعنی باتیں اڑاتے پھرتے ہیں تو اس  
نے ایک فرمان کے ذریعہ حکم دیا کہ کوئی شخص اس کی اجازت کے بغیر خلیفہ کے پاس جا کر  
نہ بیٹھے۔ اسی فرمان کی بنا پر عام مورخین نے لکھا ہے کہ "مصر میں عباسی خلیفہ کی حیثیت محض  
ایک نظر بند قیدی کی تھی جو عزت نشینی کی زندگی کا خوگر تھا اور قلعہ میں نظر بند رہتا تھا۔ وہ کسی  
سیاسی اقتدار کا مالک نہ تھا اور سلطان مصر کے رحم و کرم پر چلتا تھا۔"

خلیفہ الحاکم بامر اللہ نے کچھ اوپر چالیس سال تک خلافت کی اور اس طویل عرصے  
میں متعدد سلطانوں کی حکومت دیکھی۔ اس نے ۱۰۸۱ (یا ۱۱۲) جمادی الاول ۴۷۰ھ کو یعنی  
سلطان محمد بن قلاوون وفات پائی۔ عصر کے وقت قلعہ کے نیچے نماز جنازہ پڑھائی گئی  
تمام امراء اور ارکان دولت ازراہ ادب ننگے پاؤں جنازہ کے سمرہ گئے اور سیدہ نقیسیہ  
کے مزار کے قریب اس کو دفن کیا۔ اس مقام پر سب سے پہلے الحاکم ہی دفن ہوا اس کے  
بعد یہ مقام اس کے خاندان کا دفن ہو گیا۔

مصر میں عباسی خلافت مملوک حکومت کے خاتمہ (۱۲۵۰ھ) تک قائم رہی اس  
کے بعد منصب خلافت ترکوں کو منتقل ہو گیا۔



# خارجہ حکمت عملی

قانون پالیسی

(FOREIGN POLICY)



## تین عالمی طاقتیں

جس زمانہ میں ملک ظاہر بیبرس نے مصر و شام کی عنان اقتدار سنبھالی، عالمی سیاست نہایت پیچیدہ تھی۔ اجمالی طور پر اس کا تجربہ یوں کیا جاسکتا ہے کہ اُس وقت تین طاقتیں مشرق و مغرب پر چھائی ہوئی تھیں۔

۱۔ تاتاری۔

۲۔ یورپی ملکوں کے عیسائی حکمران ارض شام و فلسطین کی صلیبی ریاستیں اور قسطنطنیہ کی بیزنٹینی حکومت۔

۳۔ مسلمان۔

یہ تینوں طاقتیں بھی اپنے اپنے دائرہ میں متحد اور مربوط نہیں تھیں بلکہ کئی دھڑوں میں بٹی ہوئی تھیں جن میں سے ہر ایک کا طریق کار اور اندازِ نظر مختلف تھا۔ بیبرس نے اپنی خارجہ حکمت عملی کی تشکیل جن خطوط پر کی اس کا پس منظر جاننے کے لیے ضروری ہے کہ یہاں ان تینوں طاقتوں کے حالات کا اجمالی جائزہ لیا جائے۔

۱۔ تاتاری — شروع شروع میں تاتاریوں میں کامل اتحاد تھا۔ اسی اتحاد کی بدولت انہوں نے پہلے فاتح اعظم چنگیز خاں کی قیادت میں اور اس کے بعد قبلائی خاں۔ ہلاکو اور دوسرے مغل سرداروں کی قیادت میں ایک دنیا کو زیرِ یوزر کر ڈالا تھا۔ ان کی مولناک بیلغار جس کو فتنہ تاتاری سے موسوم کیا جاتا ہے مسلمانوں کے لیے خاص طور پر تباہی کا پیغام لائی تھی۔ اس نے عظیم خوارزم شاہی سلطنت اور بغداد کی عباسی خلافت کی اینٹ سے اینٹ بجا کر رکھ دی تھی۔ مفتوحہ علاقوں سے تباہ حال مسلمانوں

کے قافلے (جو کسی طرح تاتاریوں کی خون آشامی کی بھینٹ چڑھنے سے بچ گئے تھے) دھڑا دھڑا مصر پہنچ رہے تھے۔ اگر علین جالوت کے معرکے میں سپہ سالار تاتاریوں کے واپس نہ توڑ دیتا تو مشرق وسطیٰ کے مسلمانوں کے لیے شاید ہی کوئی جگہ بچا رہ جاتی۔ سپہ سالار نے تاتاریوں کی بلغار میں بالکل صحیح لکھا ہے کہ اگر کہیں مصر پر مغلوں کا قبضہ ہو جاتا تو مسلمان فوجوں کے لیے عرب کے ریگستان اور شمالی افریقہ کے گن نام ساحل کے علاوہ دنیا میں کہیں ٹھکانا نہ رہتا۔

سلطان سپہ سالار نے برسرِ اقتدار آ کر تاتاریوں کی متحدہ طاقت سے نبرد آزما ہونے کے لیے زور شور سے تیاریاں شروع کر دیں اور قدرت نے اس کی یوں امداد کی کہ اسی زمانے میں تاتاریوں میں دھڑے باندی پیدا ہو گئی اور ان کی ہولناک قوت کمی حصوں میں تقسیم ہو گئی ان میں اہم حصے یہ تھے:

- ۱۔ چین کا یون (Yven) خاندان۔ ان کا دار الخلافہ خان بلخ (موجودہ بکینگ) تھا۔
- ب۔ ایل خانی — اس کا سربراہ ہلاکو تھا۔ ایل خانیوں کی حکومت میں فارس عراق اور ارض روم وغیرہ کے علاقے شامل تھے اور ان کی وسیع مملکت لاکھوں مربع میل پر پھیلی ہوئی تھی۔ ایل خانی حکومت کا دار السلطنت مراغہ (آذربائیجان) تھا۔
- ج۔ خوانین زریں خیل یا خیم زریں (Golden Horde) ان کا سربراہ برک خاں (Bereke) تھا جو خوش قسمتی سے شہزادگی کے

لے ان منغل قبائل کے جیسے سنہرے رنگ کے ہوتے تھے اس لیے ان کو خیم زریں یا زریں خیل کہتے تھے اور ان کی سلطنت کو "اردوئے زریں" سے موسوم کیا جاتا تھا۔

۲۔ مورخین نے یہ نام مختلف طریقوں سے لکھا ہے۔ برکہ۔ برکا۔ برقہ۔ برک اور برقانی۔ ہم نے برکہ کو ترجیح دی ہے۔

یہی ہیں مسلمان ہو گیا تھا۔ وہ مغل بادشاہوں میں سب سے پہلا شخص تو ہوا اسلام آیا۔  
 اس جلقہ اسلام میں لانے کا سہرا سمرقند و بخارا کے ان مسلمان تاجروں کے سر سے ہو  
 تجارت کے سلسلے میں مغلوں کے علاقوں میں اکثر آیا کرتے تھے۔ برکہ خاں ان کے اخلاق  
 سے بڑا متاثر ہوا اور اس کے دل میں ان لوگوں کے مذہب کا حال جاننے کا شوق پیدا ہوا۔  
 چنانچہ ایک دن وہ ایک راہی میں پہنچا جو بخارا سے آیا تھا اس کا روان میں دو مسلمان تاجر  
 بڑے عالم و فاضل تھے برکہ خاں نے ان سے اسلام کے متعلق کچھ سوالات دریافت  
 کیے انہوں نے اسلام کی صداقت و حقانیت اور اس کے احکام و اصول ایسی عمدگی  
 سے بیان کیے کہ برکہ خاں فوراً ان کے ہاتھ پر مشرت باسلام ہو گیا۔ ایک عیسائی مورخ  
 کا بیان ہے کہ ۱۲۶۰ء میں غلام نجم الدین مختار الزاہدی نے برکہ خاں کے لیے ایک  
 کتاب لکھی جس میں محمد عربی صلی اللہ علیہ وسلم کی صداقت و اولیٰ اور براہین کے  
 ذریعے ثابت کی تھی اور اس میں اسلام اور عیسائیت کا محاکمہ بھی کیا تھا۔ برکہ خاں اسلام  
 کا نہایت پرہوش مبلغ ثابت ہوا اور اس کے زیر اثر ہزاروں مغلوں نے اسلام قبول  
 کر لیا۔ وہ باتو خاندان سے تعلق رکھتا تھا اور اس کی سلطنت "اردوئے زرین" خوارزم  
 مغربی قفقاز اور روس کے لاکھوں مربع میل پر محیط تھی۔ مشرقی قفقاز کا حکمران خاندان  
 اروا۔ بلغاریہ کا حکمران خاندان تکا تیمور اور کرغیز کا حکمران خاندان شیبان بھی ایک حد  
 تک اس کے ماتحت تھے۔ دیرپائے والگا پر ایک شہر "سرائے" برکہ خاں کا دار الحکومت تھا۔  
 ز۔ چغتائی خاندان۔ یہ ماوراء النہر کے حکمران تھے۔

سلطان پیرس کو صرف ایل خانی اور زرین خیل حکمرانوں سے سابقہ پڑا اس کی  
 تفصیل آگے آئے گی۔

۲۔ یورپ اور ارض مشرق کے عیسائی حکمران — یورپ اور ارض مشرق میں سلطان  
 کی ہم عصر اہم عیسائی سلطنتیں یہ تھیں۔

۱۔ فرانس۔

۲۔ انگلستان۔

۳۔ اطالیہ و صقلیہ۔

۴۔ وینس۔

۵۔ چینوا۔

۶۔ قسطنطنیہ کی بیزنطینی سلطنت۔

۷۔ ارضِ شام و فلسطین کی صلیبی ریاستیں۔

ان کے علاوہ پاپائے روم مذہبی اعتبار سے عیسائی دنیا میں زبردست قوت  
اور اثر و رسوخ کا مالک تھا۔

۳۔ مسلمان — سلطان کی معاصر مسلم حکومتوں میں مندرجہ ذیل قابل ذکر ہیں:

۱۔ ہندوستان (خاندانِ غلاماں — سلطان ناصر الدین محمود اور غیاث الدین بلبن)

سلطان پیرس کے ہم عصر تھے۔

۲۔ مراکش (موحیدین — مرین خاندان)

۳۔ الجزائر (زیانی خاندان)

۴۔ تیونس (حفصیین)

۵۔ ہسپانیہ کی نصری حکومت (غرناطہ)

۶۔ حجاز، خاندانِ قنوادہ

۷۔ یمن رسولیین

۸۔ ارضِ روم (قونہ) سلاجقہ (قلمش کے جانشین)

۹۔ فارس (شیراز) سلجری خاندان (آتابک ابوبکر بن سعد زنگی)

۱۰۔ موصل زنگی خاندان (آتابک بدر الدین لولوی)

## بین الاقوامی سیاست کا نقشہ

اوپر ہم نے سلطان بیبرس کی اہم معاصر سلطنتوں کا خاکہ پیش کیا ہے۔ اس دور کی بین الاقوامی سیاست کا نقشہ یہ تھا۔

ملک النظار بیبرس نے تاتاریوں کی ہیبت ناک طاقت کے سامنے تلواروں کا بند باندھ کر نہ صرف اپنی زبردست شخصیت کا لوہا تمام دنیا سے منوالیا تھا بلکہ تمام عالم اسلام میں مملکت مصر و شام کو مرکزی اہمیت کا حامل بنا دیا تھا۔ ایل خانی مغل اور ارض مشرق و یورپ کے صلیبی اس کے بدترین دشمن تھے اور انہوں نے مصر و شام کی مملوک حکومت کو بیخ و بن سے اکھاڑ پھینکنے کے لیے ایک دوسرے سے گٹھ جوڑ کر لیا تھا۔ بیبرس اپنی زبردست قوت کے باوجود یہ نہیں چاہتا تھا کہ ایک طرف اس کے خلاف ایک نئی صلیبی مہم کا آغاز ہو جائے اور دوسری طرف ایل خانی مغل و مصر و شام پر ٹوٹ پڑیں اس طرح وہ دو زبردست دشمنوں کے گھیرے میں آسکتا تھا۔ اس کا تدارک اس نے یوں کیا کہ ایک طرف تو اس نے ایل خانیوں کے طاقتور حریف بکہ خان اعظم اردوئے زریں سے گہرے دوستانہ مراسم استوار کیے اور دوسری طرف اطالیہ و کسلی کے حکمران مینقریڈ قسطنطنیہ کے بازنطینی قبضہ اور ونیس و جینوا کی جمہوری ریاستوں سے تجارتی اور دوستانہ معاہدے کیے۔ اس طرح اس نے تاتاریوں اور صلیبیوں کی قوت کو دو حصوں میں تقسیم کر دیا۔ سلطان کے ہم عصر مسلم فرمانی روایان مین و حجاز نے رسمی طور پر اپنے علاقوں پر مملوک حکومت مصر و شام کا اقتدار تسلیم کر لیا اور ہر فارس کے سلغری خاندان اور موصل کے زنگی خاندان نے مسلمان ہونے کے باوجود غیر مسلم ایل خانیوں کی اطاعت قبول کر لی۔ ارض روم کے سلجوقی حکمران بھی تاتاریوں کو خراج ادا کرنے پر مجبور ہو گئے تھے۔

سلطان کے دو سیکھتے عصر مسلم فرماں رواؤں نے غیر جانب داری کی حکمت عملی کی اختیار کی۔ اس کا سبب ان کی ملکی مصالحتیں تھیں یا کچھ اور۔ مورخین نے اس پر روشنی نہیں ڈالی بہر صورت یہ واقعہ ہے کہ ہندوستان۔ تیونس اور مراکش کی طاقتور مسلم حکومتوں کی طرف سے بیسیرس کو کوئی امداد نہ پہنچی اور اپنے طاقتور حریفوں کے خلاف اس کو تمام جنگیں اپنے ہی بل بوتے پر لڑنی پڑیں۔ البتہ اس کے ہاتھ اگر کسی نے مضبوط کیے تو وہ اردوئے زریں کا نو مسلم تاتاری فرماں روا برکہ خاں تھا۔

## اردوئے زریں سے دوستانہ تعلقات

سلطان بیسیرس کی خارجہ حکمت عملی کا شاہکار اردوئے زریں کے نو مسلم خانِ اعظم برکہ سے دوستانہ اور برابرانہ تعلقات قائم کرنا تھا اور اس کو اپنے کافر رشتہ داروں یعنی ایران کے ایل خانیوں (ہلاکو اور اس کی اولاد) کا مستقل حریف بنا دینا تھا۔ منگولوں کے قاتل اعظم منگو خاں کے زمانے (۱۲۶۶ء تا ۱۲۶۰ء) میں اگرچہ برکہ اور ہلاکو میں بظاہر اتحاد رہا لیکن درپردہ ان کے درمیان شدید اختلافات پیدا ہو چکے تھے۔ برکہ خاں مشرف باسلام ہو چکا تھا اور قدرتی طور پر اس کو مسلمانوں سے ہمدردی تھی۔ دوسری طرف ہلاکو اپنے آبائی مذہب پر قائم تھا لیکن اپنی عیسائی بیوی دو قوز خاتون کے زیر اثر اس کا رجحان طبع عیسائیوں کی طرف تھا۔ ۱۲۵۵ء عیسوی

۱۲۵۵ء منگو خاں، چنگیز خاں کا پوتا تھا۔

۱۲۵۵ء دو قوز خاتون، بویدخوار ترکوں کے قبیلہ کریت کے خان کی بیٹی تھی۔ یہ لوگ نسٹوری عیسائی تھے۔ دو قوز خاتون نے ایک قابلِ عمل و نقل گرجا بنا رکھا تھا جسے اپنے ساتھ لیے پھرتی تھی۔



سے ۱۲۶۰ء کے درمیانی عرصہ میں ہلاکو نے جو فتوحات حاصل کیں۔ برکہ خاں نے ان کو بڑے شک و شبہ کی نگاہ سے دیکھا۔ جب ہلاکو نے ۱۲۵۶ء میں بغداد کو تاخت و تاراج کیا تو برکہ خاں نے ہلاکو کو لکھا۔

"تم نے ایک مقدس مقام کی بے حرمتی کی ہے اور اس معاملے میں

پہلے اپنے خاندان کے دوسرے افراد سے مشورہ نہیں لیا۔"

لیکن ہلاکو پر برکہ خاں کی تنبیہ کا کچھ اثر نہ ہوا اس نے اس کو خندہ استہزا کے ساتھ

ٹال دیا اور بدستور اپنی مسلمہ آزارانہ روش پر قائم رہا وہ جن علاقوں کو فتح کرتا وہاں کے مسلمانوں پر بڑی سختیاں کرتا اور عیسائیوں پر لطافت و کرم کی بارش کرتا۔ چنانچہ عیسائی اس کو اپنا مرنی اور سرپرست سمجھتے تھے اور ارمینیوں اور صلیبی جنگجوؤں کی ایک کثیر تعداد اس کے لشکر میں شامل ہو گئی تھی۔ مورخ ہیرلڈ لیم لکھتا ہے:

"جدھر جدھر سے ہلاکو خاں کے دستے گزرتے مسجدوں کو آگ لگا

دی جاتی اور دھوئیں کے بادل بلند ہوتے لیکن کلیساؤں کو کوئی ہاتھ نہ لگاتا۔"

برکہ خاں کو یہ خبریں پہنچتی تھیں اور وہ ہلاکو کی مسلم دشمنی اور صلیب نوازی پر سخت

چینچ و تاب کھاتا تھا۔ اور ۱۲۵۹ء (یا اوائل ۱۲۶۰ء) میں قاآن اعظم منگہ خاں نے

وفات پائی تو برکہ خاں اور ہلاکو خاں کھل کر ایک دوسرے کے سامنے آگئے۔ چنگیز خاں

کی اولاد میں قاآن اعظم بنانے کے جو جھگڑے رونما ہوئے، ان میں برکہ نے ایک

غریب کا ساتھ دیا اور ہلاکو نے دوسرے کا۔ اس طرح ان کے درمیان جو سرد جنگ

پانچ سال سے جاری تھی وہ گرم جنگ میں تبدیل ہو گئی اور دونوں طرف کی فوجوں میں

جھڑپیں شروع ہو گئیں۔

ہلاکو کی فوج میں "اروٹے زریں" کے جو دستے شامل تھے ان پر بھی اس حقیقت

کا اثر پڑا ان میں سے کچھ دستے تو در بند کی راہ سے دشتِ قیچاق کو لوٹ گئے اور کچھ براہِ شام، مصر جا پہنچے اور سلطان بئیرس کے ہاں پناہ گزین ہوئے۔ سلطان کو انہی پناہ گیر تاناریوں سے برکہ خاں اور اس کی عظیم سلطنت کے مفصل حالات معلوم ہوئے۔ سلطان کی دور بین نگاہوں نے فوراً بھانپ لیا کہ برکہ خاں سے دوستانہ مراسم قائم کرنے میں کتنے فوائد مضمر ہیں۔ چنانچہ اس نے ایک سفارت مرتب کی اور اس کو قسطنطنیہ کے راستے اردوئے زریں کے دار الحکومت "سراٹے" کی جانب روانہ کر دیا۔ باہر قسمتی سے اس سفارت کو قیصر روم نے ہلاکو کی خوشنودی کی خاطر راستے ہی میں روک لیا۔ اسی اثنا میں برکہ خاں کی جانب سے ایک سفارت قاہرہ پہنچ گئی۔ اس نے بئیرس کی خدمت میں حاضر ہو کر اپنے خاں کی جانب سے اس کو عین جالوت کے معرکہ میں کامیابی حاصل کرنے پر مبارک باد دی اور پھر خاں کا یہ پیغام دیا کہ

"ہم مسلمان ہیں اور اپنے کافر رشتہ دار ہلاکو سے لڑنے میں

اس لیے سلطانِ مصر کو چاہیے کہ دریائے فرات کی وادی میں ایلخانی

مقبوضات پر چڑھائی کرے۔"

سلطان کے لیے یہ ایک نہایت خوش آئند پیغام تھا۔ اس کے خیر معمولی فہم و تدبیر نے اس کو فوراً یہ بات سمجھا دی کہ مغلوں کے خلاف سب سے طاقتور حلیف جو اسے مل سکتے ہیں منغل ہی ہیں چنانچہ اس نے "اردوئے زریں" کی سفارت کا پرتیاک خیر مقدم کیا۔ سفیروں کو بلش باخلعتوں سے نوازا۔ اپنے حلقے میں انہیں اعلیٰ مراتب پر فائز کیا اور عباسی خلیفہ مصر کی رسمی اجازت سے خطبہ میں اپنے اور اس کے نام کے ساتھ برکہ خاں کا نام بھی پڑھوایا۔ پھر اس نے برکہ خاں کے نام ایک طویل خط لکھا دیکھا جانا ہے کہ یہ خط ستر صفحات پر مشتمل تھا اور سلطان نے اس کو اپنے ہاتھ سے لکھا تھا۔ اس خط میں سلطان نے کافروں سے جہاد کرنے کے بارے میں قرآن حکیم کی جملہ آیات

اور رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کی بہت سی احادیث دلچسپ ہیں۔ اور برکہ خاں کو  
 لکھا کہ وہ خود (یعنی بیرس) بھی دشتِ قیچاق کا رہنے والا ہے اور ایک عاجز  
 قیچاقی مسلمان کی حیثیت سے "خیامِ زرین" کے عظیم نو مسلم خان کو براہِ راست سلام بھیجتا  
 ہے۔ اس کے لیے یہ بات بڑی مسرت بخش ہے کہ عظیم برکہ خاں اپنے چچا زابھانی  
 بلا کو کی سرگرمیوں کو نفرت کی نگاہ سے دیکھتا ہے۔ بلا کو اسلام کو نیست و نابود کرنے  
 پر تلاش ہے اور یہ عاجز بیرس اسلام کو بچانے کی جدوجہد کر رہا ہے اس نے خلافت  
 کو مصر میں بحال کر دیا ہے اور اب وہ کافروں کے خلاف جہاد کی تیاریوں میں مصروف  
 ہے۔ یہ عاجز اپنے مسلمان بھائی برکہ خاں کو یہ اطلاع دینے میں مسرت محسوس کرتا  
 ہے کہ قاہرہ کی جامع مسجد میں خلیفہ عباسی اور اس عاجز کے نام کے ساتھ برکہ خاں  
 کا نام بھی منظر میں پڑھا گیا ہے اور خان کی جانب سے ایک متدین مسلمان کو  
 حج بدل کے لیے مکہ معظمہ بھیجا گیا ہے۔ یہ عاجز اور مصر و شام کے مسلمان خان  
 کے بیچ دشمنوں ہوں گے اگر وہ عقبت سے کافر بناؤ کی فوجوں پر حملہ کرے۔  
 یہ غلطی سے کہ سلطان نے اردوئے زرین کی سفارت کو نہایت عزت و  
 احترام کے ساتھ رخصت کیا اور اس کے ساتھ اپنے کچھ سفیر بھی بہت سے  
 قیمتی تحائف دے کر روانہ کیے۔ مورخین نے ان تحائف کی بڑی طویل فہرست  
 دی ہے ان میں سے کچھ کی تفصیل یہ ہے:

قرآن پاک کا ایک نادر نسخہ جس پر خلیفہ ثالث حضرت عثمان ابن عفان کی  
 مہر لگی ہوئی تھی۔ اس کے ریشمی (زربفت کے) غلاف پر سترہ اہام تھا۔ ہاتھی دانت

سے بعض مورخین کا بیان ہے کہ سلطان نے اس سفارت کے کچھ اراکین کو ہنت قاہرہ  
 میں روک لیا تاکہ وہ اس کی فوج کو مغلوں کی جنگی ترکیبیں سکھائیں۔

اور آبنوس (یا صندل) سے بنایا ہوا ایک مرصع تخت۔ کئی منقش اور زرتار مصلے اور  
 جانمازیں۔ چاندی کی طشتریاں۔ نقوشی دستوں کی نفیس تلواریں۔ خوارزم کی زینیں۔  
 ریشم کی ڈوری والی دمشق کمانیں۔ نیزے۔ تیرزکش۔ مختلف رنگوں کے نفیس پرے  
 شمدان۔ تکیے۔ تکیوں کے خوبصورت غلاف۔ گاموٹے۔ سنگی دیکھیں۔ لہدے۔  
 سدھائے ہوئے بندرجن کو ریشمی کپڑے پہنائے ہوئے تھے۔ تازی گھوڑے  
 جنگلی گدھے۔ زرافے۔ صبارفتار اشتر۔ اعلیٰ درجے کے طوطے۔ حبشی غلام۔ خواجہ سرا  
 اور تربیت یافتہ کنیزیں۔ بعض مؤرخین کا خیال ہے کہ ان تحائف میں وہ دستار بھی  
 شامل کر دی گئی تھی جس کو باندھ کر ایک مصری نے برکہ خاں کی طرف سے حج بدل کیا  
 تھا۔ یہ مصری حج بیت اللہ سے فارغ ہو کر سفارت کے روانہ ہونے سے پہلے ہی  
 قاہرہ واپس آ گیا تھا۔

قیصر روم نے مصر کی پہلی سفارت کو قسطنطنیہ میں روک رکھا تھا اس لیے خد  
 تھا کہ وہ اس سفارت کو بھی روک لے گا۔ سلطان نے اس خطرے کا سدباب  
 کرنے کے لیے قیصر روم کو دھمکی دی کہ اگر اس نے مصر کی سفارت کو روکا تو وہ  
 اپنی مملکت میں تمام بیزنطینی تاجروں کو گرفتار کرے گا اور قسطنطنیہ سے اپنے  
 تمام تجارتی تعلقات ختم کرے گا اس کے ساتھ ہی اس نے اپنی مملکت کے عسائی  
 بطریقوں سے قیصر روم کو دھمکی دلائی کہ وہ اس کو کلیسا کا اسقف اعظم تسلیم کرنے  
 سے انکار کر دیں گے سلطان کی اس کارروائی سے قیصر کے ہوش ٹھکانے آگئے اور  
 اس نے دونوں سفارتوں کو اردوئے زمین کی طرف جانے کی اجازت دے دی۔  
 مصری سفیر سرائے پہنچے تو برکہ خاں نے ان کا بڑی گرم جوشی سے استقبال کیا سلطان  
 بیس کا مکتوب اور تحائف موصول کر کے اس کو بے انداز مسرت ہوئی۔ اس نے سلطان  
 کو شکر یہ کا پیغام بھیجا اور اپنے پورے تعاون اور مدد کا یقین دلایا اس طرح ان

دو نوں عظیم مملکتوں کے درمیان گہرے دوستانہ مراسم قائم ہو گئے۔ برکہ خاں کا دار الحکومت  
 سرانے اس وقت تک سنہری خیموں کا شہر تھا۔ اس نے سلطان بیبرس کو پیغام بھیجا کہ وہ  
 مصر سے کاریگر اور صنّاع بھیجے جو اینٹ اور تپھر کی عمارتیں تعمیر کریں۔ سلطان نے فوراً  
 بہت سے معمار، صنّاع اور دوسرے ازباق کمال "سرانے" بھیج دیے جنہوں نے چند  
 سال کے اندر اندر اس شہر میں بے شمار مکانات، محلات، مدارس، مساجد، سرابیں  
 اور مہمان خانے تعمیر کر دیے۔ اس طرح سلطان بیبرس کی بدولت خانہ بدوش مغل نئے  
 تمدن سے روشناس ہوئے۔ برکہ خاں کے تخت نشین ہونے کے بعد سمرقند اور بخارا  
 وغیرہ سے بہت سے مسلمان جن میں کئی علماء بھی شامل تھے سرانے آکر آباد ہو گئے  
 تھے۔ خان کے ایما پر ان لوگوں نے اردوئے زریں کے مغل قبائل میں بڑے زور شور  
 سے اسلام کی تبلیغ کی نتیجہ یہ ہوا کہ وہاں کے گھر گھر میں اسلام کا چہرہ چاہنے لگا۔  
 پروفیسر ڈبلیو آرنلڈ اپنی کتاب "پریچنگ آف اسلام" میں لکھتا ہے کہ  
 "برکہ خاں کے تمام امرائے دولت اور شہزادوں و شہزادیوں  
 کے ہاں نماز پڑھانے کے لیے ایک ایک امام اور اذان دینے کے  
 لیے ایک ایک مؤذن مقرر تھا اور سلطنت کے تمام شہروں میں مکتب  
 قائم کیے گئے تھے جن میں عام رعایا کے بچوں کو قرآن پاک پڑھایا  
 جاتا تھا۔"

جب سلطان بیبرس اور برکہ خاں میں اتحاد قائم ہوا تو سلطان کے ایما پر بہت  
 سے مصری اور شامی علماء بھی "اردوئے زریں" گئے اور وہاں تبلیغ اسلام کے سلسلے  
 میں بڑا کام کیا۔ دوسری طرف "اردوئے زریں" سے مغلوں کی ایک کثیر تعداد برکہ خاں  
 کی اجازت سے مصر آکر آباد ہو گئی۔ ان لوگوں نے سلطان کی تبلیغ سے اسلام قبول  
 کر لیا اور اپنے آپ کو نہایت اچھا شہری ثابت کیا۔

## برکہ خاں کی بروقت امداد

برکہ خاں سے سلطان بیبرس کے حلیفانہ تعلقات کے نتائج بڑے دور رس ثابت ہوئے۔ عین جالوت میں تاتاری لشکر کی ذلت آمیز شکست بلا کو کو شعلہ جوالمہ بنا دیا تھا اور وہ مصر کا سرکھلنے کے لیے بے تاب تھا۔ بیبرس بھی بلا کو کے عزائم سے غافل نہیں تھا وہ اس کو دندان شکن جواب دینے کے لیے دن رات تیاری کرتا تھا۔ اس نے ایک جرار لشکر کو ہر قسم کے آلات حرب و ضرب سے لیس کر دیا تھا اور اس کو ایسے ڈھنگ سے تربیت دی تھی کہ وہ تاتاریوں کے سپل بلا سے مؤثر طور پر نبٹ سکے۔ اس لشکر میں تاتاری نسل کے مسلمان مملوک نہایت کثرت سے بھرتی کیے گئے تھے ان کا دعویٰ تھا کہ وہ کافر مغلوں کو لوہے کے چنے چبوا سکتے ہیں اس زمانے میں سلطان شام کے مختلف علاقوں میں برقی رفتار سے گشت کرتا رہتا تھا وہ جہاں منزل نہ تارتا اس کو اپنے خیمے میں فوجی لباس ہی میں سو جاتا اور ایک رات سے زیادہ کسی جگہ قیام نہ کرتا اس کے خیمے پر ہر وقت ایک صبار رفتار گھوڑا جس پر زین کسی ہوتی تیار رکھتا تھا کہ جس وقت بھی مغلوں کے حملے کی اطلاع ملے وہ ان کے مقابلے میں بلاتا اخیر پہنچ جائے۔ اس نے حلب سے لے کر اوادی فرات تک ساری گھاس جلواوی و رخت کٹوا لیے اور سردی گاؤں خالی کر لیے تاکہ مغلوں کو نہ غذا مل سکے اور نہ ان کے گھوڑوں کو چارہ۔ دوسری طرف اس نے اپنے طاقتور حلیف برکہ خاں کو بلا کو خاں کے لشکر پر عقب سے حملہ کرنے پر آمادہ کر لیا چنانچہ ۱۲۶۲ء کے جادوں میں جب بلا کو خاں نے مصر و شام پر یلغار کرنے کی تیاری کی تو اردوئے زرین کی ایک زبردست فوج تققاز کے دروں کے نیچے نمودار ہوئی اور بلا کو کے لشکر سے الجھ گئی۔ اس طرح ایل خانیوں اور زرین خیلوں کی طاقتور (مغل)

سلطنتوں کے درمیان جھڑپوں کا ایک طویل سلسلہ شروع ہو گیا۔ گو اس جنگ سے کسی سلطنت کو کوئی خاص نقصان نہ پہنچا کیونکہ ان کے رقبے اس قدر وسیع تھے کہ ایک کے لیے دوسری کو زیر کرنا قریب قریب ناممکن تھا۔ تاہم اس کا اتنا فائدہ ضرور ہوا کہ ایل خانی مغل مصر و شام پر یلغار کرنے کے قابل نہ رہے۔ ہلاکو بحیرہ خزر کے مشرق اور مغرب میں دونوں طرف اپنی اندرونی سرحد کی حفاظت کرنے پر مجبور ہو گیا۔ بخارا اور سمرقند کے راسخ العقیدہ اور جنگجو مسلمانوں نے برکہ خاں کی حمایت میں جہاد کا اعلان کر کے اس کی پریشانیوں میں اور اضافہ کر دیا۔

### ہلاکو کی شاطرانہ چال اور اس کا ٹوڑ

ہلاکو نے اب سپٹا کرغیسائی دنیا سے اپنے حلیف تلاش کرنے کی کوشش کی۔ اس نے قسطنطنیہ کے بغیر نظیری شہنشاہ (قیصر روم) کو ایک لکھے دار خط لکھا جس میں اس کی راکھی میریاریا مریم کا رشتہ اپنے لڑکے اباقا خان کے لیے مانگا۔ اس کے ساتھ ہی اس نے شاہ انگلستان اور پاپائے روم کو چٹھیاں لکھیں کہ ہمیں منہصر کے خلاف متحد ہو جانا چاہیے۔ قیصر روم نے تو کسی ہچکچاہٹ کے بغیر ہلاکو کی تجویز منظور کر لی۔ لیکن شاہ انگلستان اور پاپائے روم اپنے اندرونی جھگڑوں میں مبتلا تھے انہوں نے ہلاکو کو کوئی حوسلہ افزا جواب نہ دیا۔ اور سلطان پیر ہلاکو کے سیاسی داؤ پیچ پر کڑی نظر رکھ رہا تھا۔ اس نے فوراً برکہ خاں کو پیغام بھیجا

کہ بعض مورخین نے لکھا ہے کہ قیصر روم نے اپنی لڑکی ماریا مریم کو مراغہ کی طرف روانہ کیا تاکہ ہلاکو خاں اس سے شادی کرے۔ یہ لڑکی ابھی راستے ہی میں تھی کہ ہلاکو خاں فوت ہو گیا جب وہ مراغہ پہنچی تو ہلاکو کے بیٹے اباقا خان نے اسے اپنی بیوی بنا لیا۔

کہ وہ بھی اپنے بھتیجے نوگانی کے لیے قیصر کی دوسری لڑکی کا رشتہ طلب کرے  
 برکہاں نے اس کی تجویز پر عمل کیا۔ قیصر کو اروسے زریں کے طاقتور خان کا پیغام  
 روکنے کی جرات نہ پڑی اور اس نے اپنی دوسری لڑکی نوگانی سے بیاہ دی۔ اس کے ساتھ  
 ہی بیبرس نے قیصر روم سے ایک تجارتی معاہدہ کر لیا جس کی رو سے دونوں ملکوں کے  
 تاجر ایک دوسرے کی بندرگاہوں میں آجاسکتے تھے۔ اس طرح بیبرس نے قیصر روم  
 کو عالمی سیاست میں بالکل غیر جانبدار بنا دیا۔ تھوڑے ہی عرصہ بعد ۱۲۶۱ء میں ہلاکو  
 اور اس کی عیسائی بیوی دو قوز خاتون یکے بعد دیگرے مر گئے۔ عیسائی مورخ لکھتے ہیں  
 کہ ان دونوں کو چالاک مسلمانوں نے زہر دیا کیونکہ وہ عالم اسلام کے لیے خطر بنے  
 ہوئے تھے۔ بعض نے تو یہاں تک کہہ دیا ہے کہ ان کو زہر دینے میں سلطان بیبرس  
 کا ہاتھ تھا۔ غیر جانبدار مورخین کے نزدیک وہ دونوں طبعی موت مرے حقیقت خواہ  
 کچھ بھی ہو عیسائیوں نے ہلاکو اور اس کی بیوی کے مرنے پر بڑا سوگ منایا۔ عیسائی مورخ  
 ابن الجبرئیل نے جو سلطان بیبرس کا ہم عصر تھا، اس واقعہ کا ذکر ان الفاظ میں کیا ہے  
 ”ساری عیسائی دنیا کو عیسائی دنیا کے ان دونوں محافظوں اور  
 رہنماؤں کی موت کا بڑا افسوس ہوا۔“

ایک دوسرے عیسائی مورخ اسٹیفن ارفین نے ہلاکو کی وفات کا نام ان

اے گریگوریوس یونانی البوالفرج بن ہارون معروف بہ ابن العبری مغرب میں بارہیریس

(Barhebraeus) کے نام سے مشہور ہے۔ ۶۲۳ھ میں بمقام لمطیہ پیدا

ہوا اور ۶۸۵ھ میں مراغہ میں وفات پائی۔ وہ عیسائیوں کے فرقہ یقوتیہ سے تعلق رکھتا

تھا اور اپنے دور کا نامور تواریخ اور طبیب تھا۔ اس نے عربی اور سریانی میں تیس سے اوپر

کتابیں تالیف کی تھیں ان میں سے تاریخ مختصر الدول نے بڑی شہرت پائی۔



الفاظ میں کیا ہے :

”شہنشاہ دنیا کا مالک، عیسائیوں کا آمر ۱۲۶۴ء میں مر گیا اور

اس کے بعد اس کی بیوی دو قوز خاتون نے وفات پائی۔ یہی میں ان کا

مرتبہ قسطنطین اور اس کی ماں ہیلن سے کم نہیں۔“

ہلا کو کی موت کا ذکر تو ضمناً آگیا اور نہ وہ کچھ مدت اور زندہ بھی رہتا تو اس سے

چند ہی فرق نہیں پڑتا تھا کیونکہ سلطان بیبرس نے اپنی حیرت انگیز خارجہ حکمت عملی کی بدولت

سلطنت مصر و شام کو اس غارت گرا عظیم کی دستبرد سے بڑی حد تک محفوظ کر دیا تھا۔

### سلطان بیبرس اور عیسائی دنیا

سلطان اگرچہ نہایت راسخ العقیدہ مسلمان تھا لیکن عیسائیوں اور دوسرے مذاہب

کے پیروؤں کے خلاف اس کے دل میں تعصب کا شائبہ تک نہ تھا۔ اس کے مالک محرو

میں عیسائی آبادی کی تعداد ہزاروں تک پہنچتی تھی۔ ان لوگوں کو فوجی خدمت سے استثناء کے

عوض جزیرہ کی ایک معمولی رقم حکومت کو ادا کرنی پڑتی تھی۔ اس کے سوا ان کو شہریت کے

مکمل حقوق حاصل تھے وہ اپنی مذہبی رسوم نہایت آزادی کے ساتھ ادا کرتے تھے۔

مملکت میں ان کے بے شمار گرجے اور راہب خانے موجود تھے حکومت مساجد کی طرح

ان عبادت گاہوں کی بھی پوری حفاظت کرتی تھی۔ ان گرجوں اور راہب خانوں میں پادریوں

نے اپنی درس گاہیں قائم کر رکھی تھیں وہاں ان کو اپنے مذہب کے مطابق تعلیم دینے کی

مکمل آزادی تھی۔

سلطان کی اس رواداری کے باوجود ارض مشرق کے صلیبی جہتوں نے لبنان

شام اور فلسطین کے کئی علاقوں (بالخصوص ساحلی بندرگاہوں) پر قابضانہ قبضہ کر کے

اپنی ریاستیں قائم کر رکھی تھیں، اس کے بدترین دشمن تھے اور ہر وقت یورپ کے

اسلام دشمن حکمرانوں اور ایل خانی مٹلوں سے ساز باز میں مصروف رہتے تھے سلطان نے ان شریر النفس صلیبیوں کے عزائم کو بھانپ لیا تھا اور شام فلسطین اور لبنان کو ان کے ناپاک وجود سے پاک کرنے کا تہیہ کر لیا تھا۔ ان صلیبیوں کو پاپائے روم اور شاہانِ فرانس و انگلستان کی خاص سرپرستی حاصل تھی۔ اس لیے ان متعصب حکمرانوں سے دوستانہ روابط کا سوال ہی پیدا نہ ہوتا تھا۔ الیتہ بیزنطینی فرماں روا "قیصر روم" کے رویہ میں کسی حد تک لچک تھی۔ چنانچہ سلطان نے اپنی حکمت عملی کے ذریعے اس کو غیر جانبدار رہنے پر مجبور کر دیا تھا۔ اس کی تفصیل اوپر بیان کی جا چکی ہے۔ ونیس اور جنیوا کی عیسائی جمہوریوں کو مذہبی لڑائیوں میں الجھنے کی نسبت اپنے تجارتی مفادات زیادہ عزیز تھے چنانچہ سلطان نے ان سے تجارتی معاہدے کر کے دوستانہ روابط قائم کر لیے تھے ان دونوں ریاستوں میں شدید تجارتی رقابت تھی لیکن دونوں ہی ان کو اپنا حقیقی دوست تصور کرتی تھیں۔ مغربی مورخین نے اس سلسلے میں ایک عجیب واقعہ لکھا ہے جسے انہوں نے سلطان کی "ڈپلومیسی" سے تعبیر کیا ہے۔ ان کا بیان ہے کہ ایک دفعہ ان دونوں ریاستوں کے تعلقات سخت کشیدہ ہو گئے۔ فریقین نے سلطان سے درخواست کی کہ وہ ثالث بن کر ان کے جھگڑے کا تصفیہ کر دے۔ سلطان نے اس معاملے میں ایسا رویہ اختیار کیا کہ دونوں ریاستوں میں صلح ہونے کے بجائے جنگ چھڑ گئی اور ان کے بحری بیڑے بحیرہ روم میں ایک دوسرے سے متصادم ہو گئے۔ معلوم نہیں مغربی مورخین کے اس بیان میں کس حد تک صداقت ہے تاہم یہ واقعہ ہے کہ ان دونوں متخالف ریاستوں کے تعلقات سلطان سے بدستور دوستانہ رہے۔

ان واقعات سے چند سال پہلے عیسائی دنیا سے روابط کے سلسلے میں سلطان عالمی بساطِ سیاست پر ایک اور ٹہرہ پھینک چکا تھا۔ برسرِ اقتدار آنے کے کچھ عرصے بعد

اس کو اپنے وقائع نگاروں کے ذریعہ معلوم ہوا کہ اطالیہ و صقلیہ کے فرماں روا مینفریڈ  
 اور پاپائے روم میں آن بن ہے یہاں تک کہ پوپ نے اس کو کلیسا سے خارج کر دیا  
 ہے اس کی وجہ یہ ہے کہ شاہ مینفریڈ ایک علم دوست اور مسلم نواز حکمران ہے اس  
 نے اپنی مملکت کے مسلمان باشندوں کو نہ صرف کامل مذہبی آزادی دے رکھی ہے  
 بلکہ کئی مسلمانوں کو اعلیٰ سرکاری عہدوں پر فائز کر رکھا ہے۔ سلطان نے اس  
 صورت حال سے ناگوار ہونے میں مطلق تامل نہ کیا اور ستمبر ۱۲۶۹ء میں اپنی مملکت  
 کے ایک سربراہ اور ذہ عالم قاضی جمال الدین ابو عبد اللہ محمد بن سالم معروف بہ ابن رطل  
 کی سرکردگی میں ایک دوستانہ سفارت شاہ مینفریڈ کے دربار میں بھیجی۔ بادشاہ نے  
 اس سفارت کا پرتپاک خیر مقدم کیا اور وہ کافی عرصہ اطالیہ میں مقیم رہی (اس کی کسی قدر  
 تفصیل اس کتاب میں ایک دوسری جگہ ابن رطل کے ترجمہ میں دی گئی ہے) اس طرح  
 مصر کی حکومت اور حکومت اطالیہ و صقلیہ میں دوستانہ مراسم قائم ہو گئے۔

شاہ مینفریڈ جب تک زندہ رہا سلطان بیبرس اور اس کے درمیان نہایت خوشگوار  
 تعلقات قائم رہے۔ ۱۲۶۶ء میں پوپ اور لوئی نهم شاہ فرانس کے متحدہ لشکر نے  
 مینفریڈ پر چڑھائی کر دی اور اس کو شکست دے کر قتل کر دیا اس کے ساتھ ہی مصر اطالیہ  
 کی دوستی ختم ہو گئی۔



صلیبیوں سے معرکہ آرائیاں



## قلبِ اسلام میں صلیبی تختہ

الملك الظاہر بیبرس نے اپنی حکومت کے پہلے پانچ سالوں میں تاتاری غارتگریوں کو شام سے نکالا اور ان کے خلاف ایک زبردست عسکری اور سیاسی محاذ قائم کیا۔ مصر اور شام کو متحد کیا۔ خلافت عباسیہ کا احیاء کیا۔ ایک دانشور اور حکمت عملی وضع کی اور ملک کا اندرونی نظم و نسق درست کیا۔ ان کاموں سے فارس ہونے کے بعد وہ شام۔ فلسطین اور لبنان کے صلیبیوں کی طرف متوجہ ہوا جو نہ صرف پورے ساحل پر ایک آہنی جنگی قلعہ بند دیوار بنائے ہوئے جمے تھے بلکہ کسی اندرونی مقامات پر بھی قبضہ جمائے ہوئے تھے۔ صلیبیوں کے اہم اور مستحکم ترین مقامات یہ تھے:

الکرک۔ قیساریہ۔ ارسوف۔ صفد۔ یاقا۔ شقیف ارنون (بالفورٹ) القبرین (مانٹفورٹ) انطاکیہ۔ حصن الاکراو۔ انططوس۔ المرکب (مرقب) صور۔ بیروت۔ طرابلس۔ عکہ۔ صیدا۔

ان قلعوں میں سے اکثر کو مجاہد اعظم سلطان صلاح الدین ایوبی نے صلیبیوں سے چھین لیا تھا۔ لیکن اس کی وفات کے بعد جو حالات رونما ہوئے ان کا فائدہ اٹھا کر صلیبی ان پر پھر قابض ہو گئے تھے۔ سخت جنگ جو یازدہ ہجرت رکھنے والے یہ صلیبی مسلمانوں کے بدترین دشمن تھے انہوں نے اپنے مقبوضات اور ان کے نواحی علاقوں کے مسلمانوں پر عرصہ سحیات تنگ کر رکھا تھا۔ حدیث کہ مسلم دشمنی کے جنون میں ان کی ایک کثیر تعداد ہلاکوں کے غارت گریوں میں جا شامل ہوئی تھی۔ انہوں نے مسلمان علاقوں کو تاخت و تاراج کرنے اور بے کس مسلمانوں کا قتل عام کرنے میں تاتاری وحشیوں کے

ساتھ برابر کا حصر لیا تھا۔ پھر وہ ہر وقت یورپ کے اسلام دشمن بادشاہوں اور پاپے روم کو مصر و شام پر حملہ کرنے کے لیے اکساتے رہتے تھے۔ اس طرح ارضِ فلسطین لبنان و شام میں ان کی موجودگی ایک ایسے پنجر کی حیثیت رکھتی تھی جو قلبِ اسلام میں پیوست ہو قدرت نے ان لوگوں کو بہتیری ڈھیل دی تھی لیکن اب وقت آ گیا تھا کہ کوئی اور صلاح لائے اور ان کو کیفرِ کردار تک پہنچا دے۔ یہ صلاح الدین ثانی (بقول عرب مورخین) یا نبی صلاح الدین (بقول مغربی مورخین) اللہ تعالیٰ نے الملک الظاہر بیبرس کی صورت میں بھیج دیا۔ اس نے صلیبی فتنہ پروروں پر پے در پے ایسی مہلک ضربیں لگائیں کہ صلاح الدین اعظم کی یاد تازہ ہو گئی۔ مشرقی اور مغربی تمام مورخین اس بات پر متفق ہیں کہ صلیبیوں کے خلاف سلطان بیبرس کا جہاد سلطان صلاح الدین کی نذر کتاڑیوں سے لگا کھاتا ہے۔ مغربی مورخین نے اس کی داستان جہاد کو اختصار کے ساتھ فلینڈ کیا ہے اور اس میں بھی خاصی رنگ آمیزی سے کام لیا ہے جس کا مقصد سوائے اس کے کچھ نہیں کہ بیبرس کو فاتح تسلیم کرنے کے ساتھ ساتھ ظالم اور غارت گز ثابت کیا جائے۔ تاہم عرب مورخین کی مستند اور مفصل روایات سے مغربی مورخین کے دجل و تلبیس کا پردہ چاک ہو جاتا ہے۔ ہم یہاں صلیبیوں کے خلاف سلطان بیبرس کی مہم کو آرائیوں کا حال نہایت اختصار کے ساتھ درج کرتے ہیں:

خونِ اسرائیل آجاتا ہے آخر جوش میں  
توڑ دیتا ہے کوئی موسیٰ اطمس سامری

الکرک کی تسخیر

۱۲۶۳ء کے وسط میں الملک الظاہر بیبرس نے صلیبیوں کے خلاف اپنی طوفانی بلغار کا آغاز کیا۔ وہ ایک جرار لشکر کے ساتھ قلمرہ سے نکلا اور ارضِ فلسطین میں داخل



ہوا۔ یہاں اس کا رخ شمال کی طرف تھا۔ صلیبیوں کو اس کی نقل و حرکت کی اطلاع ملی تو وہ اپنے مضبوط ساحلی قلعوں میں زور شور سے جنگی تیاریوں میں مصروف ہو گئے۔

یہ ایک سلطان شمالی سے جنوب مشرق کی طرف پلٹا اور برق رفتاری سے پیش قدمی کرتا ہوا الکرک کے سامنے نمودار ہوا۔ یہ ایک قدیم اور مستحکم قلعہ تھا اور اس پر نہایت کینہ خصامت صلیبی قابض تھے۔ انہوں نے مسلم آزاری اور غارت گری کو اپنا پیشہ بنا رکھا تھا۔ مصر سے حجاز جانے والے حاجیوں کے قافلے ان کی خون آشامیوں کا خاص ہدف تھے۔ مصر سے حجاز کو جانے والا راستہ الکرک کے قریب گزرتا تھا جو نہی حجاج کا کوئی قافلہ الکرک کے زلج میں نہنچتا۔ الکرک کے شر النفس صلیبی اس پر بھوکے بھیڑیوں کی طرح ٹوٹ پڑتے حاجیوں کو شہید کر ڈالتے اور ان کا مال اسباب لوٹ لیتے سلطان کے اچانک حملے سے ان ظالم بزدلوں کو حواس باختہ کر دیا اور معمولی مزاحمت کے بعد انہوں نے قلعہ خالی کر دیا۔ سلطان الکرک میں فاتحانہ داخل ہوا تو اس کو اطلاع دی گئی کہ صلیبیوں نے وہاں کے قلعہ نما تاریخی گرجے ناصرہ کو اپنی جنگی سرگرمیوں کا مرکز بنایا ہوا تھا۔ سلطان نے اس گرجے کو مسمار کر دیا اور الکرک کی فصیل بھی زمین کے برابر کر دی۔ اس کے بعد وہ پھر کبھی صلیبیوں کا مرکز نہ بن سکا اور مصری حاجیوں کے قافلے صلیبیوں کے شر سے ہمیشہ کے لیے محفوظ ہو گئے۔ الکرک کی فتح کے بعد سلطان مصر واپس آ گیا اور دو سال تک دوسری سرگرمیوں میں مصروف رہا تاہم اس کی پراسرار خاموشی کسی طوفان کی آمد کا پتا دیتی تھی۔

## فتح قیسیاریہ

۱۲۶۵ء میں سلطان کی فوجوں نے پھر بڑی تیزی سے نقل و حرکت شروع کر دی اور پیشتر اس کے کہ بحیرہ روم کے مشرقی ساحل کے قلعہ بند صلیبیوں کو سلطان

کے ارادوں کا علم ہوتا وہ ایک چکر کاٹ کر قیساریہ کو اپنے گھیرے میں لے چکا تھا۔  
یہ تاریخی شہر ایک اہم بندرگاہ اور صلیبیوں کا ایک مضبوط مرکز تھا۔ سلطان کے ارادوں کے  
حملے کے باوجود صلیبیوں نے جی نہ چھوڑا لیکن پوجش مسلمانوں کی خوفناک ضربوں کے  
سامنے ان کی کچھ پیش نہ چلی اور سات دن کی خون ریز جنگ کے بعد انہوں نے  
متنہار ڈال دیئے۔ سلطان نے قلعے میں داخل ہو کر حکم دیا کہ اس کو مسمار کر دیا جائے  
چنانچہ قلعے کی بنیادیں تک کھود دی گئیں۔ قیساریہ کی فتح نے اس آہنی جنگی دیوار میں  
شکاف ڈال دیا جو صلیبیوں نے تمام ساحل کے ساتھ بے شمار جنگی قلعوں کی صورت میں  
تعمیر کر رکھی تھی۔ یہ قلعے تمام بندرگاہوں میں خشکی کی جانب بنائے گئے تھے۔ دفاعی لحاظ  
سے اس کا یہ فائدہ تھا کہ دشمن اگر خشکی کی طرف سے محاصرہ کرے تو سمندر کا راستہ بہر  
صورت کھلا رہے۔ سمندر ہی کے ذریعے یورپ سے ان کا رابطہ قائم رہتا تھا اور وہاں  
سے تازہ دم جنگجوؤں۔ آلات حرب اور اشیائے خوراک وغیرہ کی کمک پہنچتی رہتی تھی۔  
ان بندرگاہوں کے مدخلوں پر برج تعمیر کر دیئے گئے تھے اور فوجی چوکیوں یا قلعوں کا ایک  
زنجیرہ قائم کر دیا گیا تھا جس کے ذریعے سے تمام ساحلی قلعے اور بندرگاہیں ایک سلسلے  
میں منضبط ہو گئی تھیں۔ لبنان و فلسطین کے ساحل پر ایسے کئی برج آج بھی آثار قدیمہ  
کی صورت میں موجود ہیں۔ قیساریہ صلیبیوں کے جنگی زنجیرے کی سب سے پہلی کڑی  
تھی جس کو سلطان کی شمشیر خوار اشکاف نے ایک ہی وار میں توڑ ڈالا۔ سلطان نے اس  
قلعہ پر حملے کا منصوبہ جس عہدگی سے تیار کیا، اس نے اس کی غیر معمولی ذہانت اثر نگاہی  
اور جسٹری مہارت کا یقین ثبوت مہیا کر دیا۔ اس کا اندازہ اس بات سے کیا جاسکتا

۱۔ مورخین نے اس کو قیساریہ اور قیساریہ بھی لکھا ہے۔ قیساریہ آجکل ویران پڑا ہے لیکن  
ماضی بعید میں یہ بڑا بارونق شہر تھا۔

ہے کہ محاصرے کے دوران میں وہاں کے صلیبیوں کو کسی دوسری طرف سے مطلق کوئی  
 مدد نہ پہنچ سکی اسی طرح قلعے کی تسخیر کے بعد سلطان نے اس کے دفاعی استحکامات کو اس  
 انداز سے ملبا میٹ کیا کہ صلیبی طالع آزماؤں کو دوبارہ اس طرف کا رخ کرنے کی کوشش  
 نہ پڑی۔

### ارسوف پر قبضہ

قیساریہ کو پامال کرنے کے بعد سلطان نے جنوب کا رخ کیا اور آنا نانا قلعہ ارسوف  
 کا محاصرہ کر لیا۔ یہ ہاسپٹیلرز صلیبیوں کا ایک مضبوط مرکز تھا۔ قیساریہ کا انجام دیکھ  
 کر ان لوگوں نے زبردست دفاعی تیاریاں کر رکھی تھیں چنانچہ وہ چالیس دن تک محاصرے  
 کا نہایت پامردی سے مقابلہ کرتے رہے لیکن آخر بہت ہار بیٹھے اور سلطانی افواج  
 ان کے دفاعی استحکامات کو روندتی ہوئی قلعے کے اندر داخل ہو گئیں اس قلعے کا بھی  
 وہی حشر ہوا جو قیساریہ کا ہو چکا تھا۔ سلطان نے اس کی اینٹ سے اینٹ بجا کر رکھ دی  
 اور اس کی مضبوط فصیلیں اور بلند و بالا برج خواب و خیال بن کر رہ گئے۔

### صدقہ کی تسخیر

اس سے اگلے سال یعنی ۱۲۶۶ء میں سلطان پھر قاہرہ سے نکلا اور ایک

۱۲۶۶ء (Hospitallers) صلیبی جنگ جوڑوں کا ایک گروہ تھا۔  
 شروع میں ان کا مقصد یروشلم آنے والے عیسائی زائرین کی مہمان داری اور خدمت کرنا  
 تھا لیکن بعد میں وہ ایک جنگ جو گروہ کی صورت اختیار کر گئے جس کو مسلمانوں سے  
 خدا واسطے کا بنیر تھا۔

طوفانی بلیغنا کر کے صفد کے مشہور قلعے کو چاروں طرف سے گھیر لیا۔ یہ قلعہ نہایت بلند اور مضبوط تھا اور عمیق خندقوں سے گھرا ہوا تھا اس میں عام عیسائیوں کے علاوہ ہیکلی جنگجوؤں کی ایک کثیر تعداد بھی موجود تھی۔ ان سب نے متحد ہو کر کسی دن تک سلطانی فوج کا مقابلہ کیا۔ لیکن بالآخر مسلمانوں کے تابڑ توڑ حملوں کے سامنے ہتھیار ڈالنے پر مجبور ہو گئے۔ سلطان نے قلعہ میں داخل ہو کر عام شہر لوہی کو تو امان سے دی لیکن دو ہزار کے قریب ہیکلی جنگجوؤں اس کے حکم سے موت کے گھاٹ اتار دیے گئے یہ لوگ صفد کے نواحی علاقے کے پُر امن اور بے گناہ مسلمانوں کو سخت اذیتیں پہنچاتے رہتے تھے اور سلطان کے نزدیک ان کا یہ جرم کسی صورت میں معافی کے قابل نہیں تھا۔

قاپ کے حقیقی کا بیان ہے کہ صفد کی تفصیل پر آج تک یہ کتبہ موجود ہے :

”سکندر زمان عماد الدین“

اسی سال سلطان نے دریائے اردن پر ایک عظیم الشان پل تعمیر کرایا اور اس پر بھی اپنا کتبہ نصب کرایا۔ یہ پل اب تک موجود ہے اور جسرا الدامیہ کے نام سے مشہور ہے۔ یہ پل اب خشکی پر قائم ہے کیونکہ بعد میں دریائے اردن اپنا رخ بدل کر کئی میل دور بہنے لگا۔

## یا قاپ قبضہ

صفد کی فتح کے بعد شیرازہ کی چھار میں واپس آ گیا اور دو سال تک سستاتا

اس سے مراد ٹمپلز (Templers) ہیں جو صلیبیوں کا ایک سفاک گروہ تھا۔ وہ یروشلم میں ہیکلی سلیمانی کے قریب رہتے تھے اس لیے ٹمپلز یا ہیکلی مشہور ہو گئے۔ شروع میں ان کا مقصد بھی خدمتِ خلق تھا لیکن آہستہ آہستہ وہ ایک جنگجو فرقت بن گئے اور مسلم دشمنی کو

اپنا پیشہ بنا لیا۔

۱۲۶۸ء میں وہ پھر اپنی کچھار (قاہرہ) سے نکلا اور ایک ہی جست میں یافا پر جا پڑا یہ شہر بھی صلیبیوں کا ایک اہم مرکز تھا۔ انہوں نے جان توڑ کر مقابلہ کیا لیکن بارہ گھنٹے کی شدید جنگ کے بعد سلطان نے ان کو مغلوب کر لیا اور قلعہ کی فصیل پر اپنا پرچم لہرایا۔

## قلعہ الشقیف کی تسخیر

یافا کی فتح کے بعد سلطان شقیف عنون (یا شقیف ارنون) کے پہاڑی قلعے کی طرف متوجہ ہوا جو صور و صیدا کے ساحلی علاقے کو البقاع اور دمشق سے ملانے والے جنوبی درے کی چوکیداری کرتا تھا۔ یہ قلعہ سیکلی جنگجوؤں (مپلرز) کا ہیڈ کوارٹر تھا اور اپنے دفاعی استحکامات کی بنا پر بالکل ناقابل تسخیر خیال کیا جاتا تھا۔ یہ قلعہ ایک عمودی چٹان پر بنایا گیا تھا۔ دریا ئے لیطانی سے اس کی بلندی ڈیڑھ ہزار فٹ اور سطح بحر سے ۲۱۹۹ فٹ تھی۔ اس کا ایک حصہ پتھروں کی چٹانی سے اور دوسرا حصہ

۱۲۶۸ء یافا کا موجودہ نام تل ایب (Tel Aviv) ہے اور یہ صیہونی ریاست "اسرائیل" کا دار الحکومت ہے۔

۱۲۶۸ء بعض مورخین کا بیان ہے کہ یافا کو قلعہ الشقیف کی تسخیر کے بعد فتح کیا گیا۔

۱۲۶۸ء شقیف عنون یا ارنون ایک قریبی گاؤں کا نام تھا یہ قلعہ بھی اسی نام سے مشہور ہو گیا۔ صلیبی اس کو شاطوری بیوفورٹ یا بلیفورٹ (Belfort) کہتے تھے۔ یہ قلعہ اب تک موجود ہے اور قلعہ الشقیف کے نام سے مشہور ہے۔

پہاڑ کی چٹانیں تراش کر بنایا گیا تھا۔ اس کا مجموعی رقبہ چار ہزار دو سو نوے مربع گز تھا۔  
 دیواروں کی لمبائی ایک سو تیس گز چوڑائی تینتیس گز اور بلندی انیس گز سے پچیس گز تک  
 تھی۔ اس کے جنوب اور مغرب کی طرف ایک خندق تھی جو ٹھوس چٹان کاٹ کر بنائی گئی تھی۔  
 یہ خندق سولہ گز سے اسی گز تک گہری تھی۔ اس خندق میں چٹان کاٹ کاٹ کر چھوٹے  
 چھوٹے کمرے بنائے گئے تھے اور پانی کے چشمے نکالے گئے تھے۔ قلعے کی عمومی  
 دیواریں گھاٹیوں کے کناروں سے اوپر اٹھائی گئی تھیں اور ان کے کونوں پر بلند اور مستحکم  
 برج بنے ہوئے تھے جن میں بیٹھ کر نہ صرف دشمن کی نقل و حرکت پر کڑی نظر رکھی جاسکتی  
 تھی بلکہ اس کو پسپا کرنے کے لیے وہاں سے تیروں اور پتھروں کی بارش بھی کی جاسکتی تھی۔  
 عام حالات میں اس قلعے پر قبضہ کرنا تو کجا اس پر حملے کا تصور کرنا بھی دیوانے کا خواب معلوم  
 ہوتا تھا۔ لیکن اپریل ۱۲۶۸ء میں جب سلطان بیرس و شوار گزار ٹھوہل پہاڑی راستوں  
 کو طے کرتا ہوا ایک "قلعۃ الشقیف" کے سامنے نمودار ہوا تو صلیبیوں کے سامنے اس کے  
 تمام قلعے کے زبردست استحکامات نے ان کی ہمت بندھائے رکھی اور انہوں نے  
 سلطانی افواج کا ڈٹ کر مقابلہ کیا۔ سلطان کو بھی اس قلعے کے استحکامات کا بخوبی علم  
 تھا۔ چنانچہ وہ اپنے ساتھ بہت سی دیو پیکر منجیقین لایا تھا۔ اس نے حکم دیا کہ پچیس  
 منجیقین قلعہ کے سامنے مناسب مقامات پر نصب کر دی جائیں۔ یہ منجیقین  
 آنا آنا نصب ہو گئیں اور ان سے قلعہ پر دن رات بھاری پتھروں کی بارش ہونے  
 لگی۔ اس کے ساتھ ہی سلطان نے اہل قلعہ کو باہر سے کسی قسم کی مدد پہنچنے کے تمام  
 راستے بند کر دیے نتیجہ یہ ہوا کہ صلیبیوں کی قوت مدافعت کم ہوتی گئی۔ یہاں تک کہ پانچ  
 ہفتے کے بعد بالکل جواب دے گئی۔ صلیبی ایک ایک کر کے کھٹ مرے یا تھیرے اسٹون  
 سے ساحلی علاقوں کی طرف بھاگ گئے۔ میدان صاف ہوتے ہی سلطان اپنے  
 لشکر کے ساتھ تھمب و تھلیل کرتا ہوا قلعے کے اندر داخل ہوا اور اس کے بلند ترین برج

پراپنا علم نصب کر دیا۔ قلعہ الشقیف کی فتح سے صلیبیوں پر بڑی کاری ضرب لگی اور  
ان میں خوف و ہراس کی لہر دوڑ گئی۔

## انطاکیہ کی فتح المفتوح

گزشتہ چند سالوں میں پے پے فتوحات نے مسلمانوں کے حوصلے دوچند کر  
دیئے تھے اور وہ اس خطہ ارض کو ہمیشہ کے لیے صلیبیوں کے وجود سے پاک کر  
دینے پر تل گئے تھے۔ سلطان کا دل بھی اپنی فوج کے دل کے ساتھ دھڑکتا تھا  
وہ اپنے لشکریوں کے جذبات کو خوب سمجھتا تھا اور جانتا تھا کہ ان سے کس موقع  
پر کیا کام لیا جاسکتا ہے۔ یاقا اور الشقیف کو فتح کرنے کے بعد اس نے اپنے  
ذہن میں ایک عظیم منصوبہ تیار کیا اور پھر اپنی فوجوں کو جذبہ جہاد سے سرشار تھیں  
طرابلس کی طرف کوچ کرنے کا حکم دیا۔ اور چاندیوں سے صلیبیوں کے تمام ساحلی  
علاقے زور شور سے جنگی تیاریوں میں مشغول ہو گئے تھے کیونکہ کسی کو کچھ علم نہ تھا کہ  
سلطان اب کس کو اپنی یلغار کا نشانہ بناتا ہے اور پھر ایک دن جب اہل طرابلس  
نے دیکھا کہ سلطان کی فوجیں قلعہ کے سامنے حد نظر تک پھیلی ہوئی ہیں تو وہ سمجھ گئے کہ  
اب ان کی باری ہے۔ طرابلس صلیبیوں کا بڑا مضبوط قلعہ تھا اور انہوں نے یہاں  
بے پناہ جنگی قوت جمع کر رکھی تھی وہ قلعہ بند ہو کر مسلمانوں سے ایک طویل جنگ لڑنے  
کے لیے تیار ہو گئے۔ لیکن ایک دن وہ صبح اٹھے تو یہ دیکھ کر ان کی حیرت کی انتہا  
نہ رہی کہ طرابلس کے ارد گرد دور دور تک مسلمانوں کا کہیں نام و نشان بھی نہیں ہے۔  
اہل طرابلس کی حیرت بیجا نہیں تھی کیونکہ مسلمان راتوں رات ہی نہایت خاموشی سے  
طرابلس کا محاصرہ اٹھا کر شمال کی طرف روانہ ہو گئے تھے۔ ان کی منزل مقصود انطاکیہ  
کی لاطینی ریاست تھی جو ابوالعدا کے الفاظ کے مطابق "نہایت ہی شریر النفس اور

کینہ نصلت صلیبیوں سے معمور تھی اور گزشتہ ایک سو ستتر برس سے مسلمانوں کو دعوتِ آزادی  
 دے رہی تھی۔ انطاکیہ کی ریاست کئی سو مربع میل پر محیط تھی اور خود انطاکیہ (Antioch)  
 کا بارونق شہر ایک نہایت مستحکم دوسری فصیل کے اندر۔۔۔ دریائے المفلوب کے  
 کنارے صدیوں سے سرابھائے کھرا تھا اس میں عیسائیوں کے کئی مقدس مقامات  
 عظیم الشان گرجے اور مضبوط قلعے تھے۔ اس شہر کی حفاظت کے لیے دو لاکھ  
 سے اوپر صلیبی جنگ جو موجود تھے اور فوجی تربیت پائے ہوئے مقامی عیسائیوں  
 کی ایک کثیر تعداد بھی ان کی پشت پر تھی۔

سلطان کو بیسیوں میل دور۔۔۔ دشوار گزار پہاڑوں سے پرے طرابلس الشام  
 کے محاصرے میں مصروف دیکھ کر اہل انطاکیہ بالکل مطمئن تھے۔ ان کے دہم گمان  
 میں بھی یہ بات نہیں آسکتی تھی کہ خطرہ ان کے سر پر متلا رہا ہے۔ وہ سمجھ رہے تھے  
 کہ مسلمان ان کی زبردست قوت سے ٹکرانے کی جرأت کبھی نہیں کریں گے لیکن ایک  
 دن جب انہوں نے قلعے کی فصیلوں سے دیکھا کہ انطاکیہ کے چاروں طرف بے شمار

ملہ انطاکیہ ہر زمانے کا بڑا مشہور شہر تھا اور عیسائیوں کے نزدیک ایک مقدس مقام کا درجہ  
 رکھتا تھا مسلمانوں نے اسے سب سے پہلے حضرت عمر فاروقؓ کے عہدِ خلافت میں فتح کیا۔  
 چند سال بعد اس کو یونانیوں نے لے لیا مگر بہت جلد مسلمانوں کے قبضہ میں واپس آ گیا عرصہ دراز  
 کے بعد پہلی صلیبی جنگ کے دوران میں صلیبیوں نے اس پر پوری قوت سے حملہ کیا اور سات  
 ماہ کے پر صعوبت محاصرے کے بعد اوائل جون ۱۰۹۸ء میں اس کو فتح کر لیا۔ یہ فتح ایک  
 نو مسلم ارمنی فیروز بہروز کی فداوری کی مرہون منت تھی جو ایک خفیہ راستے کے ذریعے صلیبیوں  
 کو قلعے کے اندر لے گیا تھا۔ اسی وقت سے یہ شہر صلیبیوں کے قبضے میں تھا اور یہاں انہوں نے  
 ایک ریاست قائم کر لی تھی سلطان صلاح الدین ایوبیؒ کی مجاہدانہ ترکانیاں بھی اس شہر کو مستحکم  
 میں بوجہ کامیاب نہ ہوئی تھیں۔



جھنڈوں کا ایک سمندر لہریں مار رہا ہے تو خیرت اور خوف کے ملے جلے جذبات نے ان کو مغلوب کر لیا۔ یہ جھنڈے سلطان بیبرس کی فوج کے سوا اور کسی کے نہیں ہو سکتے تھے جوں جوں یہ جھنڈے انطاکیہ کے قریب آئے تھے نعرہ ہائے تکبیر سے انطاکیہ کی فضا میں ارتعاش پیدا ہو رہا تھا۔ مسلمانوں کا یہ حملہ اچانک بھی تھا اور نہایت دلیرانہ بھی۔ اس سے پہلے کہ صلیبی اپنی تمام قوتوں کو مجتمع کر سکتے، مسلمان بجلی کی سی تیزی کے ساتھ انطاکیہ پر حملہ آور ہو چکے تھے اور پہلے ہلے میں ہی اس کی ناقابلِ شخیر فصیل کے ایک حصے پر قبضہ کر چکے تھے۔ صلیبی نہ تعداد میں کم تھے اور نہ ان کے پاس آلاتِ حرب و ضرب کی کمی تھی۔ انہوں نے بہت جلد اپنے آپ کو سنبھال لیا اور مسلمانوں کے سامنے سادہ سکندری بن کر کھڑے ہو گئے۔ اس گھمسان کارن پر اگر انطاکیہ کے گلی کوچوں میں خون کی ندیاں بہنے لگیں اور ہر طرف نعشوں کے انبار لگ گئے مسلمان اپنے گھروں سے سینکڑوں میل دور سر پر کفن باندھے لڑے تھے ان کو اچھی طرح معلوم تھا کہ اگر یہاں وہ شکست کھا گئے تو پھر ان کو نہ مصر میں پناہ مل سکتی ہے اور نہ شام میں۔ جب وہ سلطان کو اپنے پہلو پہ پہلو والہانہ انداز میں لڑتے دیکھتے تھے تو ان کی ہمتیں دوچند ہو جاتی تھیں چنانچہ صلیبی اپنا سارا زور لگانے کے باوجود مسلمانوں کو پیچھے دھکیلتے ہیں کامیاب نہ ہو سکے اور باختلافِ روایت دو یا چھ دن کی خونریز جنگ کے بعد تھکے ڈالنے پر مجبور ہو گئے۔

اس طرح ارضِ مشرق میں دوسری قدیم ترین لاطینی ریاست ہمیشہ کے لیے ختم ہو گئی۔ سلطان بیبرس نے صلیبیوں پر اب تک جو فتوحات حاصل کی تھیں یہ فتح ان میں سب سے بڑی تھی اور حقیقی معنوں میں فتحِ الفتح کی حیثیت رکھتی تھی۔

ابوالفدا کا بیان ہے کہ انطاکیہ کی لڑائی میں صلیبی فوج کے سولہ ہزار سپاہی مقتول ہوئے اور ایک لاکھ کے قریب جنگی قیدی بنائے گئے انہیں فروخت کیا گیا تو ایک

نوجوان لڑکے کی قیمت بارہ درہم اور ایک نوجوان لڑکی کی قیمت پانچ درہم پڑی۔  
 مالِ غنیمت کی اس قدر افراط تھی کہ درہم و دینار پیمانے بھر بھر کر سپاہیوں میں تقسیم کیے گئے  
 عیسائی مورخین کہتے ہیں کہ سلطان نے شہر کے تمام پرانے گرجوں اور قلعوں کو نذر آتش  
 کر دیا۔ ان میں سے بعض کو عالمگیر شہرت حاصل تھی۔ معلوم نہیں ان کے اس بیان میں کس  
 حد تک صداقت ہے کیونکہ انطاکیہ میں آج بھی بہت سے پرانے گرجے اور قلعے موجود ہیں  
 انطاکیہ پر سلطان کے حملے سے پہلے وہاں کا درندہ صفت صلیبی حکمران بوہمند  
 (بوہیمان) طرابلس گیا ہوا تھا۔ انطاکیہ پر قبضہ کرنے کے بعد سلطان نے اس کو خط لکھا کہ  
 ”انطاکیہ میں تمہارے آدمیوں میں سے ایک بھی نہیں بچا جو تمہیں  
 اس شہر کے انجام سے مطلع کرتا اس لیے تم خود بیادنا گوارا فرض سمجھ لاتے  
 ہیں۔ جن استحکامات پر تم کو ناز تھا وہ سب بلیا میٹ ہو چکے ہیں چونکہ  
 ان کی بربادی پر تمہارے ساتھ ہمدردی کا اظہار کرنے والا بھی کوئی نہیں  
 اس لیے تم ہی تمہارے ساتھ ہمدردی کا اظہار کرتے ہیں۔“

سلطان کے خط کے ستم ظریفانہ مندرجات پر بوہمند کا خون کھولی اٹھا لیکن  
 یورپ کے عیسائی بادشاہوں اور پاپائے روم کے پاس اپنی داستانِ الم لکھ بیٹھنے  
 کے سوا وہ کچھ نہ کر سکا۔ بعض روایتوں میں ہے کہ اس واقعہ کے کچھ عرصہ بعد وہ قبرص  
 چلا گیا۔

## ارمنوں کی سرکوبی

انطاکیہ کی فتح کے بعد سلطان نے اپنے پرچوں لشکر کے ساتھ ارمینیا (Armenia) لے

لے ارمینیا ایشیائے قریب کا ایک ملک ہے جو دو پہاڑی سلسلوں کے درمیان گھرا ہوا ہے  
 (باقی ص ۱۲۷)

پر یلغار کر دی اس کا مقصد اس پہاڑی ملک پر قبضہ کرنا نہیں تھا بلکہ وہ ارمنی عیسائیوں کو ان کی اسلام دشمنی کی سزا دینا چاہتا تھا۔ یہ لوگ ایل خانی منلوں اور فلسطین و شام کے صلیبیوں کے حلیف تھے اور مسلمانوں کو ستانے کا کوئی موقع ہاتھ سے نہ جانے دیتے تھے سلطان ارمنیہ کے وسیع علاقوں کو پامال کرتا ہوا اناطولیہ تک پہنچ گیا اور وہاں کے اہم شہراؤنہ کی ایزٹ سے اینٹ بجا دی۔ ارمنی عیسائی کسی جگہ بھی جم کر سلطان کا مقابلہ نہ کر سکے۔ اسی اثنا میں اس کو خبر ملی کہ یورپ میں پھر "صلیبی جہاد" کا وعظ شروع ہو گیا ہے اور یورپ کے صلیبیوں کا ایک زبردست لشکر مصر و شام پر حملہ کے لیے پرتول رہا ہے سلطان یہ خبر سن کر اپنی مظفر و منصور فوجوں کے ساتھ مصر کی طرف پلٹا اور چند دن کے بعد قاہرہ پہنچ گیا۔ اہل مصر نے اپنی فاتح افواج کا بڑے جوش و خروش سے استقبال کیا اور شکرانے کی نمازیں ادا کیں۔

### لوئی نہم کی صلیبی مہم

لوئی نہم شاہ فرانس بائیس سال پہلے ساتویں صلیبی جنگ میں مسلمانوں سے فلک آئینہ شکست کھا چکا تھا اور قید و بند کی مصیبتیں بھی کاٹ چکا تھا لیکن اس کا مذہبی جوش ابھی تک سر نہ نہیں ہوا تھا جب اس نے انطاکیہ کی عیسائی سلطنت کے خاتمہ کی خبر سنی تو

یقیناً حاشیہ ص ۱۴۶: شمال کی طرف پونٹک اور جنوب کی سمت طارس کا سلسلہ کوہ ہے اس کا مجموعی رقبہ تین لاکھ مربع کیلومیٹر کے قریب ہے۔ آج کل اس کے کچھ علاقے ترکی میں شامل ہیں اور کچھ روس میں سلطان بیرس کے عہد میں اس کی سرحدیں شام اور انطاکیہ کی صلیبی ریاست سے ملتی تھیں۔ اے بعض مورخین نے لکھا ہے کہ سلطان نے ارمنیہ کے حکمران بیلن کو شکست دے کر اس کے لڑکے کو گرفتار کر لیا اور بعد میں فدیک کی ایک کثیر رقم لے کر اس کو رہا کیا۔

اس کا خون کھول اٹھا اور وہ ارض مقدس کو مسلمانوں سے چھیننے کے خواب ایک بار پھر  
 دیکھنے لگا۔ اسی اثنا میں اس کو پوپ کلیمنٹ چہارم کا خط ملا جس میں اس کو ترغیب دی  
 گئی تھی کہ وہ راہ خدا میں کچھ کام کرے اور ارض مقدس کو مسلمانوں کے پنجے سے چھڑانے  
 کی تیاری کرے۔ بادشاہ، پوپ کا خط پڑھ کر صلیبی جنگ کے لیے بہترین مستعد  
 ہو گیا اور دن رات جنگی تیاریوں میں مصروف ہو گیا۔ ۱۲۷۰ء میں وہ صلیبی طالع آزمائی  
 کے ایک جہاز لشکر کے ساتھ ارض مقدس کی طرف روانہ ہوا۔ ابھی وہ جہاز پر سوار ہوا  
 ہی تھا کہ اس کے سر پر اور وہ امیروں نے مشورہ دیا کہ پہلے شمالی افریقہ کے مسلمانوں  
 کو زیر کر لیا جائے تو مصر اور شام کی مملوک حکومت کو شکست دینے میں آسانی ہے گی  
 اور ارض مقدس پر بھی کسی وقت کے بغیر قبضہ ہو سکے گا۔ کوئی نے ان کا مشورہ مان  
 لیا اور اپنی فوج کے ساتھ تیونس (Tunis) کے ساحل پر اتر گیا۔ تیونس پر  
 اس وقت بنو مرین کی حکومت تھی۔ اس ملک پر قبضہ کئے ہوئے انہیں ابھی صرف دو  
 تین برس ہی گزرے تھے اس لیے وہ ساحل کی حفاظت کا خاطر خواہ انتظام نہ کر سکے تھے  
 تاہم وہ ملک کے اندر صلیبیوں سے دو دو ہاتھ کرنے کے لیے پوری طرح تیار ہو گئے۔  
 ادھر سلطان پیرس، قاہرہ میں بلطیمہ کی صورت حالات پر کڑی نظر رکھ رہا تھا  
 اور یورپی حملہ آوروں سے بندھنے کے لیے زبردست فوجی تیاریاں کر رہا تھا۔ لہذا انہم اس  
 کے لیے کوئی نئی شخصیت نہیں تھی اس کے دست و بازو وہ سالہا سال پہلے منصورہ  
 کے معرکے میں آزما چکا تھا لیکن اس موقع پر قدرت نے ایک عجیب صورت میں مسلمانوں  
 کی مدد کی۔ صلیبیوں کو ساحل تیونس پر اترے محوڑے ہی دن گزرے تھے کہ ان میں  
 طاعون کی وبا پھیل گئی اور ان کا وہی حشر ہوا جو مکہ معظمہ پر حملہ کے وقت ابراہیم کے لشکر  
 کا ہوا تھا۔ ہزاروں صلیبی اپنے "مقدس بادشاہ" سمیت طاعون میں مبتلا ہو کر مر گئے  
 جو باقی بچے ان میں بھگدڑ مچ گئی اور جس کا جدمر منہ اٹھا بھاگ نکلا۔ اس طرح اٹھویں

صلیبی جنگ میں صلیبیوں کو عبرت ناک ناکامی و نامرادی کے سوا کچھ حاصل نہ ہوا۔

## قبرص پر طرہائی

اسی زمانے میں سلطان کو اطلاع ملی کہ فلسطین، شام اور لبنان سے بھاگے ہوئے صلیبیوں نے جزیرہ قبرص (Cyprus) کو اپنا مستقر بنا لیا ہے اور وہاں وہ ملوک سلطنت کے خلاف زور شور سے جنگی تیاریوں میں مشغول ہیں۔ سلطان نے ان کا قلع قمع کرنے کے لیے ایک جنگی بیڑا قبرص کی طرف روانہ کیا لیکن شومی قسمت سے یہ بیڑا منزل مقصود کے قریب پہنچ کر ایک خوفناک سمندری طوفان میں پھنس گیا ملاحوں نے اس کو بچانے کے لیے بڑا زور مارا لیکن قضا کے سامنے کچھ پیش نہ چلی اور یہ بیڑا بالکل تباہ ہو گیا۔ یہ سانحہ سلطان کے لیے سخت صبر آزما تھا لیکن اس نے ہمت نہ ہاری اور حکم دیا کہ فوراً ایک نئے بیڑے کی تیاری شروع کر دی جائے چنانچہ تھوڑے ہی عرصہ میں ایک نیا بیڑا تیار ہو گیا جو برباد شدہ بیڑے سے زیادہ بڑا اور مضبوط تھا اس بیڑے کے تیار ہوتے ہوتے حالات نے کچھ ایسی صورت اختیار

کہ بعض مشرقی مورخین نے اٹھویں صلیبی جنگ کے بارے میں عجیب و غریب روایتیں بیان کی ہیں ان میں سے ایک یہ ہے کہ سلطان پیرس اپنے چند معتدنا تھیوں کے ہمراہ بھیس بدل کر تیونس پہنچا اور وہاں تیونسی فوجوں کو صلیبیوں کے خلاف لڑنے کی تربیتی دوسری روایت یہ ہے کہ والی تیونس نے خود بنائے مصلحت صلیبیوں کو تیونس آنے کی دعوت دی ایک اور روایت یہ ہے کہ تیونسی فوجوں نے صلیبیوں پر خوفناک حملے شروع کر دیے اور ان کو نقصان پہنچایا۔ ان روایات کی صحت کے بارے میں تو مختلف رائیں ہو سکتی ہیں لیکن ایک بات جس پر سبھی مورخین متفق ہیں یہ ہے کہ صلیبیوں کی بربادی کا اصل سبب طاعون کی وبا ہوتی ہے۔

کی کہ اس سے کام لینے کی نوبت ہی نہ آئی تاہم اس کا اتنا فائدہ ضرور ہوا کہ دشمن کو سمندر کے راستے سلطان کی مملکت پر حملہ کرنے کی کبھی جرات نہ ہوئی۔

## شہزادہ ایڈورڈ کی صلیبی مہم

لونی نہم کی موت کے بعد انطاکیہ کی شکست کا بدلہ لینے کے لیے انگلستان کے ایک شہزادے کو جوش آگیا۔ یہ شہزادہ شاہ ہنری سوم کا فرزند ایڈورڈ تھا جو بعد میں ایڈورڈ اول کے نام سے انگلستان کے تخت پر بیٹھا۔ نوابان واروک (Warwick) اور پمبروک (Pembrok) نے شہزادے کا ساتھ دیا اور وہ اسی سال ۱۲۰۲ء میں ارض مقدس کی طرف روانہ ہو گیا۔ راستے میں کچھ عرصہ حقیقہ میں قیام کیا اور پھر عک پہنچ گیا۔ لیکن جہونی شہزادے کو اس ساری زحمت سے اس کے سوا کچھ حاصل نہ ہوا کہ پہلے تو وہ شدید بخار میں مبتلا ہو گیا اور جب کئی ہفتوں کے بعد اس سے نجات ملی تو ایک دن ایک مسلمان قاصد کسی اہم شخصیت کا خط لے کر اس کے پاس پہنچا۔ شہزادے نے جو نہی خط پڑھنا شروع کیا قاصد نے بغل سے ایک چھری نکالی اور اس کو گھونپ دی۔ شہزادہ شدید زخمی ہوا لیکن کئی ماہ زیر علاج رہنے کے بعد اس کی جان بچ گئی۔ اب شہزادے کا دل ٹوٹ چکا تھا اور ادھر اس کا باپ بھی اس کو انگلستان واپس آنے کے لیے کہہ رہا تھا۔ چنانچہ چودہ ماہ فلسطین میں قیام کرنے کے بعد وہ ناکام و نامراد اپنے وطن کو لوٹ گیا۔ اس کے فلسطین کے زمانہ قیام میں

لہ بہت سے مورخین نے لکھا ہے کہ یہ قاصد باطنی فدائی تھا۔ مطہم نہیں کہ شہزادے پر قاتلانہ حملہ سے باطنی کیا مقصد حاصل کرنا چاہتے تھے ورنہ عام حالات میں تو وہ صلیبیوں سے حلیفانہ تعلقات رکھتے تھے۔

انگلستان کے صلیبیوں کو مسلمانوں کے مقبوضات پر دست درازی کی اہمیت نہ پرٹی سیلطان  
بیرس نے بھی ان کو مطلق کوئی اہمیت نہ دی۔ بہر صورت ان کا ناکام و نامراد واپس جانا  
ایک نیک فال تھا۔

## حصن الاکراڈ کی فتح

مصر، شام اور فلسطین سے کسی بڑی صلیبی جنگ کا خطرہ دور ہوتے ہی سلطان  
نے اوائل ۱۲۷۱ء میں صلیبیوں کے خلاف اپنی مہم پھر شروع کی۔ وہ قاہرہ سے  
ایک زبردست فوج کے ساتھ نکلا جس کے جوش و خروش کی یہ کیفیت تھی کہ

ع دریاؤں کے دل جس سے دہل ا جائیں وہ طوفان

اس کے لشکر کی نقل و حرکت اتنی تیز تھی کہ صلیبیوں کے لیے اس کے عزائم کو بجا

سخت محال تھا۔ وہ ابھی سلطان کے ہدف کے بارے میں قیاس آرائیاں ہی کر رہے

تھے کہ ۲۲ مارچ ۱۲۷۱ء کو سلطان حصن الاکراڈ کے سامنے نمودار ہوا اور آناً فاناً

اس کا محاصرہ کر لیا۔ ایک گول بنجر پہاڑی کی چوٹی پر بنا ہوا یہ زبردست اور مستحکم قلعہ

قرون وسطیٰ کے قلعوں میں سب سے محفوظ ترین تھا۔ یہ اس شمالی وے کے پاس بان

تھا جو طرابلس و طرس اور حمص و حماة کے میدانوں کے درمیان تھا۔ اس قلعے

میں بیک وقت دو ہزار فوج ٹھہر سکتی تھی اور یہ طرابلس الشام کے کاؤنٹ کی

ملکیت تھا۔ سلطان کے حملے کے وقت اس کی حفاظت پر سکا جنگجو (پلیز) مامور

تھے۔ انہوں نے پندرہ دن تک مسلمانوں کا سخت مقابلہ کیا اور پھر ہتھیار ڈالنے پر

مجبور ہو گئے۔ سلطان نے قلعے پر قبضہ کرنے کے بعد اس کی مرمت کرائی اور اس کی

تفصیل پر اپنی فتح کا کتبہ نصب کرایا۔

## القرین کی تسخیر

حصن الاکبر اور پراپنا قبضہ مستحکم کرنے کے بعد سلطان پھر ابلس الشام کی طرف بڑھا اور اس کا محاصرہ کر لیا۔ چند دن کے بعد اس نے یکایک محاصرہ اٹھایا اور بیروت صیدا اور صور کو ایک طرف چھوڑتا ہوا القرین (مانٹفورٹ) پر حملہ کر دیا۔ قلعہ میں مقیم صلیبیوں کے لیے یہ حملہ بالکل خلاف توقع تھا تاہم انہوں نے کچھ دیر ہاتھ پاؤں مارے اور عکہ کے صلیبیوں کو اپنی مدد کے لیے بلا بھیجا لیکن اس سے پہلے کہ ان کو کسی طرف سے مدد پہنچتی سلطان قلعہ کے بیرونی استحکامات کو پامال کرتا ہوا قلعے کے اندر داخل ہو چکا تھا اس نے قلعے پر قبضہ کر کے اس کو منہدم کرنے کا حکم دیا اور اس وقت وہاں سے ٹلا جیٹ اس مضبوط قلعے کی بنیادیں تک کھد چکی تھیں۔

## صلیبیوں سے معاہدہ امن

سلطان کی پے در پے فتوحات نے صلیبیوں کو دہشت زدہ کر دیا اور انہوں نے اپنے کسی چھوٹے چھوٹے قلعوں سے خود بخود دستبرداری اختیار کر لی البتہ کچھ مضبوط قلعے ابھی تک ان کے قبضے میں تھے۔ ان کے نام یہ تھے:

- ۱۔ المرکب
- ۲۔ انظرطوس

یہ دونوں قلعے ساحلی سڑک اور بندرگاہوں کی حفاظت کرتے تھے تاکہ مصری بیڑا حملہ آور ہو تو اس کے مقابلے کے لیے تیار رہیں۔



۳۔ عکہ

۴۔ طرابلس الشام

۵۔ بیروت

۶۔ صور

۷۔ صیدا

سلطان کی فاتحانہ یلغار سے ان سب قلعوں کو اپنا مستقبل تاریک نظر آ رہا تھا۔ ان کے صلیبی حکمران اب سر جوڑ کر بیٹھے اور کافی بحث و تمحیص کے بعد فیصلہ کیا کہ سلطان سے صلح کی درخواست کی جائے چنانچہ سلطان ابھی اپنا آئندہ لائحہ عمل طے ہی کر رہا تھا کہ صلیبیوں کی طرف سے قاصد پر قاصد آنے لگے جن کے ذریعے اس کو نہایت لجاجت آمیز پرانے میں صلح کا پیغام دیا گیا تھا۔ سلطان بڑا وسیع النظر انسان تھا۔ صلیبیوں کی منت سماجت پر اس کا دل پسیم گیا، اور اس نے کچھ شرائط پر صلیبیوں سے صلح کرنے پر آمادگی ظاہر کر دی ان میں دو اہم شرطیں یہ تھیں:

۱۔ صلیبی اپنے قلعوں کے موجودہ استحکامات میں اضافہ نہیں کریں گے۔

۲۔ وہ ان قلعوں اور شہروں میں مقیم مسلمانوں سے رواداری کا برتاؤ کریں گے اور نواحی علاقوں کے مسلمانوں سے بھی چھپیر چھپارہ نہیں کریں گے۔

صلیبیوں نے سلطان کی سب شرطیں بلا تامل قبول کر لیں اور اس کے ساتھ

(بقیہ حاشیہ ص ۱۵۲) بعض مؤرخین نے اس کو "المربق" یا "مربق" لکھا ہے اس کے معنی ہیں دیوانی

یا پیرے کا برج۔ ساحل پر واقع یہ قلعہ اسپینلرز ضیاف العسراء کا مرکز تھا۔ یہ قلعہ آج تک پہاڑ پر ایک بڑے جنگی جہاز کی صورت میں موجود ہے۔

۳۔ یہ قلعہ میکسی جنگجوؤں (مپلز) کا مرکز تھا۔ آج کل اس کو طروس کہتے ہیں اس کے قدیم قلعے کے آثار اب بھی موجود ہیں۔

دس سال دس چھینے اور دس دن کے امن کا معاہدہ کر لیا۔ یہ معاہدہ ۱۲۷۲ء میں لکھا  
 اس کی اہمیت کا اندازہ اس بات سے کیا جاسکتا ہے کہ عیسائیوں کی طرف سے اس  
 پر انگلستان کے بادشاہ ایڈورڈ پہلا ٹیچنٹ۔ یروشلم کے سابق بادشاہ ہف سوم اور  
 انطاکیہ کے سابق بادشاہ بوہنڈ (بوہیمان) نے دستخط کیے اور اس کی موت کے بعد اس  
 کے جانشین نے اس معاہدہ کی تصدیق کی :

## باطنیوں کا استیصال

مورخین نے الملک الظاہر بیبرس کے جن سنہری کارناموں کا تخصیص کے ساتھ  
 ذکر کیا ہے ان میں "باطنیوں کا استیصال" بھی شامل ہے۔

باطنیہ دقتاشہ۔ حشیشین یا حشاشین کی تخریب کی بنیاد حسن بن صباح نے

۱۰۹۱ء میں رکھی تھی وہ دنیوی لحاظ سے ایک معمولی حیثیت کا آدمی تھا لیکن اپنی

غیر معمولی ذہانت اور بلند ہمتی کی بدولت بڑا عروج حاصل کیا۔ اس نے پہلے قلعہ الموت پر

قبضہ کیا جو ماژندران میں نہایت پچیدہ گھاٹیوں کے اندر ایک بلند پہاڑ کی چوٹی پر واقع

تھا اور کسی دشمن کے لیے خون کے دریا میں تیرے بغیر اس پر قبضہ کرنا محال تھا۔ حسن بن

صباح نے اسی قلعہ کو اپنا صدر مقام بنایا۔ سلطان ملک شاہ سلجوقی کے آخری دور میں

حسن کی قیادت میں باطنیوں نے بڑا زور پکڑا انہوں نے طبرس۔ قاین۔ تون۔ خالنجان

گرد کوہ۔ غور۔ خوسف۔ اردہن۔ قلعہ المناظر۔ قلعہ الطنبور اور بیسیوں دوسرے قلعوں

پر قبضہ کر کے زبردست فوجی قوت جمع کر لی اور ایک علیحدہ مملکت قائم کر لی جو دولت

اسمعیلیہ مشرقیہ یا دولت ملاحہ قہستان کے نام سے مشہور ہوئی۔ اس کے حکمرانوں کا

لقب شیخ الجبل یا شیخ الجبال تھا۔

باطنیوں کے کسی دے تھے داعی الدعاۃ۔ داعی البیتر۔ داعی رفیق اور فدائی وغیرہ

فدائی وہ گروہ تھا جو آنکھیں بند کر کے بلا عذر و حجت شیخ الجبل کے حکم کی تعمیل کرنا اپنا  
مرضِ غیب سمجھتا تھا کہا جاتا ہے کہ حسن بن صباح نے دشوار گزار پہاڑوں سے گھری  
ہوئی ایک پرفضا گھاٹی میں ایک مصنوعی جنت بنائی تھی۔

مورخین نے اس مصنوعی جنت کا ایسا دلکش نقشہ کھینچا ہے کہ نگاہوں کے  
سامنے اصلی جنت کے نظارے گھوم جاتے ہیں۔ حسن اپنے کچھ مریدوں کو بھنگ (حشیش)  
پلا کر مدہوش کر دیتا تھا اور پھر ان کو اسی مدہوشی کی حالت میں اپنی مصنوعی جنت میں پہنچا  
دیتا تھا۔ چند دن کے بعد وہ ان کو اسی طرح مدہوش کر کے اپنی جنت سے باہر نکال دیتا  
تھا۔ یہی لوگ فدائی بن جاتے تھے وہ ایک دفعہ "جنت" کا جلوہ دیکھ کر ہمیشہ اسی کی  
آرزو میں مست رہتے تھے اور شیخ الجبل کے حکم پر پہاڑ سے کود کر یا کسی دوسرے  
طریقے سے جان دینے کو ہنسی کھیل سمجھتے تھے۔ باطنیوں نے چند سال کے اندر اندر  
اسی زبردست قوت پیدا کر لی کہ سلطان محمد سلجوقی اور سلطان سنجر سلجوقی اپنا پورا زور  
لگانے کے باوجود ان کا قلع قمع نہ کر سکے۔

حسن بن صباح اور اس کے جانشین جس شخص کو اپنا مخالف پاتے اسے کسی  
فدائی کے ہاتھوں قتل کروا دیتے۔ فدائیوں کا آلہ قتل بالعموم زہر میں بھی ہوئی تیز دھوا  
کی چھری یا خنجر ہوتا تھا۔ انہوں نے مسلمانوں کے بے شمار دینی پیشواؤں حکمرانوں اور  
سیاسی رہنماؤں کو قتل کیا ان میں سے چند نامور شخصیتوں کے نام یہ ہیں:

خواجہ نظام الملک طوسی۔ ابوسلم حاکم سے۔ اتابک موود والی دیار بکر۔  
ابوجعفر شاطبی رازی قاضی عبداللہ اصفہانی۔ قاضی ابوالعلا صاعد بن ابومحمد نیشاپوری۔  
وزیر نجر الملک ابوالمنظر بن نظام الملک طوسی۔ قسیم الدولہ آقسنقر۔ قاضی ابوسعید ہروی۔  
عین الملک ابونصر احمد بن فضل وزیر سلطان سنجر۔ الامر باحکام اللہ ابوالعلی بن مستعلی صاحب مہر۔  
آقسنقر حاکم مراغہ خلیفہ المسترشد باللہ عباسی۔ واؤد بن سلطان سنجر سلجوقی عین الدولہ خوارزم شاہ۔

عبد اللطیف نجدی۔

مولانا سیّد ابوالاعلیٰ مودودی نے اپنی کتاب "سلاجقہ" میں "راحتہ الصدور" کے

حوالے سے لکھا ہے کہ

"باطنی فداہیوں نے اکابر وقت کے علاوہ عام مسلمانوں کو بھی بکثرت

دھوکے سے قتل کیا صرف اصفہان میں جو سازش سلطان محمد کے زمانہ

میں پکڑی گئی اس میں پانچ سو کے قریب مسلمانوں کی لاشیں ایک

مکان سے نکلی تھیں۔"

ان بد نیتوں نے مسلمانوں کی پشت پناہ مجاہد کبیر سلطان صلاح الدین ایوبی

بھی قتلانہ حملہ کرنے سے دریغ نہ کیا۔ یہ الگ بات ہے کہ سلطان اپنی خوبی قسمت سے

بچ گیا ورنہ باطنیوں نے اپنی طرف سے اس کی زندگی کا پیرائے گل کرنے میں کوئی کسر

نہ رکھی تھی۔ غرض یہ دہشت پسند گروہ تقریباً ایک سو ستتر سال تک اسلام کے جسد کا ناسور

رہا۔ خدا کی قدرت کہ ان کی مرکزی قوت کا خاتمہ بھی ایک دوسرے دشمن اسلام گروہ

کے ہاتھوں ہوا۔ یہ تھے ایل خانی مغل۔ ۶۵۴ھ میں ہلاکو خان سیل بلا کی طرح

قلعہ الموت کی طرف بڑھا اور اس کی اینٹ سے اینٹ بجا دی۔ اس وقت باطنیوں کا

حکمران رکن الدین خورشاہ بن علاؤ الدین شیخ الفیل ہنتم تھا۔ ہلاکو نے باطنیوں

کے تقریباً سو دوسرے قلعے بھی برباد کر دیے اور بارہ ہزار سے زیادہ باطنیوں کو قتل

کیا۔ خواجہ نصیر الدین طوسی نے اس موقع پر یہ تاریخی قطعہ لکھا:

سال عرب چوشش صد و پنجاہ و چار بود یک شنبہ روز اول ذیقعدہ بامداد

خورشاہ بادشاہ سما عیلیاں ز تخت برخواست پیش تخت ہلاکو بایستاد

یہ باطنی فی الحقیقت فرقہ اسمعیلیہ ہی کی ایک شاخ تھے لیکن اپنے عجیب و غریب عقائد کے باعث

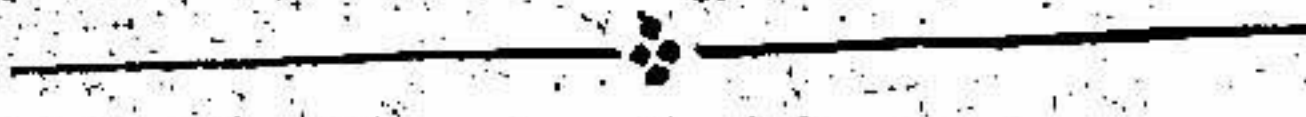
یہ اپنے اصل فرقہ سے بالکل الگ تھلگ ہو گئے تھے۔

ہلاک کرنے اگرچہ باطنیوں پر بڑی کاری ضرب لگائی تھی لیکن وہ ان کا کلیتہً خاتمہ نہ کر سکا۔ اس کا سبب یہ تھا کہ باطنیوں کے کچھ قلعے شام کے علاقے میں واقع تھے۔ چونکہ سلطان بیبرس نے تاتاریوں کو شکست دے کر شام سے نکال دیا تھا اس لیے یہ قلعے ان کی دستبرد سے بچ گئے۔ شام میں حشیشیوں کی اہم پناہ گاہوں کے نام یہ تھے۔

بانیاس - مصیاف (مصیاد یا مصیبات) کہت اور خواری

یہ قلعے پہاڑی علاقوں میں نہایت محفوظ مقامات پر بنائے گئے تھے اور ان کے دفاع کے لیے ہزاروں حشیشی جنگجو بہر وقت کمر بستہ رہتے تھے۔ ان لوگوں نے اپنی مرکزی قوت کی بربادی سے کوئی سبق حاصل نہ کیا بلکہ ایک دوسرے اسلام دشمن گروہ سے ساز باز کر لی۔ شام و لبنان میں انہوں نے ہیکلی صلیبیوں (کریسٹین) کو اپنا حلیف بنا لیا جو سلطان بیبرس اور عام مسلمانوں کے بدترین دشمن تھے۔ اسی طرح انہوں نے یورپ کے عیسائی بادشاہوں سے بھی دوستی کی پینگیں بڑھانے کی کوشش کی۔ سلطان بیبرس کے خلاف ریشہ دو انیاں کرنا اور اطراف و اکناف کے مسلمانوں کو اپنی دہشت گردیوں کا نشانہ بنانا ان کا محبوب مشغلہ تھا۔ سلطان نے کئی سال تک ان کی شرانگیزیوں کو برداشت کیا لیکن آخر اس کا پیمانہ صبر لبریز ہو گیا۔ صلیبیوں سے مؤثر طور پر نمپٹ کر اس نے ۱۲۷۳ء میں باطنیوں کی طرف توجہ کی اور ایک طوفانی یلتار میں ان کے تمام قلعوں کو مستح کر کے ان کی اینٹ سے اینٹ بجا دی۔ جن لوگوں نے اس کا مقابلہ کیا وہ نہایت ذلت کے ساتھ مارے گئے البتہ جو امان کے طالب ہوئے سلطان نے ان کو امان دے کر مصر کے مختلف شہروں میں آباد کر دیا اور وہاں ان کو خاص نگرانی میں رکھ کر پرامن زندگی بسر کرنے کا عادی بنا دیا۔ اس طرح ایک سو باسی سال کے بعد اس دہشت پستہ گروہ کا ہمیشہ کے

یہ مکمل طور پر استیصال ہو گیا ہے



# آخری تین سال





## فتح نوبہ

۶۷۲ھ میں نوبہ (سوڈان) کے عیسائی بادشاہ ڈیوڈ (داؤد) نے سلطان  
 ۱۲۷۵ء سے سرکشی اختیار کی اور اس کی سرحدی فوج سے چھوڑ چھاڑ شروع کر دی۔ سلطان کو یہ خبر  
 ملنے کی دیر تھی کہ وہ طوفان کی طرح نوبہ کی طرف بڑھا۔ اور ڈیوڈ کی مملکت کے وسیع  
 علاقوں کو پامال کرتا ہوا نقلہ (ڈونگولا) کے اہم شہر تک پہنچ گیا۔ ڈیوڈ کہیں بھی قدم  
 بٹا کر نہ لڑ سکا اور بالآخر ذلت انگیز شکست کھا کر مسلمانوں کے ماتھے گرفتار ہو گیا۔  
 جب اس کو سلطان کے سامنے پیش کیا گیا تو وہ گر گڑا کر عفو کا خواست گار ہوا۔ سلطان  
 نے اس سے تاوان جنگ اور سالانہ خراج ادا کرنے کا وعدہ لے کر اس کی جان بخش دی۔  
 علامہ جلال الدین سیوطی تاریخ الخلفاء میں امام ذہبی کے حوالے سے لکھتے

ہیں کہ :-

سب سے پہلے ۲۳ھ ہجری میں عبداللہ بن ابوسرح نے پانچ  
 ہزار کی جمعیت سے نوبہ پر چڑھائی کی تھی لیکن فتح نہ کر سکے اور صلح کر  
 کے واپس آ گئے پھر شام کے زمانے میں فوج کشتی ہوئی مگر ناکامی  
 ہوئی۔ منصور بھی لڑا مگر وہی نتیجہ ہوا۔ لیکن زنگی کا فوراً حشیدی -  
 ناصر الدولہ بن حمدان، توران شاہ برادر صلاح الدین نے یکے بعد دیگرے

۱۷ (Nubia)

۱۸ بعض مورخین نے لکھا ہے کہ نوبہ کی تسخیر کے لیے سلطان نے اپنے ایک امیر  
 آسنقر کو بھیجا :

اس ملک پر حملہ کیا مگر کسی کی پیش نہ گئی آخر اس وقت (یعنی سلطان  
بیرس کے عہد میں) اس کی گھڑی آگئی۔ ابن عبدالظاہر نے ایک قصیدہ  
اس فتح پر لکھا ہے جس کا ایک شعر یہ ہے:-

ترجمہ: ”یہ ایسی فتح ہے کہ کبھی نہیں سنی گئی  
نہ آنکھوں نے دیکھی نہ لوگوں نے بیان کیا“

## محرکہ ابلستین

نورہ کی فتح کے بعد سلطان کو پھرتا تاریوں کی طرف متوجہ ہونا پڑا۔ عام حالات  
میں شاید وہ ان کی طرف دھیان نہ دیتا لیکن کچھ عرصہ سے تاریوں نے ایسا مفسد  
رویہ اختیار کر رکھا تھا کہ سلطان کے لیے خاموش بیٹھنا مشکل ہو گیا۔ ہلاکو خاں کی  
وفات کے بعد ایل خانیوں کی سیادت اس کے بیٹے اباقا خاں نے سنبھالی تھی۔ وہ  
اگرچہ اپنے باپ سے بھی زیادہ عیسائیت نواز اور اسلام دشمن تھا اور امنوں اور  
فلسطین و شام کے صلیبیوں سے گہرے دوستانہ تعلقات رکھتا تھا لیکن اپنے حلیفوں  
کو وہ سلطان بیرس کی ہولناک بلغار سے نہ بچا سکا تھا۔ اس کے رشتے میں اپنے  
ہی بھائی بند چٹان بن کر کھڑے ہو گئے تھے یہ تھے خوانین اردوئے زرین جو سلطان  
کے پکے حلیف اور مددگار تھے۔ انہوں نے اپنے تابڑتور حملوں سے اباقا خاں  
کو مصر و شام پر چڑھائی کرنے کی مہلت ہی نہ دی۔ اس کے چند دستوں نے ایک دفعہ  
شام پر یورش کرنے کی کوشش کی لیکن سلطان کے سپہ سالار امیر قلاوون نے  
ان کو شکست پر شکست دے کر وہاں سے نکال دیا۔ اس دوران میں اباقا خاں  
نے یورپ کے عیسائی بادشاہوں سے برابر نامہ و پیام جاری رکھا اور ان کو بیرس  
کے خلاف لشکر کشی پر آمادہ کرنے کی حتی المقدور کوشش کی۔ اس کے ایک ایسے ہی خط

کے جواب میں ایڈورڈ اول شاہ انگلستان نے اس کو ۲۶ جنوری ۱۲۶۵ء کو جو خراب لکھا  
وہ ایل خانیوں اور یورپ کے عیسائی حکمرانوں کے باہمی تعلقات پر بخوبی روشنی  
ڈالتا ہے۔ یہ خط اب تک محفوظ ہے اس کا مضمون یہ تھا:

”پادری ڈیوڈ ہارے دربار میں پہنچا اور اس نے ہمیں وہ خط دکھا  
دکھائے جو آپ نے مقدس باپ پاپائے اعظم اور یورپ کے دوسرے  
فرماں رواؤں کو بھیجے ہیں ان خطوں میں آپ نے دین مسیحی کے ساتھ  
جس محبت کا اظہار کیا ہے ہم اس کی قدر کرتے ہیں۔ ہم آپ کے  
مبارک عزم کو بھی سراہتے ہیں جو آپ ارض مقدس کو دین مسیحی کے دشمنوں  
کے پتے سے چھڑانے کے لیے رکھتے ہیں۔ ہم جناب سے استیعا  
کرتے ہیں کہ اس مبارک ارادے کو ضرور عملی جامہ پہنائیں۔ اپنے بارے  
میں ہم فی الحال یقین کے ساتھ کچھ نہیں کہہ سکتے کہ کب ارض مقدس میں  
پہنچ سکیں گے۔ کیونکہ ابھی تک اسقف اعظم کسی فیصلے پر نہیں پہنچے“

(ایڈورڈ اول شاہ انگلستان)

۶۶۵ء میں اباخان کو ”اروفٹے زریں“ کے حملوں سے قدسے مہلت  
۱۲۶۶ء  
ملی تو اس نے ایک جہاز لشکر کے ساتھ فلسطین شام اور ارمینیا کی سرحدوں کے ساتھ  
وسیع پیمانے پر نقل و حرکت شروع کر دی۔ سلطان کو یہ خبر ملنے کی دیر نہ تھی کہ وہ نہایت  
تیز رفتاری سے خود ایل خانیوں کے استقبال کے لیے چل پڑا۔ سینکڑوں میل کا  
پر صعوبت سفر کرنے کے بعد وہ ایشیاٹے کوچک میں داخل ہوا اور تاتاریوں کے مقابل  
ابلسٹین کے مقام پر ڈیرے ڈال دیے۔ یہ مقام فلسطین و شام کی سرحد کے قریب  
واقع تھا اور اس سے متصل بئر التاب کا وسیع میدان تھا۔ اسی میدان میں سلطان اور  
اباخان کی فوجوں میں ہولناک ٹکڑ ہوئی۔ مسلمان فوج کا زیادہ حصہ ملکوں پر مشتمل

تھا جن کو نہایت اعلیٰ فوجی تربیت دی گئی تھی۔ سلطان کی شاندار قیادت میں انہوں نے نہایت اعلیٰ جنگی صلاحیتوں کا مظاہرہ کیا اور ایل خانی غارت گروں کو ایسور عبرت ناک شکست دی کہ معرکہ عین جالوت کی یاد تازہ ہو گئی۔ ایل خانی اپنے دیر کی چھ ہزار سات سو ستر (۶۷۷۰) لاشیں چھوڑ کر بھاگ گئے۔ اس کے مقابلے میں مسلمانوں کا بہت کم جانی نقصان ہوا۔ بعض مورخین نے لکھا ہے کہ اس خونریز جنگ میں فریقین کے قریباً ایک لاکھ آدمی مارے گئے۔ اس کے برعکس کچھ دوسرے مورخین کے بیان کے مطابق دونوں لشکروں کی مجموعی تعداد چالیس ہزار کے درمیان تھی اس لیے مقتولوں کی تعداد ایک لاکھ ہونے کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا۔ بہر صورت اس جنگ نے ایل خانیوں پر سلطان بیبرس کی کار عب بٹھا دیا اور وہ سمجھ گئے کہ مصر و شام پر حملہ کرنا بہت مہنگا سودا ہے۔ ابلستین کی فتح کے بعد سلطان منظور منصور قاہرہ واپس پہنچا تو لوگوں نے اس کا شاندار استقبال کیا اور اس کی صحت و درازی عمر کی دعائیں مانگیں۔

## سفر آخرت

ہر آنکہ زاد بنا چار باید شن نوشید  
ز جام دہرے کل من علیہا فان

۶۷۶ء کے اوائل میں سلطان دمشق میں مقیم تھا کہ سخت بخار میں مبتلا ہو گیا۔ بعض مورخین کا بیان ہے کہ اس کو ابلستین کی جنگ میں ایک شدید زخم آیا تھا اسی زخم کے اثر سے وہ بیمار ہو گیا۔ طبیبوں نے جو علاج بھی ہو سکتا تھا کیا لیکن سلطان کا آخری وقت اچھا تھا کوئی علاج کارگر ثابت نہ ہوا اور ۲۷ محرم ۶۷۶ھ کو تاریخ اسلام کے اس بطل جلیل نے ستاون برس کی عمر میں

واعی اجل کو لبیک کہا۔

إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ط

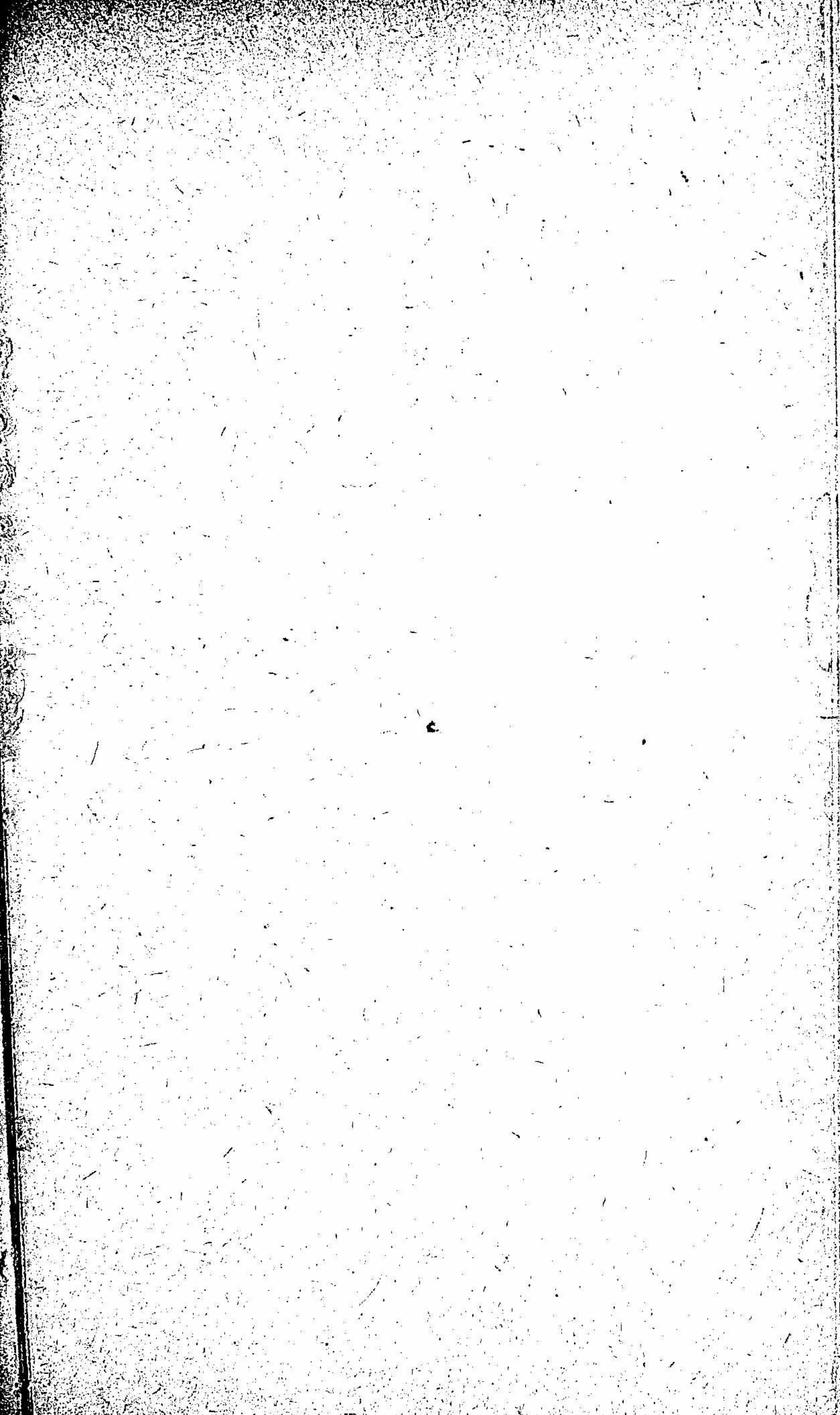
سلطان کی وفات پر تمام عالم اسلام میں گہرے رنج و غم کا اظہار کیا گیا اور اس کی مغفرت کے لیے دعائیں مانگی گئیں اس کے برعکس صلیبیوں اور ایل غانیوں نے اپنے اس سب سے بڑے حریف کی موت پر بے پناہ مسرت اور اطمینان کا اظہار کیا۔ دمشق کو ایک بار پھر یہ شرف حاصل ہوا کہ اس نے اپنے دور کے سب سے بڑے مجاہد اسلام کے جسدِ خاکی کو اپنی خاک کے اندر جذب کر لیا۔ اس سے پہلے یہ شہر الملک العادل سلطان نور الدین محمود زنگی اور مجاہد کبیر سلطان صلاح الدین یوسف ایوبی کا مدفن بننے کی سعادت حاصل کر چکا تھا۔ اتفاق دیکھئے کہ تاریخ اسلام کی ان تینوں عظیم شخصیتوں نے صلیبیوں کے خلاف محرکہ آرائیوں میں نام پیدا کیا تینوں نے دمشق میں سفرِ آخرت اختیار کیا اور تینوں دمشق میں ہی آسودہ خاک ہوئیں۔

دمشق میں سلطان بیبرس کا مقبرہ اس کے لقب "الملک الظاہر" کی نسبت سے "الظاہریہ" کہلاتا ہے وہاں آجکل ایک عظیم الشان کتب خانہ ہے۔ پروفیسر فلیپ کے حقی کا بیان ہے کہ اس کتب خانے میں دنیا کا ایک قدیم ترین مخطوطہ موجود ہے جو کاغذ پر لکھا گیا یعنی "مسائل امام احمد بن حنبل" اور اس پر ۲۲۶ھ (۸۴۹-۸۸۰ء) کی تاریخ ثبت ہے۔

لے پاکستان کے ایک چوٹی کے عالم علامہ عبدالعزیز مبینی کا بیان ہے کہ یہ مخطوطہ ۲۶۲ھ کا لکھا ہوا ہے۔ اسے امام احمد بن حنبل کے شاگرد امام ابو داؤد سجستانی نے قلمبند کیا ہے اور یہ چھپ بھی چکا ہے (اردو نامہ کراچی شمارہ ۳۲ - جولائی تا ستمبر ۱۹۸۸)۔



چھوٹے بھائی کے کام کی تکمیل





## چھوٹے ہوئے کام کی تکمیل

الملك الظاہر بیبرس کی وفات پر صلیبیوں اور ایل خانی مغلوں نے غیر معمولی مسرت اور طمانیت کا اظہار کیا۔ ان کا خیال تھا کہ سلطان کے اٹھ جانے سے ان کے راستے کا سب سے بڑا روڑا دور ہو گیا ہے اور اب وہ نہ صرف اپنا کھویا ہوا وقار حاصل کر لیں گے بلکہ مصر اور شام کو بھی آسانی سے روند ڈالیں گے لیکن ان کی یہ خوشی عارضی ثابت ہوئی۔ سلطان کے مقابل جانشینوں الملك المنصور قلاوون اور الملك الاشرف صلاح الدین خلیل نے اپنے عظیم پیشرو کے چھوڑے ہوئے کام کی تکمیل کا بڑا اٹھا لیا اور چنار سال کے اندر انہوں نے ایک نئی ایل خانیوں کے ناپاک عزائم کو خاک میں ملا دیا اور دوسری طرف ارض مشرق میں صلیبیوں کی قوت پر کاری ضربیں لگا کر اسے ہمیشہ کے لیے ختم کر دیا۔ سلطان بیبرس کے ان نامور جانشینوں کے سوانح حیات بیان کرنا ہماری کتاب کے موضوع سے خارج ہے۔ تاہم مناسب معلوم ہوتا ہے کہ سلطان کی رحلت کے بعد ۱۲۹۱ء تک پیش آنے والے تمام اہم واقعات کو اختصار کے ساتھ یہاں بیان کر دیا جائے ان سے اندازہ کیا جاسکے گا کہ سلطان بیبرس نے اپنی مجاہدانہ ترکازیوں سے جس کام کی نیوٹالی تھی وہ پایہ تکمیل تک کیسے پہنچا۔

## الملك السعید برکہ خاں

سلطان بیبرس کی وفات کے بعد اس کا بڑا بیٹا ناصر الدین برکہ خاں اٹھارہ

سال کی عمر میں تختِ حکومت پر بیٹھا اور "الملک السعید" کا لقب اختیار کیا۔ اس کے مورث بلبائی نے سلطنت کا انتظام نہایت خوش اسلوبی سے چلایا لیکن وہ بہت جلد فوت ہو گیا۔ اس کے بعد امیر آقسنقر وزیر سلطنت مقرر ہوا لیکن تھوڑی ہی مدت کے بعد ملک سعید نے کسی بات پر ناخوش ہو کر اس کو مرواڈالا۔ اس پر مملوک امراء اس کے خلاف اٹھ کھڑے ہوئے اور ۶۷۸ھ میں اس کو معزول کر کے قلعہ کرک میں محبوس کر دیا۔ وہاں اس نے اسی سال وفات پائی۔

## الملک العادل بدر الدین سلا مش

ملک سعید کی معزولی کے بعد مملوک امراء نے اس کے چھوٹے بھائی بدر الدین سلا مش کو الملک العادل کا لقب دے کر تخت پر بٹھایا۔ اس وقت سلا مش کی عمر صرف سات برس کی تھی۔ چنانچہ کاروبار سلطنت چلانے کے لیے امیر سیف الدین قلاوون کو اس کا اتابک اور مدارالمہام مقرر کیا گیا۔ یہ انتظام باختلاف روایت صرف تین ماہ یا چھ ماہ تک قائم رہا۔ اس کے بعد امیر قلاوون نے مملوک امراء کی تائید و اعانت سے الملک العادل کو تخت سے اتار کر کرک بھیج دیا اور خود منہ حکومت پر بیٹھ گیا۔

## الملک المنصور سیف الدین قلاوون

سلطان بیبرس کی طرف سے امیر قلاوون کا مولد ہی دشتِ چمچاق ہی تھا۔ اس کو

لے علامہ جلال الدین سیوطی کا بیان ہے کہ سلطان بیبرس نے اپنی زندگی میں ہی الملک السعید کو اپنا جانشین نامزد کر دیا تھا۔ اس واقعہ کا ذکر "تاریخ الخلفاء" میں اس طرح کرتے ہیں: "۶۶۳ھ میں سلطان نے اپنے چار سالہ بیٹے ملک السعید کو ولی عہد بنایا اور مع جلوس کے قلعہ سے اس کو سوار کر کے نکالا اور اس کا غاشیہ سلطان خود اپنے ہاتھوں میں اٹھا کر لے گیا تمام امراء جلوس کے ہمراہ پیدل تھے۔"

امیر آسنقر نے الملک الصالح نجم الدین ایوب کے لیے ایک ہزار دینار پر خرید لیا تھا اس لیے وہ الفی کے عرف سے مشہور تھا۔ ملک صالح نے اس کی قابلیت دیکھ کر ۶۴۷ھ میں آزاد کر دیا۔ اسی وقت سے اس نے ترقی کی منازل طے کرنی شروع کر دی۔ سلطان بیبرس کا دور حکومت آیا تو اس نے امیر قلاوون کو مملوک افواج کا سپہ سالار بنا دیا۔ جب اس نے تاتاریوں کے خلاف جنگوں میں غیر معمولی شجاعت کا مظاہرہ کیا تو سلطان اس قدر خوش ہوا کہ اپنے بیٹے ناصر الدین برک خاں (الملک السعید) کو اس کا داماد بنا دیا اس طرح وہ سلطان بیبرس کا سمدھی اور نہایت قابل اعتماد ساتھی بن گیا۔ سلطان کی وفات کے بعد جب اس کے دونوں بیٹے یکے بعد دیگرے معزول کئے گئے تو تخت حکومت پر بٹھانے کے لیے مملوک امراء کی نظر انتخاب امیر قلاوون پر پڑی چنانچہ رجب ۶۷۸ھ میں وہ "الملک المنصور" کا لقب اختیار کر کے مصر و شام کا فرمان روا بن گیا۔ سلطان قلاوون بڑا شجاع۔ عاقل۔ مطبوع اور کم سخن آدمی تھا اس نے اپنے حسین انتظام اور عظیم الشان فتوحات سے اپنے آپ کو صحیح معنوں میں "الملک المنصور" کے لقب کا مستحق ثابت کر دیا۔

## شرف الدین سنجر کی بغاوت

سلطان قلاوون نے تخت نشین ہو کر سب سے پہلے امیر شرف الدین سنجر و ابان دمشق کی طرف توجہ کی جس نے "الملک السعید" کے زمانے میں خود مختاری کا اعانہ کر دیا تھا اور "الملک العادل" کا لقب اختیار کر کے شام کا فرمان روا بن بیٹھا تھا۔ سلطان نے اس کی سرکوبی کے لیے اپنے سپہ سالار امیر طرظانی کو بھیجا۔ شرف الدین سنجر نے سخت مقابلہ کیا لیکن بالآخر شکست کھا کر گرفتار ہو گیا اور سلطان کے حکم سے قاہرہ کے ایک تاریک زندان میں مقید کر دیا گیا۔ اس کی جگہ سلطان نے

اپنے ایک وفادار ساتھی امیر حسام الدین لاچین کو دمشق کا حاکم مقرر کیا۔

## تاتاریوں کا حملہ

ادھر ایل خانی مغل سرحد سے مصر و شام پر نظریں جمائے بیٹھے تھے مسلمانوں کو آپس میں لڑتے دیکھ کر ان کی باسی رڑا ہی میں پھر ابا ل آیا اور ۶۸۰ھ میں ان کے ایک زبردست لشکر نے شام پر چڑھائی کر دی۔ ایل خانیوں کی قیادت ہلاکو خان کا بیٹا ابا قاخان کر رہا تھا اس کے لشکر میں اسی ہزار سے زیادہ تو سوار تھے اور پیدل فوج کا کوئی حساب ہی نہ تھا۔ ارض شام پر ایل خانیوں کا اتنا زبردست لشکر اس سے پہلے کبھی حملہ آور نہیں ہوا تھا۔ مملوک حکومت اپنے سارے جتنوں کے باوجود اس قدر لشکر فراہم نہیں کر سکتی تھی لیکن سلطان قلاوون بڑے دل گڑھے کا انسان تھا وہ مطلق ہراساں نہ ہوا اور تھوڑی بہت جتنی فوج فراہم ہو سکتی تھی سب اٹھ کے کر بوق رفتاری سے تاتاریوں کے مقابلے کے لیے بڑھا۔ ۱۲۸۱ھ رجب ۶۸۰ھ کو حمص کے نواح میں حضرت خالد بن ولیدؓ کے مزار کے متصل دونوں لشکروں میں ٹڈ بھڑ ہوئی۔ اس زور کارن پڑا کہ ارض و سما کا نپ اٹھے مسلمان سر سے کفن باندھ کر لڑے تھے کیونکہ ان پر یہ بات روز روشن کی طرح عیاں تھی کہ اگر اس جنگ میں تاتاری فتیاب ہو گئے تو مصر و شام کے مسلمانوں کا حشر بغداد کے مسلمانوں سے مختلف نہیں ہوگا۔ کسی گھنٹہ کی ہولناکی لڑائی کے بعد مغلوں میں ہزیمت کے آثار نمایاں ہونے لگے۔ مسلمانوں نے ایک ایک کھمبہ لیا اور اس زور کا حملہ کیا کہ مغلوں کو اپنی ہزاروں لشکر پر ایسا زور چڑھا کہ وہ گھٹے سے گھٹے ہر طرف سے ہٹ کر چلائے اور دو دن تک ان کا تائب کیا، اگر وہ یا سہ فرات ان کے راستے میں حائل نہ ہو جاتا تو شاید وہ ایل خانیوں کے دار الحکومت مراغہ تک جا پہنچتے۔ اس عظیم الشان

فتح سے سلطان قلاوون کو عالم اسلام میں وہی حیثیت حاصل ہو گئی جو بیبرس کو عین جاہلوت کی فتح کے بعد حاصل ہوئی تھی۔ ایلخانی حکمران اباقاخان اس واقعہ کے تھوڑے ہی عرصہ کے بعد فوت ہو گیا۔ بعض مؤرخین کا بیان ہے کہ اس کے بھائی تکو دار اوغلان (یا اوغلو) نے اس کو زہر سے کر مار ڈالا۔

## ایلخانی سفارت

اباقاخان کی موت کے بعد تکو دار اوغلان اس کا جانشین ہوا۔ اسے تقاسم آئلڈ نے "انشاعت اسلام" میں ایک عیسائی مصنف کے حوالے سے لکھا ہے کہ "تکو دار کی تعلیم و تربیت عیسوی مذہب پر ہوئی تھی۔ بچپن میں اس کو اصطباغ ملا تھا اور نکولس اس کا نام رکھا گیا تھا۔ لیکن تکو دار جب بڑا ہوا تو اس نے مسلمانوں کے اثر و صحبت سے جن کو وہ بہت عزیز رکھتا تھا اسلام اختیار کیا اور سلطان محمد یا احمد اپنا نام رکھا اور جس قدر ہو سکا اس بات کی کوشش کی کہ سب تاتاری اسلام قبول کر لیں اور اس کے لیے انعام و اکرام اختیار اور عزت لوگوں کو بخشی یہاں تک کہ اس کے زمانے میں بہت سے تاتاری مسلمان ہو گئے۔"

سلطان احمد نے ۶۸۳ھ میں تخت نشین ہو کر سلطان قلاوون سے دوستانہ مراسم قائم کرنے کا ارادہ کیا۔ چنانچہ اس نے ایک دوستانہ سفارت مرتب کی اور اس کو علامہ قطب الدین شیرازی اور انابک بہاؤ الدین کی سرکردگی میں

بہت سے تحائف اور ایک طویل خط لکھ کر سلطان قلاوون کی خدمت میں روانہ کیا۔ سلطان نے اس سفارت کی پیشوائی کے لیے پندرہ سو (۱۵۰۰) مملوکوں کو سرحدِ شام پر بھیجا۔ یہ مملوک، لباس ہائے فاحشہ میں ملبوس تھے ان کے سروں پر طلائی پگڑیاں اور کمروں میں طلائی پشتکے تھے۔ سلطان نے بنظر احتیاط ان کو حکم دیا کہ ایلخانی سفارت کو رات کے وقت سفر کر کے قاہرہ لائیں چنانچہ وہ اس سفارت کو اپنی جلدی میں لے کر رات کے وقت سفر کرتے ہوئے بڑی شان و شوکت سے قاہرہ لائے۔ سلطان نے سفارت کے اراکین کو شاندار محلوں میں ٹھہرایا اور ان کی خوب خاطر مدارت کی۔ جب ان کے رخصت ہونے کا وقت آیا تو سلطان نے ان کے راجے ایلخانی حکمران سے دوستانہ تعلقات قائم ہونے پر بڑی مسرت کا اظہار کیا اور سلطان احمد

(لقبہ حاشیہ ص ۱۷۳)

کے علامہ محمود بن مسعود بن مصلح المعروف بہ قطب الدین شیرازی ۶۳۲ھ میں شیراز میں پیدا ہوئے۔ وہ فلسفہ، ہیئت اور طب کے نامور عالم تھے اور ایلخانی حکومت کے عہد میں شمار ہوتے تھے۔ علم ہیئت میں ان کا استاد خواجه نصیر الدین طوسی تھا۔ طب کی تعلیم انہوں نے پہلے اپنے باپ اور پھر اس دور کے دوسرے سربراہ اور وہ حکماء سے حاصل کی۔ تحصیل علم کے بعد کئی سال سیر و سیاحت میں مشغول رہے پھر ایلخانی حکومت میں سیواس کے قاضی مقرر ہوئے اور اس وقت کی سیاسیات میں نمایاں حصہ لیا۔ آخر عمر میں تبریز میں اقامت اختیار کر لی اور وہیں ۱۳۱۱ھ میں وفات پائی۔ انہوں نے کئی تصانیف اپنی یادگار چھوڑیں جن میں سے کچھ کے نام یہ ہیں :-

نہایتہ الادراک فی درایتہ الافلاک التحفۃ المشاہیر شرح حکمتہ الاشراق التحفۃ السعدیہ حاشیہ  
کشف مفاح المنان فی تفسیر القرآن شرح مختصر الاصول لابن حاجب۔ درۃ التاج لغزۃ الدیبا  
دامزوج العلوم حاشیہ حکمتہ العین۔ ان کتابوں میں تحفۃ السعدیہ نے بڑی شہرت حاصل کی یہ کلیات  
ابن سیناء کی شرح ہے اور پانچ جلدوں پر مشتمل ہے

کے لیے کئی بیش بہا تحائف دیئے۔ اس طرح ایلخانی اور مملوک سلطنت میں وقتی طور پر دوستی قائم ہو گئی۔

## بیمارستان الکبیر المنصوری کا قیام

اُسی سال ۱۲۸۴ھ میں سلطان علاؤدین نے قاہرہ میں ایک عظیم الشان ہسپتال کی بنیاد رکھی جو بیمارستان الکبیر المنصوری کے نام سے مشہور ہوا۔ چند سال پہلے سلطان سخت بیمار ہو گیا تھا اور اس کو دمشق کے بیمارستان الکبیر المنصوری میں داخل ہونا پڑا تھا۔ اثنائے مرض میں اس نے منت مانی تھی کہ اگر وہ شفا یاب ہو گیا تو قاہرہ میں ایک عظیم الشان ہسپتال قائم کرے گا۔ چنانچہ شفا یاب ہو کر اس نے اپنا عہد پورا کیا اور لاکھوں دینار کے صرف سے "بیمارستان الکبیر المنصوری" قائم کیا۔ انگلستان کے مشہور مستشرق ایڈورڈ جی براؤن نے اس ہسپتال کے بارے میں لکھا ہے کہ

"بیمارستان الکبیر المنصوری کے اخراجات پورے کرنے کے لیے

تقریباً دس لاکھ درہم سالانہ کے اوقاف مقرر تھے اور یہ ہسپتال تمام مریض انسانوں، امیروں، غریبوں، عورتوں اور مردوں کے لیے بلا تخصیص عام تھا اور اس میں عورتوں کے لیے بھی ایسے ہی علیحدہ کمرے (وارڈز) بنائے گئے تھے جیسے مردوں کے لیے اور بیمار

عورتوں کی تیمارداری کے لیے ویسے ہی تربیت یافتہ عورتیں (نرسیں) مقرر کی گئی تھیں جیسے مردوں کے لیے تربیت یافتہ تیماردار اور خدام مقرر تھے۔ اس ہسپتال میں ایک بڑا وارڈ مختلف قسم کے بیماریوں کے مریضوں کے لیے مخصوص تھا۔ ایک وارڈ صرف امراض چشم میں مبتلا لوگوں کے لیے تھا ایک وارڈ جراحی سے تعلق رکھنے والے مریضوں

(سر جیکل کیسینز) کے لیے تھا اور ایک وارڈ پیش اور اس نوع کے دوسرے امراض کے مریضوں کے لیے مخصوص تھا۔ اس کے علاوہ اس ہسپتال میں باورچی خانے، درس و تقریر کے کمرے (لیکچر رومز) طبی آلات اور دواؤں کی ذخیرہ گاہیں (سٹور رومز) اور اطباء اور دوسرے عملہ کے رہنے کے مکانات بھی تھے۔ ان کے علاوہ ایک دواخانہ بھی تھا۔

بیمارستان الکبیر المنصوری کا قیام سلطان قلاوون کا ایک عظیم الشان کارنامہ شمار کیا جاتا ہے۔ اس ہسپتال کے علاوہ سلطان نے ملک میں اور بھی کئی شفاخانے قائم کیے۔ مد سے بنوائے اور مسجدیں تعمیر کرائیں۔ اس کی تعمیر کردہ مساجد میں "جامع منصور" نے بڑی شہرت پائی۔

## صلیبیوں کے خلاف جہاد

۶۸۴ھ میں سلطان صلیبیوں کی طرف متوجہ ہوا جو کچھ عرصہ سے پھر شرارتوں میں مشغول ہو گئے تھے۔ تین سال پہلے طرطوس کے صلیبیوں نے سلطان قلاوون کے ساتھ اس معاہدہ امن کی تجدید کر لی تھی جو ان کے اور سلطان پیرس کے درمیان قرار پایا تھا۔ کچھ عرصہ بعد صور اور بیروت کے صلیبیوں نے بھی طرطوس کی تقلید میں مصالحت کی تجدید کر لی البتہ المرکب (مرقب یا مرقاب) طرابلس الشام

لے (Dispensary)

۲ "طب العرب" مرتبہ علامہ حکیم علی احمد نیر واسطی۔ یہ کتاب ایڈورڈ جی براؤن کے لیکچروں کا اردو ترجمہ ہے۔



سید، اورنگ کے صلیبیوں نے سلحنامہ کی تجدید کی ضرورت محسوس نہ کی اور اپنی فوجی قوت کو تیزی سے بڑھانا شروع کر دیا۔ سلطان ان کی سرگرمیوں پر کڑی نظر رکھ رہا تھا اس نے ان کو زیادہ ڈھیل نہ دی اور اپریل ۱۲۸۵ء کے وسط میں قلعہ المرکب کا محاصرہ کر لیا۔ قلعہ کے استحکامات کو توڑنے کے لیے چھوٹی اور بڑی کئی منجنیقیں استعمال کی گئیں اور تیس دن کے شدید محاصرے کے بعد قلعہ فتح ہو گیا۔ سلطان نے پہلی جنگجو (میلرز) سے جو اس قلعے کے محافظ تھے نہایت فیاضانہ برتاؤ کیا۔ اس نے ان کو اجازت دے دی کہ منقولہ جائیداد میں سے جتنی خود اٹھا سکیں ساتھ لے کر طرابلس چلے جائیں البتہ ان کو ہتھیار ساتھ لے جانے کی ممانعت کر دی گئی۔ مورخ ابوالفداء کا بیان ہے کہ جس فوج نے المرکب کو تسخیر کیا اس میں وہ بھی شریک تھا اس وقت اس کی عمر صرف بارہ برس کی تھی اور اسے پہلی مرتبہ جنگ کا تجربہ المرکب ہی میں ہوا۔

## فتح طرابلس الشام

۶۸۸ھ میں سلطان نے طرابلس الشام پر چڑھائی کی۔ اس شہر صلیبیوں نے ۱۲۸۹ سال پہلے قبضہ کیا تھا اور اردگرد کے علاقوں کو ضم کر کے اس کو ایک صلیبی ریاست کی شکل دے دی تھی۔ سلطان قلاوون کے زمانے میں یہ شہر صلیبیوں کے ایک اہم مرکز کی حیثیت رکھتا تھا اور مفتوحہ علاقوں کے اکثر صلیبی اسی شہر میں آکر آباد ہو گئے تھے۔ سلطان نے شہر کا نہایت سختی سے محاصرہ کر لیا اور اس کے استحکامات کو توڑنے کے لیے پندرہ سو سفر مینا اور انیس بڑی منجنیقوں سے کام لیا۔ ایک ماہ کی شدید سنگ باری اور تابڑ توڑ حملوں کے بعد سلطان نے شہر کو فتح کر لیا۔ ہزاروں صلیبی موت کے گھاٹ اتر گئے اور شہر کو نذر آتش کر دیا گیا۔ مورخ ابوالفداء جو اس موقع پر بھی مسلمان لشکر میں موجود تھا لکھتا ہے کہ

”ہر طرف صلیبیوں کی لاشوں کے انبار لگے ہوئے تھے اور

ان سے ایسی مکروہ بدبو اٹھ رہی تھی کہ میرے لیے وہاں ٹھہرنا  
مشکل ہو گیا۔“

طرابلس کے بعد سلطان نے ایک اور قلعہ ”البترون“ کو بھی کسی خاص

مزاہمت کے بغیر فتح کر لیا۔

## وفات

طرابلس الشام کی فتح سے ایک سال پہلے سلطان کا ایک فرزند ”علی“ عین

عالم شباب میں فوت ہو گیا تھا۔ وہ بڑا ہونہار اور بہادر نوجوان تھا۔ سلطان کو اس

کی وفات سے سخت صدمہ پہنچا اور اس کی صحت روز بروز گرنے لگی چنانچہ فتح طرابلس

کے چند دن بعد ہی اس نے ۹۶۶ زوی قعدہ ۶۸۹ھ کو قاہرہ میں وفات پائی۔

## الملك الاشرف صلاح الدين خليل

”الملك المنصور قلاوون کی وفات کے بعد اس کا دوسرا فرزند صلاح الدين

خلیل تخت پر بیٹھا اور ”الملك الاشرف“ کا لقب اختیار کیا۔ اس نے عمان حکومت

ہاتھ میں لیتے ہی صلیبیوں کے خلاف جہاد عام کی تیاری شروع کر دی۔

طرابلس کے بعد صلیبیوں کا سب سے بڑا مرکز ”عکہ“ (Acre)

تھا۔ اس شہر کو جنگی اعتبار سے زبردست اہمیت حاصل تھی اور دوسرے صلیبی

قلعوں کی بقا کا انحصار اسی پر تھا۔ چنانچہ الملك الاشرف نے سب سے پہلے اسی

شہر پر قبضہ کرنے کی ضرب لگانے کا فیصلہ کیا۔

## فتح عکہ

۶۹۰ھ میں سلطان نے ایک ہزار لشکر کے ساتھ عکہ کا محاصرہ کر لیا اور  
 ۱۲۹۱ء کے منجیقین دن رات قلعہ پر تپھر برسائے کے لیے نصب کر دیں۔ پہلی جنگ جوڑوں  
 نے زبردست مزاحمت کی لیکن سلطانی فوج کا دباؤ اتنا شدید تھا کہ ان کی کچھ پیش قدمیاں اور  
 ایک ماہ کے بعد وہ ہتھیار ڈالنے پر مجبور ہو گئے۔ سلطان نے شہر میں داخل ہو کر ان  
 شہر کے نفیس صلیبیوں کو موت کے گھاٹ اتار دیا اور شہر کو مسمار کر کے زمین کے برابر کر دیا۔

## ارض مقدس سے صلیبیوں کا انخلاء

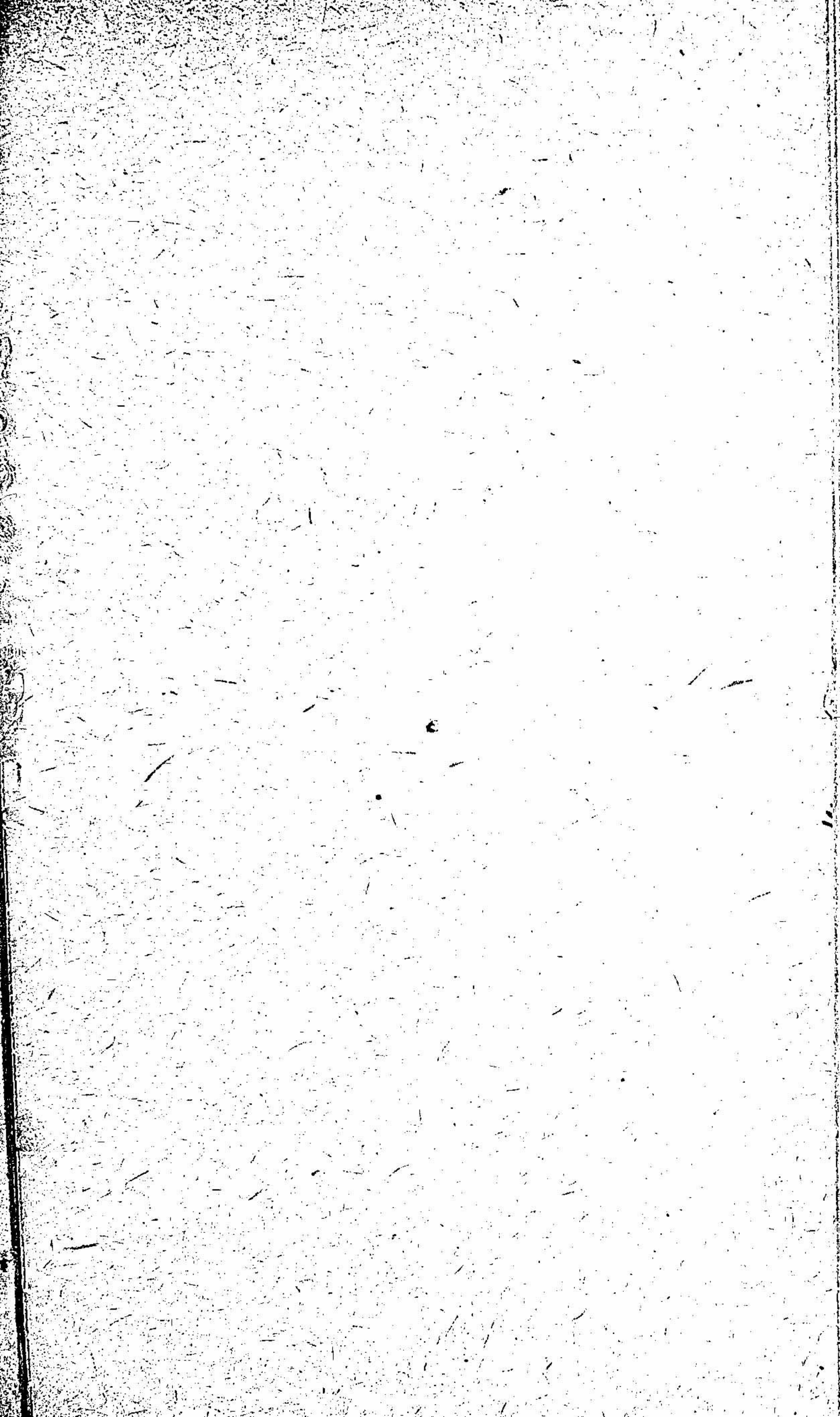
عکہ پر مسلمانوں کا قبضہ کوئی معمولی واقعہ نہ تھا۔ اس نے دوسرے صلیبی قلعوں  
 کی تسخیر کا راستہ ہموار کر دیا کیونکہ ان کے محافظ سخت دہشت زدہ ہو گئے اور ان کی  
 قوت مزاحمت بالکل جواب دے گئی۔ چنانچہ جس دن عکہ فتح ہوا، صور کو اس کے صلیبی  
 محافظوں نے اسی دن خالی کر دیا۔ تقریباً دو ماہ بعد مسلمانوں نے صیدا پر قبضہ کر لیا اس  
 کے سات دن بعد بیروت۔ بیس دن کے بعد انطرطوس اور ایک ماہ کے بعد عسقلیت  
 کے صلیبیوں نے ہتھیار ڈال دیے اس طرح ۳ اگست ۱۲۹۱ء کو سلطان بیبرس  
 کے چھوٹے ہوتے ہوئے کام کی تکمیل ہو گئی اور یورپ کے صلیبیوں نے جو جدوجہد  
 ۱۰۹۹ء میں مجنونانہ جوش و خروش کے ساتھ شروع کی تھی وہ پوسے ایک سو  
 تیرانوے (۱۹۳) سال کے بعد ہمیشہ کے لیے خاک نامرادی میں سلا دی گئی۔ شام کے ساحل  
 سے کچھ دور جزیرہ اردو پر صلیبیوں کا ایک قلعہ باقی رہ گیا تھا گیارہ سال کے بعد مسلمانوں  
 نے اسے بھی مستحضر کر لیا اور قلعہ کے حتمی کے الفاظ میں "یوں مسیحیت اور اسلام کے درمیان

لے الملک الاشراف کو دو سال بعد ملوک امرار نے قتل کر دیا اس کے بعد باقی س - ۸ اپریل

کش مکش کی سرگزشت کے ایک نہایت شان دار ڈرامے کا آخری پردہ گر گیا۔  
یہی عماد الدین زنگی، نور الدین محمود صلاح الدین ایوبی اور رکن الدین بیکس کے  
خوابوں کی تعبیر تھی۔

دقیقہ حاشیہ ص ۱۷۹، الناصر ناصر الدین محمود۔ القادل زین الدین کتبغا اور المنصور حسین الدین  
لاچین یکے بعد دیگرے تخت حکومت پر بیٹھے لیکن ان میں سے کوئی بھی دو سال سے زیادہ  
حکومت نہ کر پایا یہاں تک کہ ۶۹۸ھ میں الملک الناصر ناصر الدین محمود بارہ برس اقتدار  
آگیا پڑے ارواد کو الملک الناصر ناصر الدین محمد نے ۷۰۲ھ میں فتح کیا۔ کہا جاتا ہے کہ  
اس جزیرہ کے صلیبیوں نے بھری قزاقی کو اپنا پیشہ بنا لیا تھا۔ ارواد کی مہم میں مصر کے بھری  
بیرے نے خاص حصہ لیا۔

# سُلطانِ بیبرس کے ذاتی اوصاف



## شکل و شباهت

سلطان بیرس کا قد طویل تھا باختلاف روایت چھ فٹ سے کچھ کم یا کچھ زیادہ اس کے اعضا نہایت قوی اور متناسب تھے۔ نہایت خوش رو اور خوش وضع تھا پھر سے رعب و وقار ٹپکتا تھا۔ رنگ سرخ و سپید تھا بال سرخ اور آنکھیں نیلی تھیں۔ بعض مورخین کا بیان ہے کہ اس کی ایک آنکھ بچپن میں خراب ہو گئی تھی تاہم اس نقص نے سلطان کی خوش روئی اور وجاہت پر کوئی اثر نہ ڈالا تھا۔

## شوقِ جہاد

شوقِ جہاد سلطان کے ابوابِ سیرت کا ایک دینشاں باب ہے۔ سلطان کو جہاد کا اس قدر شوق تھا کہ اگر اس کے بس میں ہوتا تو وہ اپنی زندگی کا ایک لمحہ جہاد فی سبیل اللہ میں گزار دیتا۔ اعدائے دین خواہ وہ تاتاری غارت گردوں کی شکل میں ہوں یا صلیبی طالع آزماؤں کی صورت میں وہ بہر وقت ان سے نبرد آزما ہونے کے لیے تیار رہتا تھا۔ اس کے لیل و نہار کا بیشتر حصہ اہتمامِ جنگ و جہاد میں بسر ہوتا تھا۔ گو اس کی فوج میں متعدد قابلِ جرنیل موجود تھے لیکن ان کی کوشش ہمیشہ یہی ہوتی تھی کہ دشمنانِ اسلام کے خلاف ہر جنگی مہم کی قیادت خود کرے۔ اس کی ولولہ انگیز قیادت اور شوقِ جہاد نے اس کے فوجیوں میں بھی بے پناہ عزم و ہمت اور ناقابلِ تسخیر جذبہ جہاد پیدا کر دیا تھا۔ اگر یہ کہا جائے کہ شوقِ جہاد کے معاملہ میں سلطان بیرس الپ ارسلان، عماد الدین زنگی، نور الدین زنگی، صلاح الدین ایوبی اور محمد فاتح جیسے مجاہدوں اور

کی صف کا آدمی تھا تو اس میں کوئی مبالغہ نہ ہوگا۔

## شجاعت

سلطان اپنے دور کے شجاع ترین آدمیوں میں سے ایک تھا۔ مشہور امریکی مورخ ہیرلڈ لیم اپنی کتاب "تاریخوں کی یلغار" میں لکھتا ہے:

"ایک سپاہی کی حیثیت سے بیرس کا مرتبہ "جولیس سیرز" سے کم نہ تھا۔"

سلطان فی الحقیقت ایک صف شکن سپاہی۔ ایک بے مثل شہسوار اور ایک آزمودہ کار جنرل تھا۔ وہ تیراندازی، گھڑ سواری، چوگان، تیراکی، شمشیر زنی اور نیزہ بازی میں کمال درجے کی مہارت رکھتا تھا۔ میدان جنگ میں وہ ہمیشہ سب سے اگلی صف میں ہوتا تھا اور بعض اوقات تنہا دشمن کی صفوں میں گھس جاتا تھا جب جنگ کی آگ تیزی سے بھڑک رہی ہوتی تو وہ میدان جنگ میں برق رفتاری سے ادھر سے ادھر چکر لگاتا رہتا تھا اگر کسی جگہ اپنی فوج میں کمزوری کے آثار دیکھتا تو فی الفور وہاں پہنچتا

لہٰذا سب سے بڑا نواج تحسین ہے جو ایک غیر مسلم مورخ سلطان بیرس کی شجاعت کو پیش کر سکتا تھا۔ رومی جنرل جولیس سیرز (۱۰۰۰ قبل مسیح تا ۴۲۱ قبل مسیح) کا شمار تاریخ عالم کے عظیم ترین جنرلوں میں ہوتا ہے۔ مغربی مورخین اس کی شجاعت اور جرات و بسالت کی تعریفیں کرتے کرتے نہیں تھکتے۔ فی الواقع وہ ایک بہترین جنرل اور نہایت بہادر سپاہی تھا۔ اس نے اپنی عسکری قابلیت اور ذاتی شجاعت کے بل پر بے شمار جنگیں لڑیں یہاں تک کہ جزائر برطانیہ پر حملہ آور ہوا۔ اگر مغربی مورخین بیرس کو جولیس سیرز کا ہم پامہ ٹھہرائیں تو اس سے بڑھ کر اس کی عظمت کا کیا ثبوت ہو سکتا ہے؟



اور بے دریغ دشمن کی صفوں میں گھس جاتا اور جب تک ان کو درہم برہم نہ کر لیتا سمجھے نہ ہٹتا۔ دشمن خواہ کیسا ہی طاقتور ہو اور حالات خواہ کیسے ہی ناسازگار ہوں وہ مطلق ہر اسباب نہ ہوتا تھا بلکہ اس قسم کی صورت حال اس کے جذبہ شجاعت کو اور ابھارتی تھی۔ صلیبیوں اور تاتاری اس کے نہایت طاقتور دشمن تھے لیکن وہ ان کا مذاق اڑایا کرتا تھا اور میدان جنگ میں ان کو اس طرح لٹکاتا تھا جیسے شیر بہ جنگل میں دھار رہا ہو۔ اس کی لٹکار سے دشمنوں کا پتہ پانی ہو جاتا تھا اور انہوں کی ہمتیں دوپہند ہو جاتی تھیں۔ اس کی بے مثال شجاعت و جرات و بسالت اور حدود و حریم کی ثابت قدمی کو مغربی مورخین بھی تسلیم کرتے ہیں۔ گوانہوں نے سلطان کے ذاتی کردار پر کچھ اچھا لکھنے میں کوئی کسر اٹھا نہیں رکھی اور اس کو مکار و فریب کا نانا اور کینہ توڑ کہہ کر اپنے خبیث باطن کا مظاہرہ کیا ہے لیکن وہ صداقت ہی کیا جو کذب و افترا اور طعن و تمسخر کے ہزار پردوں سے بھی چھین کر باہر نہ آجائے۔ وہ اس حقیقت کو نہیں جھٹلا سکے کہ منصورہ میں لوٹنے پر انہیں "مقدس بادشاہ" کے صلیبی لشکر کا قلب توڑنے، عین جاوت میں تاتاریوں کے مہیب لشکر کے پرچھے اڑانے اور پھر بعد کی بے شمار جنگوں میں دشمنوں کو لوہے کے چنے چبوانے میں سلطان کی عسکری قابلیت کے ساتھ ذاتی شجاعت کا بھی بڑا حصہ تھا۔ سچی بات تو یہ ہے کہ ایک غیر جانب دار مبصر بھی سلطان کے واقعات زندگی پر یہ اعتراف کرنے پر مجبور ہو گا کہ بیس تاریخ عالم کے شجاع ترین حکمرانوں میں سے ایک تھا اور حقیقی معنوں میں اس شعبہ کا مصداق تھا۔

وہ جس کی تیغ مہیت ناک سے سفاک ڈرتے تھے  
وہ جس کے بازوؤں کی دھماک سے فلاک ڈرتے تھے  
(حقیقاً جالندھری)

## سخت کوشی

سلطان کاٹمیر جس مٹی سے اٹھا تھا اس کے ذرہ ذرہ میں سخت کوشی اور صعوبت کوشی  
 رچی ہوئی تھی۔ پھر اس کو جہاد فی سبیل اللہ سے جو الہامہ عشق تھا اس کا تقاضا بھی  
 یہی تھا کہ وہ سادگی اور سخت کوشی کو اپنی زندگی کا شعار بنائے۔ چنانچہ وہ ایک عظیم  
 مملکت کا باجہوت فرماں روا ہونے کے باوجود اس قدر سخت کوش اور صعوبت کوش  
 تھا کہ ایک عام آدمی اس کا تصور کر کے بھی لرزہ براندام ہو جاتا ہے۔ رعایا کی خیر گیری  
 کے لیے مملکت کے کسی مفاد کی خاطر یا جنگ و جہاد کے لیے پیادہ پایا گھوڑے کی تنگی  
 پیٹھ پر بیسیوں میل سفر کرتے رہنا اس کا دل پسند مشغلہ تھا اور شمشیر زنی نیزہ بازی،  
 تیر اندازی، تیراکی، چوگان اور دوسرے سپاہیانہ کھیل اس کے محبوب مشاغل تھے جن میں  
 وہ بہروں مصروف رہتا۔ منصب حکومت نے اس کو سہل انگاری، عافیت پسندی اور  
 عیش و عشرت کی طرف راغب کرنے کے بجائے پہلے سے بھی زیادہ سخت کوش بنا دیا تھا۔  
 اس کو شاہانہ چونچلوں، راگ و رنگ کی محفلوں اور عیش و عشرت کے جلسوں سے کوئی سروکار  
 نہ تھا۔ بلکہ اس کی زندگی

ع "سخت کوشی سے تلخ زندگانی آتگیاں"

کے محور کے گرد گھومتی تھی۔ اس نے اپنی زندگی کا ایک لمحہ اللہ کے دین اور ملک و ملت  
 کی خدمت کے لیے وقف کر دیا تھا۔ وہ راتوں کو جاگتا تھا اس لیے کہ دوسرے سکھ کے  
 نیند سوئیں۔ وہ گھر کا آرام اور اہل و عیال کا ساتھ چھوڑ کر کسی کسی دن اور کسی کسی مہینے طویل  
 اور پر صعوبت سفر کرتا رہتا تھا اس لیے کہ دوسرے امن اور چین سے اپنے گھروں  
 میں رہیں اور اپنے بال بچوں کی خوشیوں کے سامان فراموش کریں۔ وہ محلوں کی پر امن اور  
 محفوظ زندگی پر میدان جنگ کی سختیوں کو ترجیح دیتا تھا اس لیے کہ ملت اسلامیہ پر کوئی

آج نہ آئے پائے اس کی سخت کوشش، گرمی اور سردی کی شدت۔ برف باری، طوفان و باران اور موسموں کے دوسرے نشانات کسی شے کو خاطر میں نہیں لاتی تھی۔ مؤرخ ابو الفداء لکھتا ہے کہ:

«سلطان بیبرس رات کو زورہ پہنے ہوئے سو جاتا تھا اور پاؤں

سے ہمبیزین بھی نہ اتارتا تھا۔»

غرض سخت کوشش سلطان کی طبیعتِ ثانیہ بن گئی تھی اور اس نے اس کی فتح مندلیوں اور کامرائیوں میں اہم کردار ادا کیا تھا:

## دینداری

سلطان کو حکمرانی و بھانبنانی کے ساتھ دینداری میں بچیدانہماک تھا۔ وہ بڑا پرورش مسلمان تھا، جہاد کا عاشق اور شرع کا پابند۔ نہ صرف خود صوم و صلوة کی پابندی کرتا تھا بلکہ عامۃ الناس کو بھی نہایت سختی سے احکامِ شریعت پر عمل کرنے اور شعائرِ دینی کا احترام کرنے کی تاکید کرتا تھا۔ اس نے اپنی مملکت میں تمام ناجائزہ حاصل کیسے موقوف کر دیے تھے، مسکرات کا ایک قلم خاتمہ کر دیا تھا اور فواحش کا نہایت سختی سے انس لیا اور کیا تھا اس کی پوری مملکت میں کوئی شراب خانہ، جوئے خانہ اور قحب خانہ و ہونڈے سے بھی نہ ملتا تھا۔

۶۶۰ھ ہجری میں اس نے حج بیت اللہ کا شرف حاصل کیا۔ اس موقع پر اس نے خانہ کعبہ کو اپنے ہاتھوں سے عرقِ گلاب سے غسل دیا اور اس پر دوسیا کا غلاف چڑھایا۔ پھر مدینہ طیبہ پہنچ کر روضہ اقدس کی زیارت کی اور اس کے چاروں طرف ایک کٹہرہ (محجر) بنوایا جو آج تک موجود ہے، چند سال پہلے مسجد نبوی کا کچھ حصہ آگ لگنے سے گر گیا تھا۔ خلیفہ مستعصم باللہ نے اس کی تعمیر بھی شروع کرائی تھی۔

لیکن سقوط بغداد کی وجہ سے یہ کام نامکمل رہ گیا تھا۔ اس کی تکمیل کی سعادت بھی سلطان  
بیسرے کے حصے میں آئی۔

سلطان کے عہد سے مرصہ میں صدیوں تک یہ دستور رہا کہ جب محل شریف  
کعبہ کے لیے روانہ ہوتا تو پہلے اس کو سارے شہر میں پھرایا جاتا۔ اس کے آگے آگے  
غلاموں کے اکھاڑے ہوتے تھے جو جگہ جگہ ٹھہر کر شمشیر زنی اور نیزہ بازی کے کرتب  
دکھاتے تھے ان کو دیکھ کر لوگوں میں یہ فنون سیکھنے کا شوق پیدا ہوتا تھا۔

## جو دوسرا

سلطان عطا و بخشش اور جو دوسرا میں اپنی مثال آپ ہی تھا۔ اللہ تعالیٰ  
نے فیاضی اور دریا دلی اس کی فطرت میں ودیعت کی تھی اور اس کی کوئی حد پایاں  
نہیں تھی۔ وہ سائلوں کے سوال سے بڑھ کر ان کو عطا کرتا تھا اور ان کی امیدوں  
سے بڑھ کر سخاوت کرتا تھا۔ عرب مؤرخین کا بیان ہے کہ اس کی بے حساب بخشش  
سے مصر کے فقراء اور مساکین مالا مال ہو گئے تھے۔ ایک طرف اہتمام جنگ جہاد  
مدارس، مساجد، شفا خانے اور رفاہ عامہ کے تمام کام اس کی فیاضی کے خاص  
مصرف تھے تو دوسری طرف اس کی بدل و عطا آئے دن حساب کرم بن کر رہتی  
رہتی تھی اور علماء و فقہاء و شعراء و غرباء و مساکین۔ یتامی و بیوگان اور  
اہل حاجات کا دامن و رانہم و دنا نیر سے بھرتی رہتی تھی۔ یہ کبھی نہ ہوتا تھا کہ کوئی اس  
کے در پر جائے اور خالی ہاتھ چلا جائے۔

سلطان کا دسترخوان بڑا وسیع تھا جس سے ہزاروں بندگان خدا و نون  
وقت متمتع ہوتے تھے۔ اس کے علاوہ وہ ہزاروں من غلہ فقراء و مساکین اور اہل زویا  
میں تقسیم کرتا رہتا تھا۔ اس نے حرم شریف کے شرفاء و مجاورین کے لیے مستقل

وظائف مقرر کر رکھے تھے خاص خاص موقعوں پر اس کی عطا و بخشش ان وظائف پر  
مستزاد تھی۔

رمضان المبارک میں تو سلطان کی سخاوت کی کوئی حد ہی نہیں رہتی تھی۔ اس کی  
ہدایت پر جگہ جگہ غریب و مساکین کے لیے بڑے بڑے مطبخ قائم کر دیے جاتے جہاں  
ان کے افطار و سحر کے لیے طرح طرح کے لذیذ کھانے اور مشروب تیار کیے جاتے  
تھے۔ اس کام پر لاکھوں دینار صرف ہو جاتے تھے لیکن سلطان کو اس کثیر خرچ پر  
ولی مسرت اور روحانی تسکین حاصل ہوتی تھی اور وہ کہا کرتا تھا کہ کاش اللہ تعالیٰ  
میری اس حقیر خدمت کو قبول فرمائے۔

سلطان کی عطا و بخشش زر و مال اور اجناس کی تقسیم تک ہی محدود نہیں تھی  
بلکہ جس کشاوہ ولی سے وہ زر و مال اور اجناس تقسیم کرتا تھا اسی کشاوہ ولی سے  
وہ مستحقین کو جاگیریں، صوبے، کتیزیں اور غلام بخشا کرتا تھا اس کی اس قسم کی فیاضی  
سے بالعموم ارباب ہنر و کمال اور میدان جنگ میں شجاعت کا مظاہرہ کرنے والے  
سپاہی فیض یاب ہوتے تھے۔ لاوارثوں اور بے کسوں کی تجہیز و تکفین کے لیے  
سلطان نے اپنی خاص ملکیت وقف کر دی تھی۔

## اہل علم و فضل کی تدریسی

سلطان اہل علم و فضل کا بے حد قدردان تھا وہ ان سے نہایت ادب و احترام  
سے پیش آتا تھا اور ان کی خدمات کو استحسان کی نظر سے دیکھتا تھا۔ سلطان کوئی  
اہم دینی یا دنیوی کام علماء سے فتویٰ لیے بغیر نہ کرتا تھا۔ اس کی سلطنت میں چاروں  
فقہی مذاہب کے علماء بڑے بڑے عہدوں پر مامور تھے اور سرکاری خزانے سے  
گرا نقدر تنخواہیں پاتے تھے جن کی مجموعی مقدار لاکھوں دینار تک پہنچتی تھی اس

کی مجلسوں میں اہل فضل و کمال کا اجتماع رہتا تھا اور وہ ان پرور غم و دینار کی بارش کرتا رہتا تھا۔ اس کے دور حکومت کے آغاز میں شیخ الاسلام علامہ عزالدین بن عبدالسلام دمشقیؒ کا اس قدر اثر تھا کہ وہ ان کے مشورہ اور تائید کے بغیر ایک قدم تک نہ چلتا تھا جب انہوں نے رحلت کی تو سلطان فرط غم سے تڑھال ہو گیا اور کئی دن تک کاروبار سلطنت میں حصہ نہ لیا۔ وہ کہا کرتا تھا کہ

”علامہ عزالدین جب تک زندہ تھے حقیقت میں حکومت

انہی کی تھی کیونکہ ان میں علم کے ساتھ عمل بھی تھا میری حکومت ان کی وفات کے بعد شروع ہوئی۔“

سلطان علمائے دین کو اس قدر اہمیت دیتا تھا کہ اس نے مملکوں کی فوج کے ہر دستے کے لیے ایک فقیہ مقرر کر رکھا تھا جو ان کو قرآن و حدیث دینی مسائل اور نوشت و خواندگی تعلیم دیتا تھا۔ اسی طرح اس نے فوج کے لیے ایک الگ قاضی القضاة مقرر کر رکھا تھا جس کے مرتبہ کا اندازہ اس بات سے کیا جاسکتا ہے کہ سلطان عدالت عظمیٰ کے اجلاس میں اس کو اپنے ساتھ بٹھاتا تھا۔ اہم ملکی اور مذہبی عہدوں پر تقرر کے لیے سلطان ہمیشہ ایسے لوگوں کا متلاشی رہتا تھا جن کی قابلیت اور علم و فن مسلم ہو۔ چنانچہ اس نے بعض خدمات کے لیے ایسی نادر و نایاب شخصیتوں کو منتخب کیا کہ اس کی مردم شناسی کی داو دینی پڑتی ہے۔

مشہور مؤرخ اور تذکرہ نگار علامہ ابن خلیکانؒ سلطان کے ہم عصر تھے وہ عرصہ تک سلطان کی طرف سے شام کے قاضی القضاة رہے وہاں سے فارغ ہوئے تو قاہرہ آگئے اور یہاں کے مدرسہ فخریہ میں تعلیم و تعلم کی خدمت سنبھال لی۔ علامہ قاضی جمال الدین محمد بن سالم معروف بہ ابن واصل جو امام وقت اور سرآمد روزگار علماء میں تھے سلطان کی طرف سے حماة کے قاضی القضاہ تھے ان کی

ہمہ گیر قابلیت کے پیش نظر سلطان نے ۶۵۹ھ میں ان کو ایک اہم سفارتی خدمت کے لیے منتخب کیا اور اپنا سفیر بنا کر اطالیہ و سسلی کے جرمن قریاں رومینفرڈ کے پاس اٹلی بھیجا جہاں وہ

(Emperor Manfred)

عرصہ تک نہایت کامیابی سے سفارتی فرائض انجام دیتے رہے۔

سلطان کا "صاحب دیوان النشاء" یا "وزیر خارجہ" امیر فخر الدین بن لقمان تھا۔ وہ جس طرح علم و فضل اور سیاسی بصیرت کے لحاظ سے جبریت انگیز صلاحیتوں کا مالک تھا اسی طرح "فن النشاء" میں بھی غیر معمولی مہارت رکھتا تھا۔ مشہور محدث امام نوویؒ بھی سلطان کے ہم عصر تھے۔ ان کی جلالت علمی نے ایک عالم کو مسحور کر رکھا تھا۔ سلطان بھی ان کے کمال علمی کا معترف تھا اور ان کی بیحد تعظیم و تکریم کرتا تھا لیکن افسوس کہ اخیر عمر میں سلطان اور امام موصوف کے درمیان ایک معاملہ میں شدید اختلاف پیدا ہو گیا جو امام موصوف کی دمشق سے جلاوطنی پر منتج ہوا اس واقعہ کی تفصیل امام نوویؒ کے حالات میں اسی کتاب میں ایک دوسری جگہ درج ہے، اس افسوسناک واقعہ سے قطع نظر سلطان کی سیرت سے یہی ظاہر ہوتا ہے کہ وہ از باب فضل و کمال کا دل و جان سے قدردان تھا اور ہر طبقہ کے اہل کمال خواہ وہ علماء و فقہاء ہوں یا صلحاء و صوفیاء، سبھی اس کا مزاج عقیدت تھے اور وہ ان کی توقیر و تعظیم اور قدردانی میں کوئی دقیقہ فرو گزاشت نہ کرتا تھا۔ مشہور صوفی بزرگ سید احمد البدویؒ جن کے حالات اس کتاب میں ایک دوسری جگہ درج ہیں، سلطان پر بڑی شفقت فرماتے تھے۔ سلطان بھی ان کا بھی احترام کرتا تھا اور ان کے دست چومتا تھا۔

مختلف زبانوں پر عبور

سلطان نے اپنی زندگی میں بہت سے نشیب و فراز دیکھے تھے اور اس

کو مختلف اقوام کے لوگوں سے سابقہ پڑا تھا۔ فلک شعبدہ باز نے کبھی اس کو  
 دشت بچاق میں ایک نوجوان گڈیے کی صورت میں دیکھا۔ کبھی اس کو دمشق میں  
 بروہ فروشوں کی منڈی میں بکتے دیکھا۔ کبھی دمشق اور مصر کے امراء کی چاکری کرتے  
 دیکھا کبھی میدان رزم میں ایک صفت شکن سپاہی کے رنگ میں دیکھا۔ کبھی اسلامی لشکر کے  
 کماندار کی حیثیت میں دیکھا۔ علیٰ ہذا القیاس۔ چنانچہ اس نے اپنی بیسگاموں سے  
 بھر پور زندگی میں ہر قسم کے لوگوں سے ربط و ضبط کی بدولت بہت سی زبانوں پر عبور  
 حاصل کر لیا تھا۔ وہ عربوں سے عربی میں۔ تاتاریوں سے تاتاری میں۔ یونانیوں سے  
 یونانی میں، حبشیوں سے حبشی میں اور کسی دوسری اقوام کے لوگوں سے ان کی اپنی بولی  
 میں نہایت بے تکلفی اور روانی سے گفتگو کر لیتا تھا اس کی ہمہ گیر زبان دانی کا اعتراف  
 نہ صرف مسلم بلکہ غیر مسلم مورخین بھی کرتے ہیں۔

## معدلت گستری

سلطان اگرچہ حکومت کے دشمنوں، غداروں، سازشچیوں اور میدان جنگ  
 سے بھاگنے والوں کے حق میں نہایت سخت گیر اور قہار واقع ہوا تھا لیکن وہ اس  
 بات پر غیر متزلزل یقین رکھتا تھا کہ بے لاگ عدل ایک مہذب اور بالخصوص ایک  
 اسلامی حکومت کے لیے ریڑھ کی ہڈی کی حیثیت رکھتا ہے۔ چنانچہ اس کی دلی آرزو  
 تھی کہ اس کے تمام ممالک محروسہ عدل و انصاف کا گہوارہ بن جائیں۔ قاضی مجسمہ انصاف  
 ہوں اور محتسب پیکر دیانت۔ نہ کسی پر ظلم ہو اور نہ کوئی ظالم کی رعایت کرے۔ اس نے  
 محکمہ قضا میں چاروں فقہی مسالک کے قابل ترین قضاة مقرر کر رکھے تھے اور عدلیہ کی  
 نگرانی اپنے ذمے رکھی تھی۔ قضاة کے انتخاب کا معیار اس کے نزدیک یہ تھا کہ وہ  
 عدل و انصاف کے معاملہ میں فرمایا روائے وقت تک کی پروا نہ کریں اور امیر و غریب



میں مطلق کوئی امتیاز روا نہ رکھیں۔ علامہ جلال الدین سیوطی نے ابن کثیر کے حوالہ سے بیان کیا ہے کہ

”۹ رجب سنہ ۶۶۶ ہجری کو ایک کنوئیں کے معاملہ میں کن الدین پیر“  
 قاضی تاج الدین کی عدالت میں آیا۔ اس وقت جتنے لوگ وہاں بیٹھے  
 ہوئے تھے وہ سب تعظیماً کھڑے ہو گئے۔ قاضی نے بھی کھڑا ہونا  
 چاہا مگر ملک ظاہر نے ہاتھ کے اشارے سے انہیں متع کر دیا۔ اب  
 عدالت میں باقاعدہ مقدمہ پیش ہوا۔ سلطان نے حکم شرعی کے  
 مطابق مدعی ہونے کی حیثیت سے بیٹہ عادلہ پیش کیا اور فیصلہ اسی  
 کے حق میں ہو گیا۔

سلطان ہفتہ میں دو یا تین دن خود بھی دارالعدل میں بیٹھ کر لوگوں کی فریادیں  
 کیا کرتا تھا۔ علاوہ ازیں یہ دیکھنے کے لیے کہ اس کی مملکت میں کوئی شخص ظلم اور نا انصافی  
 کا شکار تو نہیں ہو رہا وہ اکثر بھیس بدل کر گشت کیا کرتا تھا ظالم اس کے نزدیک  
 عدائے حکومت کا اور جبر کہتے تھے اور وہ ان کو قرار واقعی سزا دینے میں کسی ہچکچاہٹ  
 سے کام نہیں لیتا تھا۔ اگرچہ عیسائی مورخین نے اس کے ”ظلم و ستم“ کی کئی فرضی اسائیں  
 بیان کی ہیں لیکن تمام مسلم مورخین اس کو ایک خدا ترس اور عادل حکمران قرار دیتے ہیں۔

## بیدار مغزئی

بیدار مغزئی سلطان کی کتاب زندگی کا ایک دلاویز اور درخششاں باب ہے۔

اے مسلمانوں کا عروج و زوال از مولانا سعید احمد اکبر آبادی بحوالہ حسن المحاضرہ



اور اگلے روز فلسطین میں نمودار ہوتا ہے۔ چار یوم بعد وشت عرب میں نظر آتا ہے اس میں خانہ بدوشوں کی تیز رفتاری اور دور سی کی خداداد صلاحیت ہے۔

اس کے معرکوں کی وجہ سے قاہرہ کے عوام اس کی پرستش کرتے ہیں اور اس سے خائف بھی رہتے ہیں۔ کیونکہ معلوم نہیں بیبرس اس وقت کہاں ہو۔ کہیں وہ دراز قد مملوک جو صلاح الدین کی فصیل کے برج سے ان کی طرف دیکھ رہا ہے۔ بیبرس تو نہیں کہیں وہ لمبا سا سوار جو چلتیوں کو ساتھ لیے بھیڑوں کی چراگاہوں کے اس پار بارہ سنگھوں کا شکار کر رہا ہے، بیبرس نہ ہو یا قاضی کے زانو بہ زانو جو سمرقندی حاجی بیٹھا ہو اور ظیفہ پڑھ رہا ہے، کہیں وہی بیبرس نہ ہو۔

معرکہ عین جاوت کے بعد جب ہلاکو مصر پر انتقامی حملہ کرنے کی تیاریاں کر رہا تھا۔ بیبرس نے ایک عجیب کا زمانہ سرانجام دیا۔ بظاہر یہ واقعہ الف لیلا کی کسی کہانی کا حصہ معلوم ہوتا ہے لیکن مورخین نے جس تو اتر سے اسے نقل کیا ہے اسے دیکھ کر اس کی صحت میں چنداں شبہ نہیں رہتا۔ یہ الگ بات ہے کہ کسی نے زینب داستاں کے لیے اس میں کچھ بڑھا بھی دیا ہو۔

بیان کیا جاتا ہے کہ ایک دن بیبرس نے (ایک معنی یا تاتاری سپاہی کا)

اے یہ اقتباس ہیرالڈ لیم (Harold Lamb)

کی تصنیف (The March of Barbarians)

سے لیا گیا ہے۔ اس کتاب کا ترجمہ جناب عزیز احمد نے "تاتاریوں کی یلغار" کے نام سے کیا ہے۔ اقتباس کے الفاظ انہیں کے ہیں۔

بھیس بدلا اور تن تنہا شمال کی طرف غائب ہو گیا۔ کئی دن کے پُرصوبت سفر کے بعد وہ تاتاریوں کے علاقے میں نمودار ہوا اور قریب قریب پھر کہ وہاں کے حالات کا جائزہ لیتے لگا۔ مختلف زبانوں میں مہارت رکھنے کی بدولت وہ ہر قسم کے لوگوں میں باسانی گھل مل جاتا تھا اس لیے کسی کو اس پر مطلق کوئی شبہ نہ ہوا۔ ایک دن اس نے تاتاری علاقے کے کسی شہر میں ایک نانباتی کی دکان پر کھانا کھایا اور ایک برتن میں اپنی شاہی انگوٹھی اتار کر رکھ دی۔ اس کے بعد وہ اپنے علاقے میں واپس آ گیا اور وہاں سے تاتاری فرماں روا کو خط لکھا کہ

”میں تمہاری مملکت کے حالات کا معائنہ کرنے کے لیے فلاں فلاں

جگہ گیا تھا۔ فلاں شہر میں فلاں نانباتی کی دکان پر اپنی شاہی انگوٹھی

بھول آیا ہوں۔ مہربانی کر کے یہ انگوٹھی تلاش کر کے مجھے واپس بھجوا

دو کیونکہ یہ مجھے بہت پسند ہے۔“

تاتاری بادشاہ سلطان کی اس جرأت و جسارت پر ششدر رہ گیا اور اس

نے نانباتی سے انگوٹھی برآمد کر کے سلطان کو بھجوا دی۔ میرلطیم لکھتا ہے کہ:

”معلوم نہیں اس ستم ظریفی کا ہلاکوں خاں پر کیا اثر ہوا لیکن قاہرہ

کے بازاروں میں لوگ یہ قصہ سن سن کر قہقہے لگاتے تھے۔“

بعض روایتوں میں ہے کہ جب اس واقعہ کی شہرت پھیلی تو تاتاری بیبرس

کی ہمت اور شجاعت سے خاصے مرعوب بلکہ ہراساں ہو گئے اور سوچنے لگے

کہ جس سلطنت کا حکمران اتنا جری اور بیدار مغز ہے اس سے وہ کیسے ٹکر لے

سکیں گے؟ فی الحقیقت دشمن کے علاقے میں اس طرح دوزہ کرنے سے بیبرس

کا مقصد بھی یہی تھا کہ وہ تاتاریوں کو یہ تاثر دے سکے کہ ان کی فوجی تیاریاں اس کی نگاہوں

سے مخفی نہیں ہیں۔

بعض مورخین نے لکھا ہے کہ بیرس نے اس خفیہ دورے میں تاتاریوں کے طریق جنگ کے بارے میں پیش بہا معلومات حاصل کیں اور بعد میں اپنی افواج کو منظم کرنے میں ان معلومات سے خاطر خواہ فائدہ اٹھایا۔

ایک مرتبہ سلطان ایک عیسائی زائر کا بھیس بدل کر صلیبیوں کے مقبوضہ علاقوں میں جا داخل ہوا اور کئی ماہ تک ان کے فوجی استحکامات کا بھرپور جائزہ لینے میں مصروف رہا۔ کہا جاتا ہے کہ وہ تقریباً بیس ایسے قلعے دیکھتے ہیں کامیاب ہو گیا جو صلیبیوں کی عسکری قوت کا مرکز تھے۔ ایک دن تو اس نے عجیب تم ظریفی کی۔ اس نے ایک قاصد (ایلیچی) کا بھیس بدلا اور ایک ہرن کا شکار لے کر سیدھا انطاکیہ کے (سابق) حاکم بوہمند کے دربار میں جا داخل ہوا۔ انطاکیہ پر مسلمانوں کے قبضہ کے بعد وہ ٹریپولی آ گیا تھا اور ان دنوں وہ اسی شہر میں محصور تھا۔ سلطان نے بوہمند کے سامنے ایلیچیوں کے انداز میں عرض کیا :

”عالی جاہ میرے آقا الملک انطاہر کو بہت افسوس ہے کہ آپ محصور ہونے کی وجہ سے اپنا شکار کا شوق پورا نہیں کر سکتے۔ انہوں نے یہ تازہ شکار آپ کی خدمت میں بطور ہدیہ بھیجا ہے۔ اسے قبول فرمائیے۔ میرے آقا آپ کے شکر گزار ہوں گے۔“

جب سلطان قلعے سے باہر چلا گیا تو بوہمند کو کسی نے خبر دیا کہ یہ قاصد خود الملک انطاہر بیرس تھا۔ یہ سن کر بوہمند کے جسم پر لرزہ طاری ہو گیا۔

ساتویں صلیبی جنگ (۱۲۷۰ء) میں لوٹیس نہم اور اس کے حلیفوں کا صلیبی لشکر ٹیونس میں طرح تباہ و برباد ہوا اس کا ذکر ایک دوسری جگہ آچکا ہے بعض مسلم مورخین کا بیان ہے کہ سلطان بیرس لوٹیس نہم کی مجنونانہ بیچارگی خبر سن کر خود بھیس بدل کر اپنے

چند معتقدوں کے ساتھ ٹیونس پہنچا اور ٹیونس فوج کو اعلیٰ درجہ کی جنگی چالیں سکھانے کا اہتمام کیا۔ اس جہم سے سلطان کا مقصد یہ تھا کہ صلیبی فوج کو مشرق و مغرب میں قدم رکھنے سے پہلے ہی کچل دیا جائے۔ چنانچہ اپنی بیدار مغزی کی بدولت وہ اس مقصد کے حصول میں پوری طرح کامیاب ہوا۔

سلطان بیرس کے بارے میں اس قسم کے کئی محیر العقول واقعات صدیوں تک عرب ممالک کے تہوہ خانوں اور مجالس لطف و تفریح کی جان بنے رہے ہو سکتا ہے کہ ان واقعات میں کسی قدر مبالغہ آرائی کا دخل بھی ہو لیکن ان کو محض بے اصل کہہ کر رو نہیں کیا جاسکتا۔ کیونکہ موافق اور مخالف کبھی مورخین نے سیرت بیرس کے اس پہلو کا کسی نہ کسی رنگ میں ضرور ذکر کیا ہے۔ ایسے واقعات کو بیرس کی حرارتِ ہمت سے بھی تعبیر کیا جاسکتا ہے لیکن ہم انہیں اس کی بیدار مغزی ہی کا ایک پہلو سمجھتے ہیں کیونکہ ایسے خفیہ دُوروں سے سلطان کا مقصد ایک طرف تو عام لوگوں کے دکھ درد اور ان کے دوسرے مسائل سے واقفیت حاصل کرنا تھا اور دوسری طرف اپنی مملکت کو دشمن کے حملوں سے محفوظ رکھنا تھا۔ چنانچہ اس کی بیدار مغزی نے جہاں اسے اپنے عوام کی آنکھوں کا تار اٹا دیا تھا وہاں دشمنوں کے دلوں پر اس کی ایسی ہیبت طاری کر دی تھی کہ وہ اس کا نام سن کر تھرتھرتے تھے۔

## عسکری قابلیت

املاک الظاہر بیرس ان معدودے چند مسلمان جرنیلوں میں ہے جن کی غیر معمولی عسکری قابلیت کا صرف اپنی ہی نے نہیں بلکہ بیگانوں نے بھی اعتراف کیا ہے۔ مسلم مورخین اگر اس کو موسیٰ بن نصیر طارق بن زیاد، الپ ارسلان، نور الدین زنگی اور صلاح الدین ایوبی کے پایہ کا جرنیل سمجھتے ہیں تو غیر مسلم مورخین اس کو

جو لیس سیزر کا ہم پلہ قرار دیتے ہیں۔ سلطان کو ایک معمولی حیثیت سے تخت حکومت تک پہنچانے میں جو عوامل کارفرما ہوئے ان میں اس کی ذاتی شجاعت اور عسکری قابلیت کا سب سے نمایاں حصہ ہے سلطان جس طرح ذاتی طور پر تمام فنون جنگ دکھورہ کی سواری، شمشیر زنی، تیراندازی اور نیزہ بازی وغیرہ میں یکتا تھا۔ اسی طرح وہ جنگی منصوبوں اور نقشوں کی تیاری میں بھی کمال دہے کی مہارت رکھتا تھا۔ اس کی زندگی کا بیشتر حصہ جنگ و جہاد میں گزرا اور منصورہ کی جنگ سے آبلستین کے معرکہ تک وہ بیسیوں چھوٹے بڑے معرکوں میں شریک ہوا۔ ہر محاذ اور ہر معرکہ میں اس نے اپنی بے پناہ عسکری قابلیت اور قائدانہ صلاحیتوں کا ایسا بھرپور مظاہرہ کیا کہ فتح و نصرت نے ہر جگہ اس کے قدم چومے۔ اس کے معرکوں اور عسکری نظام کی تفصیل دوسرے ابواب میں درج ہے۔ اس پر ایک غائر نظر ڈالنے سے معلوم ہو جائے گا کہ وہ ایک عظیم قائد لشکر اور فوجی ماہر تھا۔ اس کی جنگی چالیں اور عملہ کے طریقے ایسے حیرت انگیز ہوتے تھے کہ دشمن بوکھلا جاتا تھا اور راہ فرار اختیار کرنے یا ہتھیار ڈالنے پر مجبور ہو جاتا تھا۔ اس کی فوج کا ایک حصہ برق رفتار دستوں پر مشتمل ہوتا تھا جو گوریلا جنگ لڑنے میں خاص مہارت رکھتے تھے۔ وہ اپنی فوج کو جس سرعت سے حرکت میں لاتا تھا، دشمن اس کا تصور بھی نہ کر سکتا تھا۔ بعض دفعہ وہ کسی قلعہ کے محاصرہ میں شدت سے مصروف ہوتا اور بظاہر ایسا معلوم ہوتا کہ یہ محاصرہ طویل عرصہ تک جاری رہے گا لیکن ایک دن وہ یکایک محاصرہ اٹھا کر کسی دوسرے قلعہ پر حملہ کر دیتا اور اس کو آنا نانا قلعہ کر لیتا۔ کبھی وہ اپنی افواج کے ہمراہ ایک خاص سمت کو روانہ ہوتا اور دوسری سمت کا دشمن اپنے آپ کو محفوظ خیال کرتا لیکن ہوتا یہ کہ سلطانی افواج برق رفتاری سے اپنا رخ بدل کر دوسری طرف کے مطمئن دشمن پر حملہ کر دیتیں اور اس کو خاک چاٹنے پر مجبور کر

دینیں۔ ارضِ شام و فلسطین میں صلیبیوں نے بہت سے مقامات پر مستقل طور پر  
ڈال رکھے تھے اور وہاں نہایت مستحکم قلعے تعمیر کر لیے تھے سلطان نے ان کو  
جس طرح ایک ایک قلعے سے نکالا وہ اس کی عسکری قابلیت کا بہت ثبوت ہے۔  
سلطان نے خبر رسائی اور جاسوسی کا ایسا عمدہ انتظام کر رکھا تھا کہ اس کو دشمن کے  
بد عزائم کا فوراً علم ہو جاتا تھا اور وہ دشمن کو جارحانہ اقدام کرنے سے پہلے ہی اس  
کے اپنے مستقر میں جا دبوچتا تھا۔ اپنے ملک کے اندر رہ کر محض دفاعی جنگ لڑنا  
اس کے نزدیک کمزوری کی دلیل تھی۔ چنانچہ وحشی تاتاریوں کو بھی اس نے کبھی زمینِ مصر  
پر قدم نہ رکھنے دیا اور ہر بار خود آگے بڑھ کر ان سے معرکہ آرا ہوا اس کا ایک خاص  
جنگی حربہ "حملہ بازگشت" تھا۔ اس میں کچھ فوج غنیمت کے لشکر کو جنگ میں الجھا لیتی  
اور پھر آہستہ آہستہ پیچھے ہٹنے لگتی۔ دوسری طرف کچھ جدیدہ دستے کین گاہوں  
میں گھات لگا کر بیٹھ جاتے جو نہی دشمن کا لشکر ان کی زد میں آتا یہ تازہ دم دستے  
اس پر نہایت تندی و تیزی سے حملہ کر دیتے۔ اس طوفانی حملے کے سامنے کوئی مضبوط  
سے مضبوط لشکر بھی مشکل سے ٹھہر سکتا تھا۔ اگرچہ یہ حربہ دشمن بھی استعمال کر سکتا تھا  
لیکن اس کے تدارک کے لیے سلطان اپنے چند گوریلا دستے میدانِ جنگ میں دور  
دور تک پھیلا دیتا تھا جو دشمن کو چھپنے کا موقع ہی نہ دیتے تھے اور اگر کبھی دشمن  
گھات لگانے میں کامیاب بھی ہو جاتا تو یہ دستے بجلی کی سی تیزی کے ساتھ مقابلے  
پر پہنچ جاتے اور اس کے ارادے خاک میں ملا دیتے۔

سلطان کی نظر جنگ کے ہر پہلو پر رہتی تھی اور دشمن کو کمر شکن شکست دینے  
کے لیے وہ نہ صرف اپنے تمام وسائل سے کام لیتا تھا بلکہ ہر اس تدبیر پر بھی عمل کرتا  
تھا جو جنگ جیتنے کے لیے مفید ثابت ہو سکتی تھی۔ معرکہ عین جاکوت کے بعد جب  
ہلاکو مصر پر انتقامی حملہ کرنے کے لیے اپنی افواج مجتمع کر رہا تھا تو اس وقت سلطان



نے اس کے مقابلے کے لیے جو تدابیر اختیار کیں ان میں سے ایک یہ بھی تھی کہ اس نے حلب سے لے کر حدود عراق تک تمام جنگلوں کی گھاس اور درختوں کو آگ لگا دی تاکہ تاتاری اگر ادھر کا رخ کریں تو نہ ان کے گھوڑوں کو چارہ مل سکے اور نہ سواروں کو ایندھن کی لکڑی اور درختوں کا سایہ۔ یہ الگ بات ہے کہ ہلا کو خاں کو ادھر آنا نصیب ہی نہ ہوا اور نہ سلطان نے تاتاری غارت گروں کو عبرت ناک تباہی سے دوچار کرنے کے لیے پوسے سامان مہیا کر رکھے تھے۔

سلطان نے صلیبیوں کے جو قلعے فتح کیے ان میں سے کچھ کے متعلق مشہور تھا کہ وہ ناقابلِ تسخیر ہیں اور واقعہ بھی یہ تھا کہ وہ عرصہ دراز سے عالمِ اسلام کا منہ چڑھا رہے تھے۔ سلطان کے عزمِ راسخ کے سامنے ان قلعوں کے استحکامات بلیا میٹ ہو گئے۔ سلطان نے اکثر مفتوحہ قلعوں کو مسمار کر کے زمین کے برابر کر دیا۔ عیسائی مورخین نے سلطان کے اس اقدام پر بڑی لے دے کی ہے اور اس کو وحشیانہ قرار دیا ہے۔ لیکن حقیقت یہ ہے کہ ان قلعوں کا انہدام عسکری نقطہ نگاہ سے نہایت ضروری تھا۔ یہ قلعے سالہا سال تک مسلمانوں کے لیے مصیبت بنے رہے تھے اور ان کا وجود آئندہ بھی مسلمانوں کے لیے خطرناک ثابت ہو سکتا تھا۔ سلطان نے اسی شر کے دفعیہ کے لیے یہ قلعے مسمار کرائے ورنہ جو قلعے اس کے نزدیک عسکری لحاظ سے مسلمانوں کے لیے مفید ثابت ہو سکتے تھے، ان کو اس نے نہ صرف قائم رکھا بلکہ ضروری مرمت کے بعد ان کو مزید مستحکم کر دیا۔

سلطان کا مقابلہ دو طاقتور دشمنوں سے تھا ایک طرف وحشی تاتاری تھے جنہوں نے عالمِ اسلام کے ایک بڑے حصے کو زیرِ و زبر کر ڈالا تھا اور دوسری طرف یورپ کے ”مہذب“ صلیبی جن کا مذہبی جوش جنوں کی حد تک پہنچا ہوا تھا۔ سلطان نے ان دونوں حریفوں سے موثر طور پر نمٹنے کے لیے فوج کی تنظیم و تربیت پر خاص

توجہ دی اور اس کو اس زمانہ کے حالات کے مطابق جنگ اور دفاع کی نہایت اعلیٰ تربیت دلائی۔ اس تربیت ہی کا نتیجہ تھا کہ جن تاتاریوں کو اپنی قدر انداز ہی ہمشیر زنی اور شہسوار سی پر بڑا ناز تھا۔ سلطان کی فوج نے ان کا منہ پھیر کر رکھ دیا۔ اسی طرح صلیبی جنگ جو منجھنیقوں اور گومچنوں وغیرہ کے استعمال میں بڑی مہارت رکھتے تھے لیکن سلطانی فوج نے یہی مشینیں نہایت عمدگی سے استعمال کر کے ان کے بڑے بڑے مضبوط اور مستحکم قلعوں کی اینٹ سے اینٹ بجا کر رکھ دی۔ غرض پندرہ بیس برس کی معرکہ آرا بیوں میں سلطان نے ہر موقع پر اور ہر معرکہ میں اپنی عسکری قابلیت دور اندیشی اور ذہانت کا لوہا منوایا اور اپنے آپ کو تاریخِ عالم کے عظیم ترین جرنیلوں کی صف میں شمار کرنے کا استحقاق حاصل کر لیا۔

## فہم و تدبیر

سلطان کی سیرت کے جس پہلو پر بھی نظر ڈالیں وہ اتنا تابناک دکھائی دیتا ہے کہ ایک پہلو کو دوسرے پر ترجیح دینا نہایت مشکل ہے۔ مبداء فیاض نے اسے منجھد دوسرے اوصاف کے فہم و تدبیر سے بھی حصہ وافر عطا کیا تھا۔ اس نے اپنی سلطنت کے داخلی انتظام میں جس ہوشمندی اور فراست کا ثبوت دیا اور اسے جس بیخ پر استوار کیا اس نے ملک العادل نور الدین زنگی اور مجاہد کبیر سلطان صلاح الدین ایوبی کے دور کی یاد تازہ کر دی لیکن اپنی خارجہ حکمت عملی میں تو اس نے ایسے فقید المثال تدبیر کا ثبوت دیا کہ اگر اس کو اپنے دور کا عظیم ترین سیاست دان اور مدبّر کہا جائے تو اس میں کچھ مبالغہ نہ ہوگا۔ اس کی خارجہ حکمت عملی (Foreign Policy)

کی تفصیل پڑھ کر حیرت ہوتی ہے کہ اس شخص نے کس بلا کا دل و دماغ پایا تھا۔ ایک طرف تو اس نے اردو سٹے زریں (تقیاق) کے نو مسلم تاتاری حکمران سے گہرے

دوستانہ مراسم قائم کر کے لوہے کو لوہے سے ٹکرا دیا یعنی تاتاریوں کو تاتاریوں کے خلاف صف آرا کر دیا۔ اور دوسری طرف اس نے یورپ کے متعدد حکمرانوں کو اپنی بد دوست شخصیت سے ایسا مرعوب و متاثر کیا کہ وہ اس سے دوستانہ معاہدے لانے پر مجبور ہو گئے۔ ایک طرف اس نے شام کی سرحد پر سیل تاتار کے سامنے لوہروں کا بند باندھ دیا اور دوسری طرف خلافت عباسیہ کا اجیاء کر کے قاہرہ کو ملت اسلامیہ کی قوت و شوکت کا مرکز بنا دیا۔ ایک طرف اس نے عکہ کے صلیبیوں سے مصالحت و وقت کے وقت معاہدہ امن کر لیا اور دوسری طرف ونیس اور جینیوا کی عیسائی حکومتوں کو ایک دوسرے سے پھڑا دیا۔

غرض سلطان کے فہم و تدبیر نے اس کو اپنے دور کی ایک اہم ترین عالمی شخصیت بنا دیا تھا۔ وہ نہ صرف بین الاقوامی سیاست سے کمال درجے کی واقفیت رکھتا تھا بلکہ ہر قسم کے حالات سے عہدہ برآ ہونے اور ان سے مفید مطلب نتائج حاصل کرنے کی بھی کما حقہ صلاحیت رکھتا تھا۔ وہ تاتاریوں کی دھڑے بندلیوں و ونیس اور جینیوا کی باہمی رقابت۔ جرمنی کی خانہ جنگی۔ فرانس کی کمزوری اور پاپائے روم کے چوڑے ٹوڑے سے ایسا بانہر تھا کہ خود ان ملکوں کے باشندے بھی اس سے زیادہ معلومات نہیں رکھتے تھے۔

سلطان کی تیزی فہم اور تدبیر کا یہ عالم تھا کہ بعض اوقات وہ مختلف زبانوں کے کاتبوں کو اپنے سامنے بٹھالیتا تھا اور مختلف ملکوں کے حکمرانوں کے نام بیک وقت خطوط لکھوانے شروع کر دیتا تھا۔ لطف یہ کہ ہر خط کا مضمون بھی جداگانہ ہوتا تھا اور زبان بھی دوسری۔ وہ چند فقرے ایک کاتب کو لکھواتا پھر پہلو بدلتا اور دوسرے کاتب کو کچھ فقرے لکھوا دیتا ابھی وہ انہیں احاطہ تحریر میں بھی نہ لانے پاتا تھا کہ سلطان تیسرے کاتب کو لکھوانا شروع کر دیتا جتنے کہ جب وہ اٹھتا تو سارے خطوط مکمل ہو

چکے ہوتے۔

امریکی مورخ ہیرلڈ لیم، سلطان کی ذہانت اور تدبیر کی تصویر ان الفاظ میں کھینچ رہے:

”یہ شخص جو میدان جنگ اور بروہ فروشوں کے بازار کا نفع تحصیل ہے، زبانوں کی روک اور بندش سے آزاد ہے، کیونکہ جب وہ خود سوجھا کرتا ہے تو بڑے اطمینان سے یونانیوں سے یونانی میں، عربوں سے عربی میں اور دریائے نیل کے منبع کے حبشیوں سے ان کی اپنی بولی میں باتیں کرتا ہے۔ کسی اور موقع پر اور کسی اور حیثیت سے وہ اپنے میر منشی سے انجو کے شاہ چارلس اور اہل ونیس کے نام مرسلے لکھواتا ہے۔ ادھر وہ اہل ونیس کی تجارتی کشتیاں لوٹ کے نفع حاصل کرتا ہے۔ ادھر ان کے دشمنوں یعنی اہل جنیوا سے بندرگاہوں پر محصول وصول کرتا ہے۔ ان مغرور شہروں کے سفیروں کو آپس میں لڑا کے مزے سے تماشا دیکھتا ہے۔ یہاں تک کہ اس کے تدبیر سے ان دونوں شہروں کے بیڑوں کے درمیان ارض مقدس کے قریب سمندر میں گھمسان کی لڑائی چھڑ جاتی ہے۔“

فی الحقیقت سلطان تدبیر و سیاست اور فہم و فراست کے لحاظ سے ان اعظم رجال میں سے تھا جن پر ملت اسلامیہ بجا طور پر فخر کر سکتی ہے۔

شگفتہ مزاجی

سلطان باہمہ ہیت و جلالت نہایت شگفتہ مزاج اور خندہ رو تھا۔ ایسے

بہت کم ہوتا تھا کہ اس پر حالت غیظ و غضب طاری ہو۔ اس نے اپنی شگفتہ مزاجی اور دوسرے اوصاف کی بدولت لوگوں کے دلوں میں گھر کر لیا تھا۔ اس کو بے شمار لطیفے اور چٹکے یاد تھے۔ کسی خاص محفل میں ہوتا تو اپنی بذلہ سنجی سے اس کو کثرت زعفران نادیتا۔ باہر نکلتا تو عام لوگوں سے ہنسی مذاق اور چہل کی باتیں کرتا۔ اس طرح اس کو عوام الناس میں ایسی غیر معمولی ہر و لہز ریزی حاصل ہو گئی تھی جو بہت کم حکمرانوں کو نصیب ہوتی ہے۔



نظم مملکت





## سربراہ مملکت

ملوک حکومت کے آغاز میں سرکردہ ملوک امراء اپنے گروہ سے کسی کو اپنا صد یا امیر منتخب کر لیتے تھے۔ یہ امیر منتخب ہو کر بادشاہوں کی طرح تخت نشین ہوتا اور سلطان یا ملک کے لقب سے پکارا جاتا تھا۔ الملک الظاہر سلطان بیبرس بھی اسی طریقہ انتخاب کے ذریعے مسند حکومت پر بیٹھا۔ کچھ عرصہ بعد جب اس نے مصر میں خلافت عباسیہ کا احیاء کیا تو رسمی طور پر سربراہ مملکت کی حیثیت خلیفہ کو حاصل ہو گئی۔ خود سلطان تمام سربراہ اور وہ امراء، علماء، فقہاء اور ملک کے عوام کی ایک کثیر تعداد نے اس کے ہاتھ پر بیعت کی۔ خلیفہ کا نام سکوں پر مسکوک ہوا، خطبوں میں داخل کیا گیا اور شاہی فرمانوں پر "مہر خلافت" ثبت ہونے لگی۔ اس کے ساتھ ہی خلیفہ کو "دربار خلافت" کے ظاہری لوازم بھی مہیا کر دیے گئے لیکن حقیقت میں ان سب باتوں کے باوجود یہ خلافت محض نام ہی کی خلافت تھی۔ خلیفہ کی حیثیت ایک تبرک سے زیادہ نہ تھی۔ حکومت اور ملکی معاملات کے انصرام و انتظام میں اس کو مطلق کوئی دخل نہ تھا۔ اس کی سیاسی قوت کا اندازہ اسی بات سے کیا جاسکتا ہے کہ اس نے سلطان بیبرس کو از خود "امیر المؤمنین" کا لقب دیا۔ حالانکہ خلافت کی روح اور مزاج کا تقاضا یہ تھا کہ خلیفہ کے سوا کسی دوسرے کو اس لقب سے نہ پکارا جاسکے۔ شاید یہی اسباب تھے کہ دوسرے ممالک کے مسلمان حکمرانوں نے مصر کے عباسی خلفاء کو کبھی کوئی اہمیت نہ دی۔ حالانکہ بغداد کے عباسی خلفاء کا گئی گزری حالت میں بھی اتنا وقار تھا کہ بڑے بڑے طاقتور مسلمان حکمران جو بجائے خود مطلق العنان فرمانروا تھے اور اپنے ملکوں میں مطلق السیادتہ تھے بغداد کے

دربارِ خلافت سے سندِ حکومت حاصل کرنا اپنے لیے مایہ سعادت اور طرزہ افتخار سمجھتے تھے۔ اکثر مورخین کا بیان ہے کہ مملوکوں کے دورِ حکومت میں خلیفہ ایک معزز قیدی کی سی زندگی بسر کرتا تھا۔ یہاں تک کہ اس کو مملوک حکمران کے منشاء کے بغیر کسی سے ملنے کی اجازت بھی نہیں تھی۔ مختصر یہ کہ مملکت کے حقیقی سربراہ کی حیثیت سلطان ہی کو حاصل تھی۔ سلطان بیبرس نے چونکہ خلافت کا ایجاب کیا تھا یا یہ کہ وہ ایک ویندار آدمی تھا اس لیے اُس نے اپنی زندگی میں حتی المقدور کوشش کی کہ خلیفہ کے ادب و احترام پر کوئی آنچ نہ آنے پائے تاہم خلیفہ کو سیاسی امور پر حاوی ہونے کی اس نے کبھی اجازت نہ دی۔ علامہ جلال الدین سیوطی کا بیان ہے کہ

”سلطان بیبرس نے ۶۶۳ھ میں قصرِ خلافت پر پہرے بٹھا دیئے اور لوگوں کو حکم دیا کہ خلیفہ کے پاس جا کر نہ بیٹھا کریں کیونکہ اکثر لوگ باہر نکل کر بہت سی لائے یعنی باتیں اڑاتے پھرتے تھے۔“

## حکومت کی ہیئت ترکیبی

مملوکوں کے دورِ حکومت میں مرکزیت کو ہمیشہ خاص اہمیت حاصل رہی۔ سلطان بیبرس کے عہد میں بھی یہی کیفیت تھی۔ حکومت کے تمام اہم عہدیداروں اور اہل کاروں کا عزل و نسب سلطان کے ہاتھ میں تھا۔ نہ صرف انتظامی عدالتی اور عسکری امور پر اس کا مکمل اقتدار تھا بلکہ ملک کا کوئی قانون بھی اس کی مرضی اور منظوری کے بغیر نہیں بنایا جاسکتا تھا۔ تاہم سلطان نے ایک مطلق العنان فرمانروا (یا آمر مطلق) بننے سے احتراز کیا وہ تمام معاملات میں صائب الرائے اصحاب

لے تاریخ الخلفاء للسیوطی

سے ضرور مشورہ کرتا تھا اور پھر ان کے مشوروں پر عمل بھی کرتا تھا۔ دینی امور میں وہ تمام مسالک کے علماء و فقہائے فتویٰ ایسے بغیر کوئی حکم جاری نہیں کرتا تھا۔ اسی طرح عدالتی معاملات میں اس نے قاضیوں کو کامل آزادی دے رکھی تھی کہ مقدمات کے فیصلے کسی رورعایت کے بغیر کریں اور کسی بڑی سے بڑی شخصیت حتیٰ کہ اس کی اپنی ذات کو بھی خاطر میں نہ لائیں۔ مرکز میں سلطان کے ماتحت اہم عہدیدار اور ان کے خزانے یہ تھے۔

## نائب السلطان

سلطان نے ایوبیوں کی تقلید میں "نائب السلطان" کا عہدہ قائم کیا۔ "نائب السلطان" سرکردہ امراء و مقربین بارگاہ سے منتخب کیا جاتا تھا اور مرتبہ کے لحاظ سے دوسرے تمام وزراء پر فوقیت رکھتا تھا گویا اس کی حیثیت زیر عظم کی تھی۔ ضرورت کے وقت وہ تمام امور حکومت میں سلطان کو مشورہ دیتا اور اس کے احکام کو عمل میں لاتا تھا۔ بعض مواقع پر وہ سلطان اور رعیت کے درمیان واسطہ بھی بنتا تھا۔ سلطان جب کبھی دارالحکومت سے باہر جاتا تو حکومت کا نظم و نسق چلانے کی ذمہ داری نائب السلطان ہی کے سپرد ہوتی تھی۔ اس دوران

۱۷۰۰ء میں سلطان کو جنگوں اور رعایا کی خبر گیری وغیرہ کے سلسلے میں اکثر دارالحکومت سے باہر جانا پڑتا تھا۔ چونکہ اس کی غیر موجودگی میں کاروبار حکومت چلانے میں قوت ہوتی تھی اس لیے اس عہدہ کا قیام ناگزیر سمجھا گیا۔ اس کے ساتھ ہی سلطان نے کچھ ایسے انتظامات بھی کر رکھے تھے کہ نائب السلطان کو اپنی خود مختاری اور اقتدار قائم کرنے کا کوئی موقع نہیں مل سکتا تھا:

میں اس کو سلطان کے مکمل اختیارات حاصل ہوتے تھے یہاں تک کہ وہ جاگیرداروں کو بھی دے سکتا تھا اور اعلیٰ عہدوں پر فائز بھی کر سکتا تھا۔

## وزیر الصحت

سلطان جب کبھی کسی جنگی مہم یا سرکاری دورے پر جاتا تو اس کے ساتھ ایک دوسرا وزیر ہوتا تھا جس کو "وزیر الصحت" کہا جاتا تھا۔ دورانِ سفر میں وزیر الصحت سلطان کا مشیر کار ہوتا تھا اور اس کے احکام کو نافذ کرتا تھا۔

## استاداریا استادوار

سلطان کے دربار میں یہ ایک اہم عہدہ تھا اس کے اصطلاحی معنی "مہتمم امور خانہ" (Major Domo) کے ہیں۔ اس عہدہ پر کسی بڑے امیر کو مقرر کیا جاتا تھا۔ اس کا کام سلطانی محلات کا انتظام کرنا تھا۔

## دوادار

دوادار کے ذمے یہ فرض تھا کہ وہ باہر سے آئے ہوئے خطوط کو سلطان کی خدمت میں پیش کرے اور اس سے کاغذات پر دستخط کرے۔

## امیر جاندار

امیر جاندار "افسر استقبال" کے فرائض انجام دیتا تھا۔ وہ سلطان کی قیادت کے باہر موجود رہتا تھا اور حکومت کے اعلیٰ افسروں اور عمائد سلطنت کا استقبال کرتا تھا۔ اس سے یہ نہ سمجھنا چاہیے کہ وہ ایک دربان کی حیثیت رکھتا تھا۔ حقیقت میں

وہ ایک ممتاز عہدیدار تھا اور اس کو طبقہ امراء سے منتخب کیا جاتا تھا۔

### امیر مجلس

اس کی خصوصی ذمہ داری سلطان کی حفاظت کرنا تھا گویا وہ اس کا ذاتی محافظ تھا اس کو سلطان کے ہمراہ محل کے اندر جانے کی بھی اجازت تھی یہاں تک کہ وہ اس کی خواب گاہ میں بھی جا سکتا تھا۔

### امیر السلام

اس کا فرض ہر قسم کے اسلحہ اور سامان جنگ کا انتظام کرنا تھا۔

### راس نوبۃ الامراء

یہ تمام امراء دولت کا افسر تھا اور ان کی حرکات و افعال کا ذمہ دار تھا اس کا فرض تھا کہ وہ کسی امیر کو بے راہرو نہ ہونے سے اور رعیت کو ان کی زیادتیوں سے محفوظ رکھے۔

### صاحب دیوان النشاء

”دیوان النشاء“ کو آجکل کی اصطلاح میں وزارت خارجہ کہا جا سکتا ہے اس کے افسر اعلیٰ کو ”صاحب النشاء“ یا صاحب دیوان النشاء کہا جاتا تھا۔ وہ بیرونی ممالک سے آئے ہوئے خطوط کو سلطان کے سامنے پیش کرتا تھا اور پھر اس کی ہدایت کے مطابق ان کے جوابات لکھتا تھا۔ اس کا ماتحت عملہ کامیوں کے دو طبقوں پر مشتمل ہوتا تھا ایک کو ”کتاب و سوت“ کہتے تھے اور دوسرے کو

"کتاب الدرر" اول الذکر سلطان کے سامنے بلٹھتے تھے۔ صاحب النشاء سلطان کے سامنے کاغذات پیش کر کے جو احکام حاصل کرتا تھا، کتاب دست ان کو سلطان کے سامنے ہی معرض تحریر میں لاتے تھے۔ مؤخر الذکر ان خطوط اور دستاویزوں کی نقلیں تیار کرتے تھے جو صاحب دیوان النشاء اور کتاب دست مرتب کرتے تھے۔ یہ لوگ خطوط اور فرامین کو ایک مستطیل ورق پر لکھتے تھے جس میں چند جوڑ ہوتے تھے۔ ان دونوں طبقوں کے کاتبوں کی تعداد میں ضرورت کے لحاظ سے کمی بیشی ہوتی رہتی تھی۔ صاحب دیوان النشاء کی حیثیت سلطان کے پرائیویٹ سیکرٹری (مختصر طور پر) کی تھی۔ اس کا عہدہ اگرچہ وزیر کے ہم پلہ نہیں تھا لیکن اپنے فرائض کی اہمیت کے پیش نظر وہ نائب السلطان کے بعد حکومت کا سب سے بڑا عہدہ دار سمجھا جاتا تھا۔ فی الحقیقت وہ بیک وقت وزیر خارجہ، فارن سیکرٹری اور پرائیویٹ سیکرٹری کے فرائض انجام دیتا تھا۔ سلطان بیبرس کا "صاحب دیوان النشاء" امیر فخر الدین لقمان تھا جو نہ صرف فن النشاء میں غیر معمولی مہارت رکھتا تھا بلکہ سیاسی سوچ بوجھ کے لحاظ سے بھی منفرد حیثیت کا مالک تھا۔

### رئیس العسکر

سلطان کی بڑی افواج کے سپہ سالار کو "رئیس العسکر" یا رئیس العسا کر کہتے تھے وہ براہ راست سلطان کے سامنے جواب دہ ہوتا تھا اور فوج کے مختلف دستوں کے تمام سالار دکانڈر اس کے ماتحت ہوتے تھے۔ رئیس العسکر کو عام طور پر ملوک امراء میں سے منتخب کیا جاتا تھا۔ بڑی بڑی مہموں کی قیادت سلطان خود کرتا تھا یا رئیس العسکر سلطان کے عہد میں جو لوگ رئیس العسکر کے عہدے پر مامور ہوتے ان میں امیر قلادون الفی دجوبعد میں مصر و شام کا فرمان روا بنا اور

امیر آقنقر نے برائی شہرت پائی۔

## امیر البحر

جنگی جہازوں اور بحری فوج کے افسر اعلیٰ کو امیر البحر کہتے تھے۔ جنگی جہازوں کے تمام کپتان و قائد اس کے ماتحت ہوتے تھے اور وہ خود برابر اسے سلطان سے احکام حاصل کرتا تھا۔

## امیر تعمیر

یہ مملکت کی تمام تعمیرات کا افسر اعلیٰ ہوتا تھا۔ سرکاری عمارات کی تعمیر پہلے باندھنا۔ بند باندھنا۔ نہریں کھودانا۔ سڑکیں بنانا اور اسی قسم کے دوسرے کام کرانا امیر تعمیر کی ذمہ داری تھی۔ اس کو آجکل کی اصطلاح میں چیف انجینئر تعمیرات سمجھنا چاہیے۔

## حکومت کے اہم شعبے

سلطان بیبرس کی حکومت کے اہم شعبے یہ تھے:

۱۔ صیغہ قضا یا عدالت۔

۲۔ صیغہ فوج (برہی و بحری)

۳۔ محکمہ پولیس

۴۔ شعبہ مالیات۔ بیت المال بھی اسی شعبہ سے متعلق تھا۔ ٹیکس (محاصل)

کے افسر اعلیٰ کا درجہ وزیر کے برابر تھا۔

۵۔ محکمہ ڈاک

## ۴۔ صیغہ احتساب

۷۔ امورِ رفاہ عامہ، ان میں اوقاف، مدارس و مکاتب، سرائیں، مہمان خانے، سرکاری عمارتیں، شفا خانے، پل، سڑکیں، نہریں اور ایسی قسم کی دوسری چیزیں شامل تھیں۔

۸۔ شعبہ صنعت و حرفت و تجارت، سرکاری و غیر سرکاری صنعتیں اور درآمد و برآمد کی جانے والی سمجھی اشیاء اسی شعبہ سے متعلق تھیں۔

ان شعبوں کو چلانے کے لیے آگے آگے وفاق قائم تھے جن کی شاخیں مرکز اور سوبوں میں سر جگہ پھیلی ہوئی تھیں ان کو چلانے کے لیے اعلیٰ افسروں سے لے کر چھوٹے ملازموں تک کا انتخاب نہایت احتیاط سے کیا جاتا تھا اور اس معاملہ میں قابلیت اور دیانت کو خاص اہمیت دی جاتی تھی۔ ان سب شعبوں کی تفصیل آگے بیان کی گئی ہے۔

## ملک کی انتظامی تقسیم

سلطان پیرس کی مملکت کے دو بڑے حصے یا بازو (Wings) تھے مصر اور شام۔ سلطان نے ان دونوں حصوں کو انتظامی اعتبار سے بہت سے صوبوں میں تقسیم کر دیا تھا۔ ہر صوبہ کو نیابت (نیابہ) کہا جاتا تھا۔ سلطان کی طرف سے ہر ایک صوبہ میں ایک نائب (گورنر) مقرر تھا۔ یہ نائبین (گورنر) باہم ارباب سیف ہوتے تھے اور مملوک فوجی امراء میں سے منتخب کیے جاتے تھے ان کا خاص فرض سلطانی احکام کا نفاذ اور خراج اور چنگی وصول کرنا تھا تاہم سلطان نے ان کو داخلی معاملات میں بہت حد تک خود مختاری سے رکھی تھی اور وہ اپنے صوبہ کے داخلی حالات کے مطابق نظم و نسق چلانے میں آزاد تھے چونکہ وہ



صرف مرکز کے سامنے جواب دہ تھے اور ایک کو دوسرے کے ساتھ کوئی واسطہ نہ ہوتا تھا اس لیے مرکزی حکومت کے خلاف ان کے باہم اتحاد کا کوئی امکان نہ تھا۔ سیاسی مضامنتوں کے پیش نظر کسی گورنر کو زیادہ طویل عرصے تک اس عہدہ پر قائم نہیں رہنے دیا جاتا تھا۔ بیرون کے عہد میں شاید ہی کوئی گورنر اپنے عہدہ پر تین سال سے زیادہ رہا ہو۔ گورنر چھوٹے پیمانے پر اسی طرح دربار کرتے تھے جس طرح سلطان قاہرہ میں اپنی نیابت میں وہ منجملہ دوسرے امور کے داخلی امن و امان اور عدلی و احتساب کے بھی پوری طرح ذمہ دار تھے۔ سلطان اپنے وقائع نویسوں کے ذریعے گورنروں پر کڑی نظر رکھتا تھا اگر اس کو کسی گورنر کے خلاف بد عنوانی کی شکایت موصول ہوتی تو وہ اس کا پوری طرح محاسبہ کرتا تھا۔

مصر کے بڑے بڑے صوبے یا نیابتیں یہ تھیں:

اشمونین۔ الجیزہ۔ بہنسا۔ قوص۔ بلبیس۔ ومنہور۔ ومیاط۔ قلیوب۔  
محلہ الکبریٰ۔ منوف۔

شام کے اہم صوبے یہ تھے:

دمشق۔ حلب۔ حماة۔ صفد۔ اکرک اور طرابلس (اس میں طرابلس کا

شہر شامل نہیں تھا کیونکہ اس پر صلیبیوں کا قبضہ تھا)

ان میں دمشق کا صوبہ سب سے بڑا تھا۔ یہ بیروت، حص اور تندم تک پھیلا

ہوا تھا اور اس میں لبنان اور فلسطین کے کئی علاقے بھی شامل تھے۔ سلطان کے

ممالک محروسہ میں قاہرہ کے بعد دمشق کا درجہ تھا اور وہ یہاں اکثر آکر دربار کیا کرتا

تھا۔ لبنان اور فلسطین کے جو حصے صوبہ دمشق میں شامل نہیں تھے وہ دوسرے

صوبوں میں ضم کر دیے گئے تھے۔

## صیغہ عدالت

بے لاگ عدل کو اسلام میں بنیادی اہمیت حاصل ہے چنانچہ مسلمان حکمران بالعموم عدلیہ کو خاص اہمیت دیتے رہے ہیں۔ یہ الگ بات ہے کہ کسی حکمران نے اس پر کلم توجہ دی اور کسی نے اس کو ایک اسلامی حکومت کا مقصد وجود قرار دے کر دوسرے تمام محکموں پر فوقیت دی۔ سلطان بیبرس، مسلم حکمرانوں کے مؤخر الذکر طبقے سے تعلق رکھتا تھا۔ اس سے پہلے خلفائے بنو امیہ، بنو عباس اور بنو فاطمہ کے دور عروج میں نظام عدالت بھی اوج کمال پر پہنچا ہوا تھا لیکن ان کے دورِ انحطاط میں نظام عدالت میں بھی انحطاط رونما ہو گیا اور اس میں جگہ جگہ رختے پڑ گئے۔ سلطان نور الدین محمود زنگی اور صلاح الدین ایوبی نے اپنے ممالک محروسہ میں نظام عدالت کو پھر صحیح بنیادوں پر قائم کیا اور اپنی انصاف پسندی اور معدلت گستری سے خلفائے راشدینؓ کے مبارک عہد کی یاد تازہ کر دی۔ ان کے بعد نظام عدالت میں پھر اضمحلال کے آثار پیدا ہو گئے اور اس میں کئی خرابیاں پیدا ہو گئیں۔ بہر صورت عدلیہ کا ڈھانچہ کسی نہ کسی صورت میں قائم رہا۔ ممالیک کی حکومت کا آغاز ہوا تو پہلے تین حملوک حکمرانوں کو تو تنظیم مملکت کی طرف توجہ کرنے کی مہلت ہی نہ ملی البتہ جب مسند اقتدار بیبرس کے قبضے میں آئی تو اس نے عدلیہ کی طرف خاص توجہ دینی شروع کی اور تھوڑے ہی عرصہ میں اپنے ممالک محروسہ کے اندر ایک مثالی نظام عدالت قائم کر دیا۔ اس کے نظام عدالت کی صورت یہ تھی :-

## محکمہ قضاء

شروع شروع میں تمام ملک میں ایک ہی قاضی القضاة اہمیت جیسٹس تھا اور  
 اس کے ماتحت قاضیوں کی ایک کثیر تعداد ملک کے مختلف علاقوں میں عدالت کے  
 فرائض انجام دیتی تھی۔ قاضی القضاة کا تقرر سلطان اپنی صوابدید کے مطابق کرتا تھا  
 اور ماتحت قاضیوں کے تقرر اور تنزیل کے کلی اختیارات قاضی القضاة کے ہاتھ میں  
 تھے۔ مملوک حکومت کے پہلے قاضی القضاة علاء الدین سنجاری تھے۔ ان کے بعد  
 انتظامی مصلحتوں کے تحت ملک میں دو قاضی القضاة مقرر کیے گئے قاضی برہان الدین  
 سنجاری اور قاضی تاج الدین بن بنت الاعز اول الذکر قاہرہ اور ساحلی علاقوں کی عدالت  
 کے فرائض انجام دیتے تھے اور مؤخر الذکر مصر اور سمندر کے محاذی علاقوں کے۔  
 ۶۶۰ء میں سلطان بیبرس کسی معاملہ میں قاضی برہان الدین سے ناراض ہو گیا اور  
 ان کو معزول کر کے قاضی القضاة کے دونوں عہدوں کو پھر یک جا کر دیا۔ چنانچہ  
 قاضی تاج الدین بن بنت الاعز تین سال تک ساری دولت مملوکیہ کے قاضی القضاة  
 رہے۔ قاضی موسیٰ شافعی مسلک کے پیرو تھے اور اپنے مسلک میں بہت شدت  
 کرتے تھے۔ چنانچہ وہ نہ صرف ماتحت قاضیوں کے تقرر میں تعصب سے کام لیتے  
 تھے بلکہ سلطان کے ایسے احکام کو بھی جن کو وہ اپنے مسلک کے خلاف سمجھتے تھے  
 نافذ نہیں کرتے تھے۔ سلطان علاء و فقہاء کا بیجا احترام کرتا تھا اس لیے اس نے قاضی  
 تاج الدین سے چنداں تعرض نہ کیا۔ لیکن ایک واقعہ نے اس کا پیمانہ مضرب زد کر دیا اور  
 ۶۶۳ء میں اس نے عدالتی نظام کا ڈھانچہ یکسر تبدیل کر دیا۔ واقعہ یہ ہوا کہ قاضی  
 تاج الدین کے حکم سے جمعہ کی نماز ہمیشہ شافعی مذہب کے مطابق ایک ہی جگہ جامع کا  
 میں ہوا کرتی تھی۔ سلطان نے قاضی موسیٰ سے درخواست کی کہ نماز جمعہ "جامع ازہر"

میں پڑھنے کی اجازت دیں۔ انہوں نے اس کی اجازت دینے سے انکار کر دیا۔ اس پر سلطان نے ایک حنفی قاضی صدر الدین بن سلیمان سے فتویٰ طلب کیا۔ انہوں نے اس کے جواز کا فتویٰ دیا۔ چنانچہ اس کے بعد سلطان کے حکم سے نماز جمعہ جامع ازہر میں ہونے لگی۔ اس کے ساتھ ہی سلطان نے ایک فرمان کے ذریعہ قاضی القضاة کے عہدے کی مرکزی حیثیت ختم کر دی اور ایک کے بجائے مذاہب ازلیہ کے چار قاضی القضاة مقرر کر دیے۔ قاضی تاج الدین بن بنت الاعز شافعی مذہب کے قاضی صدر الدین بن سلیمان حنفی مذہب کے، قاضی شرف الدین ابو حفص عمر بن صالح مالکی مذہب کے اور قاضی شمس الدین محمد بن شیخ عماد الدین حنبلی مذہب کے قاضی القضاة بنائے گئے۔ ان اصلاحات کے بعد قاضی تاج الدین کی حیثیت صرف شافعی مذہب کے قاضی کی رہ گئی۔ تاہم ان کے علم و فضل کے پیش نظر سلطان نے "وراثت" اور "اموال یتامی" کے محکموں پر ان کی سیادت قائم رکھی۔

کسی امکانی اختلاف کا انسداد کرنے کے لیے سلطان نے ان چاروں بڑے قاضیوں کے فرائض، اختیارات، حدود کار اور علاقوں کی باقاعدہ نشان دہی کر دی۔ ان قضاة ازلیہ کو اپنے ماتحت قاضی مقرر کرنے کے اختیارات بھی حاصل تھے۔ ان کے علاوہ سلطان نے فوج کے لیے ایک قاضی مقرر کیا۔ وہ تمام فقہاء جو مملوک دستوں کے ساتھ ہوتے تھے اسی قاضی کے حکم سے مقرر کیے جاتے تھے اور اسی کے حکم سے ان کا تبادلہ یا تنزیل عمل میں آتا تھا۔ قاضی فوج کے اختیارات کو صرف افواج سلطانی تک ہی محدود تھے لیکن اعزاز کے لحاظ سے اس کو دوسرے قضاة پر برتری حاصل تھی اور عدالت عظمیٰ میں وہ سلطان کے ساتھ بیٹھتا تھا۔

عدالت عظمیٰ یا عدالت گاہ سلطانی

پیرس سے پہلا مملوک سلطان ہے جس نے الملک العادل سلطان نور الدین محمود زنگی کی

عدالت عالیہ (دارالعدلی) کی طرز پر عدالتِ عظمیٰ یا عدالتِ گاہِ سلطانی قائم کی۔ اس کی حیثیت موجودہ دور کے سپریم کورٹ (Supreme Court) بلکہ اس سے بھی بڑھ کر تھی۔ کیونکہ اس عدالت کے چیف جسٹس (Chief Justice) کے فرائض سربراہ مملکت (سلطان) خود سرانجام دیتا تھا۔ عدالتِ عظمیٰ کی طرز پر سرحدوں میں بھی اعلیٰ عدالتیں قائم کی گئیں جو گورنروں کے ماتحت ہوتی تھیں تاہم گورنروں کے فیصلوں یا احکام کے خلاف عدالتِ عظمیٰ میں اپیل کی جاسکتی تھی۔

عدالتِ عظمیٰ کا دائرہ کار مندرجہ ذیل امور پر محیط تھا۔

- ۱۔ ایسے احکامات کو نافذ کرنا جن کا نفاذ محتسب اور قاضی نہ کر سکتے ہوں۔
- ۲۔ گورنروں اور قاضی القضاة کے فیصلوں کے خلاف اپیلوں کی سماعت۔
- ۳۔ سول محکموں کے افسروں اور محزروں کے خلاف مقدموں کی سماعت۔
- ۴۔ فوج اور پولیس کے افسروں کے خلاف مقدمات کی سماعت۔
- ۵۔ تنخواہوں میں تخفیف یا ان کی ادائیگی میں تاخیر کے خلاف مقدمات کی سماعت۔
- ۶۔ جہاد۔ عیدین۔ پیامِ رمضان۔ حج۔ جمعہ اور دوسری عبادات کا قیام اور تحفظ۔ سلطان ہر ہفتہ دو شنبہ اور پینچ شنبہ کو عدالتِ عظمیٰ کا اجلاس کرتا تھا۔ اجلاس کے وقت قاضی فوج، سلطان کے پہلو بہ پہلو بیٹھتا تھا اور ان دونوں کے دائیں بائیں قضاة اربعہ۔ صاحبِ دیوانِ انشا۔ احتسابیات اور دوسرے اہم محکموں کے افسر موجود ہوتے تھے۔ ان کے علاوہ عدالت میں مسلح پولیس اور فوج کے آدمیوں کی ایک مناسب تعداد۔ فریقین مقدمہ۔ گواہ اور محزروں کی موجود رہنے تھے۔ مقدمات کی سماعت سے پہلے گواہوں کی ثقات بت کے بارے میں پوری چھان بین کر لی جاتی تھی۔ کسی دروغ گو اور مشکوک چال چلن کے آدمی کی شہادت قبول نہیں کی جاتی تھی۔ مقدمات کے فیصلے قرآن و حدیث کی روشنی

میں کیے جاتے تھے اور عدالت میں موجود تمام قضاۃ سے رائے لی جاتی تھی۔ اگر کسی مسئلہ میں ان کے مابین اختلاف پیدا ہو جاتا تو سلطان حسین رائے کو قرین صواب سمجھتا اس کو قبول کر لیتا اور اسی کے مطابق اپنا فیصلہ دے دیتا۔ اس کا فیصلہ آخری ہوتا تھا اور اس کے خلاف کسی عدالت میں اپیل نہ ہو سکتی تھی۔ عام طور پر مقدمات کے فیصلے ایک ہی اجلاس میں سنائیے جاتے تھے۔ اگر کوئی بہت پیچیدہ مقدمہ ہوتا تو اس کا فیصلہ دو یا تین تاریخوں میں کر دیا جاتا۔ اس سے زیادہ کسی مقدمہ کو طول نہیں دیا جاتا تھا۔ تاہم مظلوموں کی فریاد رسی کے لیے سلطان نے اپنے آپ کو عدالت عظمیٰ کا پابند نہیں رکھا تھا۔ بلکہ وہ ہر وقت اور ہر موقع پر مظلوموں کی شکایات سنتے اور ان کو رفع کرنے کے لیے تیار رہتا تھا اور لوگوں کے حالات کا بچشم خود مشاہدہ کرنے کے لیے اکثر بھیس بدل کر گشت کرتا رہتا تھا۔ اگر خود اس کی ذات کسی مقدمہ میں ماخوذ ہوتی تو وہ ایک عام آدمی کی طرح عدالت میں حاضر ہو جاتا اور عدالت کے فیصلے کی لفظاً و معنیاً تعمیل کرتا۔

سلطان پیرس نے اپنا نظام عدالت اتنی مستحکم بنیادوں پر قائم کیا کہ یہ مملوکوں کے پورے دور حکومت میں جاری رہا۔ بحری اور برہمنی مملوکوں کے دور حکومت کی مجموعی مدت ۲۴۴ برس ہے اور کسی نظام کا اتنی طویل مدت تک جاری رہنا بجائے خود اس کے ارفع و اعلیٰ ہونے پر دال ہے۔

## صیغہ احتساب

صیغہ احتساب کے باقاعدہ قیام کا سرانجام سب سے پہلے حضرت عمر فاروق رضی اللہ عنہ کے عہد خلافت میں ملتا ہے۔ اس کے بعد مسلمانوں کی ہر حکومت احتساب کی ہمہ گیر

انادیت کے پیش نظر اس محکمہ کو خاص اہمیت دیتی رہی۔ اموی عباسی، فاطمی اور ایوبی فرماں رواؤں کے دور حکومت میں یہ محکمہ پوری طرح سرگرم عمل رہا۔ مملوک برسر اقتدار آئے تو انہوں نے بھی اس محکمہ کو قائم رکھا۔ سلطان بہرہ میں اس محکمہ میں خاص دلچسپی لیتا تھا اور محتسبوں کی سرگرمیوں پر کڑی نگاہ رکھتا تھا۔ اس کے عہد میں محتسبوں کے اختیارات اور فرائض یہ تھے۔

- ۱۔ منڈیوں اور بازاروں کی نگرانی کرنا اور زخموں کو حد اعتدال کے اندر رکھنا۔
- ۲۔ کھانے پینے کی چیزوں کا معائنہ کرنا اور ان میں ملاوٹ کا سدباب کرنا۔
- ۳۔ وزنوں، باٹوں اور پیمائش کے آلوں کی نگرانی کرنا۔
- ۴۔ جانوروں پر زیادہ بوجھ لادنے اور ان پر ظلم کرنے سے روکنا۔
- ۵۔ کھانے پینے کی اشیاء کو ڈھانپ کر رکھوانا۔
- ۶۔ مدارس میں استادوں کو طلباء پر بے جا سختی کرنے سے روکنا۔

۷۔ طبیعوں، دواسازوں، عطاریوں، امراض چشم کا علاج کرنے والوں، فصد لینے والوں، سینگیاں لگانے والوں، داغنے والوں، جراحوں، ہڈی بٹھانے والوں، داغظوں، سنجومیوں، کاتبوں اور دوسرے پیشہ وروں کی نگرانی کرنا۔

محتسب طبیعوں، دواسازوں اور امراض چشم کے ماہروں کا امتحان لیتے تھے اگر وہ اس میں کامیاب ہو جاتے تو ان کو اجازت نامے دیے جاتے تھے۔ اجازت نامے کے بغیر نہ وہ کسی کا علاج کر سکتے تھے اور نہ دوائیں بنا کر فروخت کر سکتے تھے۔

۸۔ لوگوں کو خلاف تہذیب و خلاف قانون حرکات و افعال سے روکنا (یہاں تک کہ پانچاموں اور تہہ بندوں تک کو آداب عامہ اور تہذیب و معاشرت کے مطابق باندھنے پر لوگوں کو مجبور کرنا)۔

۹۔ امن عامہ میں خلل ڈالنے والوں سے باز پرس کرنا۔

۱۰۔ احکام شرعی کا تحفظ اور ان کی پابندی کرنا یعنی امر بالمعروف و نہی عن المنکر کا اہتمام کرنا۔

۱۱۔ نادہندوں سے قرض خواہوں کو قرض واپس کرانا اور امانت میں خیانت کرنے والوں کو کیفر کردار تک پہنچانا۔

۱۲۔ لوگوں کی عزت و ناموس کی حفاظت کرنا اس میں اوباشوں اور بدتماشوں کا قلع ترح کرنا بھی شامل تھا۔

سلطان یا متعلقہ صوبائی گورنر کی طرف سے ہر ایک شہر اور ہر ایک قصبہ پر ایک محاسب مع اپنے ماتحت عملہ کے مقرر تھا۔ محاسبوں کے اختیارات بڑے وسیع تھے اور وہ شہری امن و امان کی حفاظت اور عامۃ الناس کو بددیانتی و جسو کے باز پیشہ وروں اور تاجروں سے بچانے کے لیے فوری اقدامات کر سکتے تھے۔ عام حالات میں ایک محاسب تہذیب اور قانونِ ملکی کے خلاف سرکات و افعال کرنے والوں کو گرفتار کر کے فوراً سزا بھی دے سکتا تھا۔ البتہ دینی معاملات سے تعلق رکھنے والے تمام مقدمات اس کو علاقہ کے قاضی یا قاضی القضاة کی عدالت میں پیش کرنے پڑتے تھے۔ اسی طرح سیاسی مجرموں کو سزا دینا اس کے دائرہ اختیار سے باہر تھا۔ پولیس کو حکم تھا کہ وہ محاسبوں اور ان کے عملہ سے پورا تعاون کرے۔ بعض مخصوص حالات میں تو پولیس کے لیے محاسب کے احکام کا نفاذ لازمی قرار دیا گیا تھا۔ سلطان کے نزدیک احتساب و حساب حکومت کے دینی فرائض میں داخل تھا۔ محاسبوں کے افعال و کردار کی نگرانی سلطان خود یا اس کے صوبائی گورنر کرتے تھے۔ اگر کوئی محاسب اپنے فرائض سے غفلت یا کسی دوسری بدعنوانی کا مرتکب پایا جاتا تو اس کو عزت ناک سزا دی جاتی تھی۔ لیکن ایسا موقع شاذ ہی پیدا ہوتا تھا کیونکہ محاسب



کے انتخاب میں انتہائی احتیاط سے کام لیا جاتا تھا اور وہی لوگ اس عہدہ کے اہل سمجھے جاتے تھے جن کی دیانت اور قابلیت کسی شک و شبہ سے بالا ہو۔

## مالیات

### وسائل آمدنی

سلطان بیس کے عہد میں حکومت کی آمدنی کے بڑے بڑے ذرائع

یہ تھے :

#### ۱۔ پیداوار پر لگان

زمین کی پیداوار پر مختلف لگان تھا۔ اس کی شرح میں پیداوار کی زیادتی اور قلت کی بنا پر کمی بیشی ہوتی رہتی تھی۔ سمندر کے محاذی علاقہ کا لگان، پیداوار کی صورت میں لیا جاتا تھا۔ یہ پیداوار گندم، جو، لوبیا، منسور، تل اور پیاز وغیرہ پر مشتمل ہوتی تھی۔ ساحلی علاقوں کا لگان نقد روپیہ کی صورت میں لیا جاتا تھا۔ لگان کی شرح مقرر کرتے وقت زمین کی سمالت کا خیال رکھا جاتا تھا۔ نویر معمولی زر خیز زمینوں پر لگان کی شرح زیادہ تھی اور دوسرے زمینوں پر کم۔

#### ۲۔ زکوٰۃ

حکومت نے زکوٰۃ جمع کرنے کا انتظام اپنے ہاتھ میں لے رکھا تھا۔ زکوٰۃ نقد اور جنس کے علاوہ مال و اسباب کی صورت میں بھی وصول کی جاتی تھی اسکنڈریہ کی بندرگاہ سے جو سامان باہر کے ملکوں کو بھیجا جاتا تھا اس سے

زکوٰۃ وصول کرنے کا خاص انتظام کیا گیا تھا۔  
 ۳۔ قاہرہ کے دار الضرب (ٹکسال) کی آمدنی  
 ۴۔ جزیہ

غیر مسلموں سے ان کی جان و مال کی حفاظت۔ فوجی خدمت سے استثناء  
 اور دوسری سہولتوں کے عوض ایک خاص شرح کے مطابق جزیہ لیا جاتا  
 تھا اس کی مقدار بالعموم دس اور کچھس دس درہم کے درمیان ہوتی تھی۔

۵۔ درآمدی محصول یا چنگی

بیرونی ملکوں سے جو سامان اسکندریہ یا دمیاطہ کی بندرگاہوں کے ذریعہ درآمد  
 ہوتا تھا۔ اس پر دس سے پینتیس فی صد تک درآمدی محصول وصول کیا  
 جاتا تھا۔

۶۔ لاوارث مال و اسباب اور جائداد وغیرہ

۷۔ معدنیات

ان میں نمک، نظرون اور زمرق قابل ذکر ہیں۔

۸۔ مفروروں اور باغیوں کی جائداد

۹۔ مال غنیمت

ترقی زراعت

سلطان نے زراعت کی ترقی میں خاص دلچسپی لی اور آبپاشی کے نہایت  
 عمدہ انتظامات کیے۔ اس نے دریائے نیل سے کئی نہریں نکلوائیں۔ متعدد مقامات  
 پر پتہ بندھوائے اور تالاب بنوائے اس طرح قابل زراعت زمین کے رقبے میں  
 خاصہ اضافہ ہو گیا اور اسی نسبت سے لگان کی آمدنی پہلے سے کہیں زیادہ ہو گئی۔

## ناجائز محاصل کی موقوفی

سلطان نے حکومت کی آمدنی میں اضافہ کے لیے اگرچہ کسی اقدام سے گریز نہیں کیا لیکن یہ اقدامات صرف ناجائز محاصل کی وصولی تک محدود تھے۔ ایسے تمام محاصل جن کو علماء و فقہاء نے شرعاً ناجائز ٹھہرایا تھا، سلطان نے یکسر موقوف کر دیے۔ اسی طرح شراب خانوں، جوئے خانوں، قحبہ خانوں اور نشہ آور اشیاء کے کاروبار سے آمدنی کا سوال ہی پیدا نہ ہوتا تھا کیونکہ سلطان نے ان کی بساط ہی لپیٹ کر رکھ دی اور اس معاملے میں بڑی سختی سے کام لیا۔ ناجائز محاصل یا ذرائع آمدنی تو ایک طرف ایسے سلطان نے بعض ناجائز محاصل میں بھی کمی کر دی ان میں مالی تجارت کا درآمدی محصول خصوصیت سے قابل ذکر ہے۔

## حکومت کی آمدنی میں اضافہ

سلطان کے حسن انتظام اور زراعت و تجارت کی ترقی سے ملک کے خراج میں حیرت انگیز اضافہ ہوا اور اس کی مقدار ایک کروڑ بیس لاکھ دینار تک پہنچ گئی اس سے پہلے فاطمیوں اور ابویہوں کے دور حکومت میں یہ مقدار پچاس لاکھ دینار سے کبھی نہیں بڑھی تھی۔

## ڈاک کا نظام

بنو امیہ اور بنو عباس کے دور اقتدار میں ڈاک کا نظام بہت اعلیٰ پیمانے پر

قائم تھا۔ فاطمیوں اور ایوبیوں کے دورِ حکومت میں ڈاک کا محکمہ قائم تو رہا لیکن اس نے چنداں ترقی نہ کی۔ مملوکوں میں سب سے پہلے سلطان پیرس نے ڈاک کے نظام پر خاص توجہ دی اور مختلف اقدامات کے ذریعے بہت محفوظی مدت میں اس کو انتہائی اونچے معیار پر پہنچا دیا۔ مشرقی اور مغربی تمام ممالک میں اس کے نظامِ ڈاک کی بے حد تعریف کی ہے۔

## محکمہ ڈاک کا مرکز

مملوکوں کے عہد میں مرکزیت کو ہمیشہ خاص اہمیت حاصل رہی۔ چنانچہ پیرس نے نظامِ ڈاک کی ترقی و اصلاح کے لیے سب سے پہلے اس کا مرکز قائم کیا۔ یہ مرکز قلعہ جبل میں تھا جو قاہرہ کے مشرق میں جبل مقطم کے پاس واقع تھا۔ یہ قلعہ ۵۷۲ھ میں سلطان صلاح الدین ایوبی نے تعمیر کرایا تھا۔ اس قلعہ سے چار راستے مختلف سمتوں کو نکلتے تھے۔ ایک راستہ اسکندریہ تک، دوسرا قوص تک، تیسرا اومیاط اور غزہ تک اور چوتھا عیناب تک جاتا تھا۔ یہ بحر احمر کی ایک اہم بندرگاہ تھی جہاں ہندوستان، چین اور حبشہ سے جہاز آتے تھے۔ مصر سے عازمین حج بھی یہاں آتے تھے اور پھر وہاں سے سمندر کے راستے جدہ پہنچتے تھے، سرکاری ڈاک قلعہ جبل ہی سے مختلف مقامات کو روانہ کی جاتی تھی اسی طرح گورنروں اور قاضیوں کے خطوط بھی اسی جگہ پہنچتے تھے۔ پیرس کے عہد میں مصر میں ہر تین یا چار دن کے بعد دیا ہفتے میں دو بار، باہر سے ڈاک آتی تھی۔

## ڈاک کی چوکیاں یا ڈاک خانے

سلطان نے تمام ممالک محروسہ میں جا بجا ڈاک کی چوکیاں قائم کر دی تھیں۔

یہ چوکیاں ڈاک کے چھوٹے مرکزوں یا ڈاک خانوں کا کام بھی دیتی تھیں۔ ڈاک کی چوکی یا ڈاک خانہ کھولنے میں اس بابت کا خاص خیال رکھا جاتا تھا کہ یہ کسی آباد گاؤں کے قریب ہو اور وہاں پانی باقراط ملتا ہو۔ ڈاک کے ہر مرکز میں انسانوں اور جانوروں کے لیے خور و نوش اور دوسری ضروریات کا مناسب ذخیرہ رہتا تھا اور اس کی حفاظت کا بھی مناسب انتظام کیا گیا تھا۔ ڈاک کے ملازمین ان مراکز میں نہایت آسائش کے ساتھ رات گزار سکتے تھے۔ ہر ڈاک خانہ میں تندرست اور تیز رفتار گھوڑوں کی ایک مناسب تعداد بھی رہتی تھی۔ یہ گھوڑے ڈاک کو ایک جگہ سے دوسری جگہ پہنچانے کے لیے کام میں لائے جاتے تھے اور ان کے لیے سلطانی نشان ضروری ہوتا تھا۔ ڈاک کے مرکزوں سے ڈاک تقسیم بھی ہوتی تھی اور دوسری جگہوں کو بھیجنے کے لیے لی بھی جاتی تھی۔

## محکمہ ڈاک کا افسر اعلیٰ

محکمہ ڈاک کا نگران دیوان انشاء کا افسر ہوتا تھا۔ وہی ڈاک کے بڑے اور چھوٹے مرکزوں کا انتظام کرتا تھا اور وہی ڈاک کے ملازمین کی بھرتی کا ذمہ دار تھا۔

## ڈاک کی تختیاں

محکمہ ڈاک کا افسر اعلیٰ اپنے دفتر میں چاندی کی بہت سی تختیاں محفوظ رکھتا تھا۔ ان تختیوں کے ایک طرف "لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ" و "دِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ" و "لَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ" ہ ضرب بالقاهرة المحروسة" لکھا ہوتا تھا اور دوسری طرف "عز المولانا السلطان .. . . . سلطات الاسلام والمسلمين" کندہ ہوتا تھا۔ جب کوئی چٹھی رسالہ ڈاک کے

کر روانہ ہوتا تھا تو ایک تختی اس کو سے دی جاتی تھی وہ یہ تختی اپنے گلے میں لٹکاتا تھا۔ جب سرکاری کام سے فارغ ہو جاتا تو اسے اتار کر دفتر میں جمع کر دیتا تھا۔ ڈاک کے کسی ملازم کو ضرر پہنچانا یا اس کے کام میں رکاوٹ ڈالنا سخت جرم تھا۔ ان کی حفاظت کی ذمہ داری علاقہ کے ناظم کے سپرد تھی۔

## ہوائی ڈاک

آج سے سات سو برس پہلے کے ماحول میں "ہوائی ڈاک" کی اصطلاح کچھ عجیب سی معلوم ہوتی ہے۔ لیکن یہ واقعہ ہے کہ سلطان بیبرس کے عہد میں "برہی ڈاک" کی طرح "ہوائی ڈاک" کا نظام بھی نہایت اعلیٰ پیمانے پر قائم تھا۔ یہ ایک بات ہے کہ اُس وقت ہوائی ڈاک ہوائی جہازوں کے بجائے نامہ بر کبوتروں کے ذریعہ بھیجی جاتی تھی۔ بیبرس سے پہلے مجاہد اعظم سلطان نور الدین محمود زنگی والی شام مصر

(۱۱۴۶ء تا ۱۱۶۳ء) ناصر الدین اللہ عباسی خلیفہ بغداد (۵۴۵ء تا ۵۶۲ء) اور مصر کے فاطمی خلفاء، ڈاک بھیجنے کے لیے نامہ بر کبوتروں سے وسیع پیمانے پر

پر کام لے چکے تھے۔ بیبرس سر یہ آرائے حکومت ہوا تو اس نے نامہ بر کبوتروں کے محکمہ کو از سر نو قائم کیا اور اس کی توسیع و ترقی کے لیے بڑی سرگرمی دکھائی۔

اس نے نامہ بر کبوتروں کا مرکز برہی ڈاک کے مرکز اعلیٰ کے ساتھ ہی قلعہ جبل میں قائم کیا جہاں ان کے رہنے کے لیے خاص قسم کے برج بنوائے اور اس کے ساتھ

ہی ان کو سدھاتے اور ان کی غور و پرداخت کے لیے خاص انتظامات کیے۔ ان کبوتروں سے بالعموم سرکاری ڈاک کی ترسیل کا کام لیا جاتا تھا اور ان کے لیے

مناسب فاصلوں پر خاص منزلیں یا پوکیاں بنائی گئی تھیں۔ ان چوکیوں کا درمیانی

فاصلہ برہی ڈاک کی چوکیوں کے درمیانی فاصلے سے زیادہ ہوتا تھا۔ کبوتروں کی ڈاک



حما سے معرہ

معرہ " حلب

حلب " بمسنی

قرتین " تدمر

تدمر " قباقب

قباقب " رجبہ

عام طور پر ایک ہی مضمون کے دو خط لکھے جاتے تھے اور ان کو دو کبوتروں کے ذریعہ روانہ کیا جاتا تھا۔ دوسرا کبوتر پہلے کبوتر کے روانہ ہونے کے دو گھنٹے بعد چھوڑا جاتا تھا۔ یہ ایک احتیاطی تدبیر تھی کہ اگر پہلے کبوتر کو کوئی حادثہ پیش آجائے تو دوسرا کبوتر پیغام پہنچا دے۔ خط کو کبوتر کے بازوؤں یا پروں کے نیچے ایسے طریقے سے باندھا جاتا تھا کہ اگر بارش آجائے تو بھگینے نہ پائے۔

نامہ بر کبوتر کو روانہ کرنے سے پہلے اس بات کا خاص خیال رکھا جاتا تھا کہ وہ بھوکا پیاسا نہ ہو اور اس وقت بارش برسنے کا احتمال بھی نہ ہو۔ جو کبوتر خاص سلطان کے نام خط لاتا تھا اس کی چونچ پر سُرخ رنگ کر دیا جاتا یا کوئی اور خاص نشان لگا دیا جاتا تھا۔ جب یہ کبوتر قلعہ جیل میں پہنچتا تو سلطان کو فوراً مطلع کیا جاتا تھا اور اس بات کا لحاظ نہیں رکھا جاتا تھا کہ وہ کھانا کھا رہا ہے یا بستر خوب پر ہے۔ سلطان اطلاع ملتے ہی قلعہ جیل میں پہنچ جاتا تھا اور خود اپنے ہاتھ سے کاغذ کھولتا تھا اور اسے پڑھ کر مناسب احکام صادر کر دیتا تھا۔ اگر سلطان سفر میں ہوتا اور اس کے نام کا کوئی خط ہوتا تو نامہ بر کبوتر سلطان کی قیامگاہ سے قریب ترین دیوانی ڈاک کی، چونکی پر اترتا اور سلطان خود وہاں جا کر خط وصول کرتا کسی دوسرے کو یہ خط کھولنے اور پڑھنے کی اجازت نہیں تھی۔



نامہ زیر کمبوزوں کے ذریعہ بھیجے جانے والے خطوط ایک خاص قسم کے  
 کاغذ پر لکھے جاتے تھے جس کو "ورق الطیر" کہا جاتا تھا۔ ان خطوط کے لکھنے میں  
 انتہائی اختصار سے کام لیا جاتا تھا۔ ان پر حاشیہ چھوڑا جاتا تھا اور نہ ان کے  
 آغاز میں بسم اللہ اور دوسرے القاب و آداب لکھے جاتے تھے البتہ ان کے  
 آخر میں تاریخ اور وقت ضرور لکھا جاتا تھا۔ خط کی عبارت حشو و زوائد سے بالکل  
 پاک ہوتی تھی اور یہ "حسینا اللہ و نعم الوکیل" کے الفاظ کے ساتھ ختم ہوتی  
 تھی۔ مختصر یہ کہ برہمی ڈاک کے نظام کی طرح عہد بیبرس میں ہوائی ڈاک کا نظام  
 بھی انتہا مربوط اور مکمل تھا کہ سلطنت میں خواہ کیسے ہی دور دراز مقام پر کوئی حادثہ  
 یا غیر معمولی واقعہ پیش آتا تو دو تین دن کے اندر اس کی اطلاع لازماً سلطان کو  
 پہنچ جاتی تھی۔ ڈاک کا یہ اعلیٰ نظام نہ صرف داخلی نظم و نسق کو بہتر بنانے بلکہ  
 بیرونی دشمنوں سے بھی مؤثر طور پر نسبتاً میں سلطان کا زبردست متحد و معاون  
 ثابت ہوا ہے۔

## فوج

سلطان بیبرس نے "قلعہ تاتار" اور صلیبی جنگوں کا زمانہ پایا چنانچہ تاتاری  
 غارت گروں اور صلیبی جنونیوں سے نبرد آزما ہونے کے لیے اس نے ایک  
 زبردست فوج تیار کی۔ مختلف مورخین نے اس کے فوجی نظام کے بارے  
 جو کچھ لکھا ہے اس کا خلاصہ یہ ہے :

### برہمی فوج

برہمی فوج کے دو حصے تھے "مملوکین سلطانی" اور "جنود حلقہ"

اول الذکر خالص مملوکوں پر مشتمل فوج تھی۔ یہ مملوک سلطان کے ہم وطن تھے اور ان کو سلطانی تقرب حاصل تھا۔ سلطان نے چھوٹی عمر کے مملوکوں کو نہایت کثرت سے خریدا تھا اور پھر ان کی پرورش اور تعلیم و تربیت پر خاص توجہ دی تھی سب سے پہلے ان کو نوشت و خواندہ قرآن اور شعائر اسلام کی تعلیم دی جاتی تھی۔ اس مقصد کے لیے متعدد "پچھیرا" (مملوک لڑکوں کے) دستے بنائے گئے تھے اور ہر ایک دستے کے لیے ایک فقیہ مقرر کر دیا گیا تھا مملوک لڑکوں کے سن بلوغ تک یہ تعلیم جاری رہتی۔ اس کے بعد ان کو نہایت اعلیٰ پیمانے پر فوجی تربیت دی جاتی تھی۔ جب وہ تمام فتون جنگ میں طاق ہو جاتے تھے تو ان کو سلطانی فوج میں بھرتی کر لیا جاتا تھا۔ امراء دربار انہی مملوکوں سے منتخب کیے جاتے تھے۔ اس خالص مملوک فوج کو بھی ان تین حصوں میں تقسیم کر دیا گیا تھا۔

- ۱۔ یا قاعدہ فوج۔ اس کے تمام اخراجات حکومت برداشت کرتی تھی۔
- ۲۔ سلطانی مملوک۔ ان کے اخراجات سلطان خود برداشت کرتا تھا یہ بالعموم سلطان کی ذاتی حفاظت کا فرض انجام دیتے تھے لیکن ضرورت پڑنے پر ان سے عام فوجی خدمت بھی لی جاسکتی تھی۔
- ۳۔ امراء کے مملوک۔ سلطان نے اپنے خاص امراء کو اجازت دے رکھی تھی کہ وہ مملوکوں کی ایک خاص تعداد اپنے پاس رکھیں۔ ان مملوکوں کے اخراجات امراء برداشت کرتے تھے۔ اور مملوک ان امراء کی ذاتی حفاظت کے علاوہ جنگی معرکوں میں دوسری فوج کے دوش بدوش لڑتے تھے۔ مملوک فوج کا ہیڈ کوارٹر (صدر مقام) جزیرہ روضہ کے سلطانی قلعہ میں تھا اس قلعہ میں ہر قسم کا جنگی ساز و سامان اور ایشیائے خورد و نوش کثیر مقدار میں موجود تھیں اور اس کے برجوں میں مملوک امراء قیام پذیر رہتے۔

## جنود حلقہ

یہ سلطان کی عام فوج تھی جو مختلف علاقوں کے جنگ جڑوں پر مشتمل تھی ان میں عرب، مصری، عراقی، یمنی، شامی، فلسطینی، سوڈانی، بربری اور گرو خاص طور پر قابل ذکر ہیں۔

اس فوج کو بھی پانچ حصوں میں تقسیم کر دیا گیا تھا۔

۱۔ پیدل دستے

۲۔ سوار دستے

۳۔ رضا کار دستے

۴۔ محفوظ دستے

۵۔ مشینی دستے

میدان جنگ میں سلطان باقاعدہ فوج اور رضا کار فوج کے دستوں کی ایک مناسب تعداد بیک وقت حرکت میں لاتا تھا۔ باقی دستے تھوڑے تھوڑے وقفے کے بعد ایک دوسرے کی جگہ لیتے رہتے تھے۔ محفوظ دستے صرف ضرورت پڑنے پر جنگ میں شامل ہوتے تھے۔

مشینی دستوں کے ذمے یہ کام تھے:

۱۔ فوج کے گزرنے کے لیے راستہ تیار کرنا۔

۲۔ ندی نالوں پر پل بنانا۔

۳۔ کسی شہر کے محاصرے میں منجیقیاں، وہابے اور دوسرے قلعہ شکن

آلات استعمال کرنا۔

سامان ادھر سے ادھر لے جانے کے لیے اور فوج کے لیے رسد اور

دوسری ضروریات کی بہم رسانی کا معقول انتظام تھا۔ اس مقصد کے لیے اونٹ  
بچر اور گھوڑے استعمال کیے جاتے تھے۔

بیمار اور زخمی سپاہیوں کے علاج کے لیے طبیبوں اور جراحوں کی ایک  
معقول تعداد بھی فوج کے ساتھ رہتی تھی ان کو روٹی، پٹیاں، دوائیں، جراحی کے  
آلات اور دوسری ضروری اشیاء حسب طلب فراہم کی جاتی تھیں۔

فوج اور امراء کے مخصوص مراتب اور امتیازات تھے۔ خود و حلقہ میں ہر  
چالیس سپاہیوں پر ایک افسر ہوتا تھا۔ میدان جنگ میں ان سپاہیوں کی صف بندی  
اور نگرانی اسی افسر کے ذمہ تھی۔ وہ اپنے سپاہیوں کو معمولی سزا تو دے سکتا تھا  
لیکن سلطان یا نائب السلطان کی اجازت کے بغیر اپنے کسی سپاہی کو برخاست  
نہیں کر سکتا تھا۔

مورخین نے سلطان کی باقاعدہ فوج کی تعداد کی تصریح نہیں کی لیکن مختلف  
کوائف سے اتنا ضرور معلوم ہوتا ہے کہ ضرورت پڑنے پر سلطان دو لاکھ ایک اس  
سے بھی کچھ زیادہ فوج آنا نانا میدان جنگ میں لاسکتا تھا۔

## فوج کا لباس

سلطان کی فوج کا لباس (دردی یا یونی فارم) بالعموم یہ تھا سر پر زرد کلاہ  
بغیر عاتق کے اور جسم پر سوتی قبائے جس کے جیب و گریبان تنگ ہوتے تھے اور  
جس میں بٹنوں کی جگہ روٹی کی ٹھوس گھنڈیاں لگی ہوتی تھیں۔ فوج کے مختلف طبقے  
مختلف رنگ کی قبائیں پہنتے تھے۔ ان کا رنگ عام طور پر سفید نیلا یا سرخ ہوتا  
تھا۔ فوج کے کئی دستوں کو لوہے کی مضبوط زبردیں بھی ہیا کی جاتی تھیں جو  
میدان جنگ میں پہنتے تھے۔

## اسلحہ

سلطان بیسوں کی افواج کے عمومی ہتھیار تلوار، نیزہ اور تیر و کمان تھے۔ یہ ہتھیار زیادہ تر دمشق اور قاہرہ میں بنائے جاتے تھے اور ان کی ساخت نہایت عمدہ اور مضبوط ہوتی تھی۔ ان کے علاوہ سلطانی افواج منجنيقوں اور دبالوں کے استعمال میں بھی بڑی مہارت رکھتی تھیں۔ کسی شہر یا قلعہ کے محاصرے میں اگر منجنيقوں کی سنگ باری دیواریں توڑنے میں ناکام رہتی تو پھر دبابے استعمال کیے جاتے۔ دبابہ لکڑی کا ایک برج ہوتا تھا جس میں اوپر تلے کئی درجے ہوتے تھے اور نیچے پہیے لگے ہوتے تھے اس میں تیر اندازوں اور سنگ اندازوں کے علاوہ کچھ ایسے فوجیوں کو بھی بٹھا دیا جاتا تھا جو خاص آلات کے ذریعہ دیواروں میں شکاف ڈالنے میں مہارت رکھتے تھے۔ پھر اس کو ریتے ہوئے آگے بڑھاتے تھے اس طرح قلعہ کی دیواروں کے نیچے پہنچ جاتے تھے اور ان کو آلات کے ذریعے توڑ دیتے تھے۔

## جاگیریں

سلطان بیسوں کے عہد میں فوجیوں اور امراء کو جاگیریں عطا کی جاتی تھیں۔ فوج کے مختلف عہدے دار ایک ایک علاقے پر قابض ہوتے۔ ان کا ایک منصب مقرر ہوتا اور فرائض میں یہ ہوتا کہ حسب طلب ایک مقررہ تعداد میں فوج لے کر دربار حکومت میں حاضر ہوں۔ چنانچہ وہی عہدے دار زمیندار کی حیثیت رکھتے اور وہاں کے باشندے عام کاشت کار ہوتے۔ جاگیریں عام طور پر بیعادی ہوتی تھیں۔ جب جاگیر کے پٹے کی مدت ختم ہو جاتی تھی یا جاگیر دار مر جاتا تھا تو

یہ جاگیر حکومت کی ہو جاتی تھی البتہ نمایاں خدمات انجام دینے والے معتاد اور فنانڈ  
 جاگیرداروں کی جاگیریں موروثی بھی کر دی جاتی تھیں۔ فوج اور امراء کے لیے جاگیر  
 کے علاوہ مالِ غنیمت سے بھی حصے مقرر تھے۔ سلطان کے عہد میں صلیبیوں اور  
 دوسرے دشمنوں کے خلاف اکثر معرکہ آرائیاں ہوتی رہتی تھیں ان لڑائیوں  
 میں بے شمار مالِ غنیمت ہاتھ آتا تھا۔ فوج کا ہر سپاہی حصہ رسدی کے مطابق  
 ان کا حق دار تھا۔ چنانچہ مالِ غنیمت کی کثرت کی وجہ سے سلطان کی فوج کے  
 امراء اور سپاہی عام طور پر خوش حال تھے۔ علاوہ انہیں حکومت کی طرف سے فوج  
 کو خورد و نوش وغیرہ کے الاؤنس کی صورت میں مقررہ رقمیں بھی دی جاتی تھیں۔  
 بعض دفعہ یہ رقوم ایسے امراء کی اولاد کو بھی دی جاتی تھیں جن کے پاس جاگیریں  
 نہیں ہوتی تھیں۔

جاگیرداری کا یہ نظام سلطان بیبرس نے ایوبیوں سے ورثے میں پایا تھا  
 دورِ حاضر میں یہ نظام کچھ عجیب سا معلوم ہوتا ہے۔ لیکن اُس زمانہ کے حالات  
 کے پیش نظر یہی نظام ملک کے بہترین مفاد میں سمجھا گیا تھا کیونکہ یہ نہ صرف  
 زراعت اور پیداوار میں غیر معمولی ترقی کا ضامن تھا بلکہ اس کی بدولت ایک زبردست  
 فوج بھی نہایت قلیل مدت میں بغیر کسی دقت کے فراہم ہو سکتی تھی۔

## بحری فوج

بیبرس سے پہلے مصر کی فاطمی حکومت کا بحری بیڑا خاصا طاقتور تھا ان کے  
 بعد ایوبی آئے تو انہوں نے بھی اپنے بحری بیڑے کی قوت بڑھانے کی طرف خاص  
 توجہ کی چنانچہ ان کا زبردست بحری بیڑا مدت تک صلیبیوں کے بحری حملوں کا  
 منہ توڑ جواب دیتا رہا۔ لیکن جوں جوں ایوبیوں کا آفتاب اقتدار ڈھلنا گیا ان کے بحری

بیڑے کی قوت بھی گھٹتی گئی۔ یہاں تک کہ لوگ بحری فوج میں بھرتی ہونے سے گریز کرنے لگے۔ مملوکوں کی حکومت کا آغاز ہوا تو انہوں نے اپنے بحری بیڑے کو پھیر ایک فعال قوت بنانے کی بھرپور کوشش کی۔ چنانچہ بیڑے نے برسرِ اقتدار آ کر اس کام میں ذاتی دلچسپی لی۔ اس نے اسکندریہ اور دیماط میں جہاز سازی کے دو نئے کارخانے قائم کیے اور ان کے لیے ہر قسم کی سہولتیں مہیا کیں۔ جزیرہ <sup>ضربہ</sup> میں پہلے ہی جہاز سازی کا ایک عظیم الشان کارخانہ قائم تھا۔ سلطان نے اس کو مزید وسعت اور ترقی دی۔ ان کارخانوں کو "دارالصناعة" کہا جاتا تھا اور سلطان وقتاً فوقتاً ان کا معاشرہ کرتا رہتا تھا۔ جہاز بنانے کے لیے ایک خاص قسم کی لکڑی استعمال کی جاتی تھی۔ سلطان نے دوسرے مقاصد کے لیے اس لکڑی کا استعمال ممنوع قرار دیا تھا۔ یہ لکڑی زیادہ تر لبنان کے جنگلات سے حاصل کی جاتی تھی۔ حکومت ان جنگلات کی کڑی نگرانی کرتی تھی۔

سلطان بیڑے کا جنگی بیڑا، صنعت کے اعتبار سے اُس دور کے ترقی یافتہ جہازوں اور کشتیوں پر مشتمل تھا۔ اس کے جہاز مضبوط چوبی تختوں کے ہوتے جو لوہے کی میخوں سے جڑے جاتے اور ڈانڈوں اور بادبانوں کے ذریعہ چلائے جاتے تھے۔ سامانِ رسد، اسلحہ اور گھوڑے لے جانے کے لیے کشتیاں یا چھوٹے جہاز استعمال کیے جاتے تھے۔

۶۶۹ء میں سلطان نے ایک جنگی بیڑا قبرص روانہ کیا لیکن بدقسمتی سے یہ بیڑا اس جزیرے کے قریب پہنچ کر ایک خوفناک سمندری طوفان میں پھنس کر تباہ ہو گیا۔ سلطان کو اس بیڑے کی تباہی سے سخت صدمہ پہنچا لیکن وہ بڑا باہمت انسان تھا۔ اس نے نئے دلوں اور عزم کے ساتھ نیا بیڑا تیار کرنا شروع کر دیا اور اس وقت تک دم نہ لیا۔ جب تک کہ برباد شدہ بیڑے کی تلافی نہ ہو گئی

نیا بیڑا تیار ہوا تو سلطان کی بحری قوت پہلے سے بھی بڑھ گئی۔ اس کا اندازہ اس بات سے کیا جاسکتا ہے کہ اس کے عہد میں کسی دشمن کو سفارت کے واسطے مصر یا شام پر حملہ کرنے کی کبھی جرأت نہ ہوئی۔

## محکمہ پولیس

مملوکوں سے پہلے پولیس کا محکمہ "دیوان الشرطہ" کہلاتا تھا اور اس محکمہ کے افسرِ اعلیٰ کو "صاحب الشرطہ" کہتے تھے۔ مملوکوں کے عہد میں اس کو "والی" کا لقب دیا گیا البتہ کو تو الی شہر کو "صاحب عسس" کہا جاتا تھا۔ بیبرس کے عہد میں قاہرہ کے علاوہ ہر صوبائی دار الحکومت میں بھی پولیس کا ایک بڑا دفتر قائم تھا۔ پولیس کے بنیادی فرائض میں امن و امان کا قیام، مجرموں اور قاتلوں کی گرفتاری اور ان پر حد جاری کرانا، محتسبوں کو ان کے فرائض موثر طور پر انجام دینے میں مدد دینا، قضاۃ کے فیصلوں پر بشرطِ ضرورت قوت سے عمل کرانا اور اسی قسم کے دوسرے امور شامل تھے۔ ان کے علاوہ پولیس کے سپرد یہ کام بھی تھے۔

۱۔ عیدین۔ جمعہ۔ جنازوں۔ سلطانی جلوس اور دوسرے اجتماعات کے موقع پر نظم و ضبط قائم رکھنا۔

۲۔ کفن چوروں سے قبروں کی حفاظت کرنا اور ان کو بے حرمتی سے بچانا۔

قاہرہ میں آگ بجھانے کا عملہ (فائر بریگیڈ) بھی کو تو الی شہر کے ماتحت

تھا۔ اس عملے کا مرکزی دفتر "سوقِ حالون کبیر" میں تھا۔ اس دفتر میں ساری رات

روشنی رہتی تھی۔ آگ بجھانے کا عملہ عشاء کی نماز کے بعد وہاں آجاتا تھا اور صبح

تک وہیں رہتا تھا۔ اگر کہیں آگ لگ جاتی تو لوگ اس دفتر میں اطلاع دیتے



اور یہ عملہ فوراً جائے حادثہ پر پہنچ کر آگ بجھانے میں مشغول ہو جاتا تھا۔ اس عملہ کی آمدورفت کے لیے خاص انتظام کیا گیا تھا تاکہ وہ کم سے کم وقت میں موقع پر پہنچ سکے۔ اس میں ستنے۔ لوہار اور بڑھئی وغیرہ کافی تعداد میں بھرتی کیے گئے تھے۔ ۱۶۶۳ء میں قاہرہ میں متعدد مقامات پر آگ لگی۔ اس وقت آگ بجھانے والے عملہ نے بڑی مفید خدمات انجام دیں اور آگ پر قابو پا لیا ورنہ کچھ موقعوں پر سارے شہر میں اس کے پھیل جانے کا خدشہ تھا۔

## صنعت و حرفت اور تجارت

### صلاح الدین سے پیرس تک

الملك الظاهر بیبرس کا بیشتر زمانہ حکومت جنگ و جہاد میں گزرا لیکن یہ دیکھ کر حیرت ہوتی ہے کہ اس کے عہد میں زراعت کی طرح صنعت و حرفت اور تجارت کو بھی غیر معمولی فروغ حاصل ہوا۔ دراصل اس میدان میں ترقی کا آغاز سلطان صلاح الدین ایوبی کے زمانے ہی سے ہو گیا تھا۔ مصر، شام، لبنان اور فلسطین کی زمینیں سونا اگلتی تھیں اور وہاں ایسی جنسوں کی بہتات تھی جن کو اہل یورپ نے خواب میں بھی نہیں دیکھا تھا۔ اسی طرح ان ممالک کے باشندوں کو یورپ کی کئی چیزوں کی احتیاج تھی۔ جب صلیبی جنگوں کے نتیجے میں مشرقی اور مغربی اقوام میں ربط و ضبط پیدا ہوا تو انہوں نے ایک دوسرے سے مختلف جنسوں کا مبادلہ کرنے کی ضرورت محسوس کی۔ جب ان کے حکمرانوں نے اس رجحان کی حوصلہ افزائی کی تو مشرق وسطیٰ اور قسطنطنیہ کے مابین زور شور سے تجارت شروع

ہو گئی۔ بیزنطینی تاجروں کو مصر اور شام کے اسلامی شہروں میں رہنے کی اجازت  
 مل گئی اور مصری و شامی تاجروں کو قسطنطنیہ میں سکونت پذیر ہونے کا پروانہ مل  
 گیا۔ فلپ کے حتمی "تاریخ شام" میں لکھتا ہے :-

"صلاح الدین کے زمانے سے شامی تاجروں نے قسطنطنیہ

میں اقامت اختیار کر لی تھی اور صلاح الدین کی درخواست پر

شہنشاہ قسطنطنیہ نے ان کے لیے ایک مسیحی بنوائی تھی اسی

طرح مصری تاجر بھی وہاں جا پہنچے تھے۔ بیزنطینی تاجروں کو شام

مصر میں ایسی ہی مراعات حاصل تھیں۔ اور کسی اجنبی تاجر کو

بیزنطینی دار الحکومت میں مستقل اقامت کی اجازت نہ تھی۔"

صلاح الدین کے بعد جب الملک العادل ایوبی اور پھر ملک الظاہر بیبرس

نے اہل ونیس اور دوسرے یورپی تاجروں کو خاص مراعات دیں تو مشرق وسطیٰ

اور یورپ کے درمیان تجارت اور کمال پہنچ گئی۔ قاہرہ، دمشق اور حلب

وغیرہ میں اہل ونیس و جینیوا اور دوسرے یورپی تاجروں نے اپنے محلے بنا کر مستقل

اقامت اختیار کر لی۔ اسی طرح مصری اور شامی تاجر یورپی ممالک میں جا کر مقیم ہو

گئے۔ اس سے یہ نہ سمجھنا چاہیے کہ شرق اوسط کے لوگوں کی تجارت صرف

اہل یورپ تک محدود تھی۔ فی الحقیقت ایران، ہندوستان، عراق، چین اور کئی

دوسرے ایشیائی اور افریقی ممالک سے ان کے تجارتی تعلقات زیادہ گہرے اور

بہت قدیم تھے۔ شرق اوسط کی تجارتی منڈیوں میں یورپی تاجروں کے ساتھ

ایشیائی اور افریقی ممالک کے تاجر بھی نہایت کثرت سے دکھائی دیتے تھے۔

**مشرق و مغرب کی تجارت کا مرکز**

اس زمانہ میں قاہرہ کو بڑی اہمیت حاصل ہوئی اور وہ تمام دنیا کی نگاہوں

کام کرنا بن گیا۔ بیبرس جیسے طاقتور فرماں روا کا دار الحکومت ہونے کی وجہ سے اس کی سیاسی اہمیت تو پہلے ہی مسلم تھی۔ لیکن بین الاقوامی تجارت کی گرم بازاری نے اس کو مشرق و مغرب کے درمیان ایک بہت بڑی منڈی کی حیثیت بھی دے دی۔ قاہرہ کی یہ اہمیت مملوکوں کے سائے دور حکومت میں برقرار رہی۔

## اہم برآمدات

بیبرس کے زیر اقتدار ممالک (مصر، شام، فلسطین، لبنان وغیرہ) سے جو چیزیں باہر کے ملکوں (بالخصوص یورپی ممالک) کو بھیجی جاتی تھیں ان میں سے چند اہم برآمدات کے نام یہ ہیں:

چینی (شکر)، روئی، بلوڑی اور گلی ظروف، کتان، سوتی اوریشمی

کپڑے، کبیل، ریشم، عطریات، بخورات، رنگین اور منقش

کپڑے، قالین، چینی کے برتن، موتی کمانچ کی چیزیں، ہاتھی

دانت اور دھات کی چیزیں، گرم مسالے، لکڑی کے چھچھے

اور برتن، روغن زیتون، صابون، بعلبکی قبائیں، معدنی نمک۔

اونی کپڑے، نخل (ایک کپڑا جو اونٹ کے بالوں اور ریشم سے بنا

جاتا تھا)، جواہرات، کچھ خاص قسم کے مچل وغیرہ۔

## اہم درآمدات

جو چیزیں باہر کے ملکوں سے درآمد کی جاتی تھیں ان کے نام یہ ہیں:

ریشم (چین سے)، اونی اور سوتی کپڑے (مغربی ممالک سے)، گرم مسالے

(عرب، لنکار، ہندوستان اور دوسرے گرم ممالک سے)، موتی (خلیج فارس

سے) ہاتھی دانت اور شتر مرغ کے پیر (سوڈان سے) ان درآمدات کا بہت  
 ساحہ معتدل منافع پر یورپی ممالک کو برآمد کر دیا جاتا تھا۔

## اہم اشیائے تجارت اور ان کے مراکز

سلطان بیسرس کے عہد میں اہم اشیائے تجارت اور ان کے مراکز یہ تھے :-

|                                                                                                                                                                                                                   |   |                                        |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---|----------------------------------------|
| چینی (شکر، روئی، عطریات، ریشم کی<br>ڈوری والی کمانیں، جواہرات،<br>منقش اور رنگین کپڑے، قالین،<br>ریشم، کاشی کی چیزیں، چینی کے برتن<br>ہاتھی دانت اور دھات کی چیزیں،<br>تلواریں، نیزے، تیر اور ترکش،<br>گرم مسالے۔ | { | دمشق اور لبنان کا علاقہ                |
|                                                                                                                                                                                                                   |   | مشق، حلب، لبنان اور فلسطین<br>کے علاقے |

|                                                  |   |                           |
|--------------------------------------------------|---|---------------------------|
| روغن زیتون، صابون اور بھری<br>جہاز بنانے کی لکڑی | { | لبنان اور فلسطین کے علاقے |
|                                                  |   | قاهرہ، یافہ               |

|                                      |   |                    |
|--------------------------------------|---|--------------------|
| موتی اور جواہرات<br>آلاتِ حرب<br>کبل | { | قاهرہ، دمشق، دمياط |
|                                      |   | لبنان کا علاقہ     |

|                                                                |   |                                                |
|----------------------------------------------------------------|---|------------------------------------------------|
| اوتی کپڑے اور اون<br>بلوری اور گلی ظروف<br>سوتی اور ریشمی کپڑے | { | سیوط (اسیوط) اشمونین اور لبنان<br>کے بعض علاقے |
|                                                                |   | شام، لبنان اور فلسطین کے علاقے                 |

|                                                                  |   |                                |
|------------------------------------------------------------------|---|--------------------------------|
| شام، لبنان اور فلسطین کے علاقے<br>شام، لبنان اور فلسطین کے علاقے | { | شام، لبنان اور فلسطین کے علاقے |
|                                                                  |   | شام، لبنان اور فلسطین کے علاقے |

لبنان کا علاقہ  
فلسطین اور لبنان کے علاقے

اسکندریہ - میاٹ - جزیرہ روضہ

فلسطین اور لبنان  
شام اور لبنان کے علاقے  
اسکندریہ  
طرانہ

نفس چوٹی برتن اور چمچے

لکڑی کے چمچے اور برتن، جن پر سونے  
چاندی کے پترے جڑے ہوتے تھے۔

بحری جہاز اور کشتیاں

خمل

مختلف قسم کے پھل

معدنی نمک

نظرون

سیوط (اسیوط)

جالی دار ریشمی شالیں - اعلیٰ قسم کے  
سیاہ و سرخ مٹی کے برتن - کتان -  
اور اس سے بنی ہوئی چتریں - قدیم  
ارمنی طرز کے بنے ہوئے قالین -  
افیون -

الاشمونین

ارمنی قرمزی قالین - اون اور ادنی  
کپڑے -

بین الاقوامی تجارت کے علاوہ اندرون ملک میں بھی تجارت زوروں پر تھی  
اور ملک کے مختلف علاقوں کے مابین مال تجارت کا مبادلہ کثرت سے ہوتا تھا۔  
پھل - اناج اور کھانے پینے کی دوسری اشیاء بلاروک ٹوک ایک علاقے سے  
دوسرے علاقے میں بھیجی جاسکتی تھیں۔ مال تجارت کی نقل و حمل بحری جہازوں  
کشتیوں - اونٹوں اور گھوڑوں کے ذریعے ہوتی تھی۔

## صیغہ رفاہ عام رپبک ورس

علامہ شبلی نعمانیؒ "الفاروق" میں لکھتے ہیں :

"یہ صیغہ (یعنی رپبک ورس) زمانہ حال کی ایجاد ہے اور یہی وہ ہے کہ عربی زبان میں اس کے لیے اصطلاحی لفظ نہیں۔ مصر و شام میں اس کا ترجمہ "نظارت نافعہ" کیا گیا ہے۔ اس صیغہ میں مفصلاً ذیل چیزیں داخل ہیں :

سرکاری عمارات۔ تہریں۔ سڑکیں۔ پل۔ شفاخانے۔

دوسرے مورخین نے امور رفاہ عامہ میں اوقاف۔ مدارس و مکاتب۔ سڑکیں اور مہمان خانوں کو بھی شامل کیا ہے۔ آج جب ہم چھ سات سو برس قبل کے حالات قلم بند کرتے ہوئے "صیغہ رفاہ عامہ" کا عنوان قائم کرتے ہیں تو اس کا یہ مطلب نہیں کہ اس دور میں صیغہ رفاہ عامہ (نظارت نافعہ) کے نام سے واقعی کوئی الگ محکمہ قائم تھا۔ دراصل یہ عنوان اس زمانے کے رفاہ عامہ کے کاموں کا مجموعی تاثر دینے کے لیے قائم کیا جاتا ہے ورنہ اس قسم کے ہر کام کی الگ حیثیت تھی اور اس پر مختلف مدوں سے خرچ کیا جاتا تھا۔

الملك الظاہر بیبرس کا عہد تلواروں کی جھنکار، طبل و بوق کی گونج اور صفوف جنگ کے غوغائے رستخیز کا زمانہ تھا۔ اگر ایسے حالات میں عہد بیبرس کی تاریخ کا صفحہ رفاہ عامہ بالکل خالی ہوتا تو چنداں حیرت کی بات نہیں تھی۔ لیکن حیب ہم دیکھتے ہیں کہ کتب تاریخ کے صفحات بیبرس کے کارہائے رفاہ عامہ کے ذکر سے جگمگا رہے ہیں تو فی الواقع حیرت ہوتی ہے ان کارناموں کی فہرست بہت طویل ہے لیکن

ان کی تفصیل میں جانا بے کار ہے کیونکہ آج کے مصر و شام میں بیس کے آثار خیر  
میں سے محض چند ایک کسی نہ کسی صورت میں موجود ہیں باقی سب فنا کے گھاٹ  
اتر گئے اور آج ان کا کوئی نام تک نہیں جانتا۔۔۔۔۔ زمانہ بدل گیا۔ ملکوں کی  
حدود بدل گئیں مقامات کے نام بدل گئے اب تو ان ملکوں کے باشندے بھی  
ان کا کھوج لگانے سے قاصر ہیں دوسرا کوئی کیا لگائے گا۔ بہر حال سلطان کے  
رہا ہی کارناموں کا ایک اجمالی خاکہ نیچے درج کیا جاتا ہے۔

## سٹرکیں

سلطان نے نئی سٹرکیں بنانے اور پرانی سٹرکیں درست کرنے پر خاص توجہ  
دی اس طرح اس کے تمام ممالک محروسہ میں سٹرکوں کا جال بچھ گیا جن سے نہ  
صرف عام لوگوں کو فائدہ پہنچا بلکہ فوجوں کی نقل و حرکت کے لیے بھی آسانی پیدا  
ہو گئی۔ اس کے عہد میں مصر و شام کے مراکز ایک عمدہ شاہراہ کے ذریعے ملا  
دیے گئے اور اس پر متعدد جگہ ڈاک کی چوکیاں اور سرائیں قائم کی گئیں۔ عرب مورخین  
کا بیان ہے کہ مصر اور شام کے درمیان آمد و رفت کا اتنا عمدہ انتظام تھا کہ  
سلطان ہفتے کے شروع میں دمشق میں چوگان کھیلنے کے بعد روانہ ہو جاتا اور  
ہفتے کے آخر میں قاہرہ پہنچ کر چوگان کھیلتا۔ اس شاہراہ کے ذریعے ڈاک کی  
ترسیل اور سامان کی حمل و نقل نہایت تیزی کے ساتھ ہو سکتی تھی۔

## اوقاف

مسلمان سلاطین میں دستور تھا کہ ایسی جاگیریں جو ان کی طرف سے مساجد  
مدارس اور شفا خانوں وغیرہ کے متعلق مرحمت ہوتی تھیں، علی العموم وقف سمجھی

جاتی تھیں اور وقت میں شرعاً کسی کو تصرف کرنے کا اختیار حاصل نہیں ہے  
چنانچہ جو نیا حکمران مسند اقتدار پر بیٹھتا وہ کچھ نہ کچھ اپنی طرف سے اضافہ کرتا  
تھا اگر اضافہ نہ کر سکتا تھا تو پرانے اوقاف کو ضرور قائم رکھتا تھا۔ سلطان بیبرس  
سے پہلے مصر و شام وغیرہ میں سلطان نور الدین زنگی اور سلطان صلاح الدین  
ایوبی نے بے شمار مذہبی اور خیراتی اوقاف قائم کیے تھے۔ سلطان بیبرس نے  
ان سب کو نہ صرف قائم رکھا بلکہ اپنی طرف سے بھی ان میں بہت کچھ اضافہ کیا۔  
عرب مورخین کے بیان کے مطابق سلطان کے عہد میں اوقاف کا ایک  
مستقل صیغہ قائم تھا اس صیغہ کی نگرانی کسی نہایت ذمہ دار اور متدین آدمی کے  
سپردہ کی جاتی تھی۔ مصر میں محکمہ اوقاف کے امیر اعلیٰ قاضی القضاة تاج الدین بن  
بنت الاعز تھے۔ سلطان نے اپنی خاص ملکیت لاوارثوں اور بیگسوں کی تجہیز و  
تکفین کے لیے وقف کر دی تھی۔ اسی طرح اُس کے امراء و فہمی کاموں کے لیے  
اپنی جاگیریں وقف کرتے رہتے تھے۔ اوقاف کی آمدنی لاکھوں دینار تک پہنچتی  
تھی اور اس کا بیشتر حصہ مدرسوں، شفا خانوں، مسجدوں، سراؤں اور مہمان خانوں  
پر صرف کیا جاتا تھا۔ اس طرح مدرسوں میں زبردست رونق تھی۔ مسجدیں آباد تھیں  
شفا خانوں سے ہزاروں لوگ بغیر کسی خرچ کے فیض یاب ہوتے تھے اور سراؤں  
اور مہمان خانوں میں مسافر اور اجنبی گھر جیسا آرام پاتے تھے۔ فی الحقیقت عہد بیبرس  
میں علم کی اشاعت اور مخلوق خدا کو فیض پہنچانے میں اوقاف نے بڑا قابل قدر  
کام کیا۔

## مدارس و مکاتب

یورپ حاضر میں تو حصول علم کے ذرائع اور مقاصد یکسر بدل گئے ہیں لیکن



قرون وسطیٰ میں ممالک اسلامیہ کے مسلمان تعلیم و تعلم اور درس و تدریس کو ایک  
 قدسی فریضہ اور کارِ خیر خیالی کرتے تھے اور طلبہ کی امداد و علم کی اشاعت و کتب و  
 سامان درس و تدریس کے وقف۔ مدارس و مکاتب کی بناء و تاسیس اور علماء کی خدمت و  
 اعانت کو ایک مذہبی حکم اور برکت و فلاح دارین کا باعث سمجھتے تھے۔ اگر ان کو  
 کوئی علم پرور حکمران میسر آجاتا تو وہ سونے پر سہاگہ ثابت ہوتا تھا۔ سلطان بیبرس  
 ایک علم دوست اور معارف نواز فرماں روا تھا اہل علم کی قدر وانی اور سرپرستی  
 اس کا فطری خاصہ تھا۔ چنانچہ اس کی سلطنت میں علماء، فضلاء، فقہاء، صلحاء،  
 فلاسفہ، مجتہدین، مؤرخین، ادباء، حکماء، اطباء اور دوسرے اہل فن و ہنر کا ایک ایسا  
 بے نظیر اجتماع ہو گیا تھا کہ سلطان صلاح الدین ایوبی کے دور کی یاد تازہ ہو گئی تھی۔  
 اس سے پہلے سلطان نور الدین محمود زنگی اور ایوبی سلاطین (بالخصوص سلطان  
 صلاح الدین) مصر و شام میں سینکڑوں مدرسے قائم کر چکے تھے جن میں سے بیشتر  
 بیبرس کے عہد تک نہایت حسن و خوبی سے چل رہے تھے۔ سلطان نے ان مدارس  
 کو نہ صرف قائم رکھا بلکہ ان میں بہت سے مدرسوں کا اضافہ بھی کیا۔ تاتاریوں کی  
 یورش میں شام کے جن مدرسوں کو نقصان پہنچا تھا سلطان نے ان کی از سر نو تعمیر یا  
 مرمت کرائی اور ان کو پرانی صورت پر بحال کر دیا۔ ان مدارس کے لیے سلطان نے  
 لاکھوں دینار آمدنی کی جاگیریں وقف کیں اور اس کے اُمرانے اس کارِ خیر میں بڑھ چڑھ  
 کر حصہ لیا۔ غرض عہدِ بیبرس میں گلشنِ علم پر بہار تازہ آگئی اور تشنگانِ علم و درود  
 سے کھینچ کر مصر و شام میں آنے لگے۔

اس زمانہ میں تعلیم و تعلم کے لیے عموماً علیحدہ عمارتیں نہیں ہوتی تھیں بلکہ مساجد  
 کے صحن۔ خانقاہوں کے حجرے اور علماء کے مکانات مدارس یا مکاتب کا کام  
 دیتے تھے۔ تاہم بغداد میں مدرسہ نظامیہ کے قیام کے بعد سے مدرسوں کے لیے

انگ خاص عمارتیں بھی بننے لگیں۔ لیکن ایسی عمارتوں کی تعداد بہت کم تھی اور اکثر مدارس اور مکاتب مساجد ہی سے ملحق تھے ان مساجد کے ساتھ طلبہ اور اساتذہ کے رہنے کے لیے حجرے اور مکانات بنائے جاتے تھے۔ قدیم خانقاہیں اور سلاطین اور بزرگانِ کرام کے روضے اور مقبرے بھی درس گاہوں کا کام دیتے تھے۔ ان مدرسوں کے اساتذہ میں علماء اور فقہاء بھی تھے اور محدثین و مفسرین بھی۔ نحوی اور متکلمین بھی تھے اور فلاسفہ و مجتہدین بھی۔ انہی مدرسوں نے ایسے ایسے اہل کمال پیدا کیے کہ دنیا سے اسلام آج تک ان پر ناز کر رہی ہے۔

سلطان بیسرس کے عہد میں قاہرہ۔ اسکندریہ۔ دمشق۔ حلب۔ حماہ۔ حمص۔ اور بلعربک وغیرہ میں سینکڑوں مدرسے تشریحان علم کو سیراب کر رہے تھے۔ ان مدرسوں میں قاہرہ کے مدرسہ صلاحیہ۔ شافعیہ۔ فحیمیہ۔ زین التجار شریفیہ مشہد امام حسینؑ سو فیہ الازہر۔ ظاہریہ۔ دمشق کے مدرسہ نوریہ۔ عادلیہ۔ ابن عمر۔ جامع دمشق۔ کتبہ رواجیہ۔ مالکیہ۔ عجمیہ۔ حلب کے مدرسہ ابن شداد اور شاد بخت اور بلعربک کے مدرسہ الجیمیہ کو شہرت عام حاصل تھی۔ علامہ سیدی طبری کا بیان ہے کہ قاہرہ کا مدرسہ الظاہریہ سلطان بیسرس نے ۶۶۲ھ میں بڑے اہتمام سے تیار کرایا اور اس میں علامہ تقی بن زین کو فقہ شافعیہ کی تدریس کے لیے اور امام شرف الدین

۱۰ مدرسہ نظامیہ کی بنیاد سلطان ملک شاہ سلجوقی کے نامور وزیر خواجہ نظام الملک طوسی نے ۴۵۷ھ میں رکھی اور دو برس بعد اس کی تکمیل ہوئی۔ مقصود سے ہی عرصے میں اس مدرسے کی شاخیں بیشاپور۔ اصفہان۔ موصل۔ مرو۔ جزیرہ ابن عمر۔ خوزستان۔ بصرہ۔ ہرات۔ بلخ۔ طوس وغیرہ میں بھی قائم ہو گئیں۔

یاطلی کو حدیث کی تدریس کے لیے مقرر کیا۔ سلطان کی مملکت کے دوسرے  
 رس میں بھی اس دور کے سربراہ اور وہ علماء و فقہاء تعلیم دیتے تھے اور حکومت کی  
 ف سے ان کے معقول مشاہرے مقرر تھے۔ طلبہ کی رہائش، خورد و نوش، لباس  
 دوسری ضروریات کا خرچ بھی حکومت برداشت کرتی تھی۔ جو لوگ ان درسگاہوں  
 سے فائز و امتحان پورے تھے ان کو سرکاری ملازمتوں میں لے لیا جاتا تھا اور اگر وہ  
 سرکاری ملازمت اختیار نہ کرنا چاہتے تو اپنی مرضی اور ذوق کے مطابق کوئی پیشہ  
 اختیار کر سکتے تھے۔ ان پیشوں میں درس و تدریس اور تصنیف و تالیف کو خاص  
 اہمیت حاصل تھی۔

## شفاخانے

مصر و شام میں سلطان پیرس کے عہد سے پہلے ہی کثرت سے شفاخانے  
 قائم تھے۔ ان میں سب سے بڑا شفاخانہ دمشق کا بیمارستان کبیر تھا جو سلطان  
 ذوالدین محمود زنگی نے چھٹی صدی ہجری میں قائم کیا تھا۔ دوسرے دو بڑے شفاخانے  
 قاہرہ اور اسکندریہ میں تھے جو مجاہد کبیر سلطان صلاح الدین ایوبی نے قائم کئے تھے  
 اور اسی کے نام سے موسوم تھے۔

بیمارستان کبیر دمشق جب سے قائم ہوا تھا اس کے چولہے کی آگ کبھی نہیں  
 بجھی تھی۔ اس میں امیر غریب، مقیم، مسافر، غلام، آزاد و سب کا علاج مفت ہوتا  
 تھا اور غذا بھی شفاخانے کی طرف سے بلا قیمت مہیا کی جاتی تھی اس شفاخانے  
 میں نہایت قابل اور حاذق اطباء ملازم تھے۔ اس شفاخانہ کی ایک اہم خصوصیت  
 یہ تھی کہ یہاں علم طب کی تعلیم بھی دی جاتی تھی جس میں تشخصِ امراض، علاج اور دوا سازی  
 سبھی کچھ شامل تھا۔ گویا یہ شفاخانہ ایک عظیم طبی درس گاہ کی حیثیت بھی رکھتا تھا۔

یہاں طبیعوں دو سازوں، جراحیوں اور کھانوں کا امتحان لیا جاتا تھا۔ جب تک کوئی شخص امتحان میں کامیابی کی سند حاصل نہ کر لیتا تھا اس کو علاج کرنے یا کسی دوائے کی دوائے اور فروخت کرنے کی اجازت نہ تھی اس شفا خانہ میں عورتوں کے لیے ایک الگ حصہ تھا۔ اسی طرح اس کا ایک حصہ دماغی امراض کے مریضوں کے لیے اور ایک حصہ جراحی (آپریشن) کے لیے مخصوص تھا۔

قاہرہ کا بیمارستان صلاح الدین غازی کے ایک شان دار محل میں قائم اور اس میں مریضوں کے آرام و آسائش کے لیے دینا بھر کے سامان مہیا کر دیے گئے تھے۔ اس میں بہت سے لائق طبیب، جراح اور علمائے طبیعیات ملازم تھے جو صبح و شام دونوں وقت مریضوں کا معائنہ کرتے تھے اور ان کے لیے مناسب ادویہ و اغذیہ تجویز کرتے تھے۔

مشق کے بیمارستان کبیر کی تقلید میں یہاں بھی عورتوں کے علاج کے لیے ایک انتظام تھا اور امراض دماغی کے مریضوں کے لیے ایک الگ حصہ مخصوص تھا جس کا احاطہ نہایت وسیع تھا اور دریکچوں میں لوہے کی جالیاں لگی ہوئی تھیں اس کے علاوہ قاہرہ میں ایک اور عظیم الشان شفا خانہ بھی تھا جو قریب قریب اسی دہے کا تھا۔

اسکندریہ کا شفا خانہ بھی نہایت اعلیٰ پیمانے پر قائم تھا اس شفا خانہ کی ایک خاص بات یہ تھی کہ جو لوگ کسی وجہ سے شفا خانے میں داخل ہو کر علاج کرنا پسند نہیں کرتے تھے ان کے علاج کے لیے الگ طبیب اور جراح مقرر تھے جو ان کے گھروں میں جا کر علاج کرتے تھے۔

ان شفا خانوں کے علاوہ حلب، حماہ، حمص اور ملک کے دوسرے حصوں میں بھی کئی اچھے شفا خانے موجود تھے۔ سلطان بیبرس کو اگرچہ خود کوئی بڑا شفا خانہ

کرنے کا موقع نہ ملا تاہم جو شفا خانے پہلے سے قائم تھے۔ اس نے ان کی بھرتی کر  
 رہی تھی۔ ان شفا خانوں کے اخراجات کے لیے جو اوقاف قائم تھے سلطان نے  
 ان میں کئی زر خیز وہیات کا اضافہ کیا۔ وہ علماء کی طرح اطباء کا بھی بڑا احترام کرتا تھا اور  
 ان کو گراں قدر وظائف دیتا تھا۔ سلطان کے امراء بھی اطباء کے مرنے اور قدر ان  
 نے اور ان کی خدمت کرنے میں کوئی دقیقہ فرو گذاشت نہ کرتے تھے۔

ہیں

یہ سچے ذکر آچکا ہے کہ سلطان نے اپنی مملکت میں زراعت کو ترقی دینے پر  
 خاص توجہ دی۔ چنانچہ زمینوں کی آبپاشی کے لیے اس نے متعدد بڑی بڑی نہریں  
 کھدوائیں ان نہروں کی بدولت زمینیں سونا گلنے لگیں اور ملک کی آمدنی میں بڑا  
 اضافہ ہو گیا۔ گو آج امتداد زمانہ نے سلطان کی کھدوائی ہوئی نہروں کا نام و نشان  
 کھٹا دیا ہے تاہم کم و بیش سبھی مورخین نے شہادت دی ہے کہ سلطان نے  
 نہریں کھدوانے میں خاص دلچسپی لی یہاں تک کہ بعض مواقع پر اس نے کھدائی کے  
 کام میں خود حصہ لیا۔

تعمیرات

سلطان بئیرس کی تعمیرات میں کچھ رفاہ عام اور صیغہ مذہبی سے تعلق رکھتی  
 تھیں اور کچھ فوجی اور دفاعی ضروریات سے متعلق تھیں۔ مورخین نے اس کی جن تعمیرات  
 کا خصوصیت سے ذکر کیا ہے ان کی تفصیل یہ ہے :-

۱۔ پل۔ سلطان نے ملک کے ہر گوشہ میں دریاؤں، ندی نالوں اور نہروں پر  
 پل تعمیر کرائے۔ یہ پل دو قسم کے تھے :-

(ا) شاہی پُل : یہ پُل ملک کے عام مفاد کے لیے بنائے گئے تھے اور لگان کی آمدنی کا ایک بڑا حصہ ان پر خرچ کیا جاتا تھا۔

(ب) مقامی پُل : یہ پُل "بلدیہ" کہلاتے تھے۔ ان کا مفاد مقامی تھا اور ان کی تعمیر کا خرچ مقامی کاشت کاروں کو برداشت کرنا پڑتا تھا "فلپ کے جتنی" نے "تاریخِ شام" میں لکھا ہے کہ سلطان نے دریائے اردن پر ایک شان دار پُل بنوایا اس پر اپنا کتبہ لگوایا اور اس کتبے کے دونوں جانب شیر نصب کرائے۔ دبیریں کا طعرا شیر بہر تھا۔

۲۔ جہاز سازی کے کارخانے : سلطان نے اسکندریہ اور میاط میں جنگی جہاز بنانے کے لیے عظیم الشان کارخانے قائم کیے اور ان کے لیے خام مال (کڑی لوہا وغیرہ) مہیا کرنے کے خاص انتظامات کیے۔ اس نے تمام ان کڑیوں کے استعمال کی ممانعت کر دی تھی جو جہاز سازی کے کام آ سکتی تھیں۔

۳۔ بندر گاہوں کی اصلاح : سلطان نے مصر اور شام کی کئی بندر گاہوں کی اصلاح کی اور ان میں تجارتی اور جنگی جہازوں کے لیے زیادہ گنجائش پیدا کی۔ میاط کی بندر گاہ کو جسے لوئی نہم کی صلیبی مہم نے تباہ کر دیا تھا از سر نو تعمیر کرایا۔

۴۔ سرائیں اور مہمان خانے : سلطان نے قاہرہ، اسکندریہ، دمشق، حلب اور کئی دوسرے مقامات پر متعدد سرائیں اور مہمان خانے

لے۔ یہ پُل آج بھی موجود ہے اور "جسر الذامیہ" کے نام سے مشہور ہے۔ یہ پُل اب خشک زمین پر ہے کیونکہ یہاں دریائے اپنا رخ بدل لیا ہے سلطان نے یہ پُل ۱۲۶۶ء میں بنوایا تھا۔

تعمیر کر لئے جن سے ہر مذہب و ملت کے مسافر استفادہ کر سکتے تھے۔

۵۔ محجر و ضریح نبوی: ۶۶۷ھ میں سلطان حج بیت اللہ سے فارغ ہو کر مدینہ منورہ گیا۔ وہاں اس نے دیکھا کہ لوگ قبر نبوی علیٰ صاحبہا الصلوٰۃ والسلام سے بہت قریب آ کر کھڑے ہو جاتے ہیں اس میں کسی قدر سوئے ادب پایا جاتا تھا۔ سلطان نے قبر مبارک کے چاروں طرف ایک محجر بنوا دیا جو ابھی تک موجود ہے۔

۶۔ مساجد: مساجد کی تعمیر و مرمت کے سلسلے میں سلطان کو جو سب سے بڑی سعادت نصیب ہوئی وہ مسجد نبویؐ کے ایک حصے کی مرمت و تعمیر تھی۔ یہ حصہ چند سال پہلے آگ لگنے سے گر گیا تھا۔ بغداد کے آخری عباسی خلیفہ مستعصم باللہ نے اس کی تعمیر شروع کرائی لیکن سقوط بغداد کی وجہ سے یہ کام اوصورارہ گیا تھا۔ سلطان پیرس نے برسر اقتدار آنے کے بعد اس کام کی طرف توجہ کی اور نہایت محبت اور عقیدت کے ساتھ اس حصے کو مکمل کرایا۔ اس سے دوسرے دیسے پر سلطان کا نمایاں کام مسجد الازہر قاہرہ کی مرمت کرانا تھا۔ الازہر کی عمارتیں مدت سے کسمپرسی کی حالت میں پڑی تھیں۔ سلطان نے ان کی مرمت ایسے عمدہ طریقے سے کرائی کہ ان کی گزشتہ شان و شوکت بحال ہو گئی۔ اس کار خیر میں اس عہد کے دو امیروں عزالدین ابدمرحلی اور بلیک المنازندار نے بھی نمایاں حصہ لیا۔ مرمت کے کام سے فارغ ہونے کے بعد سلطان نے الازہر میں سنی معلمین رکھنے کے لیے کچھ اوقات مخصوص کر دیے اس طرح الازہر میں دوبارہ جان پڑ گئی۔ الازہر کے علاوہ سلطان نے کئی دوسری تاریخی مسجدوں کی مرمت بھی کرائی جن میں قبۃ الصخر ابھی شامل تھا۔ تاتاریوں کے حملے میں شام کی کئی

مسجدوں کو نقصان پہنچا تھا سلطان نے ان سب کی مرمت کرائی یا ان کی از سر نو تعمیر کرائی۔

۶۶۵ء میں سلطان نے قاہرہ میں ایک عظیم الشان مسجد بنانے کا حکم دیا۔ اس مسجد کی تعمیر کا کام دو سال تک جاری رہا جب یہ بن کر تیار ہوئی تو سلطان نے اس کو "جامع حسنیہ" کا نام دیا اور اس میں حنفی خطیب مقرر کیا۔

۲۔ قلعے اور شہر بناہیں: تاتاری یورش میں شام کے کئی قلعوں اور شہر بناہوں کو سخت نقصان پہنچا تھا سلطان نے خاص اہتمام سے ان کی مرمت کرائی اور ان کو پہلے سے کہیں زیادہ مضبوط بنا دیا۔ ان میں حلب حماة اور دمشق کے قلعے اور شہر بناہیں قابل ذکر ہیں سلطان نے صلیبیوں کے اکثر قلعے فتح کرنے کے بعد مسمار کر دیے تھے لیکن جب اس نے ۱۲۷۱ء میں حصن الاکراد کا ناقابل تسخیر "قلعہ فتح" کیا تو اس کو مسمار کرنے کے بجائے اس کی دوبارہ مرمت کرائی اور وہاں اپنا کتبہ نصب کرایا۔ اس سلسلہ میں سلطان کا سب سے اہم کام جزیرہ روضہ کے قلعے کی تعمیر تھا۔ یہ عظیم الشان قلعہ پہلے الملک الصالح نے بنوایا تھا اور اس میں مملوکوں کو آباد کیا تھا۔ ۶۴۸ھ میں عزالدین ایک دمغز جاشگیر تخت نشین ہوا تو اس نے اس قلعہ کو مسمار کر دیا اور اس کے ساز و سامان کو قلعہ جبل میں منتقل کر دیا۔ سلطان بیبرس نے برسراقتدار آ کر اس قلعہ کی از سر نو تعمیر کرائی اور اس کو اسی معیار پر پہنچا دیا جس پر وہ الملک الصالح نجم الدین ایوب کے عہد میں تھا۔ اس قلعہ کے برجوں میں سلطان کی اجازت سے مملوک امراء قیام پذیر ہو گئے۔



املک الظاہر پیرس

کے

عہد کے چند اہل کمال



۱- علامہ ابن خلکانؒ

۲- سید احمد البدویؒ

۳- ابن واصلؒ

۴- شیخ الاسلام امام عز الدین دمشقیؒ

۵- ابن عبد الظاہرؒ

۶- علامہ ابن منظورؒ

۷- سبط ابن الجوزیؒ

۸- قاضی جمال الدین بن مالک طائیؒ

۹- قاضی بدر الدین ابن جماعہؒ

۱۰- ابن شداد حلبیؒ

۱۱- قاضی عبدالرحمن بن قدامہؒ

۱۲- ابو شامہ مقدسیؒ

۱۳- ابن ابی اصیبعہؒ

۱۴- ابن النفیسؒ

۱۵- قاری جمال الدینؒ

۱۶- شیخ القراءہ کمال الدین مصریؒ

۱۷- شیخ محمد بن مکی صقلیؒ

۱۸- ابو الفضل مہندی دمشقیؒ (طیب)

۱۹- امام نوویؒ

## علامہ ابن خلکان

علامہ شمس الدین ابوالعباس احمد بن محمد بن ابی بکر بن خلکان البرکی ایشانی  
 ۶۰۸ھ میں بمقام اربیلہ پیدا ہوئے۔ ان کے والد اربیلہ کے مدرسہ مظفریہ  
 ۱۲۱۱ھ میں معلم تھے۔ ان کا تعلق بلخ کے بزمکی خاندان سے تھا۔ ابن خلکان نے ابتدائی  
 تعلیم اپنے والد سے حاصل کی۔ پھر شام تشریف لے گئے اور حلب و دمشق میں  
 کئی سال مقیم رہ کر مختلف علوم اسلامی میں سند تکمیل حاصل کی۔ ان کے اساتذہ  
 میں قاضی ابن شداد کا نام خصوصیت سے قابل ذکر ہے۔

علامہ ابن خلکان نے اپنے علمی مشاغل کے سلسلہ میں اسکندریہ اور قاہرہ  
 کا سفر بھی کیا۔ پھر مستقل طور پر دمشق میں مقیم ہو گئے۔ چند سال کے اندر اندر ان  
 کے تبحر علمی اور ذہانت کی شہرت سارے شام و مصر میں پھیل گئی۔ ۶۶۳ھ  
 میں سلطان بیبرس نے ان کو قاضی یوسف ابن الحسن سجری کی جگہ شام کا

۱۱۳۵ھ میں بمقام  
 موصل پیدا ہوئے۔ موصل و بغداد میں تعلیم پائی اور پھر خود وہاں پڑھانے لگے۔ سلطان  
 صلاح الدین ایوبی نے ان کو قاضی العسکر مقرر کر دیا۔ سلطان کی وفات کے بعد وہ حلب  
 کے قاضی مقرر ہوئے اور وہاں متعدد مدارس قائم کیے۔ اپنے علم و فضل کی بدولت تمام  
 عالم اسلام میں بڑی قدر کی نگاہوں سے دیکھے جاتے تھے۔ انہوں نے سلطان صلاح الدین  
 ایوبی کی سیرت "محاسن الیوسفیہ" کے نام سے لکھی۔ اس کتاب نے علمی حلقوں میں بڑی شہرت  
 پائی۔ قاضی ابن شداد نے ۶۳۲ھ میں وفات پائی۔

قاضی القضاة مقرر کیا۔ اگرچہ وہ خود شافعی المسلک تھے لیکن چاروں فقہی مسلک کے قضاة ان کے ماتحت تھے۔ کچھ عرصہ بعد جب سلطان نے ہر ایک مسلک کے قاضیوں کا محکمہ جدا کر دیا تو علامہ موصوف کو شافعی مذہب کے عہدہ قضا پر قائم رکھا۔ سات سال کے بعد وہ عہدہ قضا سے سبک دوش ہو کر قاہرہ چلے گئے۔ اور وہاں کے مدرسہ فخریہ میں پروفیسر ہو گئے۔ سلطان پیرس کی وفات کے بعد ۶۷۹ھ میں وہ دوبارہ قاضی مقرر کیے گئے۔ لیکن ایک سال کے بعد بغاوت کی سازش میں متہم ہوئے اور اپنے عہدہ سے معزول کر دیے گئے۔ اس کے بعد وہ عزت نشین ہو گئے۔ ۶۸۱ھ مطابق ۲۰ اکتوبر ۱۲۸۲ء کو وفات پائی۔

علامہ ابن خلدکان کو شہرت عام اور بقائے دوام کے دربار میں بڑا اونچا مرتبہ حاصل ہے۔ اور یہ مرتبہ دلانے میں ان کی مہتمم بالمشان تستیفات "وفیات الاعیان و انباء ابناء الزمان"

کا بڑا حصہ ہے۔ اس کتاب کو تاریخ ابن خلدکان" بھی کہا جاتا ہے۔ یہ کتاب ایک بہت بڑی تاریخی قاموس ہے جس میں ہر طبقہ کے مشاہیر اسلام کے حالات درج ہیں۔ علامہ موصوف نے اس کتاب کو ۶۵۴ھ میں لکھنا شروع کیا اور ۶۶۲ھ میں مکمل کیا۔ اہل علم کے نزدیک یہ کتاب ایک اہم ماخذ اور سند کی حیثیت رکھتی ہے اس کتاب کی خصوصیات یہ ہیں۔

- ۱۔ اس کی زبان سادہ اور ادبی ہے۔
- ۲۔ اس میں کسی خاص طبقہ کے بجائے ہر طبقہ کے مشاہیر کے حالات درج ہیں۔ ان میں علماء، فقہاء، اطباء، شعراء، صلحاء، ملوک، امراء، وزراء وغیرہ ہر قسم کے لوگ شامل ہیں۔

۲- ہر صاحب ترجمہ کی ولادت اور وفات کی تاریخیں درج کرنے میں ممکن حد تک صحت سے کام لیا ہے۔

۳- ہر شخص کی وہ صفات درج کر دی ہیں جو اس کے کردار کی عکاس ہیں۔

۵- جن ناموں کے تلفظ میں غلطی کا امکان ہو سکتا ہے ان کی حرکات منسلک کر دی ہیں۔

۶- ہر صاحب ترجمہ کا نسب جتنی دور تک معلوم ہو سکا ہے درج کر دیا ہے۔

۷- جگہ جگہ دلچسپ واقعات - اشعار اور نوادہ درج کیے ہیں جن سے کتاب بچہ دلچسپ ہو گئی ہے اور قاری اکتاہٹ محسوس نہیں کرتا۔ "وفیات الاعیان" کا انگریزی میں بھی ترجمہ ہو چکا ہے۔ چند سال ہوتے اس کے ایک حصے کا اردو ترجمہ بھی شائع ہوا تھا۔ اس کے مترجم عبدالغفور رامپوری تھے اور یہ مطبع مفید عام آگرہ سے "مشاپیر اسلام" کے نام سے شائع ہوا تھا۔

### سید احمد البدوی

نام احمد، کنیت ابو الفتیان، القاب "السید"، "الخطاب"۔ "الغضبان"۔ "الصائم"۔ "جانی بالاسیر"۔ "ابو فراج"۔ "القطب"۔ شیخ العرب "ابو البدوی"۔

۱۔ نڈر شہسوار یا عقب ناک

۲۔ عقب ناک - صاحب جلال

۳۔ خاموش

۴۔ قیدی کو واپس لانے والا۔

۵۔ رہا کرانے والا

۶۔ سید احمد المغرب کے بدویوں کی طرح

منہ پر نقاب ڈالے رہتے تھے اس لیے ان کو البدوی کہا جاتا تھا۔

ان کا شمار ساتویں صدی ہجری کے مشاہیر صوفیہ میں ہوتا ہے۔ ۵۹۶ھ میں ۱۲۰۰ھ میں مغربِ اقصیٰ کے شہر فاس میں پیدا ہوئے۔ والد کا نام علی (البندوی) اور والدہ کا نام فاطمہ تھا۔ پندرہ برس کی عمر میں اپنے والدین کے ہمراہ مکہ معظمہ گئے اور حج بیت اللہ سے مشرف ہوئے۔ سید احمد نے مختلف استادوں سے کلام مجید (قرآنیات) سے کلام مطہر پڑھا اور فقہ شافعی کا مطالعہ بھی کیا۔ ۶۲۶ھ میں ان کی طبیعت میں ایک انقلاب پیدا ہوا اور وہ لوگوں سے کنارہ کشی کر کے اپنا سارا وقت نفس کشی اور ریاضت میں گزارنے لگے۔ کسی سے بات چیت نہیں کرتے تھے اور اپنا مافی الضمیر اشاروں سے ظاہر کرتے تھے۔ ۶۳۳ھ میں مدہ معظمہ سے بلند آگے اور سیدنا شیخ عبدالقادر جیلانیؒ اور سید احمد الکبیر رفاہیؒ کے مزاروں پر حاضری دی۔ ۶۳۴ھ میں مصر کے شہر طنطا تشریف لے گئے اور وہاں مستقل اقامت اختیار کر لی۔ کہتے ہیں کہ وہ طنطا میں بڑی جاں گذار ریاضتیں کرتے تھے کبھی طویل عرصے تک عالم سکوت میں رہتے تھے کبھی چالیس چالیس دن تک کچھ نہ کھاتے تھے اور کبھی سورج کی طرف ٹٹکی باندھ کر دیکھتے رہتے تھے یہاں تک کہ ان کی آنکھیں سُرخ انگارہ ہو گئی تھیں۔ جلد ہی وہ مرجعِ خلافت بن گئے اور مصر کے گھر گھر میں ان کے کشف و کرامات کا چرچا ہونے لگا۔ ان کے عقیدتمندوں میں ہر طبقہ کے لوگ شامل تھے یہاں تک کہ فرماں روا نے مصر سلطان بیبرس بھی ان سے حد درجہ عقیدت رکھتا تھا۔ بعض مورخین نے تو یہاں تک لکھا ہے کہ سلطان ان کے مہیوں میں شامل ہو گیا تھا۔ سلطان نے سید احمد البندویؒ کی بیعت کی اور یانہ ہوا تنا ضرور ثابت ہے کہ وہ وقتاً فوقتاً ان کی خدمت میں حاضر ہوا کرتا تھا اور نہایت احترام اور عقیدت کے ساتھ ان کی قدم بوسی کیا کرتا تھا۔ سید موصوف نے ۱۲ ربیع الاول ۶۴۵ھ مطابق ۲۴ اگست ۱۲۴۶ء کو وفات پائی۔ طنطا میں

ان کا مزار آج تک مزج خاص و عام ہے۔ سلسلہ احمدیہ جسے سید احمد الابدوی نے قائم کیا مصر کے مقبول ترین سلاسل طریقت میں سے ایک ہے۔ اس سلسلہ سے وابستہ لوگ "سطوحیہ" یا "اصحاب السطح" کہلاتے ہیں۔ سید احمد الابدوی نے تین کتابیں بھی اپنی یادگار چھوڑیں ان کے نام یہ ہیں:-

۱۔ وصایا: اس میں عام قسم کی تنبیہات ہیں۔

۲۔ صلوات: (دعاؤں کا مجموعہ)

۳۔ ایک دعا (حزب)

## ابنِ واصل

قاضی جمال الدین ابو عبد اللہ محمد بن سالم، عہدِ بیہس کی ایک سرآمد و بزرگ شخصیت تھے۔ ان کے دادا کا نام واصل تھا اور اسی نسبت سے وہ علمی دنیا میں ابنِ واصل کے نام سے مشہور ہوئے۔ ۶۰۲ھ میں تولد ہوئے اور اس دور کے نامور اساتذہ سے مختلف علوم کی تحصیل کی۔ سند فراغت کے بعد پہلے حماة میں سلسلہ درس و تدریس شروع کیا اور پھر قاہرہ میں۔ چند سال کے اندر اندر سارے ملک میں ان کے تبحر علمی کا غلغلہ ہو گیا اور انہیں امامِ وقت تسلیم کیا گیا۔ مشہور مؤرخ اور جغرافیہ دان علامہ ابو الفداء ان کے شاگرد تھے۔ وہ اپنے

علامہ ابو الفداء اسمعیل بن علی (یونانی ۶۰۲ھ میں دمشق میں پیدا ہوئے اور ۶۳۲ھ میں وفات پائی۔ جوانی میں ایک مجاہد کی حیثیت سے حروب صلیبیہ (باقی ص ۲۶۵ پر)



استاد کے متعلق لکھتے ہیں:

” علامہ قاضی جمال الدین محمد امام وقت اور فضلاء کے زمانہ میں  
ہیں۔ مختلف علوم فقہ۔ اصول دین۔ منطق۔ ہندسہ۔ ہیئت اور تاریخ  
میں دست گاہِ کامل رکھتے ہیں ان کی مختلف تصنیفات حسب ذیل  
ہیں :-

۱۔ مفرد جم الکروب فی اخبار بنی ایوب

(یعنی تاریخ فرماں روا یا بنی ایوب)۔

۲۔ رسالۃ الانبوریۃ فی المنطق (یہ رسالہ شاہ اٹالیہ و حنبلہ مینصر<sup>ط</sup>

کے لیے علم منطق میں لکھا گیا)۔

۳۔ مختصر الاغانی (یہ کتاب آغانی کی عمدہ تلخیص ہے)۔

جلیل القدر استاد سے اپنے استفادہ کا حال علامہ ابوالقادر نے یوں

لکھا ہے۔  
(بقیہ حاشیہ ص ۲۶۴) میں شرکت کی۔ پھر عرصہ تک مملوک سلطان الملک الناصر کی ملازمت  
میں رہے۔ چند سال حماة کے گورنر بھی رہے۔ ان کا خاندان مصر کی ایوبی شاخ سے  
تعلق رکھتا تھا۔ اس لیے مملوک فرماں رواؤں نے ان کو ”ملک الصالح“ اور ”ملک المودع“  
جیسے القاب سے نوازا لیکن ان کی شہرت کی بنیاد ان کی تصانیف ”مختصر تاریخ البشر اور  
”تقویم البلدان“ پر قائم ہے۔

۱۔ علامہ قاضی جمال الدین نے منطق پر چار سال لکھا۔ ”دائرة المعارف الاسلامیہ“ میں اس کا نام —  
”تجسس الفکر فی المنطق“ دیا گیا ہے۔ علاوہ ازیں اس میں قاضی موصوف کی ایک اور کتاب ”تاریخ الصالحین“  
کی نشان دہی کی گئی ہے جو انہوں نے دنیا کی تاریخ پر لکھی تھی۔ اس کتاب کی جلد اول برٹش میوزیم  
میں موجود ہے اس میں ابتدائے آفرینش سے اہم حقائق کی دنات تک کے حالات درج ہیں۔

لکھا ہے:

میں بارہا ان کے پاس حجاجہ گیا اور کتاب اقلیدس کی اکثر مشکلات کو ان سے حل کیا اور ان سے استفادہ کیا۔ عروص میں ابن حاسب کے منظوم رسالہ کی شرح بھی میں نے ان سے پڑھی کیونکہ انہوں نے اس رسالہ کی نہایت عمدہ شرح لکھی تھی اور اسی طرح کتاب الاغانی میں جو اسماء ہیں ان کی تصحیح بھی ان سے حاصل کی۔

۶۵۹ھ میں سلطان بیری نے اپنی خارجہ حکمت عملی کے تحت اطالیہ و سسلی کے فرماں روا مینقریڈ سے دوستانہ مراسم قائم کرنے چاہے۔ اس مقصد کے لیے اس کو مینقریڈ کے پاس بھیجنے کے لیے ایک ایسے سفیر کی ضرورت محسوس ہوئی جو غیر معمولی صلاحیتوں کا مالک ہو اس زمانہ میں قاضی جمال الدین کے علمی فضائل اور خدا اور ذہانت کا ملک بھر میں ڈٹکا بج رہا تھا۔ اس اہم سفارتی خدمت کے لیے اس کی نگاہ انتخاب انہیں پر پڑی اور اس نے قاضی موصوف کو اپنا سفیر بنا کر فرماں روا کے اطالیہ و سسلی کے دربار میں بھیجا وہ وہاں عرصہ تک رہے اور اپنے قیام کے دوران میں مینقریڈ کے لیے جو ایک علم دوست اور مسلم نواز بادشاہ تھا، علم منطق پر ایک رسالہ لکھا اس کے ساتھ ہی انہوں نے بادشاہ کی مسلمان رعیت کے حالات کا جائزہ لیا جب وہ اپنی سفارت سے واپس آئے تو سلطان نے ان کے کام پر خوشنودی کا اظہار کیا اور ان کو حجاجہ کا قاضی القضاة بنا دیا۔ علامہ ابو الفداء کا بیان ہے کہ سفارت سے واپسی کے بعد میں ان کی خدمت میں حاضر ہوا تو انہوں نے اپنے قیام اطالیہ کے واقعات و مشاہدات سنائے جو بید و لہجہ پختہ تھے۔ اس کے بعد

ابوالفداء نے اپنی تاریخ میں ان واقعات و مشاہدات کو تقاضی جمال الدین  
ربان سے اجمالاً بیان کیا ہے جن سے اس عہد کے مسلمانان اٹالیہ کے  
ت کا اندازہ ہوتا ہے۔ وہ کہتے ہیں:

”مجھے جس امیر اٹور (امپری) کے پاس سفیر بنا کر بھیجا گیا  
اس کے باپ کا نام فروریٹ (فریڈرک) تھا۔ اس کے سلطان  
مصر الملک الکامل سے دوستانہ مراسم تھے۔ ۶۲۸ھ میں فروریٹ  
کی وفات کے بعد اس کے بیٹے کورائے برطویل (اٹلی) اور صقلیہ  
کا تاج و تخت سنبھالا۔ کوراکا جانشین اس کا بھائی مینفریڈ  
(مینیفریڈ) ابن فروریٹ ہوا۔ ان میں سے ہر بادشاہ کا لقب  
”امیر اٹور“ یا ”امپری“ تھا۔ اور امیر اٹور مینفریڈ تمام فرنگی  
بادشاہوں میں مسلم نوازی اور علم دوستی میں امتیازی حیثیت رکھتا  
تھا جب میں اُس کے دربار میں پہنچا تو اس نے میری بڑی تعظیم و  
تکریم کی اور مجھے برطویل (اٹلی) کے شہروں میں سے ایک شہر

فرنگیوں نے ”امپری“ (Emperor) کو معرب کر کے امبراطور (Anbratur)  
برور (Anberur) بنایا۔ علامہ ابوالفداء امیر اٹور کی تشریح کرتے ہوئے  
تے ہیں کہ فرنگیوں (فرنگیوں) کی زبان میں اس کا مطلب ”امراء کا بادشاہ“ ہے۔  
صقلیہ کا دوسرا جبرمن فرمان روا (عہد حکومت  
(Frederic II)

۱۱۹۸ء تا ۱۲۵۰ء

کوراکا ترور (Conard) کا معرب ہے۔ کانرڈ چہارم اٹالیہ  
فرنگی کا تیسرا جبرمن فرمان روا تھا (عہد حکومت  
۶۲۸ھ تا ۶۵۲ھ) ۱۲۵۰ء تا ۱۲۵۲ء

اپولیا میں جو انڈلس سے متصل تھا۔ ٹھہرایا۔ مجھے اس کے ساتھ  
 باہر آگھا ہونے کا موقع ملا۔ میں نے اس کو بڑا بااخلاق و عاقل  
 پایا۔ اس کو اقلیدس کی دس کتابیں زبانی یاد تھیں۔  
 اور جس شہر میں میری رہائش تھی اس کے قریب ایک شہر لوجارہ  
 (لوچارہ؟) کے نام سے موسوم تھا۔ اس کے تمام باشندے  
 مسلمان تھے۔ جو چیز یہ صقلیہ (سسی) کے رہنے والے تھے  
 وہ اس شہر میں باقاعدہ نماز جمعہ ادا کرتے تھے اور بلا روک ٹوک  
 آزادی کے ساتھ اپنے دوسرے مذہبی فرائض بھی انجام دیتے  
 تھے۔۔۔۔۔ میں نے امبراطور مینفریڈا کے بڑے بڑے

اپولیا (Apulia) عربوں نے اس کو معرب کر کے  
 یا انبولیہ بنا لیا۔

یہ (Éuclid)

یہ "لوچارہ" فی الحقیقت "لوسیرا" (Lucera) کا معرب ہے۔  
 نے اپنے جغرافیہ میں اس شہر کا نام لوشیرہ لکھا ہے۔ یہ شہر اٹلی کے صوبہ اپولیا  
 واقع تھا اور فوگیا (Foggia) کے مشہور شہر سے بجانب شمال مغرب اس  
 مسافت ۱۲۰ میل تھی۔ سسی کے مسلمانوں پر زوال آیا تو وہ عرصہ تک عیسائیوں  
 ظلم و ستم کی چکی میں پستے رہے تا آنکہ فریڈرک دوم نے ان کو سسی سے نکال کر  
 کے دو غیر آباد شہروں لوسیرا اور نویرا (Nocera) میں آباد کر دیا۔ ان دو  
 شہروں کے مسلمانوں کی مجموعی آبادی اسی ہزار تھی جن میں سے ساٹھ ہزار نویرا میں  
 بیس ہزار لوسیرا میں رہتے تھے۔

اریاب سلطنت کو مسلمان پایا۔ وہ اس کے کیرپ میں اذان دیتے تھے اور برسِ عام نماز پڑھتے تھے۔ میں جس شہر میں رہتا تھا وہ روم (Rome) سے پانچ دن کے سفر کی مسافت پر تھا میں جس زمانہ میں امبراطور کے دربار سے رخصت ہونے کی تیاری کر رہا تھا۔ پوپ، جو فرینکوں کا خلیفہ ہے اور ریدافرنس (Ridafrens) نے متحد ہو کر مینقرنیا پر حملہ کرنے کا منصوبہ بنایا۔ اس سے پہلے پوپ نے اس کو مسلمانوں کی جانب مائل ہونے کی بنا پر کلیسا سے خارج کر دیا تھا اسی طرح اس نے مینقرنیا کے باپ فروریک اور بھائی کورا کو بھی کلیسا سے روم سے خارج قرار دیا تھا۔ کیونکہ وہ بھی اسلام کی طرف مائل تھے۔ میرے آنے کے بعد مینقرنیا اور پوپ اور ریدافرنس کے متحدہ لشکر کے درمیان لڑائی ہوئی۔ جس میں امبراطور کو شکست ہوئی اور وہ دشمن کے ہاتھ گرفتار ہو گیا۔ پوپ نے حکم دیا کہ اس کا سر قلم کر دیا جائے چنانچہ اس کے حکم کی تعمیل کی گئی اور اس کی سلطنت ریدافرنس کے بھائی کے حوالے کر دی گئی۔

قاضی جمال الدین نے ۶۹۷ھ (۲۸ اگست ۱۲۹۸ء) کو بمقام حماة وفات پائی۔ اس وقت ان کی عمر ۹۳ برس کی تھی۔ سائے عالم اسلام میں ان کی وفات پر

۱۔ یہ فرانس کے بادشاہ لوئیس (یا لوئی) نہم کی طرف اشارہ ہے۔ عرب اس کو می فرانس یا ریدافرنس کہتے تھے۔

۲۔ یہ واقعہ ۶۶۵ھ میں پیش آیا اور اطالیہ و منقلیہ پر چارلس اول (Charles I) کی حکومت قائم ہو گئی۔

## شیخ الاسلام امام عزالدین دمشقی

شیخ الاسلام علامہ عزالدین بن عبد السلام دمشقی رحمہ اللہ کا شمار علمائے اُس مقدس جماعت میں ہوتا ہے جس کے علم و فضل زہد و ورع بحق گوئی و اور جرات و استقامت کے درخشندہ واقعات سے تاریخ اسلام کے صفحہ جگمگا رہے ہیں۔

علامہ عزالدین ۵۷۵ھ میں دمشق میں پیدا ہوئے اور اُس دور کے مشائخ سے تعلیم حاصل کی۔ ان میں سیف الدین آمدی۔ حافظ ابو محمد القاسم اور فخر الدین عساکر جیسے اکابر علماء شامل تھے۔ انہوں نے سن بلوغت کو پہنچنے سے پہلے قرآن حدیث فقہ تفسیر اور دوسرے علوم اسلامی میں درجہ تبحر حاصل کر لیا اور چند سال کے اندر اندران کی شہسوار علم و فضل کی عطر پیر یوں سے تمام عالم اسلام ہلک اٹھا اور ان کو "سلطان العلماء" اور امام وقت تسلیم کیا گیا۔ ان کے علم علامہ شیخ جمال الدین ابن حاجب (متوفی ۶۴۶ھ) لکھتے ہیں کہ "فقہ میں عزالدین بن عبد السلام کا پایہ امام غزالی کے برابر ہے۔"

امام ذہبی (متوفی ۷۴۸ھ) کا قول ہے کہ:

"عزالدین علم فقہ اور زہد و ورع میں درجہ کمال پر پہنچے ہوئے تھے اور درجہ اجتہاد ان کے رتبہ کے لائق تھا۔"

علامہ موصوف کئی سال تک دمشق کے زاویہ نغز الیہ میں درس دیتے رہے  
اس کے ساتھ ہی وہ جامع اموی میں خطابت اور امامت کے فرائض بھی انجام  
دیتے رہے۔ الملک الکامل نے ان کو دمشق کا عہدہ قضا باصرار پیش کیا لیکن  
انہوں نے اس کے قبول کرنے میں غدر کیا البتہ دربار بغداد میں ایوبی حکومت کا  
سفیر بنا قبول کر لیا۔ کچھ عرصہ یہ خدمت انجام دینے کے بعد دمشق واپس آ گئے  
اور حسب سابق درس و افتاء اور وعظ و ہدایت میں مشغول ہو گئے۔ بعض مورخین  
کا بیان ہے کہ لوگوں کے اصرار پر انہوں نے دمشق کا عہدہ قضا بھی قبول کر لیا۔

شیخ عبداللہ بن بڑے خود دار بادشاہ اور بارعب تھے وہ دربار داری کے  
جھنجھٹوں سے بالکل آزاد تھے اور اپنے تبحر علمی، زہد و ریاضت اور حق گوئی کی بدولت  
شام کی سب سے بڑی دینی شخصیت تصور ہوتے تھے۔ ۶۳۷ھ میں دمشق کے  
فرمان روا الملک الصالح اسماعیل نے اپنے حریف الملک الصالح نجم الدین ایوب  
شاہ مصر کے خلاف فرنگیوں سے دوستانہ معاہدہ کر لیا اور ان کو نہ صرف صیبا  
شقیف اور چند دوسرے قلعوں کا پروانہ لکھ دیا بلکہ کھلے بندوں دمشق میں گھوڑے  
پھرنے کی اجازت بھی دے دی۔ وہ بے دھڑک دمشق میں داخل ہوتے تھے اور  
یہاں سے ہتھیار خرید کر لے جاتے تھے۔ شیخ کو اسماعیل کی بے حیلتی سے سخت  
صدمہ پہنچا اور انہوں نے فتویٰ جاری کر دیا کہ فرنگیوں کے ہاتھ ہتھیار پہنچنا حرام  
ہے کیونکہ وہ دشمنان اسلام ہیں اور یہی ہتھیار مسلمانوں کے خلاف استعمال  
کریں گے۔ اس کے ساتھ ہی انہوں نے خطبہ سے بادشاہ صالح اسماعیل کا  
نام خارج کر دیا اور اس کے لیے دعا ترک کر دی۔ اس کے بجائے وہ خطبہ سے

فارغ ہو کر بڑے جوش اور تضرع کے ساتھ یہ دعا مانگتے تھے:

اللّٰهُمَّ الْفَرَسُ مِنْ نَصْرِ دِينِ مُحَمَّدٍ وَاجْعَلْنَا مِنْهُمْ

وَ اِخْذْ لِمَنْ خَدَلَ دِيْنَ مُحَمَّدٍ ۙ وَلَا تَجْعَلْنَا مِنْهُمْ

والہی! اسلام اور دین محمد صلی اللہ علیہ وسلم کے حلقہ بگوشوں کی مدد  
اور نصرت فرما اور دشمنان اسلام کو ذلیل فرما اور ہمیں ایسے بے دین  
گروہ سے بچا۔

اسماعیل کو ان واقعات کی اطلاع ملی تو وہ سخت غضب ناک ہوا اور شیخ  
کو عمدہ قصداً اور دوسرے دینی مناظیب سے معزول کر دیا۔ ایک روایت کے  
مطابق اس نے شیخ کو کچھ عرصہ نظر بند بھی رکھا۔ اسماعیل کی سختیوں کے باوجود شیخ  
اپنے موقف پر برابر ٹٹے رہے لیکن جب اسماعیل کی بے جہالتی میں المنصور ابراہیم  
والی عرصہ بھی شریک ہو گیا اور دمشق و حمص کے مسلمانوں کی بے بسی حد سے گزر گئی  
تو شیخ زح سخت بد دل ہوئے اور انہوں نے مصر کا عزم کیا۔ لوگوں کو ان کے ارادے  
کا علم ہوا تو ان میں سخت اضطراب پیدا ہو گیا۔ چنانچہ امراء اور اعیان شہر کا ایک  
 وفد اسماعیل کے ایما پر یا خود ہی شیخ کی خدمت میں حاضر ہوا اور ان سے  
استدعا کی کہ آپ مصر جانے کا ارادہ ترک کر دیں ہم والی دمشق کو راضی کر لیں گے  
آپ صرف اتنا کریں کہ ملک اسماعیل کے پاس جا کر اس کی دست بوسی کر لیں۔  
شیخ نے فرمایا:

”صاحبو! مجھے تو یہ بھی گوارا نہیں کہ بادشاہ میرے ہاتھ کو بوسہ

دے چہ جائیکہ میں اس کی دست بوسی کر دوں۔ اللہ کا شکر ہے کہ

اس نے مجھے اس آفت سے آزاد رکھا ہے جس میں تم گرفتار ہو

لوگو! تم کسی اور عالم میں ہو اور میں کسی اور عالم میں۔“

اس واقعہ کے کچھ عرصہ بعد شیخ مصر تشریف لے گئے۔ والی مصر

الملك الصالح نجم الدين اليوب نے ان کو ہاتھوں ہاتھ لیا اور مصر کے صیغہ قضا کے



علاوہ ان کو محکمہ اوقاف کا سربراہ مقرر کیا اس کے ساتھ ہی اس نے جامع  
عروبن عاصی کی خطابت شیخ کے سپرد کی۔ سلطان نے جب مدرسہ صالحیہ کی بنیاد  
رکھی تو شیخ کو اس مدرسہ کا استاذ اعلیٰ مقرر کیا اور وہ پوسے انہماک اور دل جمعی کے  
ساتھ درس و تدریس میں مشغول ہو گئے۔ نجم الدین ایوب اگرچہ اسمعیل والی دمشق  
کو شکست دے کر ولایت شام بھی اپنے جیٹہ اقتدار میں لا چکا تھا۔ لیکن شیخ نے دمشق  
واپس جانا پسند نہ کیا اور مصر ہی میں مقیم رہ کر بندگانِ خدا کو مستفیض کرتے رہے۔  
یہاں بھی انہوں نے اپنا شیوہ حق گوئی قائم رکھا اور کسی دینی معاملہ میں کبھی مداخلت  
یا سکوت مصلحت آمیز سے کام نہ لیا۔

ایک دفعہ سلطانی حاجب امیر فخر الدین نے ایک مسجد کی چھت پر  
طبل خانے کی عمارت بنوائی جس میں نوبت بجائی جاتی تھی۔ شیخ کو علم ہوا تو انہوں  
نے بحیثیت قاضی و مہتمم مساجد اس عمارت کو فوراً گرانے کا حکم دیا اور امیر فخر الدین  
کو اس کی تعمیر کے سبب میں ساقط الشہادۃ قرار دیا اس کے ساتھ ہی انہوں  
نے عہدہ قضا سے استعفا لے دیا اور عدالت سے اٹھ کر گھر آ گئے۔ ملک صالح  
نے خود جا کر اس بالاخانہ کو منہدم کر دیا اور شیخ کو راضی کر کے دوبارہ مستعد  
پر لایا۔ ایک روایت یہ بھی ہے کہ سلطان نے عہدہ قضا پر شیخ کا دوبارہ تقرر بوجہ  
مناسب نہ سمجھا تاہم اس کی نگاہ میں ان کی قدر و منزلت اور بڑھ گئی، اور پھر امیر  
فخر الدین کا خیال تھا کہ اس کے ساقط الشہادۃ ہونے کے بارے میں شیخ کے اعلان  
کا اس پر کیا اثر پڑ سکتا ہے۔ لیکن اتفاق ایسا ہوا کہ اسی زمانہ میں سلطان مصر  
نے خلیفہ بغداد مستعصم باللہ کے پاس ایک سفارت بھیجی۔ سفیر نے خلیفہ کی بہت  
میں باریاب ہو کر سلطان مصر کا پیغام دیا تو اس نے پوچھا کہ یہ پیغام تم نے خود  
سلطان کی زبانی سنا ہے یا کسی اور سے؟ اس نے کہا کہ میں نے یہ پیغام

حاجبِ سلطانی امیر فخر الدین کی زبانی سنا ہے۔ خلیفہ نے کہا کہ فخر الدین کی زبان  
کا کہا ہوا معتبر نہیں ہے کیونکہ شیخ عز الدین نے اس کو ساقط الشہادۃ قرار دیا  
ہے چنانچہ سفیر پھر مصر واپس آیا اور براہِ راست سلطان سے پیغام لیا اور بار  
بغا دو جا کر خلیفہ کو پہنچایا۔

ایک دفعہ الملک الصالح پورے تزک و احتشام کے ساتھ دربار میں بیٹھا  
تھا کہ شیخ وہاں پہنچے اور بڑے جلال کے ساتھ بادشاہ سے مخاطب ہو کر فرمایا  
”اے ایوب اتم خدا کے سامنے کیا جواب دو گے جو پوچھا  
جائے گا کہ تم نے تمہیں سلطنت اس لیے دی تھی کہ اس میں آزادی  
سے شراب پی جائے۔“

بادشاہ نے پوچھا: ”کیا مطلب ہے؟“

شیخ نے فرمایا ”فلاں جگہ شراب آزادی سے بک رہی ہے اور  
دوسرے فواجشات و منکرات ہو رہے ہیں اور تمہیں خبر ہی نہیں“  
بادشاہ نے کہا کہ یہ سب کچھ میرے والد کے زمانے سے  
ہو رہا ہے میرا اس میں کچھ دخل نہیں۔

شیخ نے کر لاک کر فرمایا: ”تو پھر تم بھی انہی لوگوں میں سے ہو جو  
تبلیغِ حق کے جواب میں یہ کہتے تھے کہ یہ ہمارے باپ و دادا کے  
زمانے سے ہوتا چلا آ رہا ہے۔“

بادشاہ یہ سن کر تھرا اٹھا اور اس نے اسی وقت شراب خانہ  
کی بندش کا حکم جاری کر دیا۔

شیخ اپنی قیامگاہ پر واپس آئے تو ایک شاگرد نے پوچھا کہ حضرت آپ نے  
دربار میں بادشاہ کو اس طرح لاکا کیا آپ کے کچھ بڑے مشورے میں نہیں آئے۔

شیخ نے فرمایا کہ :

”بادشاہ کی شان و شوکت اور لوگوں کو اس کے سامنے سر جھکاتے  
دیکھ کر مجھے اندیشہ ہوا کہ کہیں وہ تکبر کا شکار نہ ہو جائے اس کا علاج میرے  
نزدیک ہی تھا کہ اُس کو بھرے دربار میں اپنی کوتاہی پر متنبہ کیا جائے اس وقت  
سیرت الہی مجھ پر ایسی چھائی ہوئی تھی کہ بادشاہ مجھ کو ایک بلی سے بھی حقیر محسوس  
ہوتا تھا۔“

اس قسم کے متعدد واقعات شیخ کے اوراق سیرت کی زینت ہیں فی الحقیقت  
شیخ ایک منارہ نور تھے جس کی ضیا پاشیوں نے مسلمانانِ مصر و شام کے قلوب  
کو برسوں تک منور رکھا۔ مسلمانوں پر جب کبھی اعدائے اسلام کی یورش ہوئی شیخ  
کی ذات نے ہمیشہ ان کے لیے ایک مضبوط ڈھال کا کام دیا کیونکہ ان کے  
دولہ انگیز مواعظ و خطبات مسلمانوں کے دلوں میں شوقِ جہاد کے شعلے بھڑکاتے  
تھے اور وہ دشمن کے مقابلے پر جان کی بازی لگاتے تھے۔

ایویں کے بعد مملوک برسرِ اقتدار آئے تو انہوں نے بھی شیخ کی عزت و احترام  
میں کوئی کمی نہ کی اور وہ بدستور مصر کی سب سے بلند دینی شخصیت تسلیم کیے جاتے  
رہے۔ ۶۵۸ھ میں سلطان بیبرس نے تختِ حکومت پر قدم رکھا تو شیخ اسی برس  
کی عمر کو پہنچ چکے تھے اور برابر اہلِ مصر کے دلوں پر پھرائی کر رہے تھے۔ صلیبیوں اور  
تاتاریوں سے معرکہ آرائیوں میں بیبرس نے جو نمایاں کارنامے سرانجام دیئے تھے  
ان کی بنا پر وہ شیخ کی ولی و عاؤں کا مستحق بن گیا تھا۔ چنانچہ شیخ نے اس کے  
سر پر آرائے حکومت ہونے کا خیر مقدم کیا۔ سلطان پہلے ہی شیخ کا عقیدت مند تھا  
اب وہ اُن کا پہلے سے کہیں زیادہ احترام کرنے لگا یہاں تک کہ کوئی کام اُن سے  
رائے لینے پر تیار نہ کرتا تھا۔ ۶۶۰ھ میں جب اس نے مصر میں خلافت عبادت

کا اجراء کیا تو جب تک شیخ نے نئے خلیفہ المستنصر باللہ کی بیعت نہ کی کسی دوسرے نے اس کی بیعت کے لیے ہاتھ آگے نہ بڑھایا۔ شیخ نے ۶۶۲ھ میں چورانوے سال کی عمر میں سفرِ آخرت اختیار کیا۔ سائے عالمِ اسلام نے ان کی موت کا سوگ منایا۔ سلطان بھی کئی دن تک ان کی موت کے صدمے سے ندھال رہا۔ وہ کہا کرتا تھا کہ شیخ عزالدین کی زندگی میں حکومت کے سربراہ وہی تھے ان کی وفات کے بعد مجھے معلوم ہوا کہ ایک پہاڑ میرے سر پر رکھ دیا گیا ہے حقیقت میں میری حکومت ان کی موت کے بعد شروع ہوئی۔

## ابن عبد الظاہر

محمی الدین ابو الفضل عبداللہ بن رشید الدین ابو محمد عبد الظاہر کا شمار بحری عہد کے عہد کے مشاہیر میں ہوتا ہے وہ ۹ محرم ۶۲۰ھ مطابق ۱۲ فروری ۱۲۲۳ء کو قاہرہ میں پیدا ہوئے۔ اور ۴ رجب ۶۹۲ھ کو وہیں وفات پائی۔ نہایت اعلیٰ درجہ کے انشا پرداز، مؤرخ، سیرت نگار اور شاعر تھے۔ انہوں نے تین بحری مملوک سلاطین، الملک الظاہر بیبرس، المنصور قلاوون اور الاشرف خلیل کے عہد میں صاحبِ دیوان انشاء کی حیثیت سے کئی اہم کام سر انجام دیے۔ بیبرس کے دورِ حکومت میں انہوں نے متعدد اہم دستاویزات کے مسودے تیار کیے۔ ۶۵۹ھ میں سلطان بیبرس نے مصر میں خلافت عباسیہ کا اجراء کیا تو خلیفہ کا خطبہ ابن عبد الظاہر ہی نے لکھا۔ ۶۶۲ھ میں انہوں نے بیبرس کے اس فرمان کا مسودہ تیار کیا کہ رُو سے الملک السعیدی ولی عہد قرار پایا۔ کچھ عرصہ بعد انہوں نے الملک

قلاوون کی بیٹی کی شادی کا نکاح نامہ مرتب کیا۔ علامہ جلال الدین سیوطی نے تاریخ الخلفاء میں لکھا ہے کہ ۶۷۴ھ میں سلطان بیبرس نے نور مستح کیا تو اس موقع پر ابن عبد الظاہر نے ایک زوردار تہنیتی قصیدہ لکھا۔ علامہ موصوف نے بہت سی تصانیف اپنی یادگار چھوڑیں ان میں سے چند کے نام یہ ہیں:

۱۔ کتاب الروضہ البہیئۃ الناہرۃ فی خطط المعزۃ القاہرہ۔

۲۔ سیرت الملک الظاہر بیبرس۔

۳۔ سیرت الملک المنصور سیت الدین قلاوون۔

۴۔ سیرت الملک الاثرث صلاح الدین خلیل۔

۵۔ تمام الحمائم۔ یہ ایک عجیب و غریب کتاب ہے جس میں علامہ ابن عبد الظاہر نے نامہ بزرگوتروں کے حالات بڑی شرح و بسط کے ساتھ لکھے ہیں اور ان کبوتروں کی نسلوں، عادات و خصائل، پیغام رسانی اور پیغام نویسی کے متعلق بے شمار دلچسپ اور قیمتی معلومات بہم پہنچائی ہیں۔ انہوں نے یہ کتاب رنگین مسحیح طرز کی نہایت فصیح و بلیغ نثر میں لکھی ہے۔

## علامہ ابن منظور

علامہ ابو الفضل جمال الدین محمد بن مکرم الافرقی المصری الانصاری النخزجی

الکرونی المعروف بہ ابن منظور کا شمار ساتویں صدی ہجری کے سرآمد روزگار علمائے

سرتا ہے۔ ۲۲ محرم ۶۳۰ھ کو قاہرہ کے ایک ذی علم خاندان میں پیدا ہوئے

ابوہ ان ذی طے کے علماء سے تعلیم حاصل کی اور سن بلوغ کو پہنچنے تک مختلف علوم

اس سے سیکھ لیں

میں درجہ منتخراً حاصل کر لیا۔ نہایت اعلیٰ درجہ کے خطاط اور نویس اور انشا پرداز تھے۔  
 حدیث میں وہ کوئی امتیازی درجہ حاصل نہ کر سکے لیکن نحو و لغت میں ان کو امام عصریم <sup>تسلیم</sup>  
 کیا گیا۔ تاریخ و ادب میں بھی ان کو درجہ کمال حاصل تھا کبھی کبھی شعر بھی کہتے تھے۔  
 مصر میں وہ کاتب الانشاء الشریف کے فرائض انجام دیتے رہے، ایک مدت تک  
 مکہ معظمہ میں بھی قیام رہا۔ فلپ کے حتی کا بیان ہے کہ ابن منظور، طرابلس میں قاضی  
 بھی رہے۔ سلطان بیبرس کے عہد میں علامہ ابن منظور کے علمی کمالات کا تمام عالم اسلام  
 میں ڈنکا بچ رہا تھا۔ علامہ موصوف نے <sup>۱۱۱۱ھ</sup> <sup>۱۳۱۱ء</sup> میں داعی اجل کو لبیک کہا اور <sup>متعدد</sup>  
 بلند پایہ تصانیف اپنی یادگار چھوڑیں ان میں سب سے اہم اور مشہور تصنیف "لسان العرب"  
 ہے۔ یہ عربی زبان کی نہایت ضخیم اور جامع لغت ہے اور مشرق و مغرب کے تمام علما  
 نے اس کے محاسن کا اعتراف کیا ہے۔ اس شاہکار تصنیف کے علاوہ علامہ  
 ابن منظور نے ادب اور تاریخ کی بے شمار کتابوں کا اختصار کیا ان میں سے چند  
 کے نام یہ ہیں:

۱۔ تاریخ بغداد للخطیب بغدادی۔

۲۔ تاریخ بغداد لابن النجار۔

۳۔ تاریخ دمشق لابن عساکر۔

۴۔ الجیوان للجاحظ۔

۵۔ صفوة الصفوة لابن الجوزی۔

۶۔ العقد لابن عبد ربہ۔

۷۔ تاریخ بغداد لابن سعد السمعی۔

۸۔ تاریخ لبنان ترجمہ غلام رسول مہر۔

- ۸۔ زہر الآداب للخصری۔
  - ۹۔ نشوار المحاضرة للتتوحي۔
  - ۱۰۔ یقیمۃ الدہر للثعالبی وغیرہ۔
- ان کے علاوہ علامہ موصوف کی تصنیف "نار الازہار فی اللیل والنہار" نے اپنی ادبی خوبیوں کی بناء پر بڑی شہرت پائی ہے

## سبط ابن جوزی

شمس الدین ابو المنظر یوسف بن قیز اوغلو معروف بہ سبط ابن جوزی <sup>۵۸۲ھ</sup> <sub>۱۱۸۶ء</sub> میں بمقام بغداد پیدا ہوئے۔ مشہور محدث علامہ ابن جوزی کے نواسے تھے اور انہیں کے زیر سایہ پرورش اور تعلیم پائی۔ ۶۰۰ھ میں سفر نیکلے اور بالآخر دمشق میں مستقل اقامت اختیار کر لی۔ سلطان بیبرس کے عہد میں وہ یہیں درس و تدریس اور وعظ و افتاء کے ذریعے ایک دنیا کو مستفیض کر رہے تھے۔ <sup>۶۸۴ھ</sup> <sub>۱۲۸۶ء</sub> میں انتقال کیا۔ وہ کئی معرکہ الآراء کتابوں کے مصنف تھے جن میں سے چند کے نام یہ ہیں:

- ۱۔ تفسیر القرآن۔
- ۲۔ شرح جامع البکیر۔
- ۳۔ مرآت الزمان فی تاریخ الاعیان۔
- ۴۔ تذکرہ خواص الامۃ بذكر خصائص الامۃ۔

## مقاضی جمال الدین بن مالک الطائی

مقاضی جمال الدین ابو عبد اللہ محمد بن عبد اللہ بن محمد بن عبد اللہ مالک الطائی معروف بہ ابن مالک اپنے دور کے کاملین علماء و فضلاء اور شعراء میں سے تھے۔ ۶۰۰ھ سے لگ بھگ اندلس کے شہر جیان میں پیدا ہوئے۔ پہلے جیان کے سپہ سالار اور وہ علماء سے تعلیم حاصل کی پھر دمشق آگئے اور وہاں کے مشاہیر علماء سے نحو اور حدیث پر علمی تحصیل علم سے فائدہ ہونے کے بعد حلب میں نحو پورس دینا شروع کیا اور وہیں مدرسۃ العادلیہ کے امام مقرر ہو گئے پھر حماة آگئے چند سال بعد وہاں سے رخت سفر باندھا اور دمشق آکر درس و تدریس میں مشغول ہو گئے اور وہیں ۶۷۲ھ میں وفات پائی۔ سلطان بیبرس کے عہد میں ان کی شہرت اور کمال پر تھی اور وہ حجة العرب کے لقب سے مشہور تھے۔ کہتے ہیں کہ عربی ادب اور لغت میں ان کے فضل و کمال کے سامنے امام سیبویہ کی شہرت بھی ماند پڑ گئی تھی۔ نہایت عابد و زاہد۔ بلند اخلاق اور زیرک تھے ان کے شاگردوں میں امام نوویؒ، مقاضی بدر الدین بن جماعتہ، بہاؤ الدین بن الخناس، حلبی اور شیخ ابوالحسن الیونینی نے بڑی شہرت پائی۔ ابن مالک کی چند اہم تصانیف کے نام یہ ہیں:

- ۱۔ الکافیۃ الشافیہ۔
- ۲۔ کتاب تسہیل الفوائد تکمیل المقاصد۔
- ۳۔ کتاب العروض۔
- ۴۔ کتاب الالفاظ المختلفہ۔
- ۵۔ ایجاز التعریف فی علم التصریف۔



- ۶۔ سبک المنطوم و فک المختوم۔  
 ۷۔ کتاب الخلاصہ الالفیہ۔  
 ۸۔ کتاب شواہد التوضیح والتصحیح لمشکلات الجامع الصحیح۔

## قاضی بدرالدین ابن جماعتہ

قاضی بدرالدین ابو عبد اللہ محمد بن ابراہیم الکنانی الحموی ۶۳۹ھ میں منقلا  
 حماة پیدا ہوئے۔ علماء کے ایک جلیل القدر خاندان سے تعلق رکھتے تھے انہوں  
 نے درس و تدریس اور قانون و ادب میں بڑا نام پیدا کیا۔  
 سلطان بیبرس کے عہد میں دمشق کے ایک مدرسہ میں معلم تھے۔ اس کی وفات  
 کے بعد ۶۸۷ھ میں یرشلیم کے قاضی بنائے گئے۔ ۶۹۰ھ میں قاہرہ اور ۶۹۳ھ  
 میں دمشق کے قاضی القضاة مقرر ہوئے۔ ۷۰۲ھ میں دوبارہ قاہرہ کے قاضی القضاة  
 بنائے گئے اور تقریباً چوبیس برس تک اس عہدے پر قائم رہے۔ ۷۳۳ھ میں وفات  
 پائی۔ متعدد تصانیف اپنی یادگار چھوڑیں جن میں سے دو اہم تصانیف کے نام یہ ہیں۔  
 ۱۔ تحریر الاحکام فی تدبیر اہل الاسلام (یعنی قانون کے موضوع پر ہے)  
 ۲۔ تذکرۃ السامع والمتکلم فی ادب العالم والمتعلم و تعلیم و تربیت کے موضوع پر ہے۔

## ابن شداد حلبی

عزالدین ابو عبد اللہ محمد بن علی بن ابراہیم الانصاری الحلبي معروف بہ ابن شداد

بیرس کے زمانے میں مشہور مؤرخ و سوانح نگار تھے۔ ۶۱۳ھ میں بنام حلب پیدا ہوئے اور ۶۸۲ھ میں قاہرہ میں وفات پائی۔ ان کی مشہور تصنیفات کے نام یہ ہیں :-

- ۱- سیرۃ الملک الظاہر بیرس اس کا ترکی زبان میں بھی ترجمہ ہو چکا ہے۔
- ۲- الأعلاق الخظیۃ الخظیۃ فی ذکر أمر الشام والحزیرہ۔ (یہ شام و الجزیرہ کی تاریخ ہے اور اس میں وہاں کی مشہور شخصیتوں کے حالات بھی شرح و بسط کے ساتھ درج ہیں)۔

۳- تاریخ حلب۔

بعض مورخین نے ان کو قاضی بہاؤ الدین ابوالمحسن یوسف بن رافع مصنف "التواریخ السلطانیہ والمحسن الیوسفیہ" (سیرت سلطان صلاح الدین) کے ساتھ ملتبس کر دیا ہے اور سیرۃ الملک الظاہر بیرس کو بھی انہی کی تصنیف بتایا ہے حالانکہ قاضی موصوف ۶۳۲ھ میں وفات پا چکے تھے اور ملک الظاہر بیرس کا دور اقتدار ۶۵۸ھ میں شروع ہوا۔

## قاضی عبدالرحمن بن قدامہ

قاضی شمس الدین عبدالرحمن بن محمد بن احمد بن محمد بن قدامہ بیرس کے عہد میں فقہ حنبلی کے یگانہ روزگار عالم تھے۔ ۵۹۷ھ میں قاسیون میں پیدا ہوئے ان کے والد ابو عمر محمد اور چچا موفق الدین ابو محمد عبداللہ اپنے دور کے سرآمد روزگار علماء میں سے تھے۔ ان دونوں نے بھی ابن قدامہ ہی کے نام سے شہرت پائی۔

قاضی عبدالرحمن نے اپنے والد اور چچا کے علاوہ اس دور کے کئی دوسرے مشاہیر علمائے  
 سے علم حاصل کیا اور چند سال کے اندر اندر مختلف علوم میں درجہ تبحر پر فائز ہو گئے۔  
 سلطان پیرس نے جب دمشق میں آگے آگے مذہب کے قاضی مقرر کیے تو ان کو  
 خطابہ کا قاضی بنایا۔ اپنے علم و فضل کی وجہ سے لوگوں میں "شمس الدین" کے لقب سے  
 مشہور تھے۔ نہایت حلیم الطبع اور بردبار تھے۔ شکل و صورت سے وجاہت اور وقار  
 چمکتا تھا۔ عہدہ قضاء کو پسند نہیں کرتے تھے لیکن سلطان کے اصرار پر اس کو بارہ  
 برس تک بنائے رہے۔ ۶۸۲ھ میں وفات پائی۔ ان کی تصنیفات میں دو کتابیں  
 مشہور ہیں:

- ۱۔ الشافی دالشرح الکبیر
- ۲۔ تفسیر المطلب فی تحصیل المذہب۔

## ابوشامہ مقدسی

شہاب الدین ابو محمد عبدالرحمان بن اسماعیل المقدسی الشافعی معروف بہ  
 ابوشامہ عہد پیرس کے نامور مورخ و ماہر ادبیات تھے۔ ۴۳ ربیع الثانی ۵۹۹ھ  
 (مطابق ۱۰ جنوری ۱۲۰۳ء) کو دمشق میں پیدا ہوئے اور تقریباً ساری زندگی  
 یہیں گزار دی۔ ابوشامہ صرف چار موقوفوں پر دمشق سے باہر نکلے پہلی مرتبہ حصول تعلیم  
 کے لیے مصر گئے اور اسکندریہ میں ایک سال رہ کر فقہ و ادبیات وغیرہ کی تعلیم لوری  
 کی۔ دوسری مرتبہ صرف چودہ دن کے لیے القدس گئے اس کے بعد دوسری مرتبہ حج  
 کے لیے حجاز گئے۔ ۶۶۰ھ میں دمشق کے "المدرستہ الکلتیہ اور المدرستہ الماشرفیہ"

یہ مدرس مقرر ہوئے اور پانچ سال تک نہایت حسن و خوبی سے درس و تدریس کی

خدمت انجام دیتے رہے۔ ۱۹ رمضان المبارک ۶۶۵ھ (مطابق ۳۱ جون ۱۲۶۸ء)

کووفات پائی بعض مورخین نے لکھا ہے کہ لوگوں نے انہیں کسی جرم کے شبہ میں

قتل کر ڈالا۔ علامہ ابوشامہ نے متعدد گراں قدر تصانیف اپنی یادگار چھوڑیں ان میں

سے چند کے نام یہ ہیں:

۱۔ کتاب الروضتین فی اخبار الدولتین۔ اس میں سلطان نور الدین زنگی اور

صلاح الدین ایوبی کے حالات درج ہیں۔

۲۔ تاریخ دمشق۔ یہ ابن عساکر کی تاریخ دمشق کا خلاصہ ہے۔

۳۔ ابرر المعانی۔ قصیدہ شاطبتیہ کی شرح ہے۔

۴۔ الذیل علی الروضتین۔ یہ کتاب الروضتین کا ذیل ہے۔ یہ کتاب تاریخ سے

زیادہ سیر پر مشتمل ہے۔

۵۔ مختصر کتاب المومل للرد الی الامر الاول۔

۶۔ الباعث علی انکار البدع و الحوادث۔

۷۔ المرشد الوجیز۔

۸۔ علم الدین السنخاوی کی سات نعتیہ نظموں کی شرح۔

ابوشامہ کی کئی دوسری تصانیف حوادث زمانہ کی نذر ہو گئیں۔

## ابن ابی اصیبعہ

موفق الدین ابوالعباس احمد بن القاسم بن خلیفہ بن یونس السعدی الحوزی

معروف برابن ابی اصیبعہ ۴۰۰ھ میں بمقام دمشق ایک ماہر امراض چشم کے گھر پیدا ہوئے۔ انہوں نے فن طب اور تذکرہ نویسی میں عالمگیر شہرت پائی۔ فن طب میں وہ ابن بیطار کے شاگرد تھے۔ ابن بیطار کے علاوہ انہوں نے شیخ ابو بکر صقلیؒ اور مہذب الدین ابن الاخوان (یادخوار) سے بھی استفادہ کیا۔ ۶۴۳ھ میں ابن ابی اصیبعہ

۱۲۲۵ھ میں ابن ابی اصیبعہ کے ابو محمد عبداللہ بن احمد ضیاء الدین ابن البیطار المالکی ساتویں صدی ہجری کے مشہور ماہر نباتیات و عقاقیر تھے۔ مشہور مستشرق ایڈورڈ طسجی براؤن کا قول ہے کہ وہ صحیح معنوں میں یونانی حکیم و سیقوریدیوں کے جانشین تھے۔ ابن بیطار سن شعور کو پہنچے تو انہوں نے اس دور کے سرآمد روزگار اندلسی طبیب و ماہر نباتیات ابن رومیہ کی شاگردی اختیار کی اور چند سال کے بعد خود ایک عظیم ماہر نباتیات کی حیثیت سے دنیا کے سامنے آئے۔ انہوں نے جولاہی بوٹیوں کی تلاش میں افریقہ، مراکش، تیونس، الجزائر، ایشیائے کوچک یونان اور پورے مصر کی طویل سیاحت کی اور الملک الکامل اور الملک الصالح ایوبی کے عہد حکومت میں کسی سال تک مصر کے محکمہ نباتیات کے افسر اعلیٰ درجے میں علی سائر العشابین رہے۔ ۶۴۶ھ میں وفات پائی۔ ان کی تصنیفات میں کتاب الافعال الغریبہ والخواص العجیبہ، کتاب الجامع فی الادویۃ المفردہ اور کتاب المعنی فی ادویۃ المفردہ بہت مشہور ہیں۔ ان کا کئی یورپی زبانوں میں بھی ترجمہ ہو چکا ہے۔ شیخ ابو بکر صقلی طبیب کا شمار اپنے دور کے اساتذہ فن میں ہوتا تھا۔ ان کے شاگردوں میں ابن ابی اصیبعہ اور شیخ عزالدین بن سویدی نے جو بھارت تان نوری دمشق کے طبیب حاذق تھے بڑی شہرت پائی۔ ابن ابی اصیبعہ (عمیون الانباء) میں شیخ عزالدین کے ترجمہ میں لکھتے ہیں: میں اور عزالدین دونوں شیخ ابو بکر صقلی رحمہ اللہ کے درس میں شریک تھے اور اسی وقت سے ہم دونوں میں رشتہ محبت قائم ہے۔

۳۰ مہذب الدین ابن الاخوان (یادخوار) ۱۲۳۰ھ (۱۸۱۵ء) الیومیوں (باقی ص ۲۸۶ پر)

نے اپنی شہرہ آفاق کتاب "عیون الانباء فی طبقات الاطباء" لکھی۔ اس کتاب میں انہوں نے تقریباً چار سو ایسے اطباء و حکماء کے حالات درج کیے ہیں جو علم طب اور اس کے متعلقہ فنون میں درجہ پنجم رکھتے تھے اس کے بارہویں باب میں بزرگوں کی کتابوں کے اطباء کے حالات بھی درج ہیں۔ اپنی نوعیت کے لحاظ سے یہ کتاب مشرق اور مغرب میں ہر جگہ بے مثل خیالی کی جاتی ہے۔ مشہور مستشرق قلب کے حتمی لکھنا ہے کہ "اس کتاب کو عربی تصانیف میں یگانگی کا درجہ حاصل ہے۔"

ابن ابی اصیبعہ نے ۶۳۴ھ میں قاہرہ کے شاہی شفاخانے (مارستان صلاح الدین غازی) میں ایک سال تک سرکاری ملازمت کی۔ اس کے بعد وہ امیر عزالدین ایبمراہجلی کے طبیب خاص کی حیثیت سے صرخہ چلے گئے اور اپنی وفات ۶۶۸ھ تک وہیں رہے۔ سلطان بیس کے عہد میں ابن ابی اصیبعہ کی شہرت اور عظمت کا آفتاب نصف النہار پر چمک رہا تھا اور وہ عوامی اور سرکاری حلقوں میں ہر جگہ نہایت عزت و احترام کی نظروں سے دیکھے جاتے تھے۔

رہیقہ حاشیہ ص ۲۸۵ کے دور حکومت کے نامور طبیب تھے۔ وہ دمشق کے بیمارستان نوری سے وابستہ تھے۔ ان کے شاگردوں میں ابن النفیس نے بڑی شہرت پائی۔ ابن نے ابو علی سینا کی کتاب "قانون" کی شرح لکھ کر لغائے دوم کے دربار میں جگہ حاصل کر لی۔ اسے تاریخ شام۔ حتمی۔ ترجمہ، غلام رسول مہر۔

۳۔ اس وقت الملک الکامل ایوبی کا دور حکومت تھا۔

۴۔ عزالدین ایبمراہجلی اس زمانے کا ایک بااثر امیر تھا۔ سلطان بیس نے بھی اپنے دور اقتدار میں اس کی بڑی توقیر کی۔ امیر موصوف نے سلطان کی مدد سے جامع ازسرا کی ممت کے بعض کاموں پر اپنے پاس سے کاغذ اور دیگر چیزیں لکھا

## ابن نقیس

علاء الدین ابوالعلاء علی بن ابی الحرم القرظی دمشقی معروف بہ "ابن نقیس" ساتویں صدی ہجری کے یکتائے زمانہ طبیب اور فقہ و شافعی (صرف و نحو اور منطق کے ایک جید عالم تھے۔ ۶۰۷ھ کے لگ بھگ دمشق میں پیدا ہوئے اور وہاں کے "البیمارستان النوری" میں طب کی تعلیم حاصل کی اس کے علاوہ انہوں نے دوسرے علوم متداولہ میں بھی مہارت پیدا کی۔ کچھ عرصہ بعد وہ قاہرہ چلے گئے۔ وہاں وہ ایک طرف ایک شفاخانے میں طب پڑھاتے تھے اور دوسری طرف مدرسہ مسروریہ میں فقہ کا درس دیتے تھے۔ کہا جاتا ہے کہ مصر میں انہیں "رئیس اطباء مصر" کا عہدہ دیا گیا تھا۔ ابن نقیس نے ۶۸۷ھ میں وفات پائی۔ انہوں نے ایک گراں قدر تصنیفی ذخیرہ اپنی یادگار چھوڑا ان میں سے چند اہم تصانیف

کے نام یہ ہیں:

۱۔ موجز القانون، یعنی قانون ابن سینا کی شرح اس کتاب نے مشرق و مغرب میں بڑی شہرت پائی اور صدیوں تک اس کی شرحیں اور شرحوں کی شرحیں لکھی جاتی رہیں۔

۲۔ شرح فصول بقراط۔

۳۔ کتاب المہذب فی الکحل۔

۴۔ الکتاب الشامل فی الطب۔

۵۔ مختصر علم اصول الحدیث۔

۶۔ الرسالة الکاملیة فی السیرة النبویة۔

کہا جاتا ہے کہ ابنِ نقیسیں کی بیشتر تصانیف طبعاً و تھیں اور ان کی تیار کاری  
 میں انہوں نے دوسری کتابوں سے کوئی مدد نہیں لی تھی۔ اپنی وفات سے پہلے  
 انہوں نے اپنا مکان اور عظیم الشان کتب خانہ قاہرہ کے "شفا خانہ" منسوب بہ کے  
 نام وصیت کر دیا تھا۔  
 (دائرہ معارف اسلامیہ)

## قاری جمال الدین

احمد نام اور لقب جمال الدین۔ سلطان پیرس اور اس کے پیشرووں کے  
 عہد میں فنِ قرأت کے امام تسلیم کیے جاتے تھے۔ بچپن ہی میں آنکھوں کی بیماری  
 جاتی رہی تھی۔ طویل عمر پاکر ۷۶۲ھ میں بمقام قاہرہ داعی اجل کو لبیک کہا۔

## شیخ القراء کمال الدین مصری

علی نام تھا اور حضرت عباس بن عبدالمطلب کی اولاد سے تھے۔ نور بصارت  
 سے محروم تھے لیکن نور بصیرت سے مالا مال۔ ان کی وفات اہل مصر کا طرہ افتخار  
 تھی۔ نہایت عابد و زاہد تھے۔ اور فنِ قرأت میں درجہ کمال رکھتے تھے اس لیے  
 شیخ القراء کے لقب سے مشہور تھے۔ امام و میاظمی فنِ قرأت میں ان کے شاگرد  
 تھے اور ساتوں قرأتیں انہیں سے حاصل کی تھیں۔ ۹۸ برس کی عمر میں ۷۶۱ھ میں  
 وفات پائی۔



## شیخ محمد بن مکی صقلی

شیخ محمد بن مکی صقلی راجعہ میرس میں قاہرہ کے ممتاز عالمان حدیث میں تھے۔  
ان کے خاندان نے صقلیہ سے ہجرت کر کے دمشق میں سکونت اختیار کر لی تھی۔  
تاہم اس کے افراد اپنے قدیم وطن کی نسبت سے صقلی کہلاتے تھے اس خاندان  
کو علوم قرآن و حدیث سے بڑا شغف تھا۔ شیخ محمد ۶۱۴ھ میں دمشق میں پیدا  
ہوئے۔ سلسلہ نسب یہ ہے:

محمد بن مکی بن ابی بکر بن عبدالغنی بن یوسف بن ابی عبداللہ ابراہیم شمس الدین

ابن الحزم تقی الدین قرشی۔

سین شعور کو پہنچنے کے بعد شیخ موسوف نے مختلف علوم اسلامی کی تحصیل و  
تکمیل کی پھر کسب معاش کے لیے زردوزی اور نقاشی کا کام سیکھا۔ سلسلہ روزگار  
میں دمشق سے قاہرہ آئے اور یہاں زردوزی کے ایک کارخانے میں ملازم ہو  
گئے۔ آخر عمر تک یہیں رہے۔ نہایت خود دار اور دلش صفت تھے۔ ساری عمر  
ہاتھ سے محنت کر کے روزی کمائی اور علم کو کبھی دنیوی منفعت کا ذریعہ نہیں بنایا  
۶۹۹ھ میں وفات پائی اور قاہرہ کے باب النصر میں مدفون ہوئے۔

علم حدیث میں ماکم بن ابی الصفر۔ البطار۔ اسمعیل بن ظفر۔ ابو عبد اللہ بن

زبیدی اور ابو المنجا بن اللبثی ان کے شیوخ تھے:

## ابوالفضل مہندس دمشقی (طہیب)

مؤید الدین بن عبد الکریم المہندس معروف بہ ابوالفضل مہندس دمشقی کے رہنے والے اور کتاب فی الحروف والسیاست کے مصنف تھے۔ نواب صدر یار جنگ مولانا محمد طہیب الرحمن خاں شروانی نے اپنی کتاب "علمائے سلف و نابینا علماء" میں "عبودین الانباء فی طبقات الاطباء" کے حوالے سے لکھا ہے کہ وہ مشہور طہیب تھے اور فنِ بخاری میں بھی بہت ماہر تھے۔ بخاری کا کام ان کے پاس کثرت سے آتا تھا۔ بیمارستان کبیر شاہی شفا خانے کے اکثر دروازے ان کے ہاتھ کے بنے تھے۔ جامع مسجد دمشق کی گھڑیاں (ساعات) انہوں نے درست کی تھیں اور ان کی نگرانی کے منقول ان کو تنخواہ ملتی تھی۔ عہدِ بیس میں ان کی شہرت اوج کمال پر تھی۔ ۶۹۹ھ میں وفات پائی۔

## امام نووی

نام یحییٰ بن شرف کنیت ابو زکریا اور لقب محی الدین تھا۔ نیابۃ اسلام میں امام النووی یا امام النواری کے لقب سے مشہور ہوئے۔ ۶۳۱ھ میں قزوین دمشق کے موضع نووی (نوا) میں پیدا ہوئے۔ بچپن میں قرآن شریف پڑھ کر دمشق آئے اور طب اور علوم اسلامی حاصل کیے۔ یہاں وہ مدرسہ رواجیم میں پڑھتے تھے۔ کہتے ہیں کہ انہوں نے شافعی مذہب کی کتاب شیبہ کو سارے چار ماہ میں حفظ کر لیا۔

روزانہ مختلف علوم میں مختلف استادوں سے بارہ سبق پڑھتے تھے اور شب و روز مطالعہ میں مصروف رہتے تھے۔ ان کے اساتذہ میں کمال الدین اسحاق مغربی بہت مشہور ہیں، وہ امام رافعی کے بعد شافعی فقہ کے مدقن تھے۔ امام نووی نے ۶۵۱ھ میں پہلی بار اپنے والد کی معیت میں حج کیا۔ ۶۵۵ھ میں انہوں نے مکہ مکرمہ شریف کی مدت تک دمشق کے مدرسہ اشرفیہ میں بلا معاوضہ حدیث پڑھاتے رہے چند سال کے اندر اندر تمام دنیائے اسلام میں ان کے علم و فضل کی شہرت ہو گئی اور وہ امام وقت تسلیم کیے گئے اگرچہ وہ شافعی المسلک تھے لیکن تعصب سے بالکل پاک تھے۔ چنانچہ اپنی تصانیف میں جاہلجا امام ابو حنیفہ کے اقوال نقل کرتے ہیں۔ لذات دنیوی اور خواہشات نفسانی سے بہت پرہیز کرتے تھے اور زہد و عبادت میں ضرب المثل تھے۔ ساری ساری رات عبادت میں مصروف رہتے اور دن رات میں صرف ایک بار نماز عشاء کے بعد کھاتے اور صرف ایک وقفہ سحر کے وقت پانی پیتے۔ نہایت بردبار اور بلند حوصلہ تھے۔ خصوصاً بحث کے وقت نہایت تحمل اور وقار کا مظاہرہ کرتے۔ مصائب و آفات پر بھی بے حد صابر تھے۔ ساری عمر مجرور رہے۔ اس کی وجہ بظاہر ان کی غولت پسندی تھی۔ والدین ان کو کبھی کبھار جو کچھ بھیج دیتے اسی پر گزارہ کرتے اور کسی دوسرے سے کچھ مطالبہ نہ رکھتے تھے۔ جس زمانہ میں بیس بس نے مصر اور شام کی حکومت سنبھالی (۶۵۸ھ مطابق ۱۲۶۱ء) امام موصوف، دمشق میں مقیم تھے اور اپنے علم و فضل اور زہد و ورع کی بدولت مرجع خلائق بنے ہوئے تھے۔ سلطان بھی ان کے کمالات علمی کا معترف تھا اور ان سے نہایت واحترام سے پیش آتا تھا۔ لیکن بد قسمتی سے ۶۶۶ھ میں اس کے اور امام نووی کے درمیان ایک معاملہ میں شدید اختلاف پیدا ہو گیا جس نے بڑا طویل کھینچا۔ مسلم مورخین نے اس واقعہ کا تفصیل سے ذکر کیا ہے۔ مختلف روایتوں کا

خلاصہ یہ ہے کہ سلطان اس سال دمشق گیا اور ارادہ کیا کہ مصارف جہاد کے لیے اہل شام  
 سے کچھ رقم وصول کرے۔ اس بارے میں حکم صادر کرنے سے پہلے اس نے حسب عادت  
 علماء سے فتویٰ طلب کیا۔ شامی علمائے اس کے بواز کا فتویٰ دیا لیکن امام نووی نے ان  
 سے اتفاق نہ کیا اور فتویٰ کی تصدیق کرنے سے انکار کر دیا اس پر سلطان ان سے راضی  
 ہو گیا اور ان کو دمشق سے نکل جانے کا حکم دیا چنانچہ وہ اپنے وطن نووی چلے گئے۔ ان کا  
 اس طرح شہر بدر کیا جانا شامی علماء پر بہت شاق گزرا اور ایک وفد بنا کر سلطان کی خدمت  
 میں حاضر ہوئے اور عرض کیا کہ نووی ہمارے امام اور سردار ہیں۔ دمشق میں ان کی موجودگی  
 ہمارے لیے انتہائی فخر و سعادت کا باعث تھی۔ ان کے بغیر ہمیں یہاں اتنا صبر ہی اندھیرا  
 نظر آتا ہے۔ علمائے کچھ اس پر اٹھے میں گفتگو کی کہ سلطان پر رقت طاری ہو  
 گئی اس نے اپنا حکم فوراً منسوخ کر دیا اور علماء کے وفد سے درخواست کی کہ امام نووی  
 کو اعزاز و اکرام کے ساتھ واپس لائیں۔ جب یہ وفد امام موصوف کی خدمت میں حاضر  
 ہوا تو ان کو سلطان سے بھی کبیدہ خاطر پایا۔ انہوں نے فرمایا کہ میرے بس کی زندگی میں میں  
 کبھی دمشق نہیں جاؤں گا۔ وفد نووی سے مابوس ہو کر دمشق واپس آیا اور سلطان کو  
 امام موصوف کے جواب سے مطلع کیا۔ سلطان شاید تلافی مافات کے لیے کوئی اور  
 قدم اٹھاتا لیکن قدرت نے اسے ایسا کرنے کی مہلت ہی نہ دی اور وہ چند دن بعد

۱۰ ایک روایت میں ہے کہ جہاد کے مصارف پورے کرنے کے لیے سلطان نے اہل شام  
 پر فوجی ٹیکس لگا دیا اور مدرسین کی تنخواہوں میں کسی قدر تخفیف کر دی۔ امام نووی نے  
 سلطان کے ان اقدامات کی سختی سے مخالفت کی اور اس کے پاس جا کر ان احکام کو  
 منسوخ کرنے کا مطالبہ کیا۔ اس سلسلہ میں انہوں نے اپنی عادت کے خلاف سلطان سے  
 بڑی تند و تلخ گفتگو کی جس پر سلطان ان سے کبیدہ خاطر ہو گیا۔

عالم بقا کو سدھار گیا۔

مولانا محمد اسلم جیرا چپوری مرحوم اپنی کتاب "تاریخ الامت" صفحہ ۳۳۳ میں اس واقعہ پر تبصرہ کرتے ہوئے لکھتے ہیں:

"مورخین بالعموم امام نووی کے طرف دار ہیں اور ان کے قول کو حق بجانب سمجھتے ہیں لیکن جن علمائے دستخط کیے تھے وہ سب کے سب ناوان یا دنیا پرست نہ تھے۔ بیش ازین نیست کہ سلطان اگر اپنے گھر سے اس جہاد کے چندہ کو شروع نہ کرے تو قصور وار ہے لیکن جواز میں کیا شبہ؟ کیونکہ یہ اس کا ذاتی کام نہیں ہے۔ بادشاہ اسلام کو مدافعت کفار کے لیے مال دینا اس سے کہیں زیادہ آسان ہے کہ وہ غلبہ کر کے جان و مال دونوں پر مسلط ہو جائیں۔ یہی وجہ تھی کہ سلطان ان سے برہم ہو اور نہ علما کی توقیر ہمیشہ اس کا شیوہ تھا۔"

عجیب اتفاق ہے کہ سلطان بیبرس کی وفات کے بعد امام نووی بھی زیادہ

لہ یہ کتاب فی الحقیقت مشہور مؤرخ محمد بک الخضریٰ کی تاریخ "محاضرات الامم الاسلامیہ" کا آزاد ترجمہ ہے۔

اے کہا جاتا ہے کہ دوران گفتگو میں امام نووی نے سلطان سے کہا کہ تو امیر بند قرار کا زر خرید غلام تھا اور ایک حبیبہ کا مالک بھی نہ تھا۔ اب اللہ نے تجھے سلطنت دی ہے اور تو اس قدر غلاموں اور کنیزوں کا مالک ہے جن کے ساز و سامان طلائی ہیں۔ جب تک تو ان سے یہ سارا ساز و سامان فوجی ضرورت کے لیے نہ لے لے میں غریب مسلمانوں سے مال لینے کا فتویٰ تیرے حق میں کیسے لکھ سکتا ہوں؟

عمر زبجیے۔ اور اسی سال (۱۲۷۶ھ میں) داعی اجل کو لبیک کہا۔ اس وقت ان

کی عمر صرف پینتالیس برس کی تھی اور ان کے والدین بقید حیات تھے۔

امام نووی کا شمار بہت بڑے محدثین میں ہوتا ہے۔ وہ بقدر احادیث میں

بہت سخت تھے اور فن حدیث میں صحیح بخاری صحیح مسلم سنن ابن ماجہ اور

مسند احمد حنبلی کو دوسری تمام کتب احادیث پر ترجیح دیتے تھے۔ انہوں نے

صحیح بخاری اور صحیح مسلم دونوں کی شرح لکھی۔ ان کی شرح صحیح مسلم علمی دنیا میں

بڑی مشہور اور مقبول ہوئی۔ اس کی تصنیف کے زمانے سے آج تک علماء اس سے

فیض یاب ہوتے رہے ہیں۔ اگرچہ یہ شرح بڑی مفصل ہے اور علماء کے نزدیک

اس کو جامع علوم کا درجہ حاصل ہے اس کے باوجود امام موصوف اس شرح کی بابت

لکھتے ہیں:

لولا ضعف الہم وقلۃ الراغبین بسطت نبیلت بہ ما یزید علی

مآتہ مجلدات وکن اقتصر علی التوسط یعنی اگر لوگوں کی ہمتیں کم نہ ہوتیں

ہوتیں اور علم کے رانجب کم نہ ہو گئے ہوتے تو میں اس شرح کو بیسوط کر کے لکھتا پس

یہ سو جلدوں تک پہنچتی لیکن میں میانہ روی پر کفایت کرتا ہوں۔

اس شرح میں امام موصوف نے علم و تاریخ حدیث پر بہرہ حاصل بحث کی ہے

اور مختصر عبارت میں مطول مطالب کو ایسے احسن طریقے سے بیان کیا ہے کہ قاری

عش عشش کر اٹھتا ہے۔ ان شرح کے علاوہ امام نووی کی دوسری مشہور تصانیف

یہ ہیں: ریاض الصالحین۔ لسان العارفین۔ منہاج الطالبین۔ کتاب الاربعین۔

کتاب الاذکار۔ تہذیب الاسماء واللغات۔ علم نحو اور فن تذکرہ میں کچھ اور تصانیف

بھی ہیں لیکن انہوں نے زیادہ شہرت نہیں پائی۔

# ماخذ

اس کتاب کی ترتیب و تدوین میں جن کتابوں سے مدد لی گئی ہے ان میں سے چند اہم کتابوں کے نام یہ ہیں:

- ۱۔ تاریخ ابوالفداء۔
- ۲۔ تاریخ ابن خلدون۔
- ۳۔ محاضرات الامم الاسلامیہ محمد بک الخنصری۔
- ۴۔ تاریخ الخلفاء جلال الدین سیوطی۔
- ۵۔ الفخری محمد ابن علی ابن طباطبایا المعروف بابن الطنطقی۔
- ۶۔ تاریخ تمدن الاسلامی جرجی زیدان۔
- ۷۔ تمدن عرب ڈاکٹر گستاوی بان ترجمہ سید علی بگداری۔
- ۸۔ محاربات صلیبی ریچس ٹریکیٹ سوسائٹی  
(منعقدہ ۱۷۹۹ء) ترجمہ مولوی محمد معشوق حسین خاں
- ۹۔ اردو انسائیکلو پیڈیا آف اسلام  
دائرہ معارف اسلامیہ دانش گاہ پنجاب لاہور
- ۱۰۔ دی پریچنگ آف اسلام سرتھامس ارنلڈ  
اردو ترجمہ محمد عنایت اللہ دہلوی۔ "دعوت اسلام"
- ۱۱۔ تاریخ زوال رومۃ الکبریٰ (عہد اسلام) ایڈورڈ گین (انگریزی)
- ۱۲۔ تاریخ اسلام سید امیر علی
- ۱۳۔ انسائیکلو پیڈیا آف اسلام لیڈن
- ۱۴۔ تاریخ مشرق وسطیٰ جی۔ ای۔ کرک
- ۱۵۔ تاریخ شام فلپ کے جتی اردو ترجمہ غلام رسول مہر

- ۱۶- تاریخ لبنان - فلیپ کے حقیقی اردو ترجمہ غلام رسول شہر  
 ۱۷- تاریخ ممالیک مصر - سر ولیم ٹیل میبور انگریزی  
 ۱۸- مسلمانوں کا نظم مملکت - ڈاکٹر حسن ابراہیم حسن و علی ابراہیم حسن مصری  
 اردو ترجمہ مولوی محمد علیم اللہ صدیقی  
 ۱۹- مسلمانوں کا عروج و زوال - مولانا سعید احمد  
 ۲۰- تاریخ ملک عراق - پروفیسر محمود بریلوی  
 ۲۱- تاتاریوں کی بلغار - ہریدلہ طہیم اردو ترجمہ عزیز احمد  
 ۲۲- تاریخ اسلام کے حیرت انگیز لمحات - عبداللہ عنان  
 اردو ترجمہ محمد عبدالوہاب ظہوری  
 ۲۳- حیاتِ صلاح الدین - قاضی سراج الدین احمد  
 ۲۴- تاریخ اسلام - اکبر شاہ خاں نجیب آبادی  
 ۲۵- تاریخِ حقیقیہ - سید ریاست علی ندوی  
 ۲۶- تاریخ اسلام - مرتضیٰ احمد خاں  
 ۲۷- تاریخ اسلام - محمود الحسن صدیقی چوانع حسن حسرت - ڈاکٹر ریاض الاسلام  
 ۲۸- تاریخ ملتِ حصہ ہفتم - مفتی انتظام اللہ شہابی  
 ۲۹- نگار - فرما زوایان اسلام نبرد مرتبہ نیاز فتحپوری  
 ۳۰- نگار - علوم اسلامی و علمائے اسلام نبرد  
 ۳۱- سلاجقہ - سید ابوالاعلیٰ مودودی  
 ۳۲- بغداد - خواجہ عباد اللہ اختر  
 ۳۳- دمشق  
 ۳۴- طب العرب - امیڈور ورجی براؤن ترجمہ حکیم علی احمد نیر واسطی



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الملك الظاهر

سلطان العادل ركن الدين محمود

بند قدر  
پیر

○

مؤلفہ

طالب ہاشمی

○

قومی کتب خانہ ۶۵ ریلوے روڈ، لاہور  
(پاکستان)